

राजेश प्रकाशन
कृष्णनगर
दिल्ली-५१



राजेश प्रकाशन
कृष्णनगर
दिल्ली

प्रकाशन

मूल्य 50 00

प्रथम सस्करण 1987

कहानी सकलन अडतीस खेल कहानियां

सम्पादक अवधनारायण मुदगल

प्रकाशक राजेश प्रकाशन
ए 7/46 कृष्ण नगर, दिल्ली 51

मुद्रक एस० एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

कहानियो से पहले

खेलो का इतिहास भी उतना ही पुराना है, जितना पुराना मानव सभ्यता के विकास का इतिहास। आदि खेलो का जन्म आत्मरक्षा की भावना से ही हुआ होगा और उसी के साथ भोजन की समस्या भी जुडी होगी।

जगली जानवरो से बचने और शिकार करने के अधिक सुरक्षित और कारगर तरीके ईजाद होते गये और उस ईजाद का अभ्यास खेलो से जुडता गया। आज भी बहुत से आदिवासियो के खेल, कुछ जापानी और चीनी खेल आत्मरक्षा की भावना से सीधे-सीधे जुडे हैं।

खेल भावना' सिर्फ खेलो तक ही सीमित नही है बल्कि हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी के लिए भी एक जरूरत बन गयी है। आज जिन्दगी इतनी कटु और असुरक्षित हो गयी है कि हम अपने दिलों में खेल भावना पैदा करके ही उसे सुरक्षा दे सकते हैं। यदि यह भावना पैदा न हो सकी तो दिलो मे दूरिया बढती जाएगी तथा व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कटुता घनीभूत होती चली जाएगी। हमे यह समझना होगा कि अगर हमारा वजूद महत्त्वपूर्ण है तो दूसरे का वजूद भी महत्त्वहीन नही है।

इस भावना को बढावा देने मे विश्व कथा साहित्य कैसी भूमिका निबाह रहा है, तथा किस सीमा और स्तर तक प्रयत्नशील है इसकी सही पडताल बहुत जरूरी है। हमारे यहा इस दिशा मे बहुत कम प्रयास हुए हैं। स्थिति यह है कि हम 'खेल-कथा' नाम की किसी चीज से परिचित नही हैं। खेल कथा नाम से हमारे साहित्य मे कोई वर्गीकरण नजर नही आयेगा। यही वजह है कि बहुत से लोग नही जानते कि खेलो को लेकर दुनिया भर मे कितनी उम्दा कहानिया लिखी गयी हैं।

एसा अकारण हो नही हुआ। दरअसल हमारे यहा विषयगत लेखन की महत्ता को समझा ही नहीं गया, वर्गीकृत, विषयगत लेखन पाश्चात्य जगत मे जिस तेजी से विकसित और लोकप्रिय हुआ वह अपने आप मे एक प्रतिमान है। विश्व के महानतम रचनाकारो ने इस किस्म के लेखन की उपयोगिता और महत्ता को समझकर ही विषयगत लेखन को तरजीह दी।

विश्व साहित्य मे विशेष रूप से कथा साहित्य मे खेलो को जिन्दगी की एक खास जरूरत के रूप मे लिया गया जिसका एक महत्त्वपूर्ण पक्ष मनोरजन भी है। हमशा-हमेशा से उत्सव प्रिय आदमी के लिए यह पक्ष आकर्षण का केंद्र रहा है। भारत मे हर मौसम मे कुछ उत्सव होते थे। इन उत्सवो मे जुडे होते थे कुछ विविध रगो खेल मनोरजन, पतगबाजी का एक खास मौसम है तो दगल रक्षाबधन के आसपास जुडते थे। दशहरे पर लडकिया गेंदी खेलती थी तो लडके कबड्डी। शरद पूर्णिमा पर टेसू, दिवाली पर जुआ, होली पर रगरास और गर्मिया आते ही गुल्ली डडा शुरू हो जाता था।

समय, समाज और भौगोलिक परिस्थितियो के हिसाब से विश्व भर मे खेलो का रूप, रग और मिजाज अपनी अलग छटा लिए रहता है। मैदानी इलाकों के खेलो का मिजाज पर्वतीय इलाको के मिजाज से एकदम भिन्न है। खुले मैदानो के खेलो का रग सीमित स्थान मे खेले जाने वाले खेलो से एकदम भिन्न है। हॉकी, फुटबाल, क्रिकेट जैसे

खेलों में जहां असंख्य खिलाड़ी मौजूद रहते हैं वहीं दर्शकों की दिनोंदिन बढ़ती जा रही संख्या भी उनके उत्साह को दर्शाती है। शतरंज, चौपड़ और ताश के पत्तों के खेल जहां अपेक्षाकृत कम खिलाड़ियों के हैं वहीं उनका विश्व भर में फैला एक ऐसा दायरा भी है जिसे सांख्यिकी के दायरे में बांध पाना करीब करीब नामुमकिन ही है। कई खेल सामान्य आर्थिक स्थिति के खिलाड़ियों की परिधि से बाहर के भी हैं—इनमें टेनिस, बैडमिंटन घुड़दौड़ और शूटिंग आदि आते हैं। कुश्ती, खो खो, कबड्डी, गुल्ली डंडा आदि ऐसे खेल हैं जो किसी भी आय वर्ग के खिलाड़ी को आकर्षित कर लेते हैं। शाही खेलों का तो मिजाज ही दूसरा है। इनमें पशु पक्षियों के युद्ध तक शामिल हैं जहां हिंस्र पशु के सामने आदमी को अपनी मर्दानगी दिखाने का मौका मिलता है। औद्योगिक उन्नति और तकनीकी सुधार के साथ साथ खेलों के स्तर और स्वरूप में इधर तेजी से परिवर्तन आ रहा है। इक्कीसवीं शताब्दी के करीब खड़े हम लोग यह कल्पना कर सकते हैं कि अंतरिक्ष में भी बहुत जल्द कोई ऐसा खेल शुरू हो सकता है जो विश्वव्यापी लोकप्रियता हासिल कर जाये और हम अपने टी० वी० सेटों के सामने बैठे इस खेल का मजा लेने लगें।

बहरहाल आधुनिकतम तकनीक के खेलों में से अधिकांश खेल पाश्चात्य देशों से आये। इनके लिए हमारे यहां किसी खास त्योहार या उत्सव का मौसम नहीं होता। इनका आयोजन अपने आप में एक उत्सव की शक्ल अख्तियार कर लेता है। विश्व कथा साहित्य में इन तमाम खेलों को नयी दृष्टि दी गयी है लेकिन हिन्दी में साहित्य उस दृष्टि को बहुत कम स्थान मिला है।

खेल की इस व्यापक परिधि और प्रभाव को देखकर ही मुझे लगा है कि साहित्य में 'खेल कथा' के रूप में हमारे यहां एक वर्गीकरण होना चाहिए। इसकी जरूरत इस-लिए भी है कि 'खेल-कथा' के अनुरूप कहानियां हमारे यहां चाहे कम संख्या में ही सही लेकिन काफी पहले से लिखी जाती रही हैं। प्रेमचंद की 'गुल्ली डंडा', 'बड़े भाई साहब' शतरंज के खिलाड़ी हों या विशम्भरनाथ 'कौशिक' की 'ताई'। जहां 'बड़े भाई साहब' में कनकौआबाजी का मिजाज देखने को मिलता है वहीं 'दो बांके' जैसी कहानी में लखनौआ अंदाज की सीनाजोरी। 'दिव्या' जैसे उपन्यास के कतिपय अंशों में तलवारबाजी और रथ प्रतियोगिता जैसे प्रसंग खेल कथा के अनुरूप ठहरते हैं। रमाकांत की बारहवां खिलाड़ी एक ऐसे पक्ष की ओर इंगित करती है जहां खिलाड़ी को भीतर तक समझने की पुरजोर कोशिश की गयी है। जिन्दगी में सीख सिखाने की गरज से हमारे कथा मनीषियों ने जो खेल कथाएं हमें दी हैं, उन्हें रेखांकित करते हुए इस दिशा में आगे बढ़ना मेरी दृष्टि में जरूरी है।

मैंने यह खेल कथाएं संपादित कर खेल प्रेमियों को विभिन्न प्रकार के खेलों से परिचित कराने का प्रयास किया है। इन खेल कथाओं के रचनाकार दूसरे देशों के लब्ध प्रतिष्ठित कथाकार तो हैं ही हमारे यहां के विश्व प्रसिद्ध कहानीकार भी हैं।

ये कहानियां अपने मूल में 'खेल भावना' का जो पुट लिए हैं वह सब तक पहुंच सकें तो निश्चय ही इस प्रयास की सफलता पर मुझे खुशी होगी।

—अवधनारायण मुद्गल

संपादक 'सारिका'
टाइम्स आफ इण्डिया
दरियागंज नई दिल्ली 110002

कथा-क्रम

गुल्ली-डडा

प्रेमचन्द

हमारे अगरजीदा दोस्त मानें या न मानें मैं तो कहूगा कि गुल्ली डडा सब खेला का गजा है। अब भी लडको को गुल्ली डडा खेलते देखता हू तो जी लोट पाट हो जाता है कि इनके साथ जाकर खेलन लगू। न लान की जरूरत, न कोट की, न नेट की, न थापी की। मजे से किसी पेड से एक टहनी काट ली, गुल्ली बना ली और दो आदमी आ गये तो खेल शुरू हो गया। विलायती खेलो म सबसे बडा ऐब यह है कि उनके सामान महग होते हैं। जब तक कम से कम एक सकडा न खच कीजिए, खिलाडियो म शुमार ही नही हो सकता। यहा गुल्ली डडा है कि बिना हर फिटकिरी के चोखा रग देता है। पर हम अगरेजी चीजो के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे है कि अपनी सभी चीजो स अरुचि हो गयी है। हमारे स्कूल म हर एक लडके से तीन चार रुपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नही सूझती कि भारतीय खेल खिलाए जो बिना दाम-कौडी खेले जाते है। अगरजी खेल उसी के लिए है जिसके पास धन है। गरीब लडकों के सिर क्यो यह व्यसन मढते हैं। ठीक है, गुल्ली से आखें फूट जाने का भय रहता है, तो क्या क्रिकेट स सिर फूट जाने तिल्ली फट जाने टाग टूट जाने का भय नही रहता? अगर हमारे माथे मे गुल्ली का दाग आज तक बना हुआ है तो हमारे कई दोस्त ऐसे भी हैं, जो थापी को बैसाखी स बदल बैठे। खैर, यह अपनी अपनी रुचि है। मुझे गुल्ली ही सब खेलो से अच्छी लगती है और बचपन की मीठी स्मृतियो म गुल्ली ही सबसे मीठी है। वह प्रात काल घर से निकल जाना, वह पेड पर चढकर टहनिया काटना और गुल्ली डडे बनाना, वह उत्साह, वह लगन, वह खिलाडियो के जमघट, वह पदना और पदाना, वह लडाई झगडे, जिसम छूत-अछूत अमीर गरीब का बिल्कुल भेद न रहता था, जिसमे अमीराना चोचलो की, प्रदशन की अभिलाषा की गुजाइश ही न थी, उस वक्त भूलेगा जब

घर वाले बिगड रहे है, पिताजी चौके पर बैठे वेग से रोटियो पर अपना क्रोध उतार रहे हैं, अम्मा की दौड केवल द्वार तक है, लेकिन उनकी विचारधारा मे मेरा अधकारमय भविष्य टूटी हुई नौका की तरह डगमगा रहा है, और मै हू कि पदाने म मस्त हू। न नहाने की सुध है न खाने की। गुल्ली है तो जरा सी, पर उसम दुनिया भर की मिठाइयो की मिठास और तमाशो का आनन्द भरा हुआ है।

मेरे हमजोलियो म एक लडका गया नाम का था। मुझसे दो तीन साल बडा

होगा। दुबला लम्बा बन्दरों की सी लम्बी लम्बी पतली-पतली उंगलियां, बन्दरों ही की सी चपलता झल्लाहट। गुल्ली कैसी भी हो, उस पर इस तरह लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ा पर लपकती है। मालूम नहीं उसके मां-बाप थे या नहीं, कहां रहता था, क्या खाता था, पर था हमारे गुल्ली क्लब का चम्पियन। जिसकी तरफ वह आ जाए उसकी जीत निश्चित ही थी। हम सब उसे दूर से आते देख उसका दौड़कर स्वागत करते थे और उसे अपना गोइयां बना लेते थे।

एक दिन हम और गया दोनों ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था, मैं पद रहा था मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन भर मस्त रह सकते हैं पदना एक मिनट का अखरता है। मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चली, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र विहित न होने पर भी क्षम्य हैं लेकिन गया अपना दाव लिये बगैर मेरा पिंड न छोड़ता था।

मैं घर की ओर भागा। अनुनय विनय का कोई असर न हुआ।

गया ने मुझे दौड़कर पकड़ लिया और डंडा तानकर बोला, "मेरा दांव देकर जाओ। पदाया तो बड़े बहादुर बनके, पदने के बेर क्यों भाग जाते हो?"

"तुम दिन भर पदाओ तो मैं दिन भर पदता रहूं!"

"हां तुम्हें दिन भर पदना पड़ेगा।"

"न खाने जाऊं न पीने जाऊं!"

"हां! मेरा दाव दिए बिना कहीं नहीं जा सकते।"

"मैं तुम्हारा गुलाम हूं?"

"हां मेरे गुलाम हो।"

"मैं घर जाता हूं देखूं मेरा क्या कर लेते हो?"

"घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है। दाव दिया है दाव लेंगे।"

"अच्छा कल मैंने अमरूद खिलाया था। वह लौटा दो।"

"वह तो पेट में चला गया।"

"निकालो पेट से तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?"

"अमरूद तुमने दिया तब मैंने खाया। मैं तुमसे मांगने न गया था।"

"जब तक मेरा अमरूद न दोगे मैं दाव नहीं दूंगा।"

मैं समझता था न्याय मेरी ओर है। आखिर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरूद खिलाया होगा। कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए ही देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया तो फिर उसे मुझसे दाव लेने का अधिकार क्या है? रिश्वत देकर तो लोग खून पचा जाते हैं। यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जाएगा। अमरूद पैसे के पांच वाले थे, जो गया के बाप को नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था।

गया ने मुझे अपनी ओर खींचते हुए कहा, "मेरा दाव देकर जाओ। अमरूद-समरूद मैं नहीं जानता।

मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था। मैं हाथ छुड़ाकर भागना

चाहता था। वह मुझे जाने न देता था। मैंन गाली दी उसने बडी गाली दी और गाली ही नही, दो एक चाटे भी जमा दिये। मैं रोने लगा। गया मरे इस शस्त्र का मुकाबला न कर सका। भागा, मैंने तुरत आसू पोछ डाले डडे की चोट भूल गया और हसता हुआ घर जा पहुचा। मैं थानेदार का लडका था, एक नीच जात क लौडे के हाथो पिट गया यह मुझे उस समय भी अपमानजनक मालूम हुआ, लकिन घर म किसी स शिकायत न की।

उन्ही दिनो पिताजी का तबादला वहा से हो गया। नयी दुनिया दखन की खुशी म ऐसा फूला कि अपन हमजोलियो से बिछुड जान का बिल्कुल दु ख न हुआ। पिताजी दु खी थे। यह बडी आमदनी की जगह थी। अम्माजी भी दु खी थी, यहा सब चीजें सस्ती थी और मुहल्ले की स्त्रियो स घरोवा सा हो गया था, लेकिन मैं मारे खुशी के फूला न समाता था। लडको से जीट उडा रहा था कि वहा एस घर थाड ही हात ह एसे एस ऊचे घर है कि आसमान स बात करते हैं। वहा के अगरजी स्कूल म कोई मास्टर लडका को पीटे तो उस जेहल हो जाय। मरे मित्रो की फैली हुई आखें और चकित मुद्रा बतला रही थी कि मैं उनकी निगाह मे कितना ऊचा उठ गया हू। बच्चो म मिथ्या का सत्य बना लने की शक्ति है, जिसे हम, जो सत्य का मिथ्या बना लेते हैं क्या समझेंगे। उन बचारो का मुझस कितनी स्पर्धा हो रही थी। मानो वह रहे थे—तुम भगवान हो भाई, जाओ, हम तो इसी उजाड ग्राम म जीना भी है और मरना भी।

बीस साल गुजर गए। मैंन इजीनियरी पास की और उसी जिल का दौरा करता हुआ उसी कस्बे मे पहुचा और डाकबगले म ठहरा। उस स्थान को दखत ही इतनी मधुर बाल स्मृतिया हृदय म जाग उठी कि मैंने छडी उठायी और कस्बे की सैर करन निकला। आखें किसी प्यासे पथिक की भाति बचपन के उन क्रीडा स्थलो को देखन क लिए व्याकुल हो रही थी, पर उसी परिचित नाम के सिवा वहा और कुछ परिचित न था। जहा खडहर था वहा पक्के मकान खडे थे। जहा बरगद का पड था वहा अब सुदर बगीचा था। स्थान का कायापलट हो गया था। अगर उसके नाम और स्थिति का ज्ञान न होता तो मैं इस पहचान भी न सकता। बचपन की सचित और अमर स्मृतिया बाह खोल अपन उन पुराने मित्रो से गले मिलन को अधीर हो रही थी, मगर वह दुनिया बदल गयी। ऐसा जी होता था कि उस धरती से लिपटकर राऊ और कहू—तुम मुझ भूल गयी? मैं तो अब भी तुम्हारा वही रूप देखना चाहता हू।

सहसा एक खुली हुई जगह म मैंन दो-तीन लडको को गुल्ली डडा खेलत दखा। एक क्षण के लिए मैं अपन को बिल्कुल भूल गया। भूल गया कि मैं अफसर हू, साहबी ठाठबाट म, रोब और अधिकार के आवरण म।

जाकर एक लडके स पूछा क्या बटे, यहा कोई गया नाम का आदमी रहता है?'

एक लडके न गुल्ली डडा समट कर सहम हुए स्वर म कहा कौन गया? चमार गया?'

मैंने यो ही कहा, "हा-हा वही। गया नाम का कोई आदमी है तो? शायद वही हो।"

'हा, है तो।"

' जरा उसे बुला सकते हो ? '

लडका दौडा हुआ गया और क्षण म एक पाच हाथ के काले देव को साथ लिय आता दिखाई दिया। मैं दूर ही स पहचान गया। उसकी आर लपकना चाहता था कि उसके गले लिपट जाऊ पर कुछ सोच कर रह गया। बाला, ' कहो गया, मुझे पहचानत हो ?"

गया ने झुककर सलाम किया, ' हा मालिक, भला पहचानूगा क्यो नही ? आप मजे मे रहे ?"

'बहुत मजे मे। तुम अपनी कहो।"

डिप्टी साहब का साईस हू।"

"मतई, मोहन दुर्गा य सब कहा हैं ? कुछ खबर है ? '

' मतई तो मर गया। दुर्गा और माहन दोनो डाकिए हा गए हैं। आप ?

मैं ता जिले का इजीनियर हू।"

'सरकार तो पहले ही वडे जहीन थे।"

अब कभी गुल्ली डडा खेलत हो ?"

गया न मरी आर प्रश्नभरी आखो से दखा, "अब गुल्ली डडा क्या खेलूगा सरकार, अब तो धधे स छुट्टी नही मिलती।"

आओ आज हम-तुम खेले। तुम पदाना, हम पदेंगे। तुम्हारा एक दाव हमारे ऊपर है। वह आज ले लो।"

गया बडी मुश्किल स राजी हुआ। वह ठहरा टके का मजदूर, और मैं एक बडा अफसर। हमारा और उसका क्या जोड। बचारा झप रहा था। लेकिन मुझे कुछ भी झप न थी, मगर इसलिए नहीं कि मैं गया के साथ खेलन जा रहा था, बल्कि इसलिए कि लोग इस खेल को अजूबा समझकर इसका तमाशा बना लेंगे और अच्छी खासी भीड लग जाएगी। उस भीड मे वह आनन्द कहा रहेगा, पर खेल बगैर तो रहा नही जाता था। आखिर निश्चय हुआ कि दोनो जन बस्ती से बहुत दूर एकात म जाकर खेलें। वहा कौन कोई दखने वाला बठा होगा। मजे से खेलेंगे और बचपन की उस मिठाई को खूब रस ले लेकर खाएगे। मैं गया को लेकर डाकबगले आया और मोटर म बैठकर दोनो मैदान की आर चले। साथ म एक कुल्हाडी ले ली। मैं गम्भीर भाव धारण किए था। लेकिन गया इसे अभी तक मजाक ही समझ रहा था। फिर भी उसक मुख पर उत्सुकता या आनन्द का कोई चिह्न न था। शायद वह हम दोनो मे जो अतर हो गया था वही सोचन म मगन था।

मैंने पूछा "तुम्ह कभी हमारी याद आती थी क्या ?

गया झेंपता हुआ बाला, ' मैं आपको क्या याद करता हुजूर, किस लायक हू। भाग म आपके साथ कुछ दिना तक खेलना बदा था नही मेरी क्या गिनती ?'

मैंने कुछ उदास होकर कहा, ' लेकिन मुझे तो बराबर तुम्हारी याद आती थी।

तुम्हारा वह डंडा, जो तुमने तानकर जमाया था, याद है न ?"

गया ने पछताते हुए कहा, वह लड़कपन था सरकार, उसकी याद न दिलाओ।"

"वाह ! वह मेरे बाल जीवन की सबसे रसीली याद है। तुम्हारे उस डंडे मे जो रस था, वह तो अब न आदर सम्मान मे पाता हू, न धन मे। कुछ ऐसी मिठास थी उसमे कि आज तक उससे मन मीठा होता रहता है।"

इतनी देर मे हम बस्ती से कोई तीन चार मील दूर निकल आये। चारो तरफ सन्नाटा है। पश्चिम की ओर कोसो तक भीमताल फैला हुआ है जहा आकर हम किसी समय कमल पुष्प तोड ले जाते थे और उसके झुमके बनाकर कानो म डाल लेते थे।

जेठ की सध्या केसर मे डूबी चली आ रही है। मैं लपक कर एक पेड पर चढ़ गया और एक टहनी काट लाया। चटपट गुल्ली डडा बन गया।

खेल शुरू हो गया। मैंने गुच्ची म गुल्ली रख कर उछाली। गुल्ली गया के सामने से निकल गयी। उसने हाथ लपकाया जैसे मछली पकड रहा हो। गुल्ली उसके पीछे जा गिरी। यह वही गया है जिसके हाथो म गुल्ली जैसे अपने आप ही जाकर बैठ जाती थी। वह दायें बायें कही हो, गुल्ली उसकी हथेलियो मे ही पहुचती थी, जैसे गुल्लियो पर वशीकरण डाल देता हो। नयी गुल्ली, पुरानी गुल्ली छोटी गुल्ली, बडी गुल्ली, नोकदार गुल्ली, सपाट गुल्ली सभी उससे मिल जाती थी। जैसे उसके हाथो म कोई चुम्बक हो, जो गुल्लियो को खीच लेता हो। लेकिन आज गुल्ली को उससे वह प्रेम न रहा। फिर तो मैंने पदाना शुरू किया। मैं तरह तरह की धाधलिया कर रहा था। अभ्यास की कसर बेईमानी से पूरी कर रहा था। हुच जाने पर भी डण्डा खेल जाता था। हालाकि शास्त्र के अनुसार गया कि बारी आनी चाहिए थी। गुल्ली पर ओछी चोट पडती और वह जरा दूरी पर गिर पडती तो मैं झपटकर उठा लेता और दोबारा टाड लगाता। गया ये सारी बेकायदगिया देख रहा था पर कुछ न बोलता था जैसे उसे वह सब कायदे कानून भूल गए। उसका निशाना कितना अचूक था, गुल्ली उसके हाथ से निकल कर टन से डण्डे म जाकर लगती थी। उसके हाथ से छूटकर उसका काम था डण्डे से टकरा जाना, लेकिन आज वह गुल्ली डडे मे लगती ही नही। कभी दाहिने जाती है कभी बायें, कभी आगे कभी पीछे।

आध घण्टे पदाने के बाद एक बार गुल्ली डडे म आ लगी। मैंने धाधली की, 'गुल्ली डडे मे नही लगी, बिलकुल पास से गयी, लेकिन लगी नही।'

गया ने किसी प्रकार का असन्तोष प्रकट नही किया।

"न लगी होगी।"

'डण्डे मे लगती तो क्या बेईमानी करता?'

"नही भैया तुम भला बेईमानी करोगे !"

बचपन मे, मजाल था कि मैं ऐसा घपला करके जीता बचता। यही गया पर चढ बैठता, लेकिन आज उसे कितनी आसानी से धोखा दिये चला जाता था। है ! सारी बातें भूल गया।

स(सा गुल्ली डड म लगी और इतन जार स लगी जस बदूक छूटी हो। इस प्रमाण के सामने अब किसी तरह की धाधली करन का साहस मुझे इस वक्त भी न हा सका। लेकिन क्यो न एक बार सच को झूठ बतान की चेष्टा करू ? हरज ही क्या है। मान गया तो वाह वाह, नही तो दो चार हाथ पदना ही ता पडेगा। अधेर का बहाना करके जल्दी से गला छुटा लूगा। फिर कौन दाव देने आता है।

गया न विजय के उल्लास म कहा, लग गयी, लग गयी ! टन से बाली !"

मैंन अनजान बनन की चेष्टा करके कहा, "तुमन लगते देखा ! मैंन तो नहीं देखा।'

टन स बाली है सरकार !"

'और जो किसी इट से लग गयी हा ?"

मर मुख स यह वाक्य उस समय कैसे निकला इसका मुझे खुद आश्चय है। इस सत्य को झुठलाना वैसा ही था जैसे दिन को रात बताना। हम दोना न गुल्ली को डडे म जोर स लगते देखा था लेकिन गया न मेरा कथन स्वीकार कर लिया, "हा किसी इट मे लग गयी होगी। लगती तो इतनी आवाज न आती।"

मैंने फिर पदाना शुरू कर दिया। लेकिन इतनी प्रत्यक्ष धाधली कर लेने के बाद गया की सरलता पर मुने दया आने लगी इसलिए अब तीसरी बार गुल्ले डडे मे लगी, ता मैंने बडी उदारता से दाव देना तय किया।

गया न कहा, ' अब ता अधेरा हो गया है भैया कल पर रखो।"

मैंन साचा कल बहुत सा समय होगा, यह न जाने कितनी देर पदाव इसलिए इसी वक्त मुआमला साफ कर लेना अच्छा होगा।

नही, नहा। अभी बहुत उजाला है। तुम दाव ले लो।"

गुल्ली सूझेगी नही।'

कुछ परवाह नहीं।'

गया न पदाना शुरू किया। पर उसे बिलकुल अभ्यास न था। उसन दो बार टाड लगान का इरादा किया, लेकिन दोनो ही बार हुच गया। एक मिनट से कम मे वह दाव पूरा कर चुका। बेचारा घटा भर पदा, पर एक ही मिनट म दाव खो बैठा।

मैंन अपन हृदय की विशालता का परिचय दिया, "एक दाव और खेल लो। तुम तो पहले ही हाथ मे हुच गय।'

'नही, भैया, अब अधेरा हा गया।"

'तुम्हारा अभ्यास छूट गया। कभी खेलते नहो ?'

'खेलने का समय कहा मिलता है भैया ?"

हम दाना मोटर पर जा बठे और चिराग जलते जलते पडाव पर पहुच गये। गया चलते चलत बोला, कल यही गुल्ली डडा होगा। सभी पुराने खिलाडी खेलेंग। तुम भी आओग ? जब तुम्ह फुरसत हो तभी खिलाडियो को बुलाऊ।'

मैंन शाम का समय दिया और दूसरे दिन मैच देखन गया। कोई दस दस आदमियो की मडली थी। कई मरे लडकपन के साथी निकले। अधिकाश युवक थे जिन्हे मैं

पहचान न सका।

मैं मोटर पर बैठा-बैठा तमाशा देखने लगा। आज गया का खेल, उसका वह नैपुण्य देखकर मैं चकित रह गया। टाग लगाता तो गुल्ली आसमान से बाते करती। कल की सी वह झिझक, वह हिचकिचाहट वह बेदिली आज न थी। लडकपन मे जो बात थी, आज उसने प्रौढता प्राप्त कर ली थी। कही कल इसने मुझे इस तरह पदाया होता तो मैं जरूर रोने लगता। उसके डडे की चोट खाकर गुल्ली दो सौ गज की खबर लाती थी।

पदनेवालो म एक युवक ने धाधली की। उसने अपने विचार म गुल्ली रोक ली थी। गया का कहना था—गुल्ली जमीन म लगकर उछली थी। इस पर दोनो म ताल ठोकने की नौबत आयी। युवक दब गया। गया का तमतमाया हुआ चेहरा देखकर डर गया। अगर वह दब न जाता तो जरूर मार पीट हो जाती। मैं खेल मे न था, पर दूसरो के इस खेल म मुझे वही लडकपन का आनन्द आ रहा था जब हम सब कुछ भूलकर मस्त हो जाते थे।

अब मुझे मालूम हुआ कि कल गया ने मेरे साथ खेला नही, केवल खेलने का बहाना किया। उसने मुझे दया का पात्र समझा। मैंने धाधली की, बेईमानी की, पर उसे जरा भी क्रोध न आया, इसलिए कि वह खेल न रहा था, मुझे खेला रहा था, मेरा मन रख रहा था। वह मुझे पदाकर मेरा कचूमर नही निकालना चाहता था। मैं अब अफसर हू। यह अफसरी मेरे और उसके बीच मे दीवार बन गयी है। अब उसका लिहाज पा सकता हू, अदब पा सकता हू, साहचर्य नही पा सकता। लडकपन था, तब मैं उसका समकक्ष था। हमम कोई भेद न था। यह पद पाकर अब मैं केवल दया के योग्य हू। वह मुझे अपना जोड नही समझता। वह बडा हो गया है, मैं छोटा हो गया हू।

एक खिलाडी की डायरी से

मोपासा

मैं एक निशानेबाज हू। खिलाडी हू। निष्ठुर हू और दया-करुणा जसी चीजो से कम ही वास्ता रखता हू। प्रेम की बातें मुझे हवाई और कमजोर लोगो की खाम खयाली लगती हैं।

लेकिन अखबार म एक मामूली सी खबर पढकर मैं स्तब्ध रह गया।

खबर मामूली थी। उसने पहले उस लडकी की हत्या की और फिर आत्महत्या करके खुद भी समाप्त हो गया। इससे नतीजा निकाला जा सकता है कि वह उस लडकी स प्रम करता रहा होगा।

जब मरी स्तब्धता भग हुई तो मैं सोचन लगा, उत्कट प्रेम के इस नाटक म किसकी भूमिका ज्यादा महत्वपूण थी उसकी या लडकी की? मगर, सोचते सोचते मैं इस निष्कष पर पहुचा कि इस सारे काड म सबस अधिक महत्वपूण भूमिका प्रेम न अदा की थी।

और तब मुझ याद आ गयी अपनी युवावस्था की एक घटना। उस घटना क दौरान भी मुझे प्रेम क एक अनजान रूप के दशन हुए थे। ईसा को सूली लगने के बाद उसके अनुयायियों का आकाश की पृष्ठभूमि म जस सलीब दिखाई दिया था, वसे ही वह प्रेम मुझे दिखाई दिया।

जैसा कि मैंने अभी अभी अज किया, मैं एक अच्छा निशानेबाज हू। शिकार पर जाता हू तो मेरे निशाने की पहुच म आनेवाला कोई पशु पक्षी शायद ही जीवित बच जाता हो।

गोली चलाते समय मैं बडा ही निष्ठुर होता हू, लकिन जब अपनी गोली स मरे पशु पक्षी को देखता हू तो मन का न जाने क्या हो जाता है? वह कुछ भी सोचना समझना बन्द कर देता है।

उस साल जस ही शरद ऋतु आरम्भ हुई मेरे रिश्तेदार काल द राविले न मुझ शिकार के लिए आमन्त्रित किया। उसके पास पहुचकर योजना बनायी कि अगल दिन तडके ही बत्तखो के शिकार क लिए जायगे। कार्ल के घर के पास ही एक दलदली इलाका था जहा बत्तखें भारी सख्या म थी।

कार्ल की उम्र करीब 40 वष थी, और वह बडे मौजी और हसमुख स्वभाव का

था। उस भी मरी भाति शिकार का बडा शौक था, और शिकार के लिए उसे अपने पास के आसपास जहा वह रहता था, काफी पशु पक्षी मिल जात थ।

जिस दलदली भाग म हम बत्तखो का शिकार करना था, वह भी उसके अधिकार म था और वह उसका उपयोग सिफ शिकार के लिए ही करता था। उसके और उसके परिचितो के अतिरिक्त, किसी और को उस क्षेत्र म जाने की इजाजत नही थी।

जल मुझे प्रिय है। जल का विस्तार देखकर मुझे बडा आनन्द होता है। सागर या नदी के तट पर जाकर मैं जैसे एक निराली दुनिया म पहुच जाता हू। खासतौर पर, दलदली क्षेत्र मुझे बहुत प्रिय है। और, मरी इस पसन्द के कई कारण है।

दलदली क्षेत्र के पास पहुचने पर मुझ लगता है जैस मैं सष्टि के सजन काल म पहुच गया हू। वहा का रहस्य-भरा वातावरण वहा का घना कोहरा, और वहा के चित्र विचित्र अनोख पशु पक्षी आदि सब हम उस काल म ल जात हैं जब सष्टि का जन्म हुआ था। इस रहस्यपूण वातावरण को और अधिक गूढ और रहस्यमय बना देते हैं वहा के निराल पक्षी। जिनका सगीतमय स्वर एक अनजानी दुनिया म ल जाता है, जो हमारी परिचित दुनिया से बिलकुल अलग है।

शिकार के लिए हम दोनो तडके ही उठ गय और साढे चार बजे क करीब उस दलदनी क्षत्र म पहुच गये, जहा हम बत्तखो का शिकार करना था। सद हवा जसे चीरे डाल रही थी।

काल ने हाथ मलत हुए कहा, इतनी ठण्ड मैंने आज तक महसूस नही की। तापमान कल शाम शून्य स 12 डिग्री कम था।'

ठण्ड मरी मज्जा म घुसती चली जा रही थी। हर वस्तु बफ की भाति जमी हुई ाती थी, सद और निष्प्राण। हवा भी जैसे जम गयी लगती थी।

चाद का एक चौथाई भाग आकाश म आखिरी सासे लेता प्रतीत हो रहा था। ा देखने स लगता था जस शीत न उस भी सद कर दिया है। उसका प्रकाश भी बडा ़ड और धूमिल था।

हम दोनो अपनी-अपनी बदूकें बगल म दबाये और जेबो म हाथ डाले चुपचाप चले जा रहे थे। हमारे साथ थे दो शिकारी कुत्त, जिनक मुह से श्वास के स्थान पर सफद धुआ निकल रहा था।

दलदली क्षत्र म आकर हम दोनो ने एक सकरी गली म चलना शुरू किया। चलते चलत मरी कोहनी लम्बी, रिबननुमा पत्तिया स टकरायी और मैंने पीछे स आता हुआ एक सशक्त मगर सद और सपाट स्वर सुना, जिसे सुनकर मैं चौक गया।

अभी सुबह होने म प्राय एक घण्टा शष था। मैं एक मोटा कम्बल अपन चारो ओर लपेटकर आराम करन लगा। जहा मैं लेटा था वहा स सद चाद और पत्त पत्तिया साफ दिखाई दे रहे थ। झोपडी के अन्दर सर्दी असह्य थी जिसस मुझे खासी आन लगी। काल ने कहा 'मैं आग जलाता हू। मैं नही चाहता कि आप सर्दी के शिकार बनें।" और उसने अपने शिकार रक्षक स आग जलान को कहा।

आग झोपडी के बीचाबीच जलायी गयी, ताकि उसका धुआ झोपडी की छत के बीच म बन एक छद से होकर बाहर जा सके। आग की लपटें ऊपर उठती हुइ, एस लग रही थी जसे पिघल रही हा जैसे उन्हें पसीना आ रहा हा। तभी मैंने सुना, काल बाहर से आवाज देकर मुझे बुला रहा है।

मैं बाहर गया तो उसने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, 'देखो, झोपडी की तरफ देखो।' मैंने देखा आग की लपटो की पृष्ठभूमि म झोपडी सचमुच एक जगमगाते हीरे की तरह जग रही थी। एक एसा जगमगाता हीरा, जिसे दलदली क्षेत्र के बीच में लाकर रख दिया हो।

तभी हमने पक्षिया के उडने की आवाज सुनी। जो इस बात का सकेत था कि सुबह हो गयी थी। बत्तखें आकाश म उडने लगी थी।

काल ने शिकार रक्षकों को आग बुझाने का आदेश दिया। हम दोना शिकार के लिए निकल पडे।

बत्तखा के झुड के झुड आकाश पर छाते जा रहे थे। काल ने उन्हें देखकर बदूक चलायी। दोनो कुत्ते तेजी से उधर भागे जिधर उनके खयाल से गोली लगने के बाद दो बत्तखें गिरी थी।

दोनो कुत्ते घायल बत्तखो को देखकर बडे खुश थे। दोनो अपनी आखें खोलकर बीच-बीच मे मुझे और काल को देख लेती थी।

सूर्योदय होते ही नीले आकाश पर धूप छाने लगी। हम वहा से चलने का विचार ही कर रहे थे कि देखा दो बत्तखें हमारे ऊपर उड रही हैं। मैंने निशाना साधकर ऊपर गोली चला दी और उनमे से एक मेरे पाव पर आकर गिरी। वह श्वेत वक्षवाली चती जाति की बत्तख थी।

मैं उसे देख ही रहा था कि मुझे अपने ऊपर मे एक और बत्तख का स्वर सुनाई दिया। वह रह रहकर आर्तनाद कर रही थी और उसकी निगाह उस मरी हुई बत्तख पर जो क्षण भर पहले उसके साथ चहकती हुई थी, और इस समय मेरे हाथो मे थी, जमी थी। वह मेरे सिर का चक्कर लगाती हुई और रोती कराहती हुई, साथ-साथ चल रही थी।

काल अपनी बदूक कधे पर डालकर, घुटने टेककर उस पक्षी को ध्यान से देखने लगा। फिर उसने कहा 'आपने मादा बत्तख को मार डाला, और अब यह नर बत्तख उसका पीछा नही छोड रहा है। वह अपनी मादा के बिना नही उडेगा।'

और सच ही, वह नही उडा और रुदन क्रदन करता हुआ हमारे सिर के चारो तरफ चक्कर लगाता रहा। मेरा मन पसीज उठा। आज तक किसी के रुदन क्रदन से मैं इतना अधिक द्रवीभूत नहीं हुआ था जितना उस समय नर बत्तख के रुदन क्रदन से हुआ। अकेले और खोय से उस नर बत्तख की धिक्कार मुझ पर बार बार कोडे से बरसा रही थी।

कभी-कभी वह उडते हुए उस हत्यारी बदूक के नीचे भी आ जाता था, जिसने

उसकी सहचरी के प्राण लिय थे । तब लगता कि उसने अपनी सहचरी का विचार त्याग दिया है और अब अकेले उडने को तैयार है लेकिन फिर उसे उसकी याद आ जाती और वह उस पान के लिए मेरे सिर के ऊपर चक्कर लगाने लगता।

काल ने मुझसे कहा, मादा बत्तख को जमीन पर ही छोड दो। वह यह जानते हुए भी कि वह तुम्हारी बदूक की पहुच म है मादा बत्तख क पास आ जायगा।'

और यही हुआ। वह बदूक के सकट से बेखबर अपनी उस प्रिय सहचरी क पास खिचा चला आया, जिसकी मैंने अभी अभी हत्या की थी।

काल न निशाना साधकर उसे भी खत्म कर दिया और वह नर-बत्तख जमीन पर ऐसे आ गिरा, जसे धागे के कटते ही कोई कठपुतली नीचे गिर गयी हो। एक कुत्ते ने झाडी से उसकी मृत देह लाकर मुझे दी।

दोनो बत्तखो की मत देह अभी तक ठण्डी हो गयी थी। मैंने उन्हे एक ही बग म रखा और उसी शाम वापस पेरिस लौट गया।

तैराकी प्रतियोगिता का अत

सामरसेट मॉम

लोगो के स्वभाव का अध्ययन करना मरा शौक है। पिछले तीस वर्षों स मैं अपने परिचित लोगो के साथ साथ अजनबियो क स्वभाव का भी अध्ययन करता चला आ रहा हू, लकिन फिर भी विश्वास स नही कह सकता कि मैं उनक बार म अधिक जानता हू।

प्राय हम दूसरो के बारे म जो धारणाए बनाते हैं व उनके चहर देखकर ही बनाते हैं लेकिन अपने अनुभव क आधार पर मैं कह सकता हू कि एसी धारणाए प्राय निमूल सिद्ध होती हैं।

यह सब खयाल मेरे मन म अभी-अभी अखबारो म पढ़ी इस खबर की प्रतिक्रिया स्वरूप आये कि बटन की मौत हो गयी है।

बटन एक अग्रज व्यापारी था जो कोबा मालो तक अपन व्यापार के सिलसिल म जापान म रहा था। मेरा उससे अधिक परिचय नही था लेकिन एक बार उसन एक अजीब सी कहानी सुनाकर आश्चर्यचकित कर दिया था। यदि उसन यह कहानी स्वय मुझ न सुनायी होती तो मुझे उस पर कभी विश्वास न होता। मेरे आश्चय का एक कारण यह भी था कि देखने और व्यवहार म वह एक विशिष्ट प्रकार का आदमी लगता था। वह नाटा भी था और काफी नाजुक और कमजोर भी। उसके बाल सफेद थ, आखें नीली थी और लाल मुह झुर्रियो स भरा था।

जब मैं उसस पहली बार मिला था तब उसकी आयु साठ के करीब थी। अपनी हैसियत और उम्र क मुताबिक उसक वस्त्र साफ-सुथर होते थे। मेरी उससे सबसे पहली भेंट याकोहामा म जहा वह व्यापार के सिलसिले म कोबे स आया करता था, हुई थी। वहा मैं एक जहाज क इतजार मे एक होटल म ठहरा था। वह ब्रिज खेलन म काफी चतुर था और ऊचे दाव लगाकर खेलता था यह मुझे उसक साथ एक दो बार ब्रिज खेलकर ही पता चला गया था। शराब क नशे का भी उसक खेल पर कोई प्रभाव नही पडता था। जिस क्लब म वह खेलता था उसके सब सम्यर उसके प्रशसक थ।

हम दोनो एक ही होटल म ठहरे थ। एक दिन उसन मुझे खाने पर आमंत्रित किया। उसक साथ थी उसकी स्थूलकाय मगर हसमुख बीवी और दो पुत्रिया। परिवार के सब सदस्य एक दूसरे को बहुत चाहते थे। बटन मुझे अत्यन्त प्रेमल, सुशील और दयालु लगा। उसकी नीली आखें सौम्य और सुखद थी। स्वर इतना कोमल कि यह सोचा भी

नहीं जा सकता था कि उसे कभी क्रोध आता होगा। बड़ी कृपालु और अनुग्रहपरक लगती थी उसकी मुस्कान। एक मोहिनी थी उसकी मुस्कराहट में जो देखने वाले को सीधे जता देती थी कि वह उनसे सच्चा प्रेम करता है। आदमी शौकवाला भी था, और उसके प्रिय शौक थे—ब्रिज खेलना, और पीना। मजाक करना भी उसे खूब आता था। काफी अमीर होने के बावजूद, वह मुझे काफी दीन और निरीह सा लगा।

एक शाम मैं अपने होटल के विश्राम कक्ष में बैठा बन्दरगाह में आते-जाते जहाजों को देख रहा था। शंघाई होकर वनकवर सैनफ्रांसिस्को या योरोप आने-जाने वाले जहाज दिखाई दे रहे थे। इस व्यस्त और उल्लासकारी दृश्य को देखकर मेरी आत्मा को न जाने क्यों एक शांति और तृप्ति अनुभव हो रही थी। मैं चमड़े से मढ़ी एक आराम-कुर्सी पर बैठा था, जो भूकंप आने से पूर्व जापान के होटलों में बहुत दिखाई देती थी।

तभी बटन वहां आया और मुझे देखकर मेरे पास पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया। हम दोनों इधर-उधर की बातें करने लगे, जिसे अंग्रेजी में स्मॉल टॉक कहा जाता है।

बातों के बीच, एक आदमी को देखकर उसने अभिवादन के तौर पर अपना हाथ हिलाया। जब वह चला गया तो बटन ने मुझसे पूछा, "आप इस आदमी—टर्नर—को जानते होंगे शायद। क्लब में अक्सर आता जाता है।"

"हां, एक बार क्लब में इनसे मुलाकात हुई थी। तब पता चला था कि इसके पास कोई काम धंधा नहीं है और गुजर के लिए घर से पैसा मंगाता रहता है।"

"हां, आपको ठीक पता चला था। इंग्लैंड के ऐसे बहुत से लोग आपको यहां मिल जायेंगे।"

"सुना है, ब्रिज अच्छा खेलता है।"

"हां ऐसे लोग ब्रिज अच्छा खेलते हैं।"

"अच्छा! मुझे यह पता नहीं था।"

"ऐसे ही एक और साहब थे यहां पिछले साल उनका नाम भी वही था, जो मेरा है यानी बटन। शायद लंदन में आप उससे मिले हों।"

"बटन! नहीं, ध्यान नहीं आ रहा है कि इस नाम के किसी खिलाड़ी से मैं कभी पहले मिला हूं।"

"खैर! आदमी कैसा भी रहा हो लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्रिज का उससे अच्छा खिलाड़ी आज तक मैंने नहीं देखा। वाह! क्या खिलाड़ी था! न जाने कैसे दूसरे खिलाड़ियों के पत्ते भांप लेता था। उसका हर खेल हैरत में डालने वाला होता था। मैं उसके साथ बहुत बार खेला था। वह काफी दिनों तक क्लब में ही रहा था, जहां मैं रहता हूं, और जहां मेरा आफिस भी है।"

कुछ देर चुप रहकर उसने कहा, "उसकी कहानी बड़ी दिलचस्प है सुनिएगा?"

"सुनाइए। दिलचस्प कहानियों को मैं हमेशा उत्सुकता से सुनता हूं।"

"आदमी बुरा नहीं था", बटन ने कहना शुरू किया "हमेशा चुस्त और चमकदार दिखाई देता था। आकर्षक और सुन्दर भी था। बहुत-सी महिलाएं उसके गुलाबी गालों और घुंघराले बालों पर जान देती थीं। मैं भी उसके प्रशंसकों में से एक था। उसके

स्वभाव म थोडा उतावलापन जरूर था, लकिन उसके हाथो कभी किसी की हानि हुई हो, ऐसा मुझे याद नही आता। वसे, पीता खूब था। टनर भी खूब पीता है। एस लोग पीते खूब है। शत लगाकर भी पी सकते हैं।"

"उसका गुजारा कैसे चलता था ?"

'हर तीसरे महीने उसके पास न जाने कहा स अच्छी खासी रकम आ जाती थी। इसके अलावा वह ब्रिज स काफी कमा लेता था। कम्बख्त मुझसे काफी रकम जीता होगा।"

यहा रुककर बटन बडे मधुर ढग से मुस्कराया। उसकी बात गलत नही थी। उसके साथ कई बार ब्रिज खेलकर इतना पता तो मुझे लग ही गया था कि वह कितनी दरियादिली स दाव लगाता है और कसे इच्छापूवक पैसा हार सकता है। शायद उसे जीतने से अधिक हारने म आनन्द आता था।

अपन कमजोर हाथो स अपनी ठोडी को सहलात हुए, उसन कहना जारी रखा, एक दिन वह मुझसे मिलन मेरे आफिस म आया। उसने बताया कि उसके घर स पैसा आना बन्द हो गया है और अब नौकरी करन के अलावा, उसके सामने कोई और रास्ता नही है। मुझे आश्चय तो अवश्य हुआ, लेकिन समझ गया कि दिवालिया हो जान पर ही और पास म कुछ न होने पर ही वह मरे पास आया है। मैंने उसस उसकी आयु पूछी। उसने कहा ' पैंतीस साल।" मैंने पूछा, "इन पैंतीस सालो म तुम क्या करते रह ? किस काम का अनुभव है तुम्ह ?" उसन कहा, ' मुझे किसी काम का कोई विशेष अनुभव नही है क्योंकि आज तक मैंने ब्रिज खेलन के अलावा कुछ और नही किया।" उसका यह उत्तर सुनकर मैं हसे बिना न रह सका। मैंन कहा, ' मुझे अफसोस है कि अभी तो मैं तुम्ह कोई नौकरी नही दे सकता। पतीस साल बाद आना। तब शायद कोइ काम निकल आय तुम्हारे लिए।'

"आपका यह उत्तर सुनकर उसन क्या कहा ? ' मैंन पूछा।

उसने कोई जवाब नही दिया। न गया और न हिला डुला। उसके चेहरे पर पीलापन और निराशा साफ झलक रही थी। उसने सकोच क साथ कहा पिछले कुछ दिनो से मैं ब्रिज म बराबर हारता चला जा रहा हू और अब बिलकुल कगाल हो गया हू। जो थोडा बहुत सामान मेरे पास था वह मैं कभी का गिरवी रख चुका। अब आप ही मुझे बचा सकत हैं मुझे नौकरी दकर।"

क्षणभर खामोश रहने के बाद बटन न फिर कहना शुरू किया,—मैंने अब उसे गौर स देखा। वह बिल्कुल कमजोर और खोखला दिखाई पड रहा था और पैंतीस के स्थान पर पचास का लग रहा था। जो लडकिया उस पर दीवानी बनी घूमती थी, वे उसे इस वक्त दखती तो न जान क्या सोचती ? मैंने उससे पूछा, तो तुम ब्रिज खेलने के अलावा और कुछ नही कर सकते ?'

तैर सकता हू।"

'तैर सकते हो ?' मुझे अपने कानो पर यकीन नही हो रहा था। भला, यह भी जवाब था, मेरे सवाल का, मैं दग था।

28.4.88

"हा, विश्वविद्यालय की तराकी प्रतियोगिता को ... पदक मिले थे मुझे।"

अब मुझे खयाल आया कि वह क्या कहना चाह रहा था। ... लोगो को जनता था, जो कभी अपने विश्वविद्यालय क हीरो थ लेकिन बाद म जिदगी की कशमकश मे न जाने कहा गुम हो गये। मैं उसकी बात स ज़रा भी प्रभावित नही हुआ। मैंने उससे कहा, "जवानी मे मैं भी अच्छा तैराक था।' मगर तभी मरे मन मे एक विचार आया।

अपनी कहानी के बीच म रुककर बटन ने मेरी तरफ देखकर पूछा क्या आप कभी कोवे गए है ?"

'एक बार वहा सिफ एक रात गुजारी थी।" मैंने कहा।

'तब तो आपको शियाओ क्लब क बारे म मालूम नही हागा। जवानी म मैं सिग्नल स्टेशन मे तैरता हुआ, तारूकि खाडी तक आ जाता था। फासला कुल तीन मील का है, लेकिन स्टेशन के आसपास की जलधाराओ के कारण वहा तरना बहुत मुश्किल है। मैंने अपने नाम वाल बटन को यह सूचना देत हुए कहा, 'अगर तुम तरकर यह पूरा फासला तय करके दिखा सको ता मैं तुम्हे जरूर कोई नौकरी दे दूगा।" उसे मरा प्रस्ताव सुनकर बडी निराशा हुई। यह दखकर मैंन उससे पूछा लकिन तुम तो कहते थ कि तुम एक अच्छे तैराक हो।"

'तराक तो अच्छा हू, लकिन आप देख ही रह है कि मेरी सहत आजकल अच्छी नही है।"

मैंने कोई जवाब नही दिया और अपन कध उचका दिए। उसन पलभर क लिए मेरी ओर देखा और फिर बोला, 'अच्छी बात है कब तैरना होगा मुझे ?"

मैंने घडी देखी। दस बज चुके थे। मैंने कहा, इस तैराकी प्रतियोगिता का फासला तय करन म तुम्हे सवा घटे से ज्यादा नही लगना चाहिए। मैं साढे बारह बजे कार लेकर खाडी के किनारे आ जाऊगा और तुमसे मिलूगा। मरे आते ही, यह प्रतियोगिता शुरू मानी जाएगी।"

"ठीक है।" उसने कहा।

"हमने हाथ मिलाये। मैंने उसक सौभाग्य की कामना की। उसके जान के बाद, अपना काम पूरा करके मैं तारूकि खाडी के किनारे पहुच गया, लेकिन मेरा जाना व्यथ ही रहा।'

'क्यो,' मैंने पूछा 'क्या वह आखिरी मौके पर अपने वादे स मुकर गया था?'

"नही, वह अपन वादे से मुकरा नही था। वह आया था और उसने ठीक समय पर तरना भी शुरू कर दिया था, पर वह खाडी की तेज धाराओ का सामना करन म असमथ रहा शायद इसलिए कि बहुत ज्यादा पीन से उसका शरीर नष्ट हो चुका था उसका शव हम लोगो को तीन दिनो के बाद ही मिल पाया।

एक जबदस्त धक्का लगा मुझ यह सुनकर।

कुछ सम्भलकर मैंने बटन से पूछा, "एक बात बताइए। जब आपने उसके सामने तराकी प्रतियोगिता में जीतकर नौकरी पाने का प्रस्ताव रखा था, तब क्या आपको पक्के तौर पर मालूम था कि वह इस प्रतियोगिता में सफल नहीं हो सकेगा और खाड़ी में डूब जाएगा।'

बटन अपनी सुपरिचित आकर्षक मुस्कराहट के साथ, अपनी कृपालु आंखों से मुझे देखते हुए बोला, सच यह है कि उस वक्त मेरे ऑफिस में कोई जगह खाली नहीं थी!"

मुकाबला

इर्विन ऐश केनेजी

"मेरा खयाल है, मैंने तुम्हें पिछली बसंत में वाई के स्थान पर देखा है। जहां तक मुझे याद आता है, शायद वह तुम्हीं थे जिसने प्रदेश की हैवी वेट बॉक्सिंग चैंपियनशिप जीती थी? तुम्हीं थे न?" बूढ़े ने मुझसे पूछा। मैंने विस्मय से स्वीकृति में सिर हिलाया। बूढ़े ने चिन्तनपूर्ण अन्दाज में गरदन झटकी "लेकिन यह तुम्हारी एक आंख के नीचे जख्म कैसा है? यह तो वहां नहीं लगा था!"

"जी हां! यह वहां नहीं लगा था! मैंने अब बॉक्सिंग व्यवसाय के रूप में अपना ली है!"

"यानी तुम पढ़ाई छोड़ चुके हो?"

"जी नहीं! मैंने पढ़ाई ही जारी रखने के लिए यह व्यवसाय अपनाया है!"

कुछ देर बाद बूढ़े ने अपनी मेज से उठकर मुझे सम्बोधित किया, "अगर तुम यूनिवर्सिटी जाना चाहते हो, तो मैं तुम्हें पहुंचा सकता हूं। मेरे पास टैक्सी है।"

टैक्सी हाईवे नम्बर इकतालिस से आगे बढ़ गयी। बूढ़े ने मुझे बताया कि उसका नाम पोप है और वह 1910 से मुक्केबाजों का प्रशिक्षण और मुकाबलों की व्यवस्था का काम कर रहा था। कुछ देर की खामोशी के बाद उसने पूछा, "क्या तुम यहूदी हो?"

"नहीं" मैंने कहा "मैं खानदानी ईसाई हूं।" वह चुप हो गया। मैंने सोचा, मैं अगर यहूदी होता भी, तो बताता नहीं।

"मैं यहूदी हूं और कभी-कभी सोचता हूं", वह अंधेरे को घूरते हुए सहसा बोला, "मैं यहूदी परिवार में क्यों हुआ?"

मैं इस प्रतिक्रिया के लिए तैयार नहीं था। मुझे उसके लिए अपने दिल में सहानुभूति उभरती हुई अनुभव हुई।

अंधेरा कुछ घटने लगा था। मैंने बेचैनी महसूस करते हुए कहा, "मैं वास्तव में गेनस विल में रुकने का इरादा नहीं रखता। वहां से किसी अन्य सवारी से म्यामी चला जाऊंगा!"

वह खामोश हो गया। कुछ देर बाद उसने कहा, "गर्मियों में तुम किस किस से लड़े थे?" मैंने कुछ नाम गिनाये।

उसने गौर से मेरी ओर देखकर कहा, "क्या सचमुच? यह लोग तो बहुत अच्छे

मुक्केबाज हैं।' मैंने उसे बताया कि वास्तव में मेरे मैनेजर ने मुझे मजबूर कर दिया था।

'अच्छा तुम ऐसा करो टापा में रुक जाओ। मैं आज रात तुम्हारा मुकाबला बिल टेरी से करा सकता हूं। तुम्हें तीन सौ डालर पारिश्रमिक मिलेगा।"

पोप ने मेरी बहुत आवभगत की।

जब मेरी आंख खुली तो रात सिर पर आ चुकी थी। गठे हुए शरीर का एक बूढ़ा मुझ पर झुका हुआ माहिराना अंदाज में मेरी टांगों की मछलियां टटोल रहा था। उसके बारे में पोप ने मुझे बताया, 'तुमने इसका नाम सुना होगा। यह जे० डी० है। अब यह भी टैक्सी चलाता है।'

मैंने मुकाबले के लिए तैयार होते समय पोप से कहा, 'मैंने बिल टेरी के बारे में कुछ वर्ष पूर्व सुना था। उन दिनों तो वह अच्छा जा रहा था। अब क्या हाल है उसका ?"

'आज की रात उसके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। अगर उसने यह मुकाबला न जीता, तो फिर कहीं का न रहेगा।"

'आपका क्या खयाल है अगर वह सही प्रयत्न करे, तो क्या ?"

'बिल्कुल !' बूढ़े ने सिर हिलाया। 'अगर उसने मेरी बात मानी होती, तो शायद देश का चैंपियन हो जाता।'

ड्रेसिंग रूम के इर्द गिर्द एक शोर उठा। जे० डी० ने टिप्पणी की, "सेमी फाइनल खत्म हो गया है।'

पोप ने मेरी गरदन में अपनी बांह डाल दी, 'यह लड़का, जिसका बिल टेरी से मुकाबला होने वाला है, अच्छा मुक्केबाज है। उसकी चोटें जोरदार होती हैं, लेकिन उसमें हिम्मत और हौसले की कमी है।"

घंटी बजी। मैंने क्रीड़ा-क्षेत्र में तेजी से हरकत की। बिल टेरी पूरी तन्मयता से मुझ पर आक्रमणकारी हुआ। मैंने उसकी चोटों से बचने के लिए अपने दोनों हाथों की आड़ ले ली और दायरे में नृत्य करने लगा।

अचानक मुझे अपने कान से जरा ऊपर एक तीव्र चोट का एहसास हुआ। उसका एक भरपूर मुक्का मेरी कनपटी से टकराया था। मैं लड़खड़ाकर रस्सियों से टिक गया। फिर तो बिल टेरी ने जैसे मुक्कों की वर्षा कर दी। मैंने दोनों हाथों से उसे रोकने का जबरदस्त प्रयत्न किया। उसने मेरे गुरदे पर एक जोरदार मुक्का जड़ दिया। मैंने पीड़ा सहन करते हुए रस्सी पकड़ ली, लेकिन झूल कर रह गया।

दूसरे राउंड में हम दोनों कुछ देर तक एक-दूसरे को तोलते रहे। वह मेरी रक्षात्मक तदबीरों में कोई चूक ढूंढ रहा था। मेरी नजरें भी उसकी किसी कमजोरी के सुराग में थीं। हमारी ओर से इस आलस्य पर मजमा प्रतिरोधपूर्ण नारे लगाने लगा। बिल टेरी एकाएक मुझ पर टूट पड़ा, 'लड़ता क्यों नहीं कायर ?'

मैं उसे देखता ही रह गया। फिर मैंने उसे दोनों हाथों से पकड़ कर पूरी शक्ति से धकेल दिया। वह लड़खड़ाता हुआ दूसरी ओर की रस्सी पर जा गिरा। मैंने उसे मोहलत नहीं दी। उस पर पिल पड़ा, लेकिन दूसरे ही क्षण मुझे यह अनुभव हुआ कि

मैं जमीन पर गिरा हुआ हू । रेफरी मेरे सिर पर खडा निरतर गिनती गिन रहा था ।

'सात !'' मैंने एक घुटने पर वजन देकर उठना चाहा ।

''आठ !'' मैं आधा उठ गया ।

''नौ !'' मैं सीधा खडा हो गया । मैंने महसूस किया कि मेरे मुह से खून उबल रहा है । मेरा कोई दात हिल गया था ।

मेरे उठते ही बिल टेरी ने आखिरी चोट लगान के लिए कदम बढाये । मैंने उसे बीच ही मे रोक लिया और दबाता हुआ कोने मे ले गया । कोने तक पहुचकर वह रस्सियो का सहारा लेने पर मजबूर हो गया । मैंने अपना दो सौ बीस पौड का शरीर उस पर रख दिया और निरतर दबाव डालन लगा ।

रेफरी हमे अलग करने के लिए बीच म आ गया । मैंने हटते हटते भी दाए जबडे पर पूरी ताकत स एक मुक्का मारा । जस ही मैंने रस्सिया पार की, पोप ने तजी से रिंग म प्रवेश किया और बिल टेरी को गोद म भरकर कोने म खीचने लगा ।

पोप और मैं एक होटल म गय । उसन मुझ एक गडडी दी । मैने महसूस किया कि वह बेहद थका हुआ है । मैंने गड्डी लेकर नोट गिने । पूर तीन सौ डालर थे । मैंने 75 डालर निकाल कर उसकी ओर बढाये ' मिस्टर पोप । यह पच्चीस प्रतिशत आपके हैं । आजकल एजेंटो को यही कमीशन दिया जा रहा है । '

तुम मुझे अपना एजेंट मत समझो ।''

मैंने धन्यवाद करत हुए कहा, मुझ खेद है कि मै साफ सुथरी मुक्केबाजी पेश नही कर सका । आपने तो देखा ही था कि उसने मुझे कहा कहा चोटें लगायी थी ,

हा, हा ! ' पोप न उदासी स सिर हिलाया, क्या तुम्हे यकीन है कि तुम इस साल ग्रेजुएशन कर लोगे ? '

जी हा आशा तो है !''

''ठीक है । तुम ग्रेजुएट हो जाओ, तो अपना जीवन बनान का प्रयत्न अवश्य करना । मेरी शुभकानाए तुम्हारे साथ है ।''

उसी जे० डी० भागता हुआ मरे पास आया, ''जल्दी चलो ', वह बोला 'अभी समय है । गेनस विल की बस अभी मिल सकती है ।'

पोप वही रुका रहा । उसने कहा, दोस्त ! मुझे न ल चलो । मैं बिल्कुल खत्म हो चुका हू ।'' उसने एक ठडी सास ली ।

बस स्टैंड पर जे० डी० न विदाई हाथ मिलात हुए मुझसे कहा, ' तुम निश्चित रहो । पोप जल्दी ही तुम्हे बुलाएगा ।'

मैंने उसे बताया, ''यह मुकाबला किसी प्रकार आसान नही था, लेकिन एक बात अवश्य है, इससे पहले इतनी जल्दी मुझे तीन सौ डालर कभी नहीं मिल थ ।'

जे० डी० की गोल गोल आखें सिकुड गयी, ''यह तुम क्या कह रह हो ? प्रबधको ने तो मेरे सामने पोप को तुम्हारे लिए कवल एक सौ तीस डालर दिये थ ।'

दूसरे दिन मैंन पोप को पत्र लिखकर पूछा कि जब प्रबधको न मेरा पारिश्रमिक केवल एक सौ तीस डालर रखा था, तो उसने बाकी एक सौ सत्तर डालर कहा से दिये

चीखें सुनाई दीं। बैंडेरिल्लरो बच गया था और उसने अपने तीर साड के कधे म गाड दिये थे। इसके बाद वह साड की ओर पीठ करके एस चलने लगा, जैसे उसे अपनी जान की कोई परवाह न हो। दर्शको ने खुशी म तालियां बजायीं।

अब उस खेल का तीसरा और आखिरी हिस्सा शुरू होना था, जबकि मैटाडोर और साड का सामना होना था।

मटाडोर आगे बढने लगा तो उसने अपने सहायक से कोई बात नहीं। उसम वह आत्मविश्वास दिखाई नहीं दे रहा था जो किसी विजेता मे पाया जाता है। वह पसीने से भीगा हुआ था। उसे 'मुलेटा' (एक छडी के साथ बधा हुआ लाल कपडा) और तलवार पकडाई गयी।

मटाडोर ने आगे बढकर मुलेटा की सहायता से साड को अपने काबू म करना चाहा पर वह काबू म नहीं आ रहा था। दर्शक शोर मचाने लगे। आखिर मटाडोर ने साड पर तलवार का वार किया। तलवार उसके शरीर म आठ इच से ज्यादा नहीं धस सकी। साड ने अपने सिर को झटका और तलवार को हवा म उछाल दिया। अब मटाडोर साड की दया का पात्र बना खडा था। उसी समय दो बैंडेरिल्लरो अपने केप हिलाते हुए उसकी सहायता के लिए आये। तभी तीसरे बैंडेरिल्लरो ने नयी तलवार लाकर उसे दी। मैटाडोर ने फिर साड पर हमला किया पर इस बार निशाना ठीक न बैठा। वार जहा होना चाहिए था वहा न हो सका। उसने पाच बार और कोशिश की। साड के शरीर से लहू के फव्वारे फूट रहे थे।

दर्शक गुस्से म शोर मचा रहे थे, क्योंकि मटाडोर एक ही वार से साड को मार नहीं पाया था। उसके चेहरे पर डर और असफलता की छाया थी। उसके होठ नीले पड गये थे और वह काप रहा था। उसके जीवन की यह सबसे बडी त्रासदी थी।

वे दोनों हारे हुए प्राणी—मैटाडोर और साड—अब फिर एक दूसरे के निकट थे। अपनी हार के एहसास म से मैटाडोर म नया साहस जागा। निश्चित समय म से, जिसम कि उसे साड की हत्या करनी थी, कुछ ही सैकेंड बाकी रह गये थे। अगर वह निश्चित समय म साड को मार नहीं सकेगा तो बाहर ले जाकर साड का वध कर दिया जायेगा। उस हालत म मटाडोर की हार होगी। सो वह अपने मुलेटा का उपयोग न करते हुए सीधा साड के सीगो की ओर बढा। हाफते हुए साड ने अपना सिर झुका दिया जैसे उसे अपनी मौत कबूल हो। मैटाडोर ने वार किया और पीछे हट गया—विजेता की तरह नहीं, बल्कि ऐसे, जैसे उसका साड से कोई सम्बन्ध न हो। साड घुटनों के बल गिर पडा। उसके मुह से खून बह रहा था। उसकी आखें मौत को देखकर फैल गयी थीं। आखिर वह ढह पडा।

मटाडोर ने मरे हुए साड को एक नजर देखा और हारे हुए व्यक्ति की तरह एक ओर को चल दिया।

पेले ! पेले ! कैसा खेले

सुदीप

मैदान के भीतर एक लाख दशको की भीड।

मैदान के बाहर कई लाख की।

पूरब और पश्चिम के दला के बीच फुटबाल मच।

हर साल की तरह इस साल भी लीग का सारा दारोमदार इसी मच पर है। जो दल यह मच जीत लेगा, वही लीग म विजयी होगा। दोना दल अभी तक अविजित हैं। किसी ने कोई भी मैच अब तक नही हारा है।

मदान के भीतर और बाहर मेला लगा है। दोना दला के समथक अपन अपने दल की तारीफा क पुल बाध रहे है। शोर बहस गुस्सा नाराजगी हसी मुस्कराहटें, सब तरफ यही कुछ है। कितन दु ख की बात है कि मैदान म एक लाख दशका स ज्यादा के लिए जगह ही नही है वरना लाखो लोगा का निराश नही होना पडता। टिकट प्राप्त करन के प्रयास म सकडो के सिर नही फटते। पुलिस लाठीचाज न करती।

सीटी बजती है। खेल शुरू होता है।

पश्चिम का कप्तान पहले ही मिनट म प्रतिद्वद्वी गोली को मात देता हुआ गोल दाग देता है। सारे स्टेडियम म प्रशसात्मक शोर उभरता है। स्टेडियम क बाहर खडे ऊपर की तरफ निगाह लगाये लोग पूछत है 'गोल ?'

पश्चिम ! पश्चिम !" ऊपर से जवाब आता है। नीचे "पश्चिम जिदाबाद !" के नारे लगन लगते हैं। उत्तजित भीड पश्चिम समथक स्टालो की ओर भागती है और भुनी हुई मछलियो पर टूट पडती है। अगल चौंतीस मिनट खाली चले जाते है। गेंद इधर स उधर, उधर से इधर उछलती रहती है।

क्या हुआ उसके बाद गोल ही नही हुआ !'

तो क्या हुआ, पूरब वाले भी तो कुछ नही कर सके। पश्चिम को हराना आसान नही है। दुनिया की कोई टीम पश्चिम को नही हरा सकती।'

'रहने दो अभी आधा मच बाकी है।'

'देख लना पश्चिम की टीम ही जीतगी '

'जीतेगी, तब देख लेंग।'

क्या देख लोगे ?'

मदान के वाहर भी मैदान है ।"

साला । धमकी देता है ।"

देता हू कर लो जो तुम्हे करना है ।"

बात बन्द हो जाती है । हाथा पाई होने लगती है । हाथा पाई बढ जाती है । चाकू निकल आते हैं । मैदान के बाहर दूसरा मदान है । अन्दर फुटबाल का खेल चल रहा है । बाहर चाकू चलने लगते हैं । सोडावाटर की बोतल चलने लगती है । फटे हुए सिरो और कटे हुए पटो से लहू चलने लगता है

मैदान म खेल चल रहा है । टीमो के सिरे बदल गये है ।

उत्तरार्ध का खेल तीसरा मिनट । पूरब के दल का सटर फारवड अकेले ही गद को लिये लिये पश्चिम के गोल की ओर बढ जाता है । पश्चिम की रक्षक पक्ति देखती रह जाती है । देखते ही देखते गोल हो जाता है ।

दोनो दल बराबर ।

दशको म जबदस्त शोर उभरता है । पूरब के समथको का एक झुड मदान की ओर लपकता है । पुलिस की लाठिया उन्हे वही रोक लेती है । व लोग वही खडे खडे 'पूरब—जिन्दाबाद' के नारे लगाने लगते हैं ।

'एई साला । ऐसा दारुण खेल और लोग कहते हैं हम फुटबाल खेलना नही आता । सब पालिटिक्स है । हम लोगो को न खेलने देने के लिए दुनिया भर की साजिश है ।'

आखिरी दो मिनट ।

लोगो की धड़कन असह्य गति से चल रही हैं । कौन सी टीम गोल करेगी ? कर भी पायगी या नही ? क्या मच बराबरी पर छूटेगा ?

उत्तेजना दशको को मथे दे रही है । य दो मिनट या एक सौ बीस सैकिड य एक एक सकिड म सौ सौ बार मारना गेंद के एक एक उछाल के साथ कठ म उछलकर आता कलजा ओ मा । अब और नही

तभी गद की गति क साथ-साथ मैदान के एक कोने स शोर उठना शुरू होता है और दूसरे कोन तक जा पहुचता है । पूरब के खिलाडी गेंद को बिजली की गति से पश्चिम के गोल की ओर ल जाते हैं । पलक झपकन स पहले ही गोल हो जाता है । पूरे मदान म जसे बवडर आ जाता है । गद फिर मदान के बीचोबीच आती है । रफरी की सीटी के साथ ही पूरब क खिलाडी फिर गद को घेरते हैं और इसस पहले कि लोग कुछ समझ सकें एक गोल और

एक लाख दशको की भीड उछलती कूदती फलागती मदान पर टूट पडती है शोर शोर शोर शोर

मारो ! मारो । पूरब वाले बेईमान हैं ।" 'रफरी उनस मिला हुआ है ।'

रफरी क मुह पर घूस पडते हैं, उसके घुटनो पर भारी बूट पडते हैं वह बेहोश

हो जाता है मैदान के भीतर और बाहर पश्चिम समथकों के आसुओ स धुलते हुए चेहर ।

तीन मरे अड़तीस घायल ।

पश्चिम क्लब की मीटिंग ।

सब लोग सिर झुकाए बैठे है। खिलाड़ियो म से सिफ कप्तान को बुलाया गया है। उससे कफियत ली जाती है। पहल तो वह कुछ नही कहता। फिर कहता है तो सच बोलता है, हम लोग खराब खेले। पूरब वाला न सब मौको का सही फायदा उठाया। हमने अपने मौके खोए।" इतना कहकर वह सिर झुका लेता है। चुपचाप बठ जाता है। अब कहने को कुछ शेष नही है। सुनने को है।

क्लब के व्यवस्थापक घोपाल बाबू एक समाचार पत्र क मालिक है। सपादक भी है। पाइप पीते हैं और सूट पहनते है। धोती कुरते वालो के बीच उनका सूट चमकता है। पाइप का धुआ सबकी आखो को चुभता है। सबकी आखो म पानी है। यह कोई नही जानता पानी का कारण हार का दुख है या पाइप का धुआ।

घोपाल बाबू बोलने क लिए खड़े होते है। पाइप को मुह से हटात हैं। सामने बैठ सदस्यो की ओर देखते हैं। कुछ कहने के लिए मुह खालते हैं, रुक जाते है, फिर मुस्कराकर बैठ जात है। सब लोग उनकी ओर देखते है।

घोपाल बाबू कहत हैं, 'क्लब की प्रतिष्ठा को बहुत बडा धक्का लगा है। इस प्रतिष्ठा को पुन स्थापित करने क लिए कुछ करना होगा।'

'आपक पास कोई सुझाव है ?" सक्रटरी दुस्साहस करत हुए पूछता है।

पहले आप बताइए आपका क्या सुझाव है ?'

मरे खयाल म सारी टीम को बर्खास्त कर दना चाहिए।'

सुझाव चौंकान वाला है। कप्तान की आख एक पल क लिए ऊपर उठती है। फिर झुक जाती हैं। कोच की आख ऊपर उठती हैं, फिर भीग जाती हैं। चेहरा रुआसा हो जाता है माथे पर पसीने की बूदें चुहचुहा आती हैं। उह अपनी मेहनत और नौकरी पर पानी फिरता नजर आता है।

घोपाल बाबू कोच की ओर देखत हैं। कहते हैं 'चटर्जी बाबू, आपको क्या कहना है ?

चटर्जी बाबू माथे का पसीना पाछते हैं। खड होते हैं। फिर पसीना पाछत हैं। बोलने के लिए अपन-आपको तैयार करते हैं। फिर कमी हुई आवाज म कहते हैं सर, मुझे लगता है इस हार को हम इतनी गम्भीरता स नही लेना चाहिए। हार-जीत तो खेल म चलती ही रहती है वह अपनी बात क असर को दखन के लिए इधर-उधर दखते हैं। लोगो की आखो म उह क्षोभ और आश्चय नजर आता है। साफ लगता है व लोग चटर्जी बाबू को पागल समझ रह हैं। चटर्जी बाबू किसी तरह बात पूरी करते हैं, "मुझे विश्वास है पूरा विश्वास है अगल वष हम जरूर विजयी होंगे

घोपाल बाबू पाइप का धुआ बिखरते हुए हलक स सिर झटकत हैं। चटर्जी बाब

कनखियों से इधर उधर देखते हुए बैठ जाते हैं। उन्हें अपनी नौकरी की चिंता है। डर है, कहीं लोग पूरी टीम के साथ साथ उन्हें भी बर्खास्त न कर दें। उनका क्या होगा? उनके छोटे छोटे बच्चों का क्या होगा? वैसे भी उन्हें ये नौकरी एक मंत्री के कहने पर मिली थी। यह नौकरी चली गयी, तो कहीं और जगह भी नहीं मिलेगी।

लेकिन घोपाल बाबू का स्वर उन्हें उबार लेता है।

'टीम का बर्खास्त करने का सुझाव प्रैक्टिकल नहीं है। अभी इसी साल पांच लाख रुपयों से भी ज्यादा में हमने चार खिलाड़ी प्राप्त किये हैं। नयी टीम पर और भी ज्यादा खर्च होगा। वी कांट अफोर्ड!' घोपाल बाबू कहते हैं। पाइप के दो-तीन कश लेते हैं और फिर अपना फैसला सुनाते हैं, "कल एक्स्ट्रा आर्डिनरी मीटिंग में तय किया जायेगा, आगे क्या करना है।'

चटर्जी बाबू चैन की लम्बी सांस छोड़ते हैं। सेक्रेटरी बाबू की ओर तीन सेकिंड तक घूरकर देखते हैं और बीड़ी पान का कुलबुला लगते हैं। बाकी सदस्य कल की मीटिंग के बारे में सोचने लगते हैं। रहस्य उन्हें घेर लेता है।

भास्कर की पूरी जिन्दगी समाचारपत्र के दफ्तर में बीती है। साठ से ऊपर उम्र है उसकी। चालीस बयालीस साल पहले वह चपरासी होकर आया था। आज भी चपरासी है। घोपाल बाबू के केबिन के बाहर बैठता है। दिन भर सोता बतियाता है। किसी तरह का कोई काम करते हुए उसे किसी ने कभी नहीं देखा है। एकदम सींकिया। लगता है उसकी हड्डियों और खाल के बीच किसी तरह की कोई तह नहीं है। घोपाल बाबू दफ्तर में आते हैं तो वह अपनी लकड़ी की कुर्सी से उठकर उन्हें नमस्कार कर देता है। वह केबिन में चले जाते हैं। भास्कर की ड्यूटी खत्म। वह कुर्सी पर पसरकर बैठ जाता है।

खेल विभाग का बड़ा सा कमरा घोपाल बाबू के केबिन से सटा हुआ है। तीस बत्तीस लोग इस विभाग में हैं। भास्कर उन सबके लिए चलता फिरता सूचनालय है।

फुटबाल की दुनिया की कोई भी घटना ऐसी नहीं है, जो उसे मालूम न हो, कोई खिलाड़ी ऐसा नहीं है, जिसकी पूरी जिन्दगी की इच्ची बिच्ची उसे याद न हो।

दस बजे हैं। घोपाल बाबू दफ्तर पहुंचते हैं। भास्कर उन्हें नमस्कार करता है। घोपाल बाबू मुस्कराते हैं फिर केबिन में चले जाते हैं।

भास्कर कुछ बोलने के लिए मुंह खोलता है तभी घंटी बज उठती है। भास्कर का जबड़ा बन्द हो जाता है। वह दूसरे चपरासी प्रभात को इशारा करता है। प्रभात को पता है साहब को काम से ज्यादा मिष्टी अच्छी लगती है। वह हर रोज दफ्तर आते हुए रास्ते से मिठाई का डिब्बा बंधवाकर साथ ले आता है।

मिठाई का डिब्बा लेकर वह केबिन में घुसता है।

भास्कर के मन म कुलबुलाहट हो रही है। वह फुटबाल की बातें करना चाहता है। पश्चिम दल की हार का उस भी अफसोस है। वह उठकर खेल विभाग की ओर चलन लगता है। तभी केबिन का दरवाजा खुलता है। प्रभात बाहर आता है। वह भास्कर की कुर्सी की ओर देखता है। फिर चितातुर हो कारीडोर की ओर गदन घुमाता है। उसे भास्कर की पीठ नजर आती है। वह हाक लगाता है, भास्कर दा।"

भास्कर नहीं रुकता। उसे दफ्तर क किसी काम से कोई सरोकार नहीं है। वह खेल विभाग क कमरे क दरवाजे को धकेलकर भीतर घुस जाता है। प्रभात लपककर उसक पीछे पहुचता है भास्कर दा।

"क्या है ?" भास्कर चिढकर पूछता है।

"घोपाल बाबू आपको याद कर रहे हैं।"

"घोपाल बाबू ?" भास्कर हैरान रह जाता है। खेल विभाग के सदस्य भास्कर की ओर देखते हैं, 'आज तो तुम्हारा फरमान आ ही गया, भास्कर दा।" एक रिपोटर कहता है।

"दुलेन्दु बाबू मेरा फरमान तो मरन के बाद ही आयगा। आप अपनी खैर मनाइए।" भास्कर कहता है और बडे निर्विकार भाव से प्रभात की ओर घूमता है, "चलो मैं आता हू।"

प्रभात लौटकर अपन स्टूल पर बैठ जाता है। भास्कर खेल विभाग के सदस्या स बातें करता रहता है। दुलेन्दु स उसकी खूब लगती है। दुलन्दु एकदम नाटा है और गोल। भास्कर उस अक्सर छेडता है "दुलेन्दु बाबू, बेकेन बावर तुम्हे एक किक लगाये, तो तुम हुगली के पार नजर आओगे

'पेले तुम्ह किक लगाये, तो तुम सीधे आसमान म उठ जाओगे।" दुलन्दु का जवाब होता है।

'पेले को क्या पडी कि वह फुटबाल को छोडकर हडल रेस म दौडने लगे।' भास्कर का जवाब होता है।

बातें कुछ दर चलती रहती हैं। फिर भास्कर को घोपाल बाबू का ध्यान आ जाता है। वह निर्विकार भाव से खेल विभाग के कमरे स निकल आता है और घोपाल बाबू क कमरे की ओर चल देता है।

"सर ! आपने मुझे बुलाया ? भास्कर केबिन म घुसते हुए कहता है।

घोपाल बाबू पाइप को होठो म दबाये हुए आज के अखबार मे छपा अपना सपादकीय' पढ रहे हैं। भास्कर की आवाज पर वह अखबार का मेज पर ही रख देते हैं। पाइप मुह से हटाते हैं और कहते हैं, 'हा, भास्कर दा बैठो'

बठने के लिए आमन्त्रण भास्कर के लिए नया नहीं है। घोपाल बाबू उसकी इज्जत करते हैं। बुजुग होन की वजह स नहीं कम्पनी का सबसे पुराना कमचारी होन की वजह से। भास्कर घोपाल बाबू के स्वर्गीय पिता का भी चपरासी था। उससे भी बडी बात यह है कि वह फुटबाल का इनसाइक्लोपीडिया है। वह दीवार क पास रख सोफे की तरफ देखता है। सोफे पर बठना उसे पसन्द है। वह उसी पर बैठ जाता है।

घोषाल बाबू अपनी कुर्सी से उठकर मेज के दूसरी ओर पड़ी कुर्सी पर आ बैठते हैं। उस भास्कर की तरफ घुमा लेते हैं। बुझे हुए पाइप को फिर ताजा करते हैं और पूछते हैं 'आप जानते हैं भास्कर दा, मैंने आपको क्यों बुलाया है?"

"न मुझे नहीं मालूम" भास्कर कहता है।

'अच्छा, एक बात बताइए भास्कर दा आपकी जिन्दगी की साध क्या है?" घोषाल बाबू पहेली पूछने के से अन्दाज में कहते हैं।

मेरी जिन्दगी की साध? क्या करेंगे पूछकर?

"नहीं भास्कर दा बताइए न!"

'पूरी करेंगे आप सर?' भास्कर कहता है। जी में आता है सर के स्थान पर 'प्रभु' कहे लेकिन वह नहीं पाता।

"क्या पता हो ही जाय 'घोषाल बाबू रहस्यमय अन्दाज में कहते हैं।

भास्कर दा क्षण के लिए आंख बन्द कर लेता है। इस बीच घोषाल बाबू मेज पर पड़े हुए मिठाई के डिब्बे में से संदेश का एक टुकड़ा निकालकर मुंह में रख लेते हैं और उसके बाद पाइप के तीन चार भरपूर कश लेकर गाढ़ा मखमली धुआं उगल देते हैं। उनकी निगाह भास्कर के चेहरे पर टिकी रहती है। शायद वह सोच रहे हैं—क्या भास्कर भी वही सोच रहा है जो मैं सोच रहा हूं?

भास्कर आंख खोलता है बता दूं सर?" वह कहता है।

'हां हां बोलो!"

"फुटबाल सम्राट पेले? एक बार दर्शन हो जाय उनके। जिन्दगी में और कुछ नहीं चाहिए "

मैं भी यही सोच रहा था। पश्चिम क्लब की इज्जत फिर से बनानी है तो पेले को यहां आना ही पड़ेगा।"

'आना पड़ेगा और खेलना पड़ेगा।

"पश्चिम के विरुद्ध उसके क्लब को खेलना पड़ेगा और पश्चिम को अच्छा खेल दिखाना पड़ेगा।'

ठीक बोले, सर किन्तु यह होगा कैसे?"

'जैसे भी होगा होगा।'

घोषाल बाबू तेज-तेज पाइप का धुआं उगलने लगते हैं "पेले आयेगा और खेलेगा " वह बड़बड़ाते हैं।

भास्कर की बुझी धंसी आंखों में एक सपना लहराने लगता है। वह बेचैन हो जाता है। कब आयेगा वह दिन वह पल जब वह फुटबाल सम्राट पेले के दर्शन कर सकेगा और अपने जीवन को धन्य मानेगा!

भास्कर के चले जाने के बाद घोषाल बाबू तुरन्त पश्चिम क्लब के सेक्रेटरी को फोन करते हैं आप अभी चले आइए। हां। इसी वक्त बिना एक भी मिनट की देर किये।'

वह फोन रख देते हैं और योजना बनाने लगते हैं।

घोषाल बाबू की कार सडक पर दौडती जा रही है। पश्चिम क्लब के सक्रेटरी उनके बगल में बैठे हुए हैं। दोनो गम्भीर हैं।

"बोलिए !" घोषाल बाबू चुप्पी तोडते हैं।

'दस बारह लाख का खर्च तो है !" सक्रेटरी बताते है।

"लेकिन मुमकिन है ?" घोषाल बाबू पूछते हैं।

"पेले रिटायर हो रहा है। उसका क्लब जापान म एक मैच खलने वाला है। भारत भी आ सकता है। एक बार उसन कहा भी था एक इटरव्यू म—भारत मे खलने की उसकी तीव्र आकाक्षा है।"

"भारत मे या कलकत्ता मे ?"

"कलकत्ता मे !" सेक्रेटरी फौरन भूल सुधार करता है।

"तब ठीक है। पेले आयेगा। उसका पूरा क्लब आयगा और हमारे क्लब स एक मच खेलेगा खर्च की कोई परवाह नहीं है। दस पद्रह, बीस लाख जितना भी हो !" घोषाल बाबू गरमी भरे स्वर मे कहते चल जाते है 'आप जापान जान की तयारी कीजिए। एक पत्रकार को साथ लेते जाइए। यह मच होना ही है। समझ गय न !"

"जी समझ गया !" सक्रेटरी घोषाल बाबू के स्वर से आक्रात हो उठता है।

तीन दिन बाद अखबार के मुखपष्ठ पर छह-कालमी सुर्खी दिखाई देती है पल कलकत्ते मे खेलेगा !'

लेकिन अखबार घोषाल बाबू का नहीं है दूसरा है। प्रतिद्वद्वी है।

सारे शहर म हलचल मच जाती है। जिस अखबार म खबर छपी है उसका दूसरा सस्करण प्रकाशित करना पडता है।

दुलेन्दु उत्तेजित है और गुस्से म भी। कमाल की बात है ! पल आ रहा है। पश्चिम क्लब के साथ उसक क्लब का मैच होना है और उन्ही को खबर नहीं ! टेढ फुटी टागो पर उछलता हुआ वह खेल सपादक के पास पहुचता है।

' यह क्या तमाशा है, बनर्जी बाबू ! खबर उन तक कस पहुच गयी ? जरूर कही कोई गडबड है !"

बनर्जी बाबू अपना गजा सिर खुजलान लगते हैं। उन्ह आज तक किसी बात की समझ नहीं आयी है। यही नही पता है कि फुटबाल किन नियमो के तहत खेला जाता है—यह तो और भी पचीदा मामला है। मिमियाते हुए कहते हैं "घोषाल बाबू से ही पूछ लो न !"

दुलेन्दु उछलकर घोषाल बाबू के केबिन की ओर बढ जाता है।

दुलेन्दु घोषाल बाबू का चहेता है। काव्यमयी भाषा म फुटबाल मैचो की रिपोट लिखना उसकी खासियत है। मन की सारी उत्तजना, सारा रोमाच भावुकता भर शब्दो म उसकी रिपोट म उतर जाता है। विजयी दल के समथक उसकी रिपोट पढते हैं तो खुशी से झूम उठते हैं। अविजित दल के समथक पढते हैं, तो उन्ह लगता है रिपोट उनके जख्मो पर मरहम का काम कर रही है।

दुलेंदु जब चाहे, घोषाल बाबू के केबिन में जा सकता है। उस पर कोई रोक-टोक नहीं है। वैसे भी घोषाल बाबू ने प्यार से उसका नाम 'मिश्री मावन' रख छोड़ा है।

घोषाल बाबू कुछ लोगों से बातचीत कर रहे हैं। दुलेंदु एक क्षण के लिए ठिठकता है, लेकिन घोषाल बाबू के प्रफुल्लित चेहरे को देखकर आगे बढ़ जाता है।

"माजरा क्या है सर ?" दुलेंदु पूछता है।

घोषाल बाबू उसके सवाल को समझ जाते हैं। कहते हैं "क्या बुरा है ? ये लोग हमारी पब्लिसिटी ही कर रहे हैं। फायदा हमें होगा।"

"फायदा उनको भी होगा। उनका सर्कुलेशन बढ़ेगा।" दुलेंदु चिंतित स्वर में कहता है।

'उसका मुकाबला कैसे करना है उसकी चिंता तुम्हें नहीं होनी चाहिए। मैंने सब सोच रखा है पंद्रह बीस मिनट बाद मेरे पास आ जाओ। मैं सब समझा दूंगा।"

दुलेंदु बाहर चला जाता है।

पंद्रह-बीस मिनट बाद दुलेंदु फिर घोषाल बाबू से मिलने आता है। अब घोषाल बाबू अकेले हैं। उनके सामने तीन चार किताबें रखी हुई हैं।

घोषाल बाबू किताबों को दुलेंदु की ओर सरका देते हैं। "ये पेले की जीवनियां हैं लेटेस्ट विद ब्यूटीफुल फोटोग्राफ्स कल के पेपर में एक बड़ा-सा अनाउंसमेंट जायेगा हम पेले की सचित्र जीवनी धारावाही रूप से प्रकाशित करेंगे।' परसों से जीवनी छपनी शुरू हो जानी चाहिए एंड इट मस्ट बी ए मास्टरपीस राइट !"

दुलेंदु की आंखें घूम जाती हैं "एब्सोल्यूटली राइट !"

तस्वीरें आज ही कॉपी करवा लो '

"ओके।" दुलेंदु किताबें उठाकर बाहर आ जाता है।

तीसरे दिन से ही घोषाल बाबू के अखबार में पेले की सचित्र जीवनी का प्रकाशन शुरू हो जाता है—मुखपृष्ठ पर, छह-कालमी शीर्षक के साथ। अखबार हाथों-हाथ बिक जाता है। हॉकर अतिरिक्त प्रतियां मांगते हैं, अतिरिक्त प्रतियों के प्रकाशन के लिए मशीन खाली नहीं है। हॉकर क्रुद्ध हो उठते हैं। जो लोग अखबार की प्रति प्राप्त करने से वंचित रह गये हैं, वे दफ्तर के बाहर भीड़ लगा देते हैं। देखते ही-देखते भीड़ नारे लगाने लगती है। नारे आक्रोश में बदल जाते हैं। आक्रोश पथराव में। दफ्तर के बाहर खड़ी एक कार के शीशे तोड़ दिये जाते हैं। आखिर पुलिस आती है। लाठी चार्ज करती है तब कहीं भीड़ तितर बितर होती है।

घोषाल बाबू प्रेस और सर्कुलेशन विभाग को निर्देश देते हैं—"कल से अखबार की प्रतियां दुगुनी प्रकाशित की जायें।' मुद्रक महोदय भागे चले आते हैं। आते ही कहते हैं, ' इतना न्यूज प्रिंट कहां से आयेगा, घोषाल बाबू ?

' गोदाम में नहीं है ?' ' घोषाल बाबू पूछते हैं।

है लेकिन वह तो पूजा विशेषांकों के लिए रखा हुआ है।"

उसी को इस्तेमाल कीजिए। पूजा विशेषांकों के लिए बाजार से खरीद लिया जायेगा।"

मनवराये हुए स्वर मे अपने साथियों से कहते हैं, "प्रधान मन्त्री को आना हो, तो सड़कों की मरम्मत नहीं होती। पेले के आने से होती है। हर साल एक पेल को यहां आना चाहिए।"

"पेले रोटी नही दे सकता मुख्याजी बाबू!" गले मे पेंडेंट लटकाये, कमीज के सारे बटन खोले बैठा भूखी' पीढ़ी का प्रतिनिधि युवक आलाक गुह कहता है।

"रोटी कौन देता है?" मुखोपाध्याय बाबू गुर्राते हैं।

"रोटी माओ देता है!" गुह चिंघाड़ता है।

"रोटी चाहे माओ देता हो, शराब तो तुम लोगो को सेठिये देते हैं तुम्हारा मुह बन्द रखने के लिए!"

गुह और उसके साथी मुख्याजी बाबू पर गिलास चला देते हैं। गिरहबान पकडकर नीचे गिरा लेते है। मुख्याजी बाबू का सिर फट जाता है।

पेले आ रहा है! पेले आ रहा है!

पूरे शहर म एक ही शोर है।

दीवार पोस्टरों से भर गयी है। सड़कों पर बनर लग गये है।

दुले दु भास्कर से पूछता है "भास्कर दा। तुम्हे पले के दर्शन हो जायें, तो तुम्हे कैसा लगेगा?"

"आ मा! मैं मैं तो मर ही जाऊंगा!" भास्कर अपने सीने पर हाथ रखकर *आह भरता है, "किन्तु हमारा भाग्य कहां?"*

पेले आ रहा है! पेले आ रहा है!

पूरे शहर म पेलिया' फैला है।

यह पेलिया' फलाने का श्रेय बहुत कुछ प्रतिद्वंद्वी अखबार को है, जिसका संवाददाता दिब्ये दु हर रोज पेले से सम्बन्धित समाचार 'भेज' रहा है, 'इंटरव्यू' भेज रहा है—आज टोकियो से आज मनीला से आज यहा से आज वहा से। वह पाठकों को बता रहा है, पेले के सिर म कितने सफेद बाल हैं, उसकी मुस्कराहट कितने मिलीमीटर की है, वह नाश्ते खाने मे क्या खाता है, कितने घंटे कितने मिनट सोता है कैसे कमरे म सोता है किसके साथ सोता है उसकी टूथपेस्ट कौन सी है, ब्रुश कौन-सा है, उसके कितने दांत गिर चुके हैं उसे कौन सी मिठाई पसन्द है

दिब्ये दु की यात्रा' पेले के साथ चल रही है।

व्यापार सम्बन्धी समाचारपत्र का न्यूज एडीटर विजय भाटिया अपने साथी माधवन से कहता है, *"अजीब लोग हैं यार मुझे दिल्ली म बैठी अपनी प्रेमिका की याद आ रही* है। आज ही ट्रांसफर के लिए बात करूगा"

माधवन को मालूम है विजय भाटिया की दो ही कमजोरियां हैं—एक उसकी प्रेमिका, दूसरी एक मिठाई—खीरकदम।

"खीरकदम किदर मिलेगा तुमको उदर?" माधवन छेड़ता है।

"अब खीरकदम का भी चाम नही रहा, यार!" विजय भाटिया कहता है, "मे

लोग तो उसका नाम भी बदलकर पेलेक्दम कर देंगे !"

अस्सी हजार टिकट देखते देखते बिक गये हैं।

जगह जगह चर्चा है—मैच का एक टिकट लाइए—टी० वी० सेट ले जाइए।

टी० वी० सेट लेने वाले कहीं नजर नहीं आते।

पेले अपने दल के साथ हवाई जहाज से उतरता है। लाखों लोग हवाई अड्डे के बाहर हैं। उनकी हर्ष ध्वनि उभरती है, पेले अपनी बच्चों जैसी निश्छल मुस्कराहट बिखेरकर, हाथ जोड़कर, नमस्कार करता है।

हजारों फ्लैश बल्ब चमकते हैं।

पत्रकार पेले को घेर लेते हैं। सैकड़ों सवाल एक साथ बमबारी की तरह पेले के कानों में टकराते हैं।

हजारों सवालों का एक ही जवाब देना है, "मेरी एक ही साध थी—भारत में खेलना। वह भी इस नगर के लाखों लोगों के सामने खेलना वह साध अब पूरी होगी "

वह भाव विह्वल है। उसकी आंखों में पानी है। उसकी आंखों में पानी देखकर लाखों लोगों की आंखों में पानी आ जाता है।

होटल तक पहुंचने में उसे पांच घंटे लग जाते हैं। भीड़ रास्ता ही नहीं छोड़ती। हाथ जोड़ते जोड़ते पेले के हाथ थक जाते हैं। आंखें आंसुओं को रोकते रोकते लाल हो जाती हैं। भीड़ पर पुलिस की लाठियां बरसती हैं। सौ से ज्यादा लोग अस्पताल पहुंच जाते हैं।

होटल में पेले के लिए सबसे बढ़िया सुइट सुरक्षित है। साथ ही दो परिचारिकाएं।

दूसरे दिन प्रतिद्वंद्वी अखबार में दोनों परिचारिकाओं के इंटरव्यू छपते हैं। दोनों निहाल हैं। उन्होंने इतना प्यारा आदमी आज तक नहीं देखा है।

होटल के बाहर, सामने और सड़क पर के फुटपाथ पर वे अभागे लोग जमा हैं, जिन्हें मैच का टिकट नहीं मिला है। वे इस उम्मीद में यहां डेरा जमाए हुए हैं कि पेले निकलेगा तो उसकी एक झलक तो उन्हें मिल ही जायेगी। खोमचे वाले यहां बार बार आ जाते हैं। पुलिस उन्हें मार भगाती है। वे फिर फिर आ जुटते हैं।

मास्टर उन्मत्त सा घूम रहा है। घोषाल बाबू ने एक टिकट उसे भी दे दिया है। टिकट मिलते ही उसे ऐसा लगा था, जैसे वह मैच का टिकट न हो, सीधे स्वर्ग का टिकट हो। उसने उसे संभालकर रख लिया है।

दफ्तर के लोग परेशान हैं। फोन पर फोन आ रहे हैं। टिकट चाहिए। टिकट या तो बिक चुके हैं या बंट चुके हैं। फोन वही लोग कर रहे हैं जिन्हें टिकट नहीं मिले हैं। [illegible] मिलने से निराश होकर वे नाराज हो जाते हैं। घोषाल बाबू एक एक करके [illegible] दस बारह के सौ टिकटों को बांटने जाते हैं। आखिर विज्ञापनदाताओं की नाराजगी [illegible] किया जा सकता। यही नाराज हो गए तो अखबार कैसे चलेगा?

विजय भाटिया मास्टर से कहता है [illegible] मास्टर दा आप टिकट [illegible]

हजार का टी० वी० ले आइए।"

टी० वी० से क्या होगा ?"

'टी० वी० बेचकर बेटी की शादी कर दीजिए "

शादी हो जायेगी।'

तो अच्छा घर ले लीजिए।'

नहीं चाहिए।

पूरे शहर में 'पेलिया' फैला है।

कल मैच होना है। आज आसमान बादलों से भरा हुआ है। बीच बीच में बौछार पड़ जाती हैं। मौसम विभाग का अनुमान है कल भी बादल छाये रहेंगे और गर्जन के साथ बौछारें पड़ेंगी।

फुटपाथ पर बैठा चना मूड़ी वाला, लिफाफे में मूड़ी डालते समय ग्राहक से कहता है हमारी सरकार भी पागल है एकदम। अब इनसे कोई पूछे, साहिब! यह भी कोई मौसम है विदेशी टीम बुलाने का।

ग्राहक पुड़िया छोड़कर चला जाता है।

दुलदुल भागता है। उसके चेहरे पर चिन्ता की रेखाएं स्पष्ट हैं। वह धड़धड़ाता हुआ घोषाल बाबू के कमरे में घुसता है। अन्दर पहले ही लोग जमा हैं।

घोषाल बाबू पाइप का धुआं उगलते हुए चिंघाड़ रहे हैं "बारिश आये, तूफान आये कुछ भी हो मैच होगा।

'लेकिन सर।' कोई बीच में बोलने की कोशिश करता है।

नो नो वी काण्ट अफोर्ड इट बिग मनी इज इन्वाल्ड, प्रेस्टिज इज इन्वाल्ड। वी काण्ट अफोर्ड टू हैव रेन टुमारो।

मीटिंग बर्खास्त हो जाती है। लोग बहस करते हुए बाहर निकलते हैं बारिश को कैसे रोका जा सकता है? कोई सिरफिरा कहता है क्या पैसे से इन्द्रदेव को नहीं खरीदा जा सकता?' सब लोग उसका मुंह देखने लगे हैं।

मैच का दिन।

मैदान के भीतर एक लाख दर्शकों की भीड़। मैदान के बाहर कई लाख की। पश्चिम और विदेश के दल के बीच मैच। आसमान में बादल। रोशनी नदारद। ऊपर से झरती हुई झींसी।

मैदान के भीतर और बाहर एक शोर।

एक शोर आसमान छूने लगता है। लोगों का स्वर उभरता है— पेले! फुटबाल सम्राट पेले!

मैदान के भीतर नौ दर्शकों का हार्ट फेल हो जाता है।

बाहर खड़े लोग आह भर लेते हैं।

मैच शुरू होता है। मैदान में बारिश के कारण फिसलन है। नौ मिनट तक गेंद

इधर-उधर उछलती रहती है। पेले के घुटन पर पट्टी बधी है। वह टोकियो मे घायल हो गया था। फिर पेले रुक जाता है। उसके लिए खेलना सम्भव नही है। वह भाग कर पूरे स्टेडियम का चक्कर लगाता है। लोगो की तरफ देख कर मुसकरात हुए हाथ हिलाता है। लोग हषध्वनि करते चले जात हैं।

मैदान का चक्कर लगाने के बाद पले ड्रेसिंग रूम म चला जाता है।

सडक पर घटिया हाल रेडियो पर मैच का आखा देखा हाल सुनन वाले कहत हैं, "ह स्साला ! नो मिनट के लिए इतनी बरबादी ! साला, मूख बना दिया !"

मैच दो दो गोल स बराबर समाप्त होता है। पश्चिम दल की प्रतिष्ठा पुन स्थापित हो जाती है।

घोषाल बाबू खुश हैं, कहीं कोई गडबडी नही हुई।

भास्कर के घर म सन्नाटा है।

पले को देखत ही सचमुच उसके प्राण-पखेरू मदान म ही उड गय थे।

खूनी मैच

जे० माइखोलोवा

कीव को अपने अधिकार म लेने के बाद जमनो न वहा क जिन निवासियो को बदी बनाया, उनमे रूस की विश्व विख्यात फुटबाल टीम डायनेमो' के खिलाडी भी सम्मिलित थे। इन खिलाडियो को एक बकरी म मामूली मजदूर की हैसियत से काम करने पर मजबूर किया गया था। वे भले ही लाचारी म मजदूर बन गए थे पर थे तो मूलत फुटबाल खिलाडी ही, और वह भी श्रेष्ठतम खिलाडी। इसलिए मजदूरी के घटो के बाद वे बेकरी के पास के एक मैदान म जाकर आपस म फुटबाल खेलते। मगर खेलते समय उनके मन म यह भय बराबर बना रहता था कि कही जमनो को उनके खेल के बारे म पता न चल जाये। पता चल जायगा तो उन्हे पूरा विश्वास था कि वे उनका खेल फौरन ब द करवा देगे।

जमन अधिकारी कीव के साधारण निवासियो का विश्वास जीतने के इच्छुक थ। उनकी योजना थी कि इन खिलाडियो के जरिये यह विश्वास जीता जा सकता है। उन्होने एक दिन रूसी खिलाडियो को बुलाकर कहा 'आप लोग उस मदान म छिपकर फुटबाल क्यो खेलते हैं?'

कुछ नही यूही वक्त गुजारने के लिए '

हम जमन लोग भी फुटबाल के शौकीन है और आप जसे नामी और अनुभवी खिलाडियो से खेल की बारीकियो को जानने के इच्छुक है। अगर आप लोग तयार हो तो बडे फुटबाल स्टडियम म कीव के लोगो के सामने हम जमनो से मच खेल सकते है। इस तरह हम जमन आप लोगो से ऊचे दर्जे की फुटबाल खेलना सीख सकेंगे। हम आप लोगो को अपना फुटबाल गुरु मानने को तैयार हैं।'

रूसी खिलाडी चकित होकर एक दूसरे का मुह ताकने लगे।

आप लोगो के डरने की कोई जरूरत नही है। आप निडर होकर खलिए। हम हराने की पूरी कोशिश कीजिए। हम भी आपको हराने की पूरी कोशिश करेंगे।' एक जमन अधिकारी ने उनके मन का डर दूर करने की कोशिश की।

ठीक है आप पहले मच की तारीख तय कीजिए। हम आपसे मच खेलने के लिए तैयार हैं।' डायनमो के कप्तान ने जमन अधिकारी से कहा।

उसी शाम मदान म जमा होकर सभी रूसी खिलाडियो न फसला किया कि वे

'स्टाट' नाम की एक नयी टीम बनाकर जमना के खिलाफ खेलगे, और उन्हे हरान की पूरी कोशिश करेग। उन्हान नयी टीम का 'डायनमो' नाम नही दिया क्योकि वे 'डायनमो' की श्रमार्जित प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखना चाहते थे।

12 जून 1982 के दिन हजारो कीव निवासियो के सामने फुटवाल स्टडियम मे पहला मैच हुआ, 'स्टाट और जमना के बीच। जमन सैनिका म स जा जमन टीम मे शामिल हुए थे, उन्ह दूसरी श्रेणी के फुटवाल मैंचो म खेलन का पयाप्त अनुभव था। डायनमो' जैसे प्रथम श्रेणी के खिलाडियो से जूझने के लिए वे पूरी तैयारी करके पूरे आत्मविश्वास के साथ मैदान म उतरे थे।

लेकिन मैच शुरू होत ही, रूसी विजेता और जमन विजित खिलाडी बन गये। पहला गोल मच के पहले ही मिनट म हो गया। जमन टीम अन्त तक एक भी गोल न कर सकी और शून्य सात गोलो से पराजित हुई। जमन इस हार से बहुत खिन्न हुए, और उनकी यह खिन्नता तब और बढ गयी, जब उन्होने देखा कि कीव के दशक मैच के अन्त मे अपने खिलाडिया की जय जयकार कर रहे है।

लगभग एक महीने तक तैयारी और अभ्यास करन के बाद जमनो न एक नयी टीम खडी की, जो रूसियो से अपनी पहली हार का बदला लेन के लिए कटिबुद्ध थी। 'स्टाट' के खिलाडियो ने भी पूरी तैयारिया की, क्योकि व जमना की दढ सकल्प शक्ति और फुटबाल कौशल से भली भाति परिचित हा चुके थे।

17 जुलाई का जब फुटबाल-स्टेडियम म दूसरा मैच आरम्भ हुआ तो जमन टीम के कप्तान ने रूसी खिलाडियों को सुनाकर कहा, ' तुम सबको अपन प्रिय नता हिटलर की सौगध है साथियो ! आज इन गुलाम रूसिया के दात खट्टे करके ही वापस लौटना है हेल हिटलर !"

लेकिन, 'डायनेमो' के जोशीले और कुशल खिलाडिया क सामने जमन खिलाडियो की एक न चल पायी। वे रूसियो पर गोल करना तो दूर, उनके मध्यार्द्ध म प्रवेश करने मे भी असफल रहे। इस बार व शून्य छह गोलो के स्कार से हारे।

मैच की समाप्ति पर जब जमन कप्तान अपने कप म वापस आया, तो उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। उसने अपने खिलाडियो को याद दिलाया कि वे मानवा मे सर्वोच्च आय जाति के सन्स्य है। भला ऐसा कैसे हो सकता है कि वे उन लोगो से खेल के मैदान मे हार जायें, जिन्हे उन्होने लडाई के मैदा मे हराया है।

तीसरा मैच दूसर मैच के दो दिन बाद ही अर्थात 19 जुलाई को रखा गया। इस बार जमन टीम पूरे इराद के साथ खेलने के लिए आयी। लेकिन उनका खेल-कौशल उनके इरादो की बराबरी न कर पाया। हा अपन इरादे के बल पर उन्होंने इस मैच शृखला म पहली बार रूसियो पर एक गोल करन मे सफलता प्राप्त की। पर वे एक पाच से हारे।

जब इस मैच का वणन जमन पत्रो मे प्रकाशित हुआ, तो उन्होंने लिखा "रूस के दास खिलाडियो ने तीसरी बार विजेता जमन टीम को बुरी तरह हराकर जमन टीम

का ही नही, सारे जमन राष्ट्र और उसके अधिनायक हिटलर का अपमान किया है। और, इस अपमान का बदला लिया जाएगा।"

एक सप्ताह बाद, अर्थात 26 जुलाई को, जमना न रूसिया के साथ चौथे फुटबाल मैच की घोषणा की, जमना की ओर स यह जोरदार प्रचार किया गया था कि इस मैच म जीत जमना की ही होगी।

इस मच म जमनो का प्रदशन वाकई म उनके पिछले प्रदर्शनों से बेहतर रहा। फिर भी, व एक गोल स तो हारे ही। रूसियो को हराने म वे पूरी तरह असफल रहे। पर जमन खिलाडिया म अब यह विश्वास जाग गया था कि वे शीघ्र ही रूसिया को पराजित कर सकेंगे, क्योंकि अब उनके और रूसिया के प्रदशन का स्तर लगभग एक सा ही हो गया था।

6 अगस्त को पाचवें मैच म जमन लोग इस पक्के इरादे के साथ मदान म उतरे थे कि इस बार उनकी विजय निश्चित है। लेकिन, उधर 'स्टाट' के खिलाडियों के मन में भी यही एक दृढ निश्चय काम कर रहा था।

जब इस मैच मे भी जमना का हार का कडवा घूट पीन का बाध्य होना पडा, तो उनके उच्च सनाधिकारिया ने एक लिखित आदेश जारी किया कि 'स्टाट' टीम के सब खिलाडियो को गिरफ्तार कर, जेल म डाल दिया जाय। उनक खिलाफ यह जुम था कि उन्होंने अपने विजेताओं को फुटबाल के कई मच म हराकर उनका अपमान किया है।

लेकिन बाद म, आपस मे विचार विमश करके उन्होंने यह निश्चय किया कि चलो, इन खिलाडियो को जीवित रहन का एक और अवसर प्रदान किया जाए। हा यदि इस अंतिम मैच म भी उन्होंने अपने विजेताओं का हराने की कोशिश की, तो उन्हें जिन्दा नही छोडा जायेगा।

यह बात रूसी खिलाडिया को बुलाकर साफ भी कर दी गई स्पष्ट और बेलाग शब्दों म।

रूसी खिलाडियो ने इस 'मृत्यु दड' को सुनकर कुछ नही कहा। मगर जब वे अपनी बरको म वापस लौटे, तो सबने यही निश्चय किया हुआ था मर जाएगे लेकिन जमनो को मच नही जीतने देंगे। हा, बेहतर खेल कौशल का प्रदशन करके जमन उन्हें हरा दें तो बात अलग है। लेकिन, जान-बूझकर व उनसे मच नही हारेंगे। टीम के किसी भी खिलाडी के मन म एक क्षण के लिय भी यह खयाल नही आया कि जमना की बात मानकर अपने प्राण बचा लिये जायें।

9 अगस्त को दोना देशा म आखिरी मैच शुरू हुआ।

मैच शुरू हुए एक मिनट ही बीता था कि स्टाट के रूसी खिलाडियो ने जमन गोलकीपर को चकमा देकर जमनो पर एक गोल दाग दिया। मध्यान्तर तक जमनों ने इस गोल को उतारा की बहुत कोशिश की लेकिन नाकाम रहे। हा उन्होंने अपने ऊपर कोई और गोल नही होने दिया।

मध्यान्तर के दस मिनटों में एक उच्च जर्मन सेनाधिकारी ने रूसी खिलाड़ियों के पास जाकर उन्हें फिर समझाया कि यदि इस मैच के अन्त में भी जर्मनी को पराजय स्वीकार करनी पड़ी तो रूसी खिलाड़ियों को इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे और उनमें से किसी को भी जीवित नहीं छोड़ा जायेगा। लेकिन, इस धमकी का रूसी खिलाड़ियों पर उल्टा ही प्रभाव हुआ।

अंपायर जर्मन था। वह अपने अधिकारियों के आदेश का पालन करके अपनी टीम के खिलाड़ियों के हर 'फाउल' की अनदेखी कर रहा था। रूसी खिलाड़ी इस बात से अप्रसन्न थे, लेकिन कुछ कर नहीं सकते थे। मगर जब जी-तोड़ कोशिश करके उन्होंने जर्मन टीम पर सीधा गोल कर दिया तो अंपायर के पास इस गोल को मानने के अलावा कोई और उपाय नहीं था। मैच के अन्त में जर्मनी दो गोल से पराजित हुआ। जब रूसी दर्शकों ने अपनी टीम की शानदार विजय पर तालियां बजानी चाहीं, तो जर्मन सैनिकों ने राइफल दिखा कर उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। वे चुपचाप चले गये।

एक घंटे बाद, सब रूसी खिलाड़ियों को एक ट्रक में बैठने का आदेश मिला। ट्रक कुछ किलोमीटर दूर स्थित एक स्थान में पहुंचा जहां उन सबको एक लाइन में खड़ा करके, गोलियों से भून दिया गया।

खेल

शांता राम

महाविद्यालय में खेल, नाटक, व्याख्यान और प्रेम सभी चालू रहते हैं। परन्तु इस तरह की धुन केवल विद्यार्थियों की रहती है न कि अध्यापकों की। और अगर वह लोग इन नवयुवकों के साथ शामिल भी होते हैं तो केवल एक कर्त्तव्य-बोध में ही, किसी शौक के कारण नहीं।

खेल की जिन प्रतियोगिताओं के कारण भर विद्यार्थी पागल-से हो उठते हैं उनमें से बहुत सी तो मैं देख भी नहीं पाता और यदि देखी भी तो ध्यान नहीं रहता। बच्चे आकर सारी रिपोर्ट दे जाते हैं। कौन सी टीम जोश में है, कौन-सा खिलाड़ी इस बार फॉर्म में है, या किस लड़की की किस लड़के के बारे में क्या राय है। तब मैं केवल सुनता हूं और भूल जाता हूं।

इसीलिए हमारे कालेज में जिस टेनिस प्रतियोगिता को लेकर सारे बच्चे पगलाने तक की स्थिति में थे मुझे कुछ भी पता नहीं था। उधर टेनिस कोर्ट पर गेमों की झड़ी लग रही थी। अपने प्रिय खिलाड़ी पर लोग शर्त लगाते जा रहे थे, जीतते जा रहे थे, हारते जा रहे थे। लड़कियां खुश थीं, कक्षाओं में उनकी उपस्थिति कम होती जा रही थी। फिर भी मैंने कोर्ट की ओर झांका तक नहीं। प्रतियोगिताओं के परिणाम मुझे कोई भी सुना जाता था। वैसे इसकी मुझे खास उत्सुकता भी नहीं थी। हमेशा के दृश्यों को देखकर प्रभावित होने की मेरी उम्र अब नहीं रही थी। अन्य बुजुर्गों की तरह मुझे लग रहा था कि हमने अपने समय में बहुत कुछ देखा है। आजकल रखा ही क्या है खेलों में! आज खेलों में न तो वह निपुणता या कौशल ही रहा है, और न ही रहा वह पुराना वैभव। बचा है सिर्फ एक शोर, एक ऊधम, बची हैं केवल बचकानी हरकतें।

टेनिस कोर्ट पर मैं कभी न गया होता यदि बच्चों ने मुझसे बार बार आग्रह न किया होता। वे कहने लगे, सर इस बार के खेल आपको जरूर देखने चाहिए। एक बार कृष्णन का खेल जरूर देखिए तभी आपको हमारी बात का विश्वास होगा। हम शर्त लगाते हैं इस बार की उसकी तैयारी देखकर आपको जरूर आश्चर्य होगा।

अनुभवों की कमी के कारण नवयुवक अक्सर कोई नयी चीज या नया अनुभव पाकर बौखला जाते हैं और नासमझी में अपनों से तुलना खोकर उसे महत्त्व देने लगते हैं। यही सोचकर मैंने विद्यार्थियों के कहने की ओर पहले तो ध्यान ही नहीं दिया, जब

सहपाठी भी यही कहने लगे, "कृष्णन का फॉर्म देखा है आपने ? आश्चर्यजनक है भई उसका काम ! क्या चपलता, क्या अचूकता, क्या फुर्ती, क्या सहजता ! एक बार अवश्य देखिए, उसका खेल असाधारण है । यह लडका बहुत तरक्की करेगा ।" चारो ओर से कृष्णन के खेल के चर्चे सुनाई देने लगे तब सोचा अब तो उसका खेल देखना ही होगा ।

कृष्णन का खेल देखने के बाद मुझे लोगो की बातों मे सच्चाई नजर आयी । बहुत सारे वर्षों के बाद फिर से एक असाधारण कौशल कृष्णन के रूप मे खेल के मैदान पर प्रकट हुआ था ।

हा फिर से एक बार ! चन्दू लिमये के कॉलेज छोडने के इतने वर्षों बाद भी मुझे उसकी याद आना स्वाभाविक था । चन्दू लिमये कॉलेज म मेरा आदर्श था । उस समय की कितनी ही यादे, घटनाए, कितने ही तरह सम्बन्ध, कितनी ही बातें, गलत-फहमिया अभी मेरे मन मे कौंध गयी हैं । चन्दू की स्मृति का स्फटिक मेरे मन मे उसी तरह चिपका हुआ है । उस स्फटिक का आकार, सौन्दर्य उसके सारे पहलू, कोण सभी मेरे मन से उसी तरह चिपके हुए हैं । उसका विनम्र स्वभाव, पढाई के प्रति उसकी लापरवाही, एक लेखक जिस सहजता से गद्य पद्य के विविध पहलुओ पर हाथ फेरता है और उन पर अपनी छाप डालता है उसी तरह प्रत्येक खेल मे उसकी सहज प्रवीणता, चपलता कौशल और साथियो को दीवाना बनाये रखने की उसकी क्षमता, सभी मुझे साफ साफ याद है । लडकियो म तो उसने अपने लिए दीवानगी पैदा कर दी थी । इसी दीवानगी न उसे फसा दिया ! खैर जाने दो । पुरानी बातो को दुहराने से कोई लाभ नही होता लेकिन बुरा लगता है कि यदि चन्दू लडकियो की ओर से सावधान रहता तो आज के जजाल में न फसा होता । पर आज यह विचार मन म लाना ठीक नही, कुछ भी हो, वह आज उसकी धर्मपत्नी है ।

उन दिनो लडके लडकियो के साथ ही विरोधी दल के खिलाडी भी चन्दू पर मुग्ध थे । दूसरो को अनुशासन के लिए डाटने वाले प्राध्यापको और प्रिंसिपल ने चन्दू को सब माफ कर दिया था । जिस किसी न भी चन्दू के साथ साधारण विद्यार्थी की तरह व्यवहार किया उसे पछताना पडता था । दर्शन की कक्षा म एक बार ऐसा ही हुआ था । पता नही चन्दू न विषय के नाम पर 'दर्शन शास्त्र' क्या लिया था । पर कोई भी विषय लेना जरूरी होने के कारण शायद उसने 'दर्शन शास्त्र' को चुना होगा । उसके लिए तो सभी विषय बराबर थे । हा, उसके सही विषय थे टेनिस, हाकी, क्रिकेट । विश्वविद्यालय के नियमो की पूर्ति के लिए ही वह कक्षा म अलिप्त भाव से बैठता था । बाकी उसकी सारी बातें, परीक्षा और परिणाम देखने क लिए हमारी जैसी मित्र मण्डली तो थी ही । प्राध्यापक और प्रिंसिपल भी थ । चन्दू की जिम्मेदारी थी सिर्फ खेलना और कॉलेज का नाम रोशन करना । 'दर्शन शास्त्र' के प्राध्यापक शायद इस बात को भूल गये थे, और उन्होंने चन्दू को उनके प्रश्न का उत्तर न लाने के कारण कक्षा म बाहर कर दिया था । सारी कक्षा उसके साथ थी और परिणामस्वरूप प्रिंसिपल न प्राध्यापक को ही फटकारा ।

चन्दू का जादू हम पर बुरी तरह हावी था । कॉलेज की कन्याओं के नखरे,

हमेशा याद करता रहा हूं और उसके चर्चे हमेशा विद्यार्थियों के सामने करता रहा हूं। मेरे सहयोगी और मित्र मेरी इस धुन का मजाक उड़ाते थे। मैं भी यह महसूस करता था कि इस पागलपन को कम करना चाहिए, लेकिन इसे रोकना मेरे बस की बात नहीं थी।

कृष्णन का खेल दखते देखते चन्दू के साथ का सारा अतीत मेरी आखो के सामने आ गया। मेरे उसके विषय म छात्रा से कहते ही वे कहने लगे, "सर, आप उनके विषय म इतना कहते ही रहते हैं, कम से कम एक बार दिखा दीजिए हमे उनका खेल।"

मैंन कहा, "यह कसे सम्भव है? इतिहास केवल कहा जा सकता है दिखाया नही जा सकता।'

"उसम क्या मुश्किल है सर? सारा इतिहास यदि हम न भी देख पायें तो भी उसकी थोडी सी झलक देखना तो असम्भव नही है। अन्तिम प्रतियोगिता म उपस्थित रहकर उनके हाथो विजेता को पुरस्कार दिलवाया जा सकता है। और उसी विजेता के साथ एक खेल भी खिलाया जा सकता है। आप इस सन्दभ मे उन्हे पत्र लिखिए। वे कितने भी बडे अधिकारी क्यो न हो, हैं तो हमारे कालेज के भूतपूव विद्यार्थी ही। उनके सामने इतनी प्राथना करने का हमारा अधिकार अवश्य है। आप उन्हे अवश्य लिखिए।"

"उन्हे समय नही मिलेगा।" मैंने कहा।

"आपन यदि लिखा तो वे जरूर समय निकाल लेंगे।"

"यदि तुम लोगो को उन्होने निराश किया तो मुझे दोष मत देना।"

"पहले आप लिखिये तो सही सर!"

नापसन्दगी के बावजूद छात्रो को निराश करना मुझे ठीक नही लगा इसलिए, चन्दू से आजकल कोई सम्बन्ध न होने के बाद भी मैंने उसे पत्र लिखा और उस समय मैंने महसूस किया कि यादो का धागा प्रत्यक्ष बधन के लिए कम पडता है।

पत्र लिखते समय यही सोचता रहा कि मन मे आत्मीयता होन के बाद भी हमारा व्यवहारिक सम्बन्ध कई वर्षों से टूट चुका है। लिखते समय मेरे मन मे शका घर कर रही थी कि चन्दू का विवाह मुझे पसन्द नही था और यह नापसन्दगी मैंने उसे स्पष्ट रूप से दिखायी थी। समय बीतन के बाद भी यदि उसन पुराने बैर भाव को न भुलाया हो तो? पर मैंने उसे पत्र लिख ही डाला उस पर अपना पुराना अधिकार समझकर।

चन्दू न तुरन्त उत्तर दिया। उसे मेरे पत्र से खुशी हुई थी और पुरानी यादो ने उसे पुन पुलकित किया था जिसे उसन विस्तार से मुझे लिखा था। लेकिन मेरे पत्र की प्रमुख माग को उसन सखेद इनकार कर दिया। इन दिनो अपन न खेलते रहने के कारण वह मेरा निमन्त्रण स्वीकार नही कर सकता था। पत्र पढकर मैं चिढ गया। मुझे उसके शब्दो म झूठ, बनावट और कपट नजर आया। और मैं तिलमिला उठा। मैंन मारे क्रोध के उसके दिखावे की पोल खोलने वाला दूसरा पत्र लिखा। मैंन सोचा, मैं तो उसे आत्मीय समझता हू पर उसके मन म मेरे लिए, अपनी पुरानी सस्था के लिए कोई लगाव नही है तो फिर मैं ही क्यो उसे सहेजता रहू! घर म बहुत दिना स जमा रद्दी के के कबाडे को जिस तरह एकदम से बेच दिया जाये, उसी तरह मैंन अपने मन का सारा

मेल निकालकर उस लिख लिया और अपनी भड़ास निकाल ली। मैंने स्पष्ट लिख दिया कि उसमें पुराने साथी की कोई परवाह नहीं, प्रिंसिपल तथा प्राध्यापकों के प्रति कोई सम्मान नहीं। यहाँ तक कि जिस संस्था में उस पढ़ा, उसके प्रति भी कोई कर्तव्य का भाव नहीं। जिन खेलों के कारण आज वह इतना प्रतिष्ठित है उनके प्रति भी कोई भावना नहीं। वह जानता है सिर्फ अपना अधिकार, प्रतिष्ठा और दिखावे का व्यवहार।

मुझे पता था कि यह सब पढ़कर वह मुझपर और क्रोधित हो जायगा। पर मुझे इसकी चिंता नहीं थी। मेरा वह क्या बिगाड़ लेगा! होगा वह बड़ा अधिकारी! मुझे उससे क्या! उसका अधिकार, पैसा, उसका दिमाग, और तो और उसे अपने मित्रों से अलग करने वाली उसकी बीवी—सब के सब उसे मुबारक हों। मुझे किसी से कोई मतलब नहीं। यदि उसके ही मन में प्रेम न रहा तो मैं ही क्या बेकार में उसका ढोल पीटता रहूँ।

खैर, मेरा पत्र मिलते ही उसने तार दिया कि वह समारोह के लिए आ रहा है। मुझे खुशी हुई और उसके प्रति मेरे भाव कुछ अधिक द्रवीभूत हुए। चन्दू की यादें फिर से एक बार भूमि में गड़े बीज की तरह फूट पड़ीं और पनपने लगीं।

चन्दू आया। पहले तो मैं उससे झिझकता रहा। उसने भी मुझे बाँध में देखा, लेकिन फिर हँस पड़ा। हम दोनों ही हँस पड़े और हमारे मन फिर से एकरूप हुए।

कृष्णन का अन्तिम मैच हम दोनों ने साथ बैठकर दाद देते हुए देखा। कृष्णन की अंतिम विजय को चन्दू के साथ बैठकर देखने में मजा आ रहा था। कृष्णन के गेम जीतते ही दौड़कर चन्दू ने उसे गले लगा लिया। नये-पुराने नायकों का मिलन देखकर दर्शकों के मन भर आये और उन्होंने गद्गद होकर तालियाँ पीटीं।

थोड़ी देर बाद प्रदर्शनी खेल के लिए चन्दू और कृष्णन तैयार हुए। अभी थोड़ी देर पहले एक दूसरे को आलिंगन में बाँधने वाले उन दोनों वीरों का एक दूसरे का कौशल परखने के लिए हँसते हँसते विरोधी दिशा में जाकर खेल के लिए तैयार होते देख मुझे लगा मैं एक धर्म युद्ध देखने जा रहा हूँ।

एक ओर कृष्णन जैसा गबरू जवान था, जिसके अंग अंग से यौवन फूट रहा था, कालेज के लड़के लड़कियों पर जिसने मोहिनी डाल रखी थी, जिसे देखकर घटती जवानी वालों को अपने दिन याद आ रहे थे। और दूसरी ओर चन्दू था जो जवानी की कमी को अपने अनुभव की गरिमा से पूरा कर रहा था, जो नये का प्रशंसा करने के लिए शौक की खातिर चार हाथ दिखाने को तैयार था, जो पुराने की याद नवयुवकों को दिलाने का सामर्थ्य रखता था। इस दृश्य को देखने के लिए भीड़ की उत्सुकता उफन उफन रही थी।

खेल के कोर्ट में उम्र का भेद नहीं रहा और खेल शुरू होते ही सबकी निगाहें नेट के एक भाग से दूसरे भाग में उड़ने वाली गेंद के साथ डोलने लगीं। पहले सेट का पहला गेम कृष्णन ने जीता। बच्चों ने तालियाँ पीटीं। प्रौढ़ों के चेहरों पर केवल मुस्कान झलकी। दोनों खिलाड़ियों के व्यवहार से लग रहा था। मानो वह कह रहे हों कि इस पहले गेम पर क्या ताली दे रहे हो! अभी तो बहुत बचा है। बहुत दिनों से जकड़े चन्दू के स्नायुओं को एक बार खुलने तो दो। दूसरा गेम भी कृष्णन ने जीता। चन्दू के चेहरे की मुस्कान

देखकर सबने अन्दाज लगाया कि शोर मचाने की जरूरत नही है, एक बार हारने से पूरा दाव तो नही चला जाता। खेल मे रगत लाने के लिए शुरू म जरा ढील तो देनी ही पडती है। पहले ढिलाई फिर चढाई।

देखते देखते कृष्णन ने तीसरा गेम भी जीत लिया। इस बार प्रौढ गभीर हो गय। मेरी बेचैनी बढ गयी। बच्चे कृष्णन की ओर से तालिया पीट रहे थे और मेरी ओर देखते हुए मुस्करा रह थे। चन्दू की ओर भी व उपहास की नजर से देखने लगे। चौथा गेम शुरू हुआ और चन्दू के चेहरे के भाव बदल गये। अभी तक की बेफिक्री छूट कर खेल मे एकाग्रता बढने लगी। चेहरे पर करारापन दीखने लगा। गेंद को ढकेलते हुए वह दात, होठ चबाने लगा। खेल म तनाव उत्पन्न होकर चरम स्पर्धा का वातावरण बढने लगा। प्रत्येक प्वाइट पर होने वाला शोर बढने लगा। दोनो ओर से आक्रमण और बचाव का प्रमाण बढने लगा। उसी प्रमाण म शोर एव तालिया भी बढने लगी। उनके स्वर बदल गय। य केवल तालिया नही थी। न था केवल शोर। य थी वे आवाजे जो कृष्णन को प्रोत्साहित कर रही थी और चन्दू को नीचा दिखा रही थी। कृष्णन के प्वाइट जीतते ही बच्चे चिल्लाते 'बहुत अच्छे, आगे बढो।" चन्दू के प्वाइट जीतते ही वे कह उठते, "भाग्य का प्रसाद है।" चन्दू प्वाइट हारता तो बच्चे यो ही झूठमूठ च च करते और चिल्लाते "चाचाजी अब उमर हो चुकी है, तुमसे अब यह काम होने वाला नही है।" चौथा गेम लम्बा चला पर जीता कृष्णन ने ही।

अब केवल दो गेम बच थ। चन्दू को एक भी गेम अभी तक नही मिला था। मेरे मुह पर हवाइया उडने लगी थी। अगर गम चन्दू जीत भी जाय तो भी उसकी हार निश्चित थी। मैं पछताने लगा, क्या मैंने उसे बुलवाया! और उसकी पराजय के प्रदर्शन का कारण बना। क्यो मैंने उसे इन शरारती बच्चो के मुह म छोडा! कॉलेज म अब मैं कैसे मुह दिखाऊगा! चन्दू भी अब मेरा मुह देखने को तैयार न होगा। भविष्य मुझे डराने लगा।

पाचवा गेम शुरू हुआ तो चन्दू की शक्ल मुझसे देखी नही गयी। उसका चेहरा तमतमा गया था। आखे अगारा बन गयी थी। हाथ पाव बेकाम हो चुके से लग रहे थ। वह खेल नही बचा था दो हिंस्र पशुओ की टक्कर थी। एक दूसरे को निगलने के इरादे से चलने वाला भयकर युद्ध था। कृष्णन पर भी फुरफुरी चढी थी, चन्दू तो बेकाम हो ही चुका था। वह गेम उसने बेहोशी मे जीता। खेल का मैदान तालिया से गूज उठा। पर बीच म से ही आवाज आयी "एक गेम जीतने म कोई बहादुरी नही अभी दिल्ली बहुत दूर है।'

उसके बाद का खेल और भयानक था। वह चन्दू ने ही जीता। उसके बाद उपहास के स्वर कम होते गय। एक के बाद एक गेम चन्दू जीतने लगा। उसके क्रुद्ध हाव भाव कुछ नरम पडने लगे। और एक के बाद एक क्रम से चन्दू ने छह गम जीते और इस तरह वह 'सेट' जीत गया। सेट पूरा हुआ, तब दोनो की छातिया धौंकनी की तरह धौंक

रही थी। दोनो के ही मुह से झाग निकल रहे थे। और दोनो ही अपने-अपने पसीने म तर बतर थे।

खेल समाप्त हुआ और चरम स्पर्धा की भावना के कारण थोडी देर के लिए गदला गया वातावरण फिर से निर्मल हो गया। थोडी देर के विश्राम के बाद दोनो ही एक दूसरे के हाथ म हाथ डालकर खेल के मदान से लौटने लगे। पर विद्यार्थियो ने उन्हे जमीन पर चलने ही नही दिया। एक टोली ने कृष्णन और दूसरी ने चन्द्रू को ऊचा उठाकर थोडी देर जुलूस निकाला। यह दृश्य देखकर दर्शक झूम उठे, रोमाचित हो उठे। मेरी आखो के आसू तो रुकने का नाम ही नही ले रहे थे।

बाद के पुरस्कार वितरण समारोह म चन्द्रू ने कृष्णन की भूरि भूरि प्रशसा की। उसने कहा कि उसका जीतना तो एक योगायोग ही था। पहले के खेलो म खेल चुकने के कारण कृष्णन को थकाना उसके लिए आसान हो गया था। समारोह के प्रारम्भ म हमारे प्रिंसीपल ने चन्द्रू के खेल के लिए प्रशसोद्गार निकालते हुए पुराने खिलाडियो तथा कुल मिलाकर गतकाल के बारे म गौरव प्रकट किया था। उसके जवाब म चन्द्रू ने बच्चो से कहा कि गौरव का काल कभी पीछे नही रहता। वह हमेशा आगे आगे बढ़ता रहता है। नये-नये खिलाडियो के रूप मे वह अवतरित होता रहता है। पुराने की याद अवश्य रखी जाये, पर उसी म लिप्त रहना ठीक नही। नये के स्वागत के लिए हमेशा तयार रहना चाहिए। यही प्रगति की निशानी है।

चन्द्रू को तुरत लौटना था। इस भीड म से उसे अकेला पाने के लिए मुझे कितनी मेहनत करनी पडी। उससे मिलते ही मैंने कहा, 'चन्द्रू मेरे उस पत्र के लिए मुझे माफ कर दो।

हसते हुए उसने कहा 'वह तो मैं कभी का कर चुका। पर उसके कारण तुम्हारा मेरे प्रति प्यार ही व्यक्त हुआ है।'

उसकी बात सुनकर मेरा हृदय भर आया। मैंने उससे कहा "चन्द्रू तुमने मेरे शब्दो को अपने खेल द्वारा ही सही कर दिखाया है। तुमने मेरी बात रख ली। तुम्हारे खेल के चर्चे मैं हमेशा करता आया हू और हमेशा करता ही रहूगा।"

'मेहरबानी करके यह मूर्खता फिर से मत दुहराना। यदि मेरे खेल की चर्चा करते रहोगे तो अपनी दोस्ती नही टिक पायेगी।'

क्या मतलब?'

मतलब यही कि चर्चा ही करनी हो तो कृष्णन की करो। उसके बाद यदि और कोई नया खिलाडी चमकने लगे तो उसकी करो। पर मेरी चर्चा करने का पागलपन अब फिर मत करना। जो हुआ बहुत हुआ।'

'क्या हुआ?

"यही तुम्हारी चर्चा।"

पर यदि वह चर्चा के योग्य हो तो क्यो न की जाये?"

अब कुछ भी नहीं बचा है। अब मैं खेलता भी नहीं।'

"मतलब !"

"तुम यदि समझ पाओगे तो ठीक है, वरना बहस मत करना। किसी भी खेल मे कितनी ऊचाई पर पहुच सकते है यह एक बार सिद्ध होने के बाद उस व्यक्ति का खेल वही समाप्त हो जाना चाहिए। यदि वह स्वय खेल समाप्त नही करता तो प्रकृति के नियमानुसार वह स्वय समाप्त हो जाएगा। एक बार उस ऊचाई पर पहुचने के बाद व्यक्ति और आगे नही बढ सकता है वह कहा तक पहुच सकता है, यह उसे अपने आप ही समझ म आ जाता है। समय तक वह वही टिका रहता है और उसे अपनी सीमा का ध्यान आ जाता है। ऊपर जाना उसे अच्छा लगता है, पर जा नही पाता। ऐसे समय सारे प्रयत्न बेकार होते है। -सके बजाय उसी चरम सीमा पर मत्यु को प्राप्त करना बहतर होता है।'

मैं मत्रमुग्ध हो सुन रहा था।

"यह मत्यु स्वीकारने मे ही समझदारी है। अन्यथा बेकार ही लोग मेहनत पर पटकनी खाते है। फिर वे उस ऊचाई को भी नही निभा पाते। स्वय की सामथ्य के ज्वलत क्षणो म ही आदमी को विराग भाव अपनाना चाहिए।"

"पर तुम्हारे लिए बिल्कुल ही खेल छोडना असम्भव है। प्रतिदिन कुछ तो खेलते ही होगे ?"

"मैं कौन से स्तर के खेल की बात कर रहा हू, इसे तुम ध्यान देकर समझ लो। पेट आगे नही बढे, इसके लिए खेले जाने वाले खेल के बारे म मैं नही कहता।"

'पर तुम्हारा खेल उस तरह का नही। उस स्तर के खेल स कोई कृष्णन को पराजित नही कर सकता था।"

' तुम खेल के बारे मे कुछ नही समझते, मुझसे बहस मत करो। मैं जो कह रहा हू, चुपचाप सुनो। आज मैं कृष्णन के साथ नही खेला। शुरू की दो-तीन बाजिया छोडकर मेरी उस समय की भावना एक खिलाडी की भावना नही थी। मेरी वृत्ति बैरी की थी। शर्म आती है कहते हुए, पर उस समय मैं उसकी ओर एक खिलाडी की भावना से देख रहा था।"

चन्दू के मन मे जो चित्र आया वह मुझसे देखा नही गया। इसीलिए बात बदलते हुए मैंने उसके बच्चो की कुशलता पूछी। 'बच्चे ठीक हैं?' उसने कहा। "भाभीजी ठीक न है?" मेरे इस प्रश्न के उत्तर म उसने कहा, 'हा ठीक है। मेरी इस जीत का वर्णन समाचार पत्रो मे पढकर तो वह और भी खुश हो जायेगी। इतनी कि कई महीनो तक उसकी चर्चा करती रहेगी। तुम्हारे जैसो को ही जब समझ म नही आता तो वह भी कैसे समझेगी?"

पता नही मुझे क्या समझा है। पर कुछ तो जरूर ही समझा है, निश्चित रूप से।

राजाओ के खेल

दिनेशचन्द्र पत

राजाओ का खल उतना सरल और निष्कपट नही जितना साधारण मनुष्य का होता। यह सारी साज धाज और जनता केवल प्रदशन के लिए एकत्रित की गई थी। नसिरुद्दी अपना शिकार भी अकेले ही खेलना चाहता था   कही ऐसा न हो कि शोर गुल म लो राजा के पद को भूल उसस अच्छे शिकारी प्रमाणित हो जायें।

छोटी सी खाडी पर राजा क लिए एक परदा खडा किया गया है ताकि राजा को उसका शिकार देख न सक। जगली जलमुर्गाबी सकडो और हजारा की सख्या म, दाना और चावल डालकर पानी म इकट्ठी करदी गई है। इसक बाद राजा को निमन्त्रित किया गया जो चुपचाप पर्दे के पीछे आ जाता है और उसकी बडी नगाली की बदूक पर्दे क अन्दर धीर स सरका दी जाती है।

बदूक की गरज हुई राजा न स्वय ही बदूक चलायी थी। वह अपन आपका किसी शिकारी स कम न समझता था। गोली बिजली की तरह चिडियो पर गिरी पर पता चला कि अधिकतर बच गयी है। दरअसल, राजा को निशाना साधना ही नही आता था। भीषण चीत्कार क साथ सभी चिडिया पहल ऊपर उडी और फिर जगल म अदृश्य हो गयी। पानी म आहत और मत जलमुर्गाबी निकालन के लिए सवक दौड पडे। राजा न इतनी मुर्गिया मारी भी न थी पर सेवको ने उसस दुगुनी मुर्गिया का ढेर जहापनाह के आग लगा दिया।

राजा ने एक भी मुर्गी न मारी होती तब भी काफी सख्या म मत मुर्गिया सामने आ जाती क्योंकि य सब तो सवक अपन साथ पानी म लकर गय ही थे। सभी राजा को प्रस न रखना चाहते थे   पास के जिला से पहले ही ताजी मरी मुर्गिया का प्रब ध कर लिया गया था और वह सवको को दे दी गयी थी। गले गले तक ऊचे पानी म खडे हुए सेवको के लिए यह कोई कठिन काम न था कि धमाक क साथ ही मत मुर्गियो को पानी म छोड दें और फिर पकडकर बाहर आ जाय।

पर कौन कहता कि इतनी सारी मुर्गिया राजा ने नही मारी हैं।

तीन दिन तक शिकार का खल होता रहा। रेजीमट का दल भी आ पहुचा और अब सबको शिकार खेलन की आज्ञा मिल गयी। नावें लायी गयी और बहुत से आदमी झील म भी पहुच गये। अब शिकार निर्बाध होने लगा। एक राजा को परेशानी म भला

क्यो डाला जाए ! परेशानी से बचाने के लिए बाज लाये गए, उधर दाना डालकर मुर्गियो को फिर आकर्षित किया गया। किनारा पर नावो पर, सभी ओर बदूकें तान दी गयी। चिडिया बदूक के धडाके से उडती पर ऊपर होते बाज, जिनसे डरकर वह नीचे आ जाती। इस प्रकार जल और बाजो के झुड के नीचे मुर्गियो का आकाश सा बन गया और उनका मनमाना शिकार होने लगा।

परन्तु यह सब होते हुए भी राजा साहब नाराज हैं। कारण ? रेजीडेट व उसका दल अच्छे शिकारी जो हैं और यह दूसरा राजा तो अपनी बन्दूक छिपाकर भी नही चलाता। अपने कौशल को भी प्रकट करने मे नही हिचकिचाता। राजा का श्रोध यूरोपियन सेवक शीघ्र पहचान जाते हैं और वह एक दूसरी योजना बनाते हैं, "अब सूअर, हिरन और शेर का आखेट किया जाये !" यह और भी कम खतरनाक नही है।

इससे राजा का जोश फिर लौट आता है। डेरो का शहर उखाड दिया जाता है और दल वहा स उत्तर की ओर प्रस्थान कर देता है जहा जगली सूअरो की जगह है। पर इसम भी समय लगता है क्योकि राजा का साजोसामान भी तो साथ जाना ही चाहिए ! हरम की स्त्रिया नृत्य वालाए और स्त्री सैनिक, बैलगाडिया, चादी और नीलम मे सजे अग-रक्षक। ऊट घोडे और हाथी सभी सामान लिये हुए, और भी न जाने क्या-क्या ! पूरी एक सेना का सामान है।

किन्तु इस काफिले म एक सेना से भी बडी कमजोरी यह है कि जहा सना अपने पेट के लिए चलती है वहा यह सेना गरीब किसान के पेट पर चलती है या फिर किसान से दूर बहुत दूर, जैसे एक विजेता हो। चारो ओर लूट पाट की जाती है। लोगो को मजबूर करके बेगार ली जाती है और यह रास्ते बनाय जाते है।

जब इस झील से शिकारी दल दूसरी झील पर जाता है जिसके पीछ हिमालय शोभायमान है तब रास्ता चावल के खेतो से होकर जाता है। प्रजा के सुखा स बढकर राजा का सुख है। फिर क्या चिन्ता कि माग खेतो से हाकर जाता है या घरा से ? एक बार फिर तबुओ का शहर उठ खडा होता है। इस बार रेजीडेंट साथ नहीं है। रास्ता कीचड से भरा हुआ है। समीपस्थ, बगुलों के शिकार के लिए बाज फिर लाये जात हैं।

राजा के भोजन का तबू उतना ही आरामदेह है जितना महल का भोजन-कक्ष लखनऊ मे। भोजन के चीनी के बतन, शमादानो का ढेर, फैंच रसोइय, नृत्य-बालायें, हरम सभी कुछ ता है और जगल म भी नियमित कायक्रमा मे कोई परिवतन नही है। झील के पास सूअर या शेर तो नहीं हैं पर निकट ही जगल मे जगली हिरन हैं। उन्हें भी मारने का ढग बहुत विचित्र है।

झील के पास ही जगल से घिरा हुआ एक खुला मैदान है। हाका लगाने वालो को आदेश है कि वह चुपचाप जगल म जाकर हिरनो को इस मैदान की ओर हाके। उधर शिकारी अपने साथ लाय हुए बारहसिंगों का दल मैदान मे छोड देते हैं ताकि वह हाके हुए हिरनो से भिड जायें। एक बारहसिंगा हिम्मत करके एक जगली हिरन से लड पडता है और फिर बारहसिंगे भी एक हिरन से भिड जाते हैं। इसी समय चारों ओर

से शिकारी दल आ पहुँचता है। काड़ पदल है, अधिकतर घोड़ो पर है, जिसे देखकर लड़ने वाले हिरनों को छोड़कर और सब भाग खड़े होते हैं।

चुपचाप देशी शिकारी एक ओर से लम्बे छुरे लेकर आते हैं और भिड़े हुए हिरन पर जोर से वार करते हैं और हिरन गिर जाता है। पालतू बारहसिंगे और न वापस बुला लिए जाते हैं। वह विजेताओं की भांति वापस आते ही शीघ्र आपस में भिड़ जाते हैं और एक-दूसरे के शरीरों पर घाव कर देते हैं। पास ही पुंसत्वहीन हिरन पड़े हैं। राजा के इशारे पर फौरन उन्हें हलाल कर दिया जाता है और गेल खत्म हो जाता है।

इसके अतिरिक्त भी हिरनों के शिकार करने के और कई उपाय हैं क्योंकि राजा के बाड़े में पिंजड़े में बंद चीते भी हैं। शिकार के लिए इस दो बैलों के ठेले में लादकर लाया जाता है। साथ में दो देख भाल वाले होते हैं। गले में पट्टा और जंजीर होती है और उसे गाड़ी से ढीला करके बांध दिया जाता है। एक आदमी उसकी आंखों में पट्टी बांधे है ताकि आंख ढकी रहे। शिकार के समीप आने पर चीता उसकी गंध से आकर्षित होकर ऊपर गर्दन उठाता है। पर यदि शिकार निकट नहीं होता तो आदमी उसे नमक लगे नारियल के खप्पर से धमका देता है और वह शान्त हो जाता है। दरअसल नमक की गंध से शिकार की गंध मर जाती है।

हिरन के पास जाते ही चीते की जंजीर खोल दी जाती है और वह हिरन के पीछे भागता है। हिरन और चीते के पीछे उबड़ खाबड़ रास्ते से शिकारी घोड़ों पर भागते हैं। हिरन बचने को जंगल में भागता है थक जाता है और जहां-कहीं झाड़ झंखाड़ में उसका सींग फंसा कि चीता उस पर सवार। जैसे ही हिरन गिरा, तजुर्बेकार आदमी दौड़े और चीते को अलग करके तुरन्त उन्होंने हिरन को हलाल कर दिया। एक लकड़ी के कटोरे में कुछ खून निकालकर उन्होंने चीते की नाक रखकर हिरन की लाश अलग कर दी। पुरस्कार स्वरूप चीते को हिरन की टांग दे दी जाती है।

राजा बहुत संतुष्ट है कि हिरन की मृत्यु के समय वह वहीं था। शिकारियों से लेकर बड़े गर्व से उसने हिरन की दुम अपनी शिकार टोपी में खोंस ली।

सातरिख के पुल से लगभग दो मील पीछे फरवरी 1850 में आम के बगीचे के पास एक अकेले पेड़ के पास करीब 18 20 साल पहले राजा बख्तावर सिंह ने एक गुब्बारा पकड़ा था जिसे राजा नसिरुद्दीन ने दिलकुशा बाग लखनऊ में बनवाया था। यह एक लम्बे और पतले अंग्रेज नौजवान ने बनवाया था। जो अपने चाचा के साथ लखनऊ में विशेष रूप से इसे बनाने और इस मशीन में बैठकर उड़ने के लिए आया था। जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह उस गुब्बारे से लटकती एक नाव में एक बन्दूक और कुछ बनावटी मछलियां लेकर बैठ गया। जिससे बड़े बड़े पक्षियों को डराया जा सके। जैसे ही गुब्बारा ऊपर जाने लगा तो नौजवान के चाचा की आंख भर आयी, कि ऐसे ही गुब्बारे में उसका पिता समुद्र में डूबकर मर चुका है अब यही शंका होती है कि वह अपने भतीजे को कभी नहीं देख सकेगा।

राजा अपने दिलकुशा भवन की ऊपरी मंजिल की खिड़की पर बैठा हुआ था

साथ में कुछ अंग्रेज भी थे। जब गुब्बारा उधर से निकला और नौजवान ने अपना हैट उतारकर आदरपूर्वक राजा को अभिवादन किया तो राजा बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने बख्तावरसिंह को आदेश दिया कि कुछ चुने हुए व्यक्ति लेकर गुब्बारे का पीछा करें। ग्यारह व्यक्ति चुने गये और लोग घोड़ों पर सवार हो गये। गुब्बारा सीधा ऊपर उड़ा और नाव जिस पर वह बैठा था जल्द ही नजरों से दूर हो गये।

नीचे हवा नहीं थी पर ऊपर गुब्बारा हवा के झोंके से पूर्व की ओर फैजाबाद की सड़क पर वह निकला जितनी तेजी से हो सकता था घोड़े दौड़ाये गये, पुराने पत्थर के पुल से गोमती पार करते हुए लोग आश्चर्य से मुंह बाये देख रहे थे। उन्होंने आज तक यह मशीन देखी नहीं थी। घुड़सवार लगभग सत्रह मील दूर निकल गये तो गुब्बारा नीचे उतरता दिखाई दिया। यह गर्मी का मौसम और मार्च का महीना था। इसके नीचे उतरने से पहले बख्तावरसिंह तीन घोड़े बदल चुका था। नौजवान ने अब मछलियां नीचे फेंकनी शुरू कर दी जो लहराती हुई नीचे आ रही थीं। गुब्बारे का कपड़ा ऐसे फड़फड़ा रहा था मानो कोई जंगली जानवर गुर्रा रहा हो। मशीन की ऐसी आवाज चाल और घुड़सवारों को उसका पीछा करते देखकर रास्ते चलते लोग इतने भयभीत हो गये कि बहुत से तो सड़क पर ही मुंह के बल गिर गये।

जब गुब्बारा, बाई ओर के बाग के किनारे पर उतरने लगा, उस समय घुड़सवार उससे बहुत दूर नहीं थे। उस नौजवान की हिम्मत थी कि गुब्बारा किसी पेड़ से नहीं टकराया। वह निरे काले कपड़े पहने था। जब उसने स्वयं को जमीन के करीब देखा तो गुब्बारे की एक रस्सी को बलपूर्वक हाथ से पकड़कर वह नीचे कूदा और उसे रोकने के लिए उसने आसपास चलते हुए जनसमूह की ओर से पुकारा, "पकड़ो पकड़ो।" घुड़सवार उससे लगभग 200 गज दूर थे और पूरी तेजी से घोड़ों पर दौड़ रहे थे, बजाय इसके कि लोग उसकी सहायता करें, वह समझे कि 'पकड़ो' उन्हें ही पकड़ने को कहा गया है और मारे डर के वह मुंह के बल जमीन पर लेटे रहे। न उन्होंने मुंह उठाकर उस युवक को देखा न गुब्बारे को।

सवार निकट पहुंचे तो घोड़ों से कूद पड़े और रस्से को पकड़कर जो कुछ मिला उसी से बांधने लगे क्योंकि वह उन सभी को खींचे लिए जा रहा था। अब नौजवान ने अपना छोटा सा चाकू निकालकर गुब्बारे को एक ओर से चीर दिया जिससे गुब्बारे का धुआं निकल गया और वह पिचककर रुक गया। सबसे पहले उसने आग की मांग की जिससे उसने अपना सिगार सुलगाया। उधर घुड़सवार उन भयभीत व्यक्तियों की सहायता करने गये जिनमें से बहुत से अब भी बेहोश पड़े थे। घुड़सवार उसे वापस लेकर पहुंचे तो राजा प्रसन्न हुआ। राजा को यह खेल बहुत अच्छा लगा। उसने नौजवान को दस हजार रुपये पुरस्कार दिये और चाचा भतीजे के आवास का खर्चा उठाया।

एक बार दो हाथियों की मुठभेड़ करायी गयी। दोनों ही विशालकाय और मदमस्त थे। माल्लौर नामक प्रसिद्ध हाथी की, जो कई हाथियों पर विजय पा चुका था उतने ही प्रसिद्ध हाथी से राजा के मनोरंजन के लिए मुठभेड़ करायी गयी। एक-दूसरे को देखते

ही वह भिड़ गये। उनके महावत उनकी गर्दन से चिपके हुए थे। दोनों की मुठभेड़ बड़ी भयानक थी। युद्ध होता रहा जब तक कि राजा के प्रिय हाथी ने अपने प्रतिद्वंद्वी को मैदान के पास बहती हुई नदी में न ढकेल दिया। दूसरा हाथी नदी तैरकर उस पार पहुंच गया। पर मुसीबत अब पैदा हुई। माल्लीर अपने प्रतिद्वंद्वी के बिछोह से बहुत क्रोधित हो गया और अपने महावत से बदला लेने पर उतारू हो गया। बेचारा महावत हौदे से नीचे गिर गया। क्रोध से चिंघाड़ते हुए हाथी ने अपना विशालकाय पैर उठाया और महावत की छाती पर रखकर उसके शरीर को हड्डी मांस और खून के लोथड़े में बदल दिया।

हाथी के क्रोध का अन्त नहीं था। एकाएक उसने एक व्यक्ति का हाथ तोड़कर हवा में उछाल दिया। दर्शकों पर चारों ओर खून की बौछार हो गयी।

एक क्षण के लिए सब कुछ शान्त हो गया। किसी की बुद्धि काम नहीं कर रही थी। तभी एकाएक कोई औरत गोद में बच्चा लिए अखाड़े में आ गयी। यह महावत की पत्नी थी जो हाथी की ओर बढ़ी जा रही थी। हथियार बंद व्यक्ति हाथी को बांध ले जाने की तैयारी कर रहे हैं। उनके पास तेज भाले हैं। लेकिन बीच में औरत आ खड़ी हुई है।

ओ माल्लीर देख तो जालिम तूने क्या कर दिया है। ले अब हमारा कबीला ही खत्म कर दे। तूने छत गिरा दी है अब दीवारों को भी ढहा दे। तूने मेरे मालिक को मार डाला है जिसे तू खुद इतना चाहता था, अब मुझे और उसके बच्चे को भी खत्म कर दे।"

हाथी महावत के शव पर से पैर हटा लेता है मानो अपनी क्रूरता पर लज्जित हो। वह बच्चे को भी अपनी सूंड से धकेल देता है। पर अब भी शांत नहीं हुई है क्योंकि भाले संभाले लोग उसे भाले की नोकों से छेद रहे हैं और धीरे धीरे वह फिर क्रोधित हो रहा है।

"उस जनानी को हाथी से बात कर लेने दो', राजा चिल्लाया, 'वह उसका कहना मान जायेगा।'

औरत हाथी को पुकारती है और हाथी कुत्ते की तरह अपने मालिक की तरफ चला जाता है।

ये जनानी अपने बच्चे के साथ इस पर चढ़ जाये और इसे हाथी-खाने में ले जाये।" राजा की आज्ञा हुई। हाथी उसकी आज्ञा से बैठ गया और वह उस पर सवार हो गयी। माल्लीर ने पहले महावत का शव ऊपर रख दिया और फिर बच्चे को ऊपर चढ़ा दिया। अपने पति के स्थान पर पत्नी हाथी की गर्दन पर बैठी और चुपचाप उसे बाहर ले गयी। उस दिन से वही उसकी महावत बना दी गयी। किसी दूसरे की आज्ञा से माल्लीर काम करता ही न था।

उसके हाथ के स्पर्श भर से उसका भयंकर क्रोध भी शान्त हो जाता था।

टेक-ऑफ

डर्मोट मैकनाली

प्रातःकाल से ही थोड़े थोड़े विराम के साथ वर्षा हो रही थी। मौसम को देखते हुए व्यवस्थापकों को आज की रेस स्थगित कर देनी चाहिए थी लेकिन रेस हो रही थी। सारे रेसकोस मे रग बिरगी छतरियो की छटा नजर आ रही थी। हवा काफी ठण्डी और तेज थी।

मेरी रग रग मे भी सर्दी की लहरें दौड रही थी, लेकिन उसका असल कारण ठण्डक नही, बल्कि निराशा थी। कुछ घण्टे पहले जब मैं यहा आया था तो मेरा बटुआ नोटो के कारण फूला हुआ था, लेकिन अब तक मैं चार रेसो म बुरी तरह हार चुका था। सीधा जीतना तो एक ओर प्लेसिग म भी मेरा नम्बर नही आ सका था। निराशा के काले बादला म मुझे सहसा आशा की एक किरण नजर आयी। सामने अपना परम्परा गत ट्वीड का ओवरकोट और फ्लैट हैट पहने हुए स्काबी आ रहा था। वह रेस की दुनिया म खासा महत्व रखता था। घोडों का स्वामी होने के अतिरिक्त वह एक अच्छा प्रशिक्षक भी था। उसके प्रशिक्षित घोडे बडी सख्या मे जीता करत थे। इस परेशानी की दशा मे स्काबी मुझे अपना एकमात्र सहारा लगा। केवल वही मेरे खाली बटुए को दुबारा नोटो से भरवा सकता था।

मैं तेजी से उसकी ओर बढा, "हैलो स्काबी ! क्या बात है तुम दो महीने से नजर नही आये ? काम कसा चल रहा है ?"

उसने मेरी बात का जवाब मुख से नही, बल्कि नोटा की एक मोटी सी गड्डी लहराकर दिया। उसकी आखो की चमक असाधारण सफलता को प्रकट कर रही थी।

"और तुम्हारा क्या हाल है ?" उसने मुसकराते हुए पूछा, "आज तुम्हारी किस्मत कैसी रही ?"

"बहुत भयानक !" मैंने आशा भरी नजरो से उसकी ओर देखते हुए जवाब दिया, "क्या तुम मेरी मदद नही कर सकते ?'

"टेक ऑफ !" उसने लापरवाही से कहा।

"मैं तुमसे मदद के लिए कह रहा हू और तुम कह रहे हो कि हवा हो जाओ !" मेरे स्वर मे नाराजगी थी। कहते ही मैं जाने के लिए घूम गया।

"अरे ठहरो !" तुम तो बहुत ही बेवकूफ आदमी हो !" उसने मुझे रोकते हुए कहा। वह हंस रहा था, टेक आफ मेरे घोड़े का नाम है जो अगली रेस में दौड़नेवाला है।"

' बहुत खूब स्कावी !" मैं भी हंस दिया। मुझे याद आ गया कि टेक आफ सचमुच एक बहुत ही अच्छा घोड़ा है।

' तुम निश्चित होकर उस पर दाव लगा सकते हो !"

स्कावी के स्वर में भरपूर विश्वास था। टेक-आफ स्वयं उसका सधाया हुआ घोड़ा था, "इस दौड़ में कई अच्छे घोड़े दौड़ रहे हैं लेकिन इससे टेक आफ की सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आ जाओ ! स्कावी ने बुकिंग विंडो की ओर बढ़ते हुए कहा, "इस समय भाव बहुत अच्छा है। तुम मेरे साथ ही रकम लगा दो। जैसे जैसे रेस का समय निकट आता जायेगा भाव भी गिरते जायेंगे।'

मैंने अपने आखिरी सौ पौंड स्कावी के परामर्श की भेंट कर दिये। स्कावी का ख़याल ठीक था। मैंने एक पांच के भाव से दाव लगाया था और कुछ देर बाद ही भाव गिरने शुरू हो गये, और अन्त में भाव गिरकर चार सात तक पहुंच गया।

स्कावी काफी आश्वस्त नजर आ रहा था। "मेरे साथ परेड रिंग तक चल रहे हो ?' उसने पूछा, ' अपने जॉकी से कुछ आवश्यक बातें करनी हैं।"

परेड रिंग में पहुंचकर स्कावी ने सुख बालोंवाले दुबले पतले जॉकी को अंतिम निर्देश दिये। यह जॉकी न जाने क्यों मुझे कुछ बेवकूफ सा लगा, लेकिन स्कावी का कहना था कि जिंजर से अच्छा जाकी इस समय पूरे इंग्लैंड में नहीं है।

रेस का आरम्भ कुछ अच्छा हुआ था। बारिश सुबह से हो रही थी। ट्रैक पर कीचड़ हो गया था। घोड़ों के दौड़ने से इतना कीचड़ उड़ रहा था कि कुछ ही देर बाद सारे घोड़े अपने जाकियों सहित कीचड़ में लथपथ दिखाई दे रहे थे।

पहला राउण्ड समाप्त होते ही घोड़ों की गति बढ़ गयी। घोड़ों की गति के साथ साथ मेरे दिल की धड़कनें भी बढ़ती जा रही थीं। टेक ऑफ बहुत अच्छी तरह दौड़ रहा था और ट्रैक पर रखी हुई बाधाएं बहुत आसानी से पार करता चला जा रहा था।

घोड़े तीसरी बाधा तक पहुंच चुके थे कि सहसा एक ऐसी घटना घटित हुई कि मेरा दिल उछलकर गले में आ गया।

सबसे आगेवाले घोड़े की पिछली टांगें बाधा से टकरायीं और वह गिरकर उलट गया। उसके पीछे आनेवाले घोड़े ने लम्बी छलांग लगाने का प्रयत्न किया, लेकिन गिरे हुए घोड़े की हवा में उठी हुई टांगों से उलझा और वहीं पलट गया। घोड़ा एक ओर गिरा था और जाकी दूसरी ओर। पीछे आनेवाले घोड़ों के लिए भी कोई दूसरी राह नहीं थी। वह भी बारी बारी छलांगें लगाते हुए गिरेवाले घोड़ों पर ढेर होते चले गए। इन्हीं घोड़ों में हमारा टेक ऑफ भी शामिल था। पूरे आठ घोड़े कीचड़ में लथपथ लुढ़के पड़े थे।

मैं और स्कावी आंखों पर दूरबीन लगाये सांस रोके उन्हें देख रहे थे। यह क्षण हमारे

लिए बहुत ही कठिन थे। सहसा मुझे अपने निकट से एक अजीब सी आवाज सुनाई दी। मैंने गर्दन घुमाकर देखा, स्काबी गुर्रा रहा था।

मैंने दुबारा दूरबीन आखो से लगा ली और उलझे हुए मस्तिष्क के साथ घोडो और जॉकियो के उस ढेर को घूरने लगा। जाकियो ने घोडो के नीचे से निकलने के लिए हिलना डुलना शुरू कर दिया था। अचानक उनमे से एक उछलकर अपने कदमो पर खडा हो गया। मैं फौरन उसे पहचान गया। वह जिजर था और काफी परेशान नजर आ रहा था।

जिजर ने जोर-जोर से सिर को झटककर जल्दी से घोडे को सीधा किया और उछलकर उस पर बैठ गया। अगले ही क्षण उसने घोडे को एड लगा दी। अगली बाधा पार करने मे उसे किसी कठिनाई का सामना नही करना पडा।

अन्य घोडे और जॉकी भी धीरे धीरे उठ रहे थे। फिर उनकी भी दौड शुरू हो गयी, लेकिन जिजर उन सबसे बहुत आगे था।

बुरी तरह गिरने के कारण टेक आफ को निश्चय ही कही न कही चोट आयी होगी क्योकि देखते ही देखते उसकी गति सुस्त होने लगी, उससे पीछे आनेवाले तीन घोडे अब उसके निकट पहुच रहे थे और फिर आखिरी बाधा चारो घोडो ने लगभग एक साथ ही पार की।

जिजर घोडे की गति बढाने के लिए अपना पूरा प्रयत्न कर रहा था। विनिंग पोस्ट निकट आती जा रही थी। जिजर ने आखिरी बार प्रयत्न किया। घोडे की गति तेज हो गयी। टेक आफ धीरे धीरे अन्य घोडो से आगे निकल रहा था। कुछ ही क्षणो के बाद वह सबको पीछे छोडकर पोस्ट से गुजर चुका था।

मैंने सुख की गहरी सास ली। इस रोमाचकारी मुकाबले ने मेरे मन मस्तिष्क को हिलाकर रख दिया था। खैर, मैं स्काबी का हार्दिक कृतज्ञ था कि उसकी मदद से अपनी हारी हुई रकम वापस पाने मे सफल हो गया था।

मैं स्काबी को बधाई देने और धन्यवाद करने के लिए मुडा, लेकिन स्काबी वहा मौजूद नही था। मैंने इधर उधर नजर दौडायी। वह विनर्स एन्क्लोजर की ओर जाता हुआ नजर आया। उसकी गति काफी तेज थी। मैं भी उसकी ओर लपका।

उसी क्षण जिजर हाथ हिलाता हुआ गर्वीले अन्दाज मे विनर्स एन्क्लोजर मे मे दाखिल हुआ।

मुझे तीव्र झटका सा लगा, जब मैंने स्काबी के चेहरे पर नजर डाली। उसका मुख चेहरा बडे विचित्र भाव दे रहा था। इस प्रकार के भाव मैंने आज तक किसी के चेहरे पर नही देखे थे, इसलिए मैं उन्हें बयान भी नही कर सकता।

'बेवकूफ गधा!" जिजर जैसे ही स्काबी के निकट पहुचा, उसने गुर्राकर कहा।

जिजर की गर्वीली मुसकराहट गायब हो गयी थी और उसका मुह लटक गया था। स्वय मैं भी समझ नही पा रहा था कि आखिर स्काबी किस बात पर नाराज है।

'क्या बात है मास्टर? क्या मैंने रेस जीतकर कोई पाप किया है?' जिजर

उलझे हुए स्वर मे पूछा ।

स्काबी के अगले ही वाक्य ने सारी वास्तविकता प्रकट कर दी और मैं सिर पकडकर वही बैठ गया।

"मूख ! जल्दबाजी मे तुम जिस घोडे पर बठे, वह टेक आफ नही, बल्कि कोई दूसरा घोडा था।' स्काबी हवा मे घूसा लहराते हुए कह रहा था ।

आओ खेल जाये !

राकेश तिवारी

"यह सर्टिफिकेट क्यो फ्रेम करवा दिया ?" घर मे कदम रखते ही इन्होने पूछा। फ्रेम पर नजर पडने से पहले, मैंने देखा था, इनके चेहरे पर दफ्तरी थकान के बाद भी मुस्कराहट तैर रही थी, जबकि अब ये इतने उदास हो गये, जैसे कोई अशुभ सूचना मिल गयी हो। मैं इनकी उदासी का कारण जानती हू। सब समझती हू मैं कि यह क्यो इन्होने पूछा। फिर भी जाने क्यों प्रश्न कर बैठती हू, 'तो क्या हो गया ?"

तुम समझती हो कि मुझे क्या हो सकता है। आज कोई नयी बात नही है। और आखिरी बार बता रहा हू कि अब यह सर्टिफिकेट मेरी आखो के आगे कभी नही आना चाहिए।"

इन्होने इतनी तीखी धमकी दी कि मन हुआ, फ्रेम को चकनाचूर करके प्रमाणपत्र की चिन्दी चिन्दी उडा दू किन्तु ऐसा करने से इन्हे लगता कि मैं इन पर गुस्सा कर रही हू। साथ ही प्रमाण पत्र फाडने का अर्थ अपने अपराधी होने का प्रमाण प्रस्तुत करना भी तो है जबकि मैं अपराधी हू नही। अत मैं चुपचाप फ्रेम दीवार से उतारकर अटैची म रखने लगती हू लेकिन इनका पारा चढ गया तो फिर उतरने का नाम ही नही लेता। मुझे टाककर व्यग्य कर बैठते हैं, "अभी भी शौक है तो एक स्कर्ट बनवा देता हू, बल्ला लेकर मुहल्ले के छोकरो के साथ चली जाना।"

अब इन जलील बातो का क्या उत्तर दू ? मैं बेबात बात बढाना ठीक नही समझती। प्रमाणपत्र अटैची मे रखकर चाय बनाने चली जाती हू। दफ्तर से आते ही इन्हे चाय की तलब लगती है। चाय लेकर आती हू तो देखती क्या हू कि प्रमाणपत्र के टुकड़े जमीन म बिखरे हैं। खाली फ्रेम म से गत्ता ऐसे झाक रहा है, जैसे मेरा रीता अतस सोफे पर पटक दिया गया हो। अब तो मेरा भी पारा ऊपर चढने लगा है। गुस्से से मेरा चेहरा तमतमा गया है। इन्हे चाय थमाकर सुबकने लगती हू। यही तो मेरा गुस्सा जताने का तरीका है किन्तु इतने पर भी इन्हे मेरे ऊपर दया नही आती। न करतूतो का पश्चात्ताप हो रहा है। यह समझकर तो मेरा गुस्सा और भी आसमान लगता है। टेढा मुह करके कहती हू, "मैं नही समझती थी कि तुम इतने घटिया हो।"

"जान लेती तो शायद अच्छा होता। कम-से कम मेरे सिर का बोझ

बनी होती।'

'तो मैं बोझ बन गयी हू ?"

"तुम जैसी औरतें हर आदमी के लिए बाझ होती हैं।"

"मुझमे ऐसा क्या है ?" हालाकि यह प्रश्न भी मैंने जान बूझकर पूछा, क्योंकि मुझ पता है कि य इसका अब कोई उत्तर नही देंगे। इनकी चुप्पी म जो उत्तर छिपा है, उस भी मैं अच्छी तरह जानती हू। इसी बात से ता मेरा मन अकेले मे खूब रोने को करता है। सोचती हू दुनिया मे सम्बन्ध तभी तक कायम रहते हैं जब तक दोनो पक्षो को लगता रहे कि फायदे म वही है। जहा एक पक्ष को लगा कि उसको हानि हो रही है, झटपट सम्बन्धो म छेद करने पर तुल आता है। यह सोचकर तो मन आत्महत्या करने को भी ठान बैठना है परन्तु सच पूछा जाये ता मौत से बहुत डर लगता है। इन्हें तो मैंने कई बार आत्महत्या की धमकी दी है। पहले इनकी आदत मन की बात साफ साफ कह देने की थी। इन्होने मेरे ऊपर जो आरोप लगाये, उन्ह उन शब्दो म शायद कोई भी व्यक्ति अपनी पत्नी से नही कह सकता। और जब इनकी स्पष्टवादिता से चिढकर मैं आत्महत्या की धमकी देने लगी, तो अब चुप रहकर भी चेहरे पर ऐसे भाव ला देते हैं कि लगता है पुरानी बातें दोहरा रहे है। इन्ही सब बातो को लेकर एहसासती हू कि खिलाडी अतीत ने मेरा विवाहित भविष्य नरक कर दिया, जबकि सौ प्रतिशत सच्चाई यह है कि जैसा वे समझते हैं वसा कुछ था नही। बडे ही बेतुके प्रश्न किया करते हैं मेरे पति। कोई भी सभ्य और प्रोग्रेसिव आदमी इनके प्रश्नो को सुनकर इन्हें घटिया, अपढ और बूढा खूसट मान लेगा, जबकि 'घटिया' पर कोई राय न देते हुए इतना तो अवश्य कहूगी कि ये बाहर से अपढ और बूढे रहे है। हा, एक दिन के इनके प्रश्न से मेरे सामने पति के अन्दर म बुर्जा होने की तस्वीर साफ हो गयी। इन्होने पूछा था, "तुम स्कर्ट पहनकर खेलती थी ?"

"हा।" मैंने कहा था और ये बहुत बुरा मुह बनाकर बोल थे, 'दस वष के बाद लडकी का स्कट फ्राक पहनना कितना गन्दा लगता है।

इसी तरह एक दिन मैं अपनी सहली को बता रही थी कि हम लोग सॉफ्ट बाल कैसे खेलते थे क्या-क्या होता था कि तभी ये दफ्तर से लौट आय। इन्होने सारे सवाद सुने थे और मुह फुला लिया था। सहेली क जाने के बाद मुझमे कहने लगे कि मुझे आजादी इतनी ही पसन्द है तो मैं अपने मायके जा सकती हू। अब भला मैं क्या उत्तर देती ?"

दुल्हन बनकर ससुराल पहुचे कुछ ही हफ्ते हुए थे। एक रविवार को मैं इन्हे सारे सर्टिफिकेट दिखलाने लगी। मैंने तो सोचा था कि खिलाडिन पत्नी पर इन्ह गव होगा लेकिन य इसी एक सर्टिफिकेट को हाथ म लेकर सोचते सोचते बडे उदास हो गये थ। थोडी देर म इन्होंने पूछा था, 'तुम हैदराबाद भी गयी थी खेलने ?"

मरे लिए यही एक प्रमाण-पत्र था, जिस पर मैं गव कर सकती थी। मैंने ऊचे स्वर म बताया हा हमने तो स्टेट को रिप्रजट किया था।" फिर य पूछने लगे थे, 'तुम सारी लडकिया अकेली गयी था क्या ?'

'नहीं हमारे साथ 'कोच' भी थे।

"कौन कोच करता था तुम्हे ?"

"दो लडके यूनिवर्सिटी के थे और दो आउट साइडर।"

"एक ही डिब्बे मे बैठकर गये ?"

"हा।"

"हैदराबाद मे कहा ठहरे थे ?"

'स्टेडियम मे।"

'लडके साथ ही होगे ?"

'हा उन्हे हमारे बराबर म दो कमरे मिल गये थे पर बात क्या हो गयी जो तुम ऐसा पूछ रहे हो ?"

"नगी औरत अभी 'क्या बात हो गयी' कह रही है ? बहुत कमीनी है तू। एक तो खुलेआम अपनी करतूतें बता रही है और ऊपर से सीना जोरी ?"

उसके बाद तो मैं रो-रोकर बेहोश हो गयी। य मानने को तैयार ही नही थे कि पद्रह दिन लडको के साथ अकेले रहकर मैं सयम बरत सकी होऊगी। मैंने बताया था कि मैं अकेली नही, पूरी टीम मेरे साथ थी, पर नही, इन्होने और जाने कितने आरोप लगा दिये मुझ पर। हैदराबाद शहर मे मेरे स्कर्ट पहनकर घूमने की कल्पना करके इन्हें बहुत जलन हुई थी। हा, मेरे बेहोश होने पर इन्होंने पानी के छीटे मारकर मेरी चेतना लौटायी जरूर थी। उस रात मेरा तन मन क्षोभ और ग्लानि स छलनी रहा। उस स्थिति मे मेरे साथ इन्होंने जो कुछ भी किया, मुझे 'बलात' ही लगा।

फिर तो ये रोज ही मुझे छल छलकर पूछने लगे कि कब-कब और कहा-कहा मैं खेलने गयी थी हमारे कोचो के नाम क्या थे मैं कितने घण्टे खेल के लिए बर्बाद करती थी वगैरह वगैरह। और फिर बाद मे उन्ही बातो को लेकर व्यग्य करते। कभी किसी कोच के साथ बेबात मेरा सम्बन्ध भी जोड देते। इन परिस्थितियो म मैं अन्दर ही-अन्दर खोखली होती रही। पति के प्रति मेरी श्रद्धा भी तब से बहुत मर गयी, किन्तु फिर भी मन ही मन यह सन्ताप किये रही कि चलो, पति हैं, पति को अधिकार है डाटने डपटने का। फिर भी झूठे आरोपो से रग रग दुखती है।

धीरे धीरे मेरी आत्महत्या की धमकिया भी पति के लिए मात्र 'धमकिया' रह गयी। अभी कुछ दिन पहले तो इन्होने यहा तक कह दिया कि मरनेवाले धमकिया नही दिया करते। मैं भी अब समझने लगी हू कि एक बार म मैं समूची नही मर सकती और इसीलिए तिल तिल मर रही हू, घुट घुटकर।

जब य मुझे देखने मायके पहुचे तो सबसे अधिक मेरी खेल की तस्वीरें देखकर प्रभावित हुए थे। मुझसे अधिक इन्हे खिलाडी मैं पसन्द आयी थी। उसी समय इन्होने विवाह की स्वीकृति दे दी। मैंने साफ्ट बाल खेलते हुए एक तस्वीर खिचवायी थी। मेरी मम्मी से बेझिझक इन्होंने वह तस्वीर माग ली थी। अपने जाने कितने मित्रो को वह तस्वीर इन्होने दिखायी। जरा सा किसी जान पहचान वाले को देखा नही कि जेब से पर्स निकालकर उसमे लगी मेरी तस्वीर फटफट दिखा दी कि देखो, "माइ वाइफ'।

उस समय तो इ होने मरी छोटी बहन से भी कहा था कि इह खिलाडी बहुत रुचते हैं। इनके पास हर खिलाडी का ब्लोअप रखा है—पूरा कलेक्शन है। कलाकार से थोडी सहानुभूति जता दो प्रेम प्रदशन कर दो ता वह पूजा करने पर तुल आता है। मैंने भी ईश्वर की तरह इन्हें मन मे बिठा लिया। होनवाले पति के साथ साथ ये कलाकार को भी सम्मान देने वाले जो थे। वसे तो ये मुझे पसन्द न भी आते तो घरवालो की पसन्द को मैं अस्वीकार नही कर सकती थी, पर मैंने अपने को भाग्यशाली ही माना कि पति मनपसन्द मिला।

जबकि आज तो मेरी समझ मे यह आता है कि इहे केवल मेरे रूप और शारीरिक बनाव कसाव ने आर्कषित किया था। और आज तो मेरे इस शरीर मे भी इनके लिए कोई आकषण नही रह गया, भोग जो लिया।

शादी से पूव मेरी छाटी बहन न इन्ह दो पत्र भी लिखे थे। दोनो के ही उत्तर मे इन्होने लिखा था कि य मुझे किसी अच्छे स्पोट स कालेज मे ट्रेनिंग करवाकर सॉफ्ट बाल की कोच बनायेंगे। मुझे तो जैसे सारी खुशिया बिन चाहे मिल गयी। किसी कलाकार की कला को फलन फूलन के अवसर उपलब्ध हो जाए तो उसे और क्या चाहिए। तब से मैंने कितने कितने सपन देख डाले, साचती थी, पति की खूब सेवा करूगी, खूब सुख दूगी। दोना सुबह उठेंगे, व्यायाम करेंगे। फिर इनके लिए नाश्ता तयार करूगी और लच बाक्स थमाकर बडे प्यार स विदा करूगी। तब अपन कालेज जाकर खूब अच्छी प्रक्टिस करूगी और छुट्टी के दिन इन्ह भी खेल दिखाऊगी। इनकी इच्छा हुई तो ये भी मेरे साथ मेलेंगे, और भी ढेरा सपने दखे मैंने। शादी हुई तो कुछ महीने घूघट मे छिपे छिप ही बीत गये। मैंने भी सोचा, अभी तो नयी नयी दुल्हन हू थाडा आस पास के लोगा को इज्जत देनी ही पडेगी। बाद म सब सही हा जायगा, लेकिन शादी को चार वष बीत गय। घूघट सरककर कमर म खुसा हुआ पल्लू बन गया, मैं पुरानी हो गयी। सब मुझे देख समझ चुके, लेकिन मरे हाथ मे बल्ला फिर कभी नही आया। खेल सकने की तो मैं कल्पना करो कल, जब मरे पति मुच घर के बाहर खडी नही होने देत। किसी रिश्ते के दवर से भी हसकर बोल दू तो बस मुह बना लेत हैं।

ये एक अच्छे पद पर हैं। पर्याप्त वेतन मिलता है। इस कारण भी ये चाहत हैं कि मैं घर की चहारदीवारी मे बन्द रहू। दिनभर इनकी हर चीज करीन से सजाना, इनके कपडा की धुलाई से लकर खाने-पीने और पसन्द-नापसन्द पर साचकर वसी ही व्यवस्था करना मात्र मेरा काम रह गया है। ये कहते हैं मैं एक आदश गहिणी बनकर रहू। अनादश पत्नी के ये बडे विराधी हैं, बल्कि हर उस चीज का विरोध करत है जो इनके स्वाथ म आडे आये।

इनके मुह से व्यवस्था विरोधी बातें भी बडी हास्यास्पद लगती हैं, क्योकि ये स्वय भी इस व्यवस्था के अन्दर की छाटी छोटी अव्यवस्थाआ के लिए उतन ही जिम्मेदार हैं जितना कि ये व्यवस्था समथको को मानत हैं। नौकरी की सारी ऊचाइया हासिल करने के लिए य उन्ही सब प्रक्रियाओ स गुजर हैं जो नाजायज हैं और जिनके बिना इन्ह इतनी कम उम्र म यह पद मिला नहीं हाता। य केवल उस स्थिति का विरोध करते हैं,

जिससे इन्हें लाभ न पहुंचता हो। जहां एक बार इन्हें भी गोता लगाने का अवसर मिल गया, इन्होंने घुमा फिराकर उस स्थिति विशेष के पक्ष मे तर्क देना शुरू कर दिया।

मुझे तो लगता है कि स्वयं मेरे पति एक व्यवस्था हैं। इन्हें अपनी हर व्यक्तिगत सम्पत्ति को कथित बागियों से बचाना आता है। दूसरे की सुरक्षा के दायरे को तोड़ना, आजादी को गटक लेना और उसके प्रजातान्त्रिक अधिकारों का दायित्वों से बौना समझना इनकी आदत है। मैं जानती हूं कि इनको मेरा तो घर की चौखट पर खड़े रहना तक पसन्द नहीं है और अपने मातहतों की पत्नियों को आधुनिकता का पाठ रटाकर ये घर मे विद्रोह करना सिखाते हैं। दोस्तो से बात करते हुए, मन सुना है ये कहते हैं कि मैंने फलां की बीवी का माइंड वॉश कर दिया। धीरे धीरे ये उन सीधी-सादी गृहिणियों को अपनी पार्टियो, क्लबघरों और सुनसान पार्कों मे भी ले जाने लगे। यह बात नहीं कि इनके अफसरों के साथ घूमने का स्वाद मेरे अन्दर भी हो। मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं। मैं इतना जानती हूं कि किसी खिलाड़ी की प्रतिभा को बोटी बोटी नोच देना न्याय नहीं है। मुझे तो केवल खेल की स्वतन्त्रता चाहिए।

हर स्तर पर इन्होंने मेरे अन्दर के खिलाड़ी का शोषण किया है, जबकि मेरा अतीत मेरे लिए गर्व करने योग्य है, मुझे उस पर गर्व करने देना तो दूर रहा, आज उस विषय मे बात करना भी इनकी नजरों मे गुनाह है। कभी कभी तो ये डरते भी हैं कि कहीं मैं इनसे विद्रोह करके दोबारा खेल जीवन न अपना लूं, लेकिन वाह रे स्वार्थी पुरुष ! जब मैंने कहा कि अभी पांच वर्ष तक हमें बच्चे के विषय में नहीं सोचना चाहिए तो बोले थे, 'मुझे लोगों के बीच नामर्द नहीं कहलाना है। एक सतान हो जाये, तब फिर चाहे जितनी लम्बी रोक लगा लो पता नहीं, तुम कैसी औरत हो, जो तुम्हारे अन्दर संतान की इच्छा नहीं।

मैं चुप रह गयी थी। इनकी स्वार्थी बातों को सुनकर मैं प्रायः चुप ही रह जाया करती हूं। मेरा स्वार्थ, बच्चा न चाहने के पीछे केवल अपने खिलाड़ी को जिन्दा रखना था। ये इतने चालाक कि मेरी इच्छा को भांप गये। इन्होंने भरसक कोशिश की कि मैं गर्भवती हो जाऊं। पहले तो इनके मुझे गर्भवती करने के विशेष तरीकों का मैंने विरोध किया, पर जब ये असन्तुष्ट से रहने लगे तो मैं स्वयं दुःखी हो गयी। मुझे एक दूसरा उपाय सूझा। मैं चुपचाप डा० कालरा से दवा लाने लगी और अभी तक बच्चा होने पर रोक लगाये रख सकी हूं।

अपने इस तरह के दुस्साहसिक फैसलों से मुझे डर भी लगने लगता है कि मेरे अन्दर की कुंठा विद्रोह बनकर कई रास्तों से फूटने लगी है। लिहाजा, मैं जान बूझकर किसी तरह का विद्रोह नहीं करना चाहती हूं। पति के साथ विद्रोह करके इस व्यवस्था में कोई पत्नी कहां जायेगी ? तलाक बेशक मिल सकता है, किन्तु तलाक के बाद भी एक युवा स्त्री के लिए फिर एक पुरुष चाहिए होता है और युवा पुरुष सस्कार के लिए स्लोगन तो लिख सकते हैं लेकिन विवाह के लिए उन्हें भी कौमार्य की गारण्टी चाहिए। किसी बूढ़े खूसट के साथ निर्वाह करने से तो अच्छा है कि युवा पति की ज्यादतियां सही जायें। मन का सुख न सही, तन का सुख तो मिलता है। यद्यपि मात्र तन के सुख से आत्मा तृप्त

नही होती, पर शरीर और आत्मा दोनो के अतृप्त रहने से एक का तृप्त होना ही पर्याप्त है, किन्तु इतना फिर भी है कि औरत का सर्वोपरि सत्ता मन है। उसे तन मानकर भोगने वाले कभी औरत को नहीं जीत सकते। साथ ही ऐसे पुरुषों की पत्नियां भी हार मान लेती हैं—सारी जिन्दगी से। दरअसल औरत की आन्तरिक संरचना बड़ी जटिल है। मुश्किल से ही पुरुष जैसे शरीरजीवी लोग उसे समझ पाते हैं। जिसने समझ लिया, सुखी विवाहित जीवन जीने के साथ साथ एक सीता तैयार कर गया, एक सावित्री बना गया।

बालीबाल-बास्केटबॉल खेलकर ही मेरी लम्बाई बढ़ी थी। यह शरीर का गठाव और चुस्ती मेरे एथलीट होने का ही प्रमाण है। हैमर और जैवलिन थ्रो में तो मेरे मुकाबले की कोई लड़की यूनिवर्सिटी में थी ही नही। दो वर्ष लगातार 'यूनिवर्सिटी एथलेटिक चैंपियनशिप का ताज मेरे सिर बंधा था। थोड़ा बहुत सभी खेलों में पार्टिसिपेट करती थी, लेकिन सापट बॉल की कप्तान होने के नाते लोकल मैचेज एरेंज करने यूनिवर्सिटी टीम को मजबूत बनाने के लिए प्रैक्टिस करने आदि में ही समय निकल जाता था। अत मैंने सारा ध्यान केवल सापट बाल पर केन्द्रित कर दिया। इसी कारण स्टेट तक पहुंच भी पायी। शायद पोस्ट ग्रेजुएशन में प्रवेश लिया होता तो अपनी प्रतिभा और जान कितनी उभरती, किन्तु ड्रा बक यही रहा कि घर में सबसे बड़ी मैं ही थी। पिताजी से अधिक मां ने और मां से अधिक रिश्तेदारों ने मेरी शादी में दिलचस्पी दिखायी।

मैं जानती हूं कि मेरे पति खेल में शून्य ही रहे। ये केवल किताबी कीड़े थे। राजनीतिक दाव-पेंच और जोड़-तोड़ बैठाना इनको तभी से खूब आता है। इधर जब इनको पता चला कि इनके बॉस की बेहद खूबसूरत बीवी 'पोलो' की शौकीन है तो दूसरे दिन से ही ये पोलो सीखने में जी जान से जुट गये। अब ये अपने मित्रों के आगे पोलो में मास्टर होने की डींग मारते हैं। पोलो में ये मास्टर हों न हों किन्तु बास की पत्नी इन्होंने फास ली। मुझे एकदम सही सूचना मिली है। चाहे मैं घर में रहती हूं पर खबर दुनिया की रखती हूं। पोलो सीखते ही इन्होंने बास की पत्नी के साथ खेलना शुरू किया था। कद-काठी और रूप रंग में ये कम राजकुमार नही। फिर औरत फासने के बड़े बड़े जाल भी इनके पास हैं। जाने क्या तिकड़म भिड़ायी इन्होंने कि वह लट्टू हो गयी। बस मुझे तो परिणाम की सूचना मिल गयी। मुझे यह भी पता है कि कुछ दिन मजे लूटकर ये बास की पत्नी को सबसे बड़े बॉस तक पहुंचा देंगे। अपने जूनियर्स की पत्नियों का यही तो किया था इन्होंने। बदले में इन्हें 'प्रमोशन' मिल ही जाते है।

दरअसल जब से मुझे इस तरह की सूचनाएं मिली हैं मैं प्रत्यक्ष रूप में इनको नाराज न करके भी अन्दर ही-अन्दर इनके विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रचने में लगी हूं। कुछ देर पहले इनकी प्रमाण पत्र फाड़ने की हरकत से तो मेरे भीतर विद्रोह की चिंगारी सुलग गयी है। अब तो इनका पोलो खेलना मेरी ईर्ष्या का कारण बन गया है। मैं चाह रही हूं कि किसी भी तरह बात छेड़ी जाये और इनको एहसास कराया जाये कि खिलाड़ी पत्नी पर प्रतिबन्ध लगाकर स्वयं खिलाड़ी होने का ढोंग करना और इन चोचलों की आड़ में दूसरे की पत्नी का शिकार करना कौन सी मानवता है? क्या आदर्श पति के ये ही लक्षण है? इन स्थितियों में पति को क्या अधिकार है कि वह पत्नी को आदर्शों का पाठ पढ़ाये?

ये एक अंग्रेज़ी उपन्यास मुंह पर लगाकर पट के बल लेटे हैं। मैं खाना तैयार कर चुकी हूं। आज कई बार मेरा हाथ जल गया है। सब्जी मैंने नहीं जलने दी, अन्यथा इनको मुझ पर झुंझलाने का एक अच्छा बहाना मिल जाता। मन बेताब है कि बात छेड़ दूं, पर सोचती हूं कि खाना खाकर लड़ाई करना अच्छा होता है। खाने से पहले कहीं लड़ाई बढ़ गयी तो दोनों ही भूखे रहेंगे। इसीलिए रूखे स्वर में कह देती हूं, "खाना खा लो।"

"मुझे भूख नहीं है।"

"खा लिया होगा अपनी पोलोवाली फ्रेंड के साथ ?

"कौन पोलोवाला ?'

"अपने बॉस की बीवी को नहीं पहचानते ?"

"मैं तो तुम्हें भी पहचानता हूं।'

"मुझे क्या पहचानते हो ?"

"अपने उन कोच यारों को भूल गयी हो ?"

"तुम कुछ भी आरोप लगाओ, अब मैं आत्महत्या करने से रही पर हां, कल से खेलना फिर शुरू कर रही हूं।"

"तुम्हारी इतनी हिम्मत ?"

"तुम्हारी पोलो सीखने की हिम्मत कैसे हुई ?"

'य मत भूलो कि मैं एक अफसर हूं। मुझे पचासों लोगों के बीच उठना-बैठना होता है। इस तरह की सारी चीजें सीखना मेरे लिए उतना ही जरूरी है, जितना तुम्हारे लिए खाना बनाने की तमीज सीखना।"

"तो मतलब ये कि औरत सिर्फ खाना बनाने के लिए होती है। तब तो तुम्हें अफसर बनकर भी तमीज नहीं आयी। अफसरों की बीवियों के हाथ मेरी तरह कटे फटे नहीं होते, उनके पैरों में बिवाइयां नहीं पड़ी होतीं। अफसरों के लिए नौकर-नौकरानियां रखना भी सभ्यता में आता है, केवल पोलो खेलना या ड्राइविंग सीख लेना नहीं।"

'तुम्हारी औकात इतनी ही है।"

"इससे मेरी नहीं, तुम्हारी औकात का पता चलता है।"

'आराम फरमाने के लिए मैं एक और बीवी ला सकता हूं—मोम की गुड़िया जैसी, लेकिन तुम्हारे लिए नौकरानी रखने की भूल नहीं कर सकता।"

'जितना तुम्हें नहीं पहचानती थी, आज उतना भी पहचान लिया।"

"तो तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगी ?"

"मैं भी आवारागर्दी करूंगी, जैसे-जैसे तुमने आरोप लगाये हैं, वैसा ही करूंगी।"

'मैं तुम्हारा खून कर दूंगा।"

'मैं भी तुम्हारा खून कर सकती हूं।"

"तुम नहीं कर सकती हो।"

"क्यों ?"

"अपन हाथ से औरत विधवा नही बन सकती।"

'औरत को इतना जानते हो तो यह अत्याचार क्यो ?'

"न करने स औरत अपनी औकात भूल जाती है।"

"तब तो तुम औरत का नही समझते।'

'ऐसी तैसी औरत की।"

पहली बार लग रहा है कि मैं हार गयी। आज ही एहसास हुआ है कि स्त्री पुरुष की लडाई मे स्त्री कभी नही जीत सकती। उसकी जीत भी उसकी हार है। यदि मैं इनको नाराज करके कल से मेलन लगू तो य दरवाजे पर कुडी चढाकर अन्दर लेट जायेंगे। मैं बाहर ही पडी रह जाऊगी। शाम को मरे मायके के लिए कोई बस भी नही जाती। फिर मैं कहा जाऊगी ?

समझौता करके पचास प्रतिशत सम्भावना जीतने की भी रहती है। फिर भी सम्भावना न भी हो जीत की तो भी उस समझौता करना है—वह औरत जो है और जिसे आशाओ म उम्र गुजारना विरासत म मिला सस्कार है। कैसी है औरत की नियति ? इस समय नारी स्वतन्त्रता के नारे लगाता हुआ कोई पुरुष इधर स उधर गुजर जाये तो मैं उसका मुह नोच लू झूठे कहो के। नारी तो केवल पुरुष के लिए बनी है। पुरुष जब चाहे उसके साथ खेल सकता है। नारी तन और नारी मन पुरुष के दोनो हाथो से खेलने के लिए दो खिलौने ही तो हैं। इसीलिए तो उसन नारी पर इतन प्रतिबन्ध लगा दिये *कि नारी अस्तित्व बोतल म बन्द सा हो गया। इसी अस्तित्वहीन जीवन ने नारी के परों* मे लाज बाध दी। वह तो मर जायेगी अगर उस पर हजार उगलिया उठ पडी। कितनी अहकारी है पुरुष व्यवस्था, जो अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए दूसरे को अस्तित्व म आने ही नही देती।

किन्तु औरत फिर भी उदार है, सहनशील है। उसे अपनी सत्ता कायम करने का कतई लोभ नही स्त्री-अ तमन को तो एक छुअन चाहिए प्रेम की, इससे अधिक कुछ नहीं। ठीक है, मेरा पति चाहे जो करे उसकी इच्छा। मैंने तो खेल जीवन छोडा। कौन अपना और अपन पति का जीवन नरक करे। मुझ कोई चाह नही अलग अस्तित्व की। कोई दवा नही लूगी अब डॉ० कालरा से—कान पकडती हू। अब तो अपन पति के लिए चाद सी बेटी पदा करूगी। मेरी लाडली मेरी गोद म खेलेगी और ज्यो ज्यो समझदार होने लगेगी, मैं उसे एक नया खेल सिखाऊगी। एक ऐसा खेल जो पिता और पति की इस व्यवस्था के विरुद्ध खेला जायेगा, जो औरत को खिलाडी होने देना तो दूर औरत भी नहीं होने देती।

आखों देखा हाल

माइकल एरेलोन

"श्रोतागण ! आपका जाना पहचाना अनाउंसर मालकम आपसे सम्बोधित है। हम इस समय अपने स्टूडियो से नहीं, बल्कि खेल के मैदान से बोल रहे हैं। आप लोग इस समय अध्यक्ष एकादश और अतिथि जमन टीम के बीच होनेवाले मैच का आखों देखा हाल सुनने के लिए निश्चय ही बेहद उत्सुक होंगे, लेकिन मैं क्षमायाचक हू कि आपको प्रतीक्षा की कुछ घड़िया और बर्दाश्त करनी होगी। अभी मैच के शुरू होने का समय नहीं हुआ। अभी कुछ मिनट बाकी है। इसके बाद आप निश्चय ही एक दिलचस्प मैच का आखों देखा हाल सुनेंगे यह आप सीधे स्टेडियम से सुन रहे हैं। मैच शुरू होने ही वाला है। आज का यह विशेष कार्यक्रम आप पालमाल सिगरेट कम्पनी की ओर से सुन रहे हैं। यह लोकप्रिय कम्पनी जो आपके लिए पसंदीदा ब्राड के सिगरेट मुहैया करती है। केवल आपकी दिलचस्पी और मनोरजन की खातिर पालमाल सिगरेट कम्पनी यह कार्यक्रम पेश करने के लिए पूजी भी उपलब्ध कर रही है। सदा पालमाल सिगरेट पीजिए "

प्रसिद्ध अनाउंसर मालकम की सधी तुली और जानी पहचानी आवाज स्टेडियम के कोने मे बने हुए शीशे के केबिन म से प्रसारित होकर देश के कोने कोने म पहुच रही थी। लाखो खेल प्रेमी इस मैच का आखो देखा हाल सुनने के लिए अपने अपने रेडियो और ट्राजिस्टर खोले एकाग्रचित बैठे थे। शीशे के केबिन मे से मालकम को खेल के मैदान का एक एक कोना बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

"श्रोतागण ! जैसा कि आप सबको पता ही होगा कि इस सीरीज का पहला मैच अतिथि-टीम ने जीत लिया था, लेकिन दूसरा मैच हमारी अध्यक्ष एकादश ने जीतकर हिसाब बराबर कर दिया था। अब आज के इस तीसरे और अंतिम मैच पर ही दोनों टीमों की हार या जीत निर्भर है। इसलिए यह मैच बेहद महत्त्व रखता है। दोनो टीमों के खिलाड़ियो को देखते हुए यह अनुमान लगाना कठिन है कि किसका पल्ला भारी रहेगा। दोनो टीमों म उच्चकोटि के खिलाडी शामिल हैं। दोनो टीम ओलम्पिक खेलो मे भी बराबर रही थी। इसलिए अभी तक निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि पराजय किसकी होगी "

मालकम के केबिन के बाहर असख्य व्यक्ति एकत्र थे। उनम प्रेस रिपोर्टरों और फोटोग्राफरों के अतिरिक्त रेडियो के प्रतिनिधि भी थे।

" जमन टीम इस बार कुछ अधिक ही फुर्तीली और जोशीली नजर आ रही है। दोनो टीमे इस समय मैदान म उतर चुकी है। जमन टीम का कप्तान बेहद जाशीले अन्दाज मे उछल उछलकर अपन साथियो को निर्देश द रहा है। ऐसा लगता है कि वह मच को हर कीमत पर जीतकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने क लिए सख्त बेचन है। उसकी टीम के सभी खिलाडियो की भी लगभग यही अवस्था है। दशक दोनो टीमो के खिलाडियो को देख देखकर नारे लगा रहे हैं। आशा है कि यह मच बेहद बेहद दिलचस्प रहेगा "

इतने मे बहुत दूर से एक आदमी तजी स दौडता हुआ आया। वह सीधा केबिन की ओर आ रहा था। उसने हाफ्ते हुए भीतर प्रवेश किया। उसने जल्दी से मालकम के हाथ मे एक कागज थमाया और उसी तजी स बाहर निकल गया। वह बेहद घबराया हुआ लग रहा था, लेकिन मालकम ने घबराय बिना बडे कुशल अन्दाज मे माइक्रोफोन पर हल्की फुल्की बाते जारी रखी और उस कागज को खोलकर पढ भी लिया। कुछ क्षणो के लिए उसके चेहरे पर भी परेशानी के चिह्न नजर आन लगे, लेकिन उसन अपनी आवाज म कम्पन नही आन दिया और पहले की तरह विश्वास से आखो देखा हाल सुनाता रहा "यह कायक्रम आपकी सेवा म पालमाल सिगरेट कम्पनी के सौजन्य से पेश किया जा रहा है। बस, अब मैच शुरू होन ही वाला है। इस समय खेल के मदान क चारो ओर जोशभरे दशकों की कतारें नजर आ रही हैं। लगभग सभी सीटें भर चुकी हैं और हा श्रोतागण, जब तक मच शुरू होता है, लीजिए आप अभी अभी प्राप्त होने वाली एक महत्वपूण सरकारी घोषणा सुनिए। यह घोषणा पुलिस विभाग की ओर स जारी की गयी है और इसके महत्व की दष्टि स आपसे प्राथना करता हू कि इसे गौर स सुनिएगा। घोषणा म कहा गया है कि आज यहा से कुछ दूरी पर एक दुघटना घटित हो गयी है, जिसम चिडियाघर की ओर जानेवाला एक ट्रक उलट गया है। इस ट्रक मे कुछ जगली जानवर थे, जो हाल ही म जगलो से पकडे गये थे और उन्ह सधाने के लिए चिडियाघर ले जाया जा रहा था। ट्रक के उलटन से यह सब जानवर अपने पिंजरो म स निकल भागे हैं। ट्रक के ड्राइवर न पुलिस को बताया है कि फरार होनेवाले जगली जानवरो म दो बब्बर शेर भी शामिल हैं, जो हाल ही म असम स आयात किय गये हैं और जिन्ह अभी तक सधाया नही जा सका है। अत पुलिस विभाग न इस क्षेत्र क सभी लोगो से कहा है कि वह अपनी रक्षा का समुचित प्रबन्ध कर लें। पुरुषो स्त्रियो और बच्चो को निर्देश दिया जाता है कि वह उस समय तक अपने घरो क अन्दर ही रहे जब तक कि उन जानवरो को पकड नही लिया जाता या मारा नही जाता। पुलिस न जनता से यह अपील भी की है कि अगर किसी व्यक्ति को उनम से कोई भी जानवर दिखाई दे तो वह तत्काल आपातकालीन केन्द्र या फायर ब्रिगड को टेलीफोन पर सूचित करे, लेकिन याद रखिये कि व्यथ भय और आतक का शिकार होन का कोई लाभ नही। सयोगवश आपका उनस सामना हो जाय तो मुकाबला का प्रयत्न करन के बजाय कतरा जायें क्योकि आप उन्ह मार नही सकेंगे जबकि व आपको आसानी म अपना निवाला

बना सकते है अर्थात आपके और उन जगली जानवरो के मैच मे उनकी जीत की सभावनाए अधिक रोशन हैं !" मालकम ने अतिम वाक्य अपने विशिष्ट हास्य-अदाज म कहा, ताकि श्रोताओ की घबराहट कम हो जाये। फिर कुछ विराम देने के बाद उसने कहा 'तो श्रोतागण ! आपने पुलिस की ओर से जारी की हुई घोषणा सुन ली ! बस अधिक घबराने की कोई जरूरत नही। मेरे खयाल म उन शेरो को भी आज का यह ऐतिहासिक मैच देखन का शौक चर्राया होगा। सम्भवत इसीलिए वह पिंजरो स निकल भागे हैं। चलिए, इस बहाने जरा मनोविनोद रहेगा और पुलिसवाले भी अपनी योग्यता का प्रदशन कर सकेंगे। वैसे मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अभी कुछ क्षणो मे आपको शेरो क पकडे जाने का समाचार भी सुनाऊगा। सम्भव है, मैच शुरू होने स पहले ही, वरना बीच म किसी भी समय ! भला वह भगोडे बचकर कहा जा सकते हैं ।"

बाहर रेडियो के दो अन्य अनाउसर भी मौजूद थे, जो मालकम की रनिंग कामेंटरी सुन सुनकर होठो में मुस्करा रहे थे। मालकम उन सबसे सीनियर और मजा हुआ अनाउसर था और उसकी खूबी थी कि वह बडी से बडी खतरनाक और भयानक खबर को भी इस अदाज म प्रसारित करता था कि लोग अकारण न घबराये। बोर स बोर मैचो पर भी उसी की रनिंग कमेंटरी बडी दिलचस्प होती थी।

"हा तो जनाब ! अब पुलिस और शेरो के मैच की रनिंग-कमेंटरी खत्म होती है। आइये, अब हम असल मैच पर भी कुछ बातें करें। बस अब मैच शुरू होने म केवल दो मिनट बाकी रहते हैं। अब बस समय हुआ ही चाहता है। खिलाडी बिल्कुल तैयार हैं "

रनिंग कमेंटरी करते करते मालकम का तेज धूप का एहसास हुआ, तो उसन एक और चुटकुला छोडा 'आज मौसम खासा गम है। लगता है कि मैच जीतने के लिए दोनो टीम इस मैदान को झील बना देंगी। देखें, कौन सी टीम अधिक पसीना बहाती है। श्रोतागण ! देर से रेडियो खोलनेवालो की सूचना के लिए मैं पुलिस विभाग की ओर से प्राप्त होनेवाली आवश्यक घोषणा एक बार फिर सुनाता हू " मालकम ने वही खबर जरा भिन्न अदाज मे सुना दी।

दूर कही किसी घडियाल से टन की आवाज उठी तो मालकम ने घडी देखी और कहा, श्रोतागण ! लीजिए प्रतीक्षा की घडिया खत्म हुइ। मैच शुरू होने ही वाला है। *यह कायक्रम आपकी सेवा म पालमाल सिगरेट कम्पनी की ओर से पेश किया जा* रहा है। दोनो टीम अपनी अपनी जगह पर आ गयी हैं। समय हो चुका है " थोडे से विराम के बाद सहसा मालकम की आवाज फिर सुनाई दी, 'हा तो श्रोतागण ! लीजिए मैच शुरू ! ओह !" अकस्मात उसकी आवाज म अति भय और घबराहट भर गयी, "ओह वे दोनो शेर मेरे केबिन में "

उसके बाद श्रोताओ को शीशे का केबिन टूटने फूटने की आवाजें सुनाई देन लगी।

जय-पराजय

जैक लडन

टॉम किंग न आखिरी निवाला मुह मे डाला और धीरे धीरे चबाता हुआ खान लगा। फिर जब वह खाकर उठा तो उसे लगा कि वह अभी भी भूखा है। खाना अकेले उसी ने खाया था और वह खत्म भी हो गया था। दोना बच्चो को साथ वाले कमरे म जल्दी ही सुला दिया गया था, ताकि वे नीद मे खाने की बात भूल जाये। उसकी पत्नी भूखे पेट उसके पास बुत बनी बठी थी और व्याकुल दृष्टि स उस देख रही थी। वह दुबली पतली अधेड उम्र की स्त्री थी। उसका चेहरा वीरान सा प्रतीत होता था। फिर भी, उसमे खोयी हुई सुन्दरता की झलक मौजूद थी। आज उसन अपने पडोसी से कुछ आटा मागकर खाना बनाया था और उसे टाम के सामन परोस दिया था। उसके बाद घर म खान के लिए कुछ नहीं था।

टाम किंग खिडकी के पास जाकर बैठ गया। उसके भारी भरकम शरीर के बोझ से कुर्सी चरमरायी। उसने बहुत सस्ते और पुरान कपडे पहने थे और उसके बूट भी बहुत पुराने और खस्ता हालत म थे। उस देखकर किसी साधारण से मजदूर का खयाल आता था।

उसके होठ सूजकर मोटे हो गये थे और उनकी शक्ल बिगडी हुई सी लगती था उसका जबडा बहुत सख्त और सशक्त था और सुस्त और बोझिल आखें खोयी खोयी सी लगती थी। उन आखो की बदौलत वह चेहरा सचमुच ही किसी लडाकू जानवर के चेहरे जसा लगता था।

पर टाम किंग बहुत शान्त और दयालु आदमी था। उसने कभी किसी से झगडा नही किया था न कभी किसी को नुकसान पहुचाया था। वह पेशेवर मुक्केबाज था और मुक्केबाजी के मुकाबला मे उसकी मार बडी खतरनाक थी, लेकिन अपने दनिक जावन में उसने कभी किसी पर हाथ नही उठाया था। अपनी जवानी के दिनो म, जब पैसा उसके हाथों से पानी की तरह बहा करता था उसने कई लोगो की मदद करके अपनी दरियादिली का सबूत दिया था।

उसका कोई दुश्मन नही था। हा मुक्केबाजी के मुकाबलो मे अपना प्रतिद्वद्वी मुक्केबाज उसे अपना सबसे बडा दुश्मन दिखाई देता था और वह उस पर इस तरह वार पर वार करता, जस उसे मार ही डालना चाहता हो लडना उसका पेशा था और इसके

लिए उसे पैसे मिलते थे। जीतने पर तै की हुई सबसे बड़ी धनराशि मिलती थी और साथ ही मजदूरी भी।

बीस साल पहले जब उसका बूलूमूलू गोजर से मुकाबला हुआ था तो उसे यह पता था कि अभी चार महीने पहले ही गोजर के टूटे हुए जबड़े ठीक हुए हैं, फिर भी उसने खास तौर पर उसके जबड़े को अपना निशाना बनाया था और नौवें राउंड' में फिर से उसका जबड़ा तोड़ डाला था, वह जानता था कि उसके जबड़े पर वार करने से वह जीत सकता है और मुकाबले के लिए तै की हुई सबसे बड़ी रकम उसे मिल सकती है। हालांकि उसके मन में गोजर के प्रति दुर्भावना नहीं थी।

टॉम किंग खिड़की के पास चुपचाप बैठा हुआ शून्य दृष्टि से अपने हाथों की ओर देख रहा था जिन पर मोटी मोटी नीली नसें उभरी हुई थीं। वे हाथ बहुत मोटे, भारी और भद्दे थे। उन हाथों से वह कोई काम नहीं कर सकता था। उसने काम करने की कोशिश की थी पर हाथों ने उसका साथ नहीं दिया था। वे हाथ तो वर्षों लड़ते रहे थे, और कोई अन्य काम करने लायक नहीं रह गये थे।

अपने हाथों की ओर देखते हुए टॉम किंग के सामने अपनी जवानी के दिन घूमने लगे। कुछ देर बाद उसने अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा, ' खाने के साथ अगर थोड़ा-सा मांस मिल गया होता !"

"मैंने उधार मांगने की कोशिश की थी, पर मिला नहीं।" पत्नी ने नर्मी से कहा।

टॉम किंग को आज सैंडल नामक मुक्केबाज से लड़ना था और वह सोच रहा था कि इस खाने के साथ थोड़ा सा मांस मिल जाता तो उसमें नयी शक्ति आ जाती। एक जमाना था कि वह अपने कुत्ते को रोज भरपेट मांस खिलाया करता था। पर अब टाम किंग बूढ़ा हो रहा था और कभी-कभी ही उसे मुक्केबाजी के मुकाबलों में लड़ने का मौका मिलता था।

आस्ट्रेलिया में वह साल हर किसी के लिए बहुत बुरा साबित हुआ था और आसानी से काम नहीं मिल रहा था। काम के आभाव में टॉम की भी हालत बहुत खराब हो गयी थी। यहां तक कि उसे भरपेट भोजन भी नसीब नहीं होता था अच्छे और पौष्टिक भोजन की तो बात ही अलग थी। मुकाबले के लिए वह जरूरी अभ्यास भी नहीं कर सका था।

आखिर वह उठ खड़ा हुआ और अपना हैट लेकर दरवाजे की ओर बढ़ा। उसकी पत्नी दरवाजे के पास खड़ी थी। इसके पहले उसने टॉम को जाते समय कभी चूमा नहीं था पर आज वह रह न सकी और उसने टॉम की गर्दन में बाहें डाल दीं, उसके चेहरे को अपनी ओर झुकाते हुए चूम लिया। टाम के भारी भरकम शरीर के सामने वह बहुत छोटी लग रही थी।

"जीत कर आना टाम," उसने कहा, "मेरी सारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।"

वह हल्का सा हंसा "हां, जीतकर ही आना चाहता हूं। तभी मुझे तीस पौंड

मिलेंगे। हारने पर कुछ भी नहीं मिलेगा। जीत गया तो उसी समय टैक्सी में बैठकर घर आऊंगा।"

"मैं इंतजार करती रहूंगी।"

गेयटी क्लब, जहां मुकाबला होना था, टाम के घर से काफी दूर था। टाम पैदल ही चल पड़ा। रास्ते में उसे वे दिन याद आये, जब वह न्यू साउथ वेल्स का हैवीवेट चैंपियन था। उन दिनों वह हमेशा टैक्सी में जाया करता था। दो मील का यह सफर पैदल तै करना उसके लिए हानिकारक था। लड़ने से पहले किसी भी किस्म की थकावट उसकी शक्ति का ह्रास कर सकती थी, पर वह लाचार था।

वह बूढ़ा हो गया था और दुनिया बूढ़ों की परवाह नहीं करती। अच्छा होता कि वह मुक्केबाजी के पेशे की बजाय कोई और पेशा अपनाता। तब इस उम्र में भी वह काम करके रोजी कमा सकता था पर तब वह प्रसिद्धि न मिलती, जो उसे जवानी के दिनों में मिली थी। तब अखबारों में उसका नाम छपता था और लोग उसकी बातें करते थे।

उसे अपना वह मुकाबला याद आया, जो बूढ़े हो रहे स्टोशर बिल के साथ हुआ था। अठारहवें राउंड में उसने बिल को ऐसा हराया था कि बाद में वह ड्रेसिंग रूम में जाकर बच्चों की तरह रोया था।

लेकिन आज टाम खुद बुढ़ापे में पांव रख चुका था और सैंडल से लड़ने जा रहा था, जिसके अंग-अंग से जवानी फड़कती थी। सैंडल बूढ़े हो रहे मुक्केबाजों से लड़ता और उन्हें हराता हुआ अपना रास्ता साफ कर रहा था। इस तरह वह चैंपियन बनने के सपने देख रहा था। वह न्यूजीलैंड से आस्ट्रेलिया आया था और वहां का चैंपियन बनना चाहता था। उसका पहला मुकाबला टॉम किंग के साथ रखा गया था। टॉम किंग को हराने के बाद ही वह अन्य मुक्केबाजों से लड़ सकता था। टॉम किंग उसके रास्ते की पहली रुकावट था। अब टाम किंग सैंडल के बारे में भी सोचने लगा था। उसने उसे देखा तो नहीं था, पर उसकी स्फूर्तिभरी जवानी को वह महसूस कर सकता था।

टॉम किंग गेयटी क्लब पहुंचा तो वहां खड़े लोगों ने उसे देखा और कई आवाजें आयीं, 'वह देखो! वह रहा टाम किंग।" जब वह ड्रेसिंग रूम में से तैयार होकर बाहर निकला और दर्शकों की भीड़ में से होता हुआ 'रिंग' की ओर गया तो लोगों ने उसे देखकर तालियां बजायीं। कई लोगों ने उसे नाम लेकर पुकारा। उसने उनकी ओर देखकर हाथ हिलाया। रिंग में पहुंचकर वह एक कोने में रखे स्टूल पर बैठ गया, तभी रेफरी ने आकर उससे हाथ मिलाया। जैक बाल उसका नाम था।

जक बॉल ने पिछले दस साल से लड़ना छोड़ दिया था। टॉम किंग को उसे रेफरी के रूप में देखकर खुशी हुई। वे दोनों बूढ़े हो रहे मुक्केबाज थे। टॉम किंग ने सोचा कि अगर उसने सैंडल के साथ लड़ते हुए नियमों का उल्लंघन भी किया तो जक बाल नजरअंदाज कर देगा।

कुछ ही देर बाद सैंडल भी रिंग में आ गया। दर्शकों ने तालियां बजायीं। टाम किंग ने

उसे गहरी नजर से देखा और जायजा लिया। कुछ ही क्षणों में वह उससे टक्कर लेने वाला था।

टाम किंग अभी तक सैंडल को देख रहा था। उसका भरा पूरा, सुन्दर, गोरा चेहरा था और चौड़ी चट्टान सी, भरी हुई छाती थी। चमड़ी के नीचे उसकी प्रत्येक मांसपेशी फड़कती हुई प्रतीत हो रही थी।

नियत समय पर दोनों मुक्केबाज आगे बढ़े और उन्होंने एक-दूसरे से हाथ मिलाया। तभी घंटे की आवाज गूंज उठी। घंटा बजते ही दोनों मुक्केबाज पीछे हटे और पैंतरा बदलकर लड़ने के लिए तैयार हो गये। दूसरे ही क्षण सैंडल बिजली की सी तेजी में टाम किंग पर झपटा और उस पर बेतहाशा मुक्के बरसाने लगा। उसका शरीर लोहे की लचकीली कमानियों का बना हुआ लगता था। वह जैसे हवा में उछलता, नाचता, आगे बढ़ता पीछे हटता, झपटता हुआ हमले पर हमला कर रहा था। उसमें स्फूर्ति थी और होशियारी थी। दर्शक लोग दंग रह गये।

लोगों ने तालियां बजायीं नारे लगाये, चीखें बुलन्द कीं, पर टॉम किंग को कोई हैरानी नहीं हुई। वह कई लड़ाइयां लड़ चुका था और जानता था कि जवान मुक्केबाज किस तरह लड़ा करते हैं। हां, सैंडल शुरू में ही तेजी दिखा रहा था। वह शुरू में ही अपना रौब जमाना चाहता था। टॉम किंग को उससे इसी बात की आशा थी। आखिर जवानी का अपना जोश, अपनी शक्ति का दिखावा तो करना ही था।

सैंडल इस फुर्ती से रिंग में घूम रहा था कि उस पर दर्शकों की नजर टिक नहीं रही थी। वह चाहता था कि अपने प्रतिद्वंद्वी को तबाह कर डाले, जो उसके शानदार भविष्य के रास्ते में रोड़ा बना हुआ था। वह उसे हमेशा के लिए एक तरफ हटा देना चाहता था, उसका खातमा कर देना चाहता था। और टॉम किंग था कि बड़े धीरज से उसकी मार सह जा रहा था। वह जानता था कि उसे किस तरह लड़ना है, किस तरह जवानी का मुकाबला करना है। वह चाहता था कि उस मचलती-उफनती जवानी का जोश किसी हद तक ठंडा पड़ जाये। तब तक वह सब्र से काम लेना चाहता था। वह हमला करने की बजाय अधिकतर अपना बचाव कर रहा था।

एक बार वह सैंडल की जवानी के उस उफान पर मन ही मन हंसा। तभी एक जोरदार वजनी मुक्का उसके सिर पर पड़ा। वह चाहता तो एकाएक झुककर उस मुक्के की मार से बच सकता था, पर उसने वह मुक्का सिर पर सह लिया। किसी मुक्केबाज के लिए अपने प्रतिद्वंद्वी के सिर पर मुक्का मारना खतरनाक होता है इससे उसकी उंगलियां टूट जाने का डर रहता है। कभी टाम किंग ने भी, अपनी जवानी के दिनों में बिल टेनर के सिर पर इसी प्रकार मुक्का मारा था और बाद में उसे पछताना पड़ा था। सो सैंडल का मुक्का खाकर उसे खुशी हुई।

पहला राउंड खत्म हुआ तो दर्शकों पर सैंडल की धाक जम चुकी थी। उन्हें लगा कि अगले कुछ ही राउंडों में सैंडल टॉम किंग को पछाड़ देगा और उस मुकाबले का फैसला बहुत जल्द हो जायेगा। टॉम किंग तो उसके सामने कुछ भी नहीं है। पूरे राउंड में मार पर मार खाता रहा और एक बार भी हमला नहीं कर पाया। मानो इस

कब तक अपना बचाव कर सकेगा ? मार खा खाकर हार जायगा।

सैंडल की फुर्ती के मुकाबले म टॉम किंग की हरकतें बहुत सुस्त सी थी, पर वह बडी चौकसी से वह सब कुछ देख रहा था जो उस लडाई म देखना उसके लिए जरूरी था। व आख अपने प्रतिद्वद्वी की हर हरकत का नाप तौल रही थी। उन आखो म किसी प्रकार की घबराहट नही थी।

राउड खत्म होने पर जब टाम किंग रिंग के एक कोने म स्टूल पर बैठा तो उसन टागें फला दी और रस्सा पर बाहें टिकाकर पीछे की ओर लेट गया। वह गहरी सासें ले रहा था। उसन आखें बन्द कर रखी थी और चारा ओर से आ रही दशको की आवाजें सुन रहा था। लोग उस कोस रह थे कि वह मार क्यो खा रहा है, बचाव की बजाय हमला क्यो नही करता ? फिर किसी ने कहा कि वह बूढा हो गया है, उसके शरीर की लचक मर गयी है तभी तो वह इतना सुस्त है।

दूसरा राउड शुरू होने का घटा बजा ता दोनो प्रतिद्वद्वी स्टूला पर से उठकर एक दूसर की ओर बढे। सडल तीन चौथाई फासला तै करके टॉम किंग के पास पहुच गया। वह लडन के लिए बहुत उतावला लग रहा था। टॉम किंग धीरे धीरे आगे बढा। वह अपनी शक्ति व्यथ ही नही गवाना चाहता था। उसक पट म पौष्टिक भाजन का अभाव था और वह हर कदम बहुत सभालकर उठाना चाहता था, फिर वह दो मील का फासला भी पदल त करके आया था।

दूसरा राउड भी पहले राउड जसा ही रहा। सडल हमले पर हमला करता रहा और टाम किंग अपना बचाव करता रहा। सैंडल आधी तूफान बना हुआ था और टाम किंग किसी चट्टान की तरह था। दशक उसे लडने के लिए ललकार रहे थे लेकिन उस पर जसे कोई असर ही नही हो रहा था। सडल ज्ल्दी से जल्दी लडाई खत्म कर दना चाहता था पर टाम किंग यह नही चाहता था। वह अ त तक अपनी शक्ति बचाय रखना चाहता था। साथ ही, वह यह भी चाहता था कि सैंडल की शक्ति जल्द स जल्द चुक जाय। सडल की जवानी अधी थी जो अपने आपको नष्ट करन पर तुली हुई थी। टाम किंग का बुढापा सजग और सचेत था जा अपनी रक्षा करना चाहता था। यह बात उसने अपन लम्बे अनुभव से सीखी थी। सडल को अपनी जवानी पर गव था और टाम किंग को अपनी बुद्धिमानी पर।

तीसर राउड मे भी सडल की फुर्ती मे कोई कमी नही आयी, बल्कि उसका आत्म विश्वास और बढ गया था। राउड शुरू हुए अभी आधा मिनट ही बीता था कि सडल एक मौके पर जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास के कारण अपने बचाव की ओर से थोडा लापरवाह हो गया। टाम किंग की आखें चमकी और उसी तेजी से उसका मुक्का सडल के जबडे पर पडा। वह बहुत जोरदार और ठास मुक्का था जिसम टॉम किंग की सारी शक्ति भरी हुई थी।

दशको को लगा, जैसे किसी ऊघ रहे शेर का पजा अचानक ऊपर उठकर चमका हो। मुक्का पडत ही सडल किसी भस की तरह गुर्राकर गिर पडा। दशको की तालिया चारा ओर से गूज उठी। उन्हे पता चल गया था कि टॉम किंग सुस्त आदमी नही है और

मौका पड़ने पर हथौड़े की तरह मुक्का मार सकता है।

सैंडल बौखला उठा था। उसने उठने की कोशिश की पर जब उसके कानों में रेफरी के गिनने की आवाज़ पड़ी तो वह उठते उठते रुक गया। वह घुटने के बल बैठकर प्रतीक्षा करने लगा। रेफरी जब नौ पर पहुंचा तो वह उठ खड़ा हुआ। टाम किंग उसके सामने खड़ा था। उसे अफसोस था कि उसका मुक्का सही निशाने से ज़रा सा चूक गया था। काश, वह सही ठिकाने पर पड़ा होता! तब सैंडल को नाक-आउट करके वह विजयी होता और तीस पौंड लेकर घर चला जाता।

राउंड तीन मिनट तक चलता रहा। सैंडल के मन में पहली बार अपने प्रतिद्वंद्वी के प्रति आदर का भाव जागा। टाम किंग उसी प्रकार ऊंघता सा बिना किसी तेजी के वार करता रहा और धीरे धीरे अपने कोने की ओर पीछे हटता रहा। जब घंटा बजा तो वह उसी समय बैठ गया, जबकि सैंडल को दूसरे कोने तक चलकर जाना पड़ा।

यह एक छोटी सी बात थी, लेकिन छोटी छोटी बातें भी फायदेमंद साबित हो सकती थीं। सैंडल को जितने कदम चलना पड़ा उतनी ही उसकी शक्ति खर्च हुई। और फिर, आराम करने के लिए उसे एक मिनट में से कुछ सेकिंड कम मिले। इस प्रकार हर राउंड के अंत में टाम किंग लड़ता हुआ अपने कोने की ओर आ जाता था।

दो राउंड और हुए, जिनमें टाम किंग ने अपनी शक्ति कम से-कम खर्च करने का प्रयत्न किया, जबकि सैंडल इस ओर से लापरवाह था। सैंडल जिस तेज़ी से हरकतें और वार कर रहा था उससे टाम किंग को बेचैनी हो रही थी, क्योंकि उसके अधिकांश वार सही निशाने पर पड़ रहे थे। फिर भी, टाम किंग में तेजी नहीं थी, हालांकि दर्शक उसे डटकर मुकाबला करने के लिए ललकार रहे थे। छठे राउंड में सैंडल ने फिर लापरवाही दिखायी और उसके जबड़े पर टाम किंग का भयानक मुक्का इस ज़ोर का पड़ा कि वह वहीं ढेर हो गया और फिर उसे नौ गिनने तक उठना पड़ा।

सातवें राउंड में सैंडल का जोश कुछ ठंडा हुआ और उसे लगा कि अब उसे अपनी ज़िन्दगी की सबसे सख्त लड़ाई लड़नी पड़ेगी। टॉम किंग बूढ़ा तो था, लेकिन हर क्षण सचेत रहने वाला खिलाड़ी था। वह अपना बचाव करने में लाजवाब था और उसके दोनों ही हाथों के मुक्के में एक सी शक्ति थी। फिर भी वह अधिक वार नहीं कर रहा था, क्योंकि वह अंत तक अपनी शक्ति बचाकर रखना चाहता था।

टॉम किंग हर सम्भव चीज़ का फायदा उठा रहा था। कभी वह सैंडल के साथ गुथ जाता तो अपने कंधे का सारा बोझ उस पर डाल देता और आराम करने लगता। रेफरी के छुड़ाने पर ही वह उससे अलग होता। इस बीच सैंडल उस पर वार करता रहता जिन्हें देख दर्शक खुश होते लेकिन उन वारों की मार इतनी सख्त न होती। टॉम किंग उसकी पसलियों में अपने कंधे घसाये और उसकी बायीं बगल में सिर छिपाये उसके वार सहता रहता। इस प्रकार वह खुद आराम करता हुआ सैंडल की अधिकाधिक शक्ति का ह्रास करता और मन ही मन मुस्कराता।

नौवें राउंड में एक ही मिनट में टॉम किंग का मुक्का सैंडल के जबड़े पर तीन बार पड़ा और सैंडल का भारी भरकम शरीर ढेर हो गया। तीनों बार ही वह रेफरी के

नौ गिनने क पहन उठ खडा हुआ। हालाकि वह अब भी पहले जसा ही ताकतवर था, लेकिन उसकी तेजी कम हो गयी थी और उसके बहुत स वार बेकार साबित हो रहे थ। उसकी जवानी ही उसकी सबसे बडी ताकत थी और टॉम किंग की सबसे बडी ताकत थी उसका अनुभव। वह शारीरिक शक्ति के मुकाबले मे अपनी चालाकी, बुद्धि और लम्बे अनुभव से कही ज्यादा काम ले रहा था।

दसवें राउड म भी टाम किंग न अपना बचाव करत हुए सडल स बार बार हमल करवाये और उसकी ताकत खच करवाता रहा, लकिन एक बार जब सडल का मुक्का उसके सिर पर पडा तो उसे एक क्षण के लिए अधेरा दिखाई दिया। उस अधेरे म सडल और दशका के चहरे गायब हो गये लेकिन दूसरे क्षण फिर सब कुछ दिखाई देन लगा। उसे लगा जसे वह सो गया था और उसन एकाएक आखें खोली थी। उस समय दशको न उसे एक क्षण के लिए लडखडाते हुए पाया था लेकिन फिर उसे पहल की सी हालत म ही देखा।

सैंडल न फिर कई बार अपना वह वार दोहराया और टाम किंग की आखो क सामने धुध सी छान लगी। तभी वह अपना बचाव करता हुआ पीछे हटा और उसन इस जार से भरपूर वार किया कि सडल हवा मे उछला और लडखडाता हुआ पीछे की ओर गिर पडा। वह उठा ही था कि टाम किंग ने फिर भरपूर वार किया। उसके बाद ता वह वार पर वार करने लगा। अब वह न खुद आराम कर रहा था, न सडल को आराम करने का मौका दे रहा था। दशक तालिया बजाने लगे लेकिन सैंडल की सहन शक्ति का भी तो जवाब नही था। वह डटकर खडा रहा और मार खाता रहा। एक मौक पर वह बेहोश होकर गिरन ही वाला था कि रिंग के पास बैठे एक पुलिस इस्पेक्टर ने खतरा महसूस किया और लडाई बन्द करान के लिए उठा। ठीक उसी समय घटा बजा और सैंडल लडखडाता हुआ अपने कोने की ओर आ गया।

टाम किंग का निराशा हुई। अगर पुलिस इस्पेक्टर लडाई ब द करवा देता तो उसकी जीत हो जाती और वह थैली पा जाता। वह सडल की तरह नाम के लिए नही, बल्कि तीस पौड क लिए लड रहा था। वह बूढा था और आधे घटे से लड रहा था, लेकिन अब उसम इतनी शक्ति नही रह गयी थी कि सैंडल की जवानी की शक्ति का मुकाबला कर सकता। वह तज सासें ले रहा था। उसे अपनी टागे बोझिल सी महसूस हो रही थी। उस घर म यहा तक दो मील पैदल चलकर नही आना चाहिए था। और फिर वह सुबह से मास के लिए भी तरस रहा था। उसके मन म उन कसाइयो के लिए बेहिसाब नफरत जागी, जिन्होने उसकी पत्नी को मास उधार दने स इनकार कर दिया था। ग्यारवें राउड के लिए घटा बजा तो सैंडल इस तेजी स आगे बढा, जस वह अपने अन्दर किसी ताजी शक्ति का सबूत देना चाहता हो। वह शक्ति वास्तव म उसके शरीर म नही थी। टाम किंग जानता था कि असलियत क्या है। उसने सडल को और दिखावा करन का मौका दिया। फिर वह उसके साथ गुथ गया और आराम करता हुआ उसे वार पर वार करन का मौका दन लगा। आखिर एक मौके पर उसने कदम भर पीछ हटकर सैंडल पर एसा वार किया कि वह गिर पडा।

दर्शकों की खुशी और जोश का कोई अंत नहीं था। हर कोई टाम किंग को दाद दे रहा था, उसका हौसला बढ़ा रहा था।

और टॉम किंग, जो आधे घंटे से अपनी शक्ति बटोरकर रखे हुए था, उसे अंधाधुंध खर्च कर रहा था क्योंकि उसे अपनी जीत का यही एक मौका दिखाई दे रहा था। अगर उस राउंड में उसने सैंडल को नहीं हराया तो फिर उसे हराने की आशा नहीं रह जायेगी। वह वार पर वार कर रहा था और साथ ठंडेपन से इस बात का जायजा भी ले रहा था कि उसके वारों का सैंडल पर क्या असर हो रहा था। यह देखकर उसे हैरानी हुई कि सैंडल की सहनशक्ति का कोई अंत नहीं।

सैंडल लड़खड़ा रहा था चक्कर खा रहा था, लेकिन टाम किंग की टाँगें भी बोझिल हो रही थीं और उसके मुक्के पूरी शक्ति से वार नहीं कर पा रहे थे। फिर भी, वह सख्त से सख्त वार कर रहा था, जिसके कारण उसके कारण उसके हाथों में दर्द भी हो रहा था। अब वह सैंडल की मार नहीं खा रहा था, फिर भी अपने अंगों में, सैंडल ही की तरह, बड़ी तेजी से कमजोरी महसूस कर रहा था। अब न उसके घूसों में पहले की-सी शक्ति थी, न उसकी टाँगों में पहले की सी लचक थी। तभी उसने दर्शकों की आवाजें सुनीं, जो सैंडल को जोश दिला रहे थे। टाम किंग ने पूरा जोर लगाकर एक के बाद एक-दो मुक्के लगाये। वे इतने वजनी नहीं थे, लेकिन सैंडल इतना कमजोर और भौंचक्का बना हुआ था कि गिर पड़ा।

सैंडल ज्यों ही उठा, टाम किंग उस पर लपका, लेकिन उसके घूसों की मार ने अपना वह असर न दिखाया। अगले ही क्षण सैंडल उसके साथ गुथ गया और रेफरी की काफी कोशिशों के बाद कहीं जाकर अलग हुआ। टाम किंग ने खुद उससे अलग होने की कोशिश की थी। वह जानता था कि जवानी किस तेजी से अपनी शक्ति बटोरती है। वह यह भी जानता था कि सैंडल को हराने के लिए इससे पहले ही कदम उठाने की जरूरत है। एक जोरदार मुक्का उसका काम तमाम कर सकता है। हाँ, सैंडल अब बच नहीं पायेगा। सैंडल उससे अलग हुआ ही था कि वार करते समय टाम किंग को उस मांस का तल्खीभरा खयाल आया, जो वह खा नहीं सका था, और उसने सोचा कि काश, उसके मुक्के के पीछे उस मांस के टुकड़े की ताकत होती!

सैंडल मुक्का खाकर लड़खड़ाया, लेकिन गिरा नहीं। उसने रस्सों का सहारा लिया। टॉम किंग बिजली की तेजी से उसकी ओर बढ़ा और उस पर जोर का वार किया, लेकिन उसका अपना शरीर अब जवाब दे रहा था। अब उसमें सिर्फ बुद्धि ही रह गयी थी जो थकान के कारण धुंधली पड़ गयी थी। जबड़े का निशाना बाँधकर उसने जो मुक्का मारा था, वह कंधे पर लगा था। उसकी थकी हुई बाँह उसका कहना मानने से चूक गयी थी। और उस मुक्के की बदौलत वह खुद चक्कर खाकर पीछे हटा था और गिरते गिरते बचा था। एक बार फिर उसने मुक्का मारा। इस बार भी मुक्का निशाने से एकदम चूक गया। और टॉम किंग कमजोरी की हालत में सैंडल के साथ गुथ गया।

सैंडल से अलग होने की उसने कोशिश नहीं की। वह जैसे खत्म हो गया था। और उसने शरीर के स्पर्श द्वारा महसूस किया कि सैंडल के शरीर में नयी ताकत जमा हो

रही थी। हर क्षण सडल शक्तिशाली बनता गया। उसके मुक्के जो पहले कमजोर और नाकार साबित हो रह थे अब सही निशाने पर पडते हुए करारी चाट करने लगे थे। एक मौके पर टॉम किंग की धुधभरी आखा ने सैंडल का मुक्का अपन जबडे की ओर आता हुआ देखा तो उसन बाह उठाकर जबडे का बचाना चाहा, लेकिन बाह इतनी बोझिल हो चुकी थी कि अपने आप उठ न सका। उसने उसे शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मबल से उठाना चाहा। तभी सडल का मुक्का सही निशाने पर पडा। उसकी आखा के सामने कोई चीज चमकी और तभी उस अपन चारो आर अधेरा ही-अधेरा दिखाई दिया।

जब उसने आखें खोली तो वह अपने कोने मे था। और उसन दशको की आवाजें सुनी जो समुद्र की तरह गरज रही थी। एक भीगा हुआ स्पज उसके सिर पर दबाकर रखा हुआ था और सिड सुलिवन उसके चेहरे और छाती पर ठडे पानी की फुहार डाल रहा था। उसके दस्ताने उतार डाले गये थे और सैंडल उस पर झुका हुआ उसका हाथ हिला रहा था।

उसे भूख महसूस हा रही थी। वह अतडियो को कचोटने वाली साधारण किस्म की भूख नहीं थी बल्कि पेट की गहराई म पैदा हाने वाली एक ऐसी कपकपी थी जो उसके सारे शरीर म फल रही थी। उसे वह क्षण याद आया जब उसन सैंडल को पराजय के किनारे लाकर खडा कर दिया था। एक जोरदार मुक्के की जरूरत थी लेकिन ऐसा मुक्का वह मार नहीं सकता था और मौका हाथ से निकल गया था।

कुछ दर के बाद जब वह घर लौट रहा था, तो उसकी जेब म एक पेनी भी नहीं थी।

अपनी उस दुदशा को देखते हुए जिसम कि वह बुरी तरह घिर गया था, उसकी आखें गीली हा गयी। उसन दाना हाथा से अपना चेहरा ढक लिया और फूट फूटकर रोने लगा। उस सहसा स्टोशर बिल याद आया। बेचारा बूढा स्टोशर बिल! और टाम किंग की समझ म अब आया कि तब स्टाशर बिल ड्रेसिंग रूम म क्या राया था।

आखिरी दगल

बैलोदा सिलवा

अखाडा खूब सजाया गया था। साडा पर मस्ती छायी थी। उन मस्त साडा स टक्कर लेने वाले जवान खम ठोककर मैदान म निकल आये थे। वे महिलाए जो यह दगल देखन पधारी थी, बडी रोबदार दिखाई दे रही थी। प्रत्यक व्यक्ति इस तमाशे से आनदित होने के लिए तयार बैठा था। आज उन्हें आनदित हाने का अधिक अवसर मिल रहा था, क्योकि सबको पता था कि मत्री मारक्यूइस पनबल उनस कोसा दूर लिजवन मे बठा स्पेन के राजदूत के साथ देश की राजनीतिक गुत्थी सुलझाने म व्यस्त है। मत्री पनबल वह व्यक्ति था, जा पुतगाल के सम्राट दाम जूसे प्रथम को अपन इशारा पर नचाया करता था।

स्पेन के राजदूत और पुतगाल के मत्री के बीच होने वाले वाद विवाद पर राजमहल के गलियारा मे कानाफूसी हो रही थी। कुछ लोग ता अपने मत्री की प्रशसा म आकाश पाताल एक कर रहे थे और कुछ लोग मत्री पर आरोप लगा रहे थे। उनम उच्चवग दल और दशभक्त पार्टी स्पेन के राजदूत से सहमत थे बल्कि ईश्वर स प्रायना कर रहे थे कि वह युद्ध जल्दी छिडे, जो अनिवाय भी है और दरबारिया की नयी पौध के लिए विपकारक भी। मैजिस्ट्रेट, वकील महाशय और अय बुद्धिजीवी न केवल मारक्यूइस के पक्षधर थे, अपितु उन लोगो की खुल्लम खुल्ला आलोचना कर रहे थ, जिन पर धम और रूढिवादिता का भूत सवार था।

वार्ता म स्पेन के राजदूत ने पनबल स कहा "यदि यही बात है तो अब उन साठ हजार जवाना के पुतगाल म प्रवेश करने की प्रतीक्षा म रहे, जो पुतगाल म "

'वे हमारा क्या कर लेंगे?" मारक्यूइस ने क्रोध म पूछा। उसका स्वर बहुत ककश था और उसकी आखे ऐनक के पीछे लाल अगारा सी दिखाई दन लगी थी।

"वे पुतगाल मे स्पेन सम्राट का राज्य कायम करेंगे और तुम जस मत्री को सीधा करके रख देंगे।" राजदूत ने तुरत उत्तर दिया।

राजदूत विदा हो गया लेकिन उसने भगवान की सौगध खायी कि वह मारक्यूइस का सब कस बल निकालकर रहेगा।

मारक्यूइस म त्रुटिया अवश्य थी, लेकिन इसम कोई सदेह नही कि वह एक महान मनुष्य था और उसने अपन देश की महत्वपूण सेवाए सम्पन की थी।

शाह दाम जूस न दश क सभी मामल मन्त्री के हवाल कर दिय थ, लकिन जहां तक बल और मनुष्य के दगल का सम्ब ध था वह रत्तीभर भी मन्त्री का कहा मानन को तयार नही थ। इधर भद्रजन और धनिका का मन्त्री की इन बाता का पूरा पूरा पता था लेकिन वह जानबूझकर मन्त्री को नुकसान पहुचाना और सम्राट की प्रशसा प्राप्त करना चाहत थे। या भी पुतगाली जनता इस प्रकार की सजावट और प्रदशन की बहुत शौकीन थी। आज यह सजावट और प्रन्शन अपनी पराकाष्ठा पर थी।

यह शानदार दगल कुछ इस अन्दाज स शुरू हुआ कि इस पर अलफ लला क किसी रहस्यपूण दश्य का भ्रम होता था सभी घुडसवार उच्चाधिकारिया और धनिकों क शरीफ परिवारो से सम्बध रखते थ। उन्ह उनकी कीमती वरदिया, फुदार टोपिया और सचित्र दस्तावाली तलवारें बहुत शोभायमान लग रही थी। प्रत्यक घुडसवार न अपना भाला अपन दायें हाथ म पकड रखा था और उसके बायें हाथ म अरबी नस्ल क घोड की लगाम थी। उनम स एक व्यक्ति, जा घुडसवारा क दस्त का सरदार था, राजसिंहासन के नीचे सामने की ओर बढा और अपना हैट उतारकर उसने अभिवादन किया।

यह व्यक्ति काउट दोस था। उसकी वेशभूषा स्याह मखमल की थी जा उसके शरीर पर चुस्त लग रही थी। उसके कालर और कफ पर सुन्दर डोरी लगी हुई थी, जिसको स्पेन की ननो ने अपनी धैयवान उगलियो से बुना था। वह दरम्यान कद, छरहरे और सुडौल शरीर का स्वामी था। उसका गतिविधिया आकषक और शानदार थी। उसका चेहरा पीला लेकिन भावनाओ स भरपूर था। उसकी बडी बडी काली आखें चमकदार और आकषक थी। वह मारक्यूइस मारयाक जसे पिता का इकलौता और चहेता बेटा था। स्वय पिता न उस घुडसवारी का प्रशिक्षण दिया था। उसका पिता पुतगाल बल्कि योरोपभर म सबस बडा घुडसवार माना जाता था।

काउट दोस को घोड की पीठ पर बठा देखकर सब उसकी आर उन्मुख हो गये। उसकी शराफत और योग्यता क सभी कायल थ। वास्तव म वह स्वय और उसका घोडा कुछ इस प्रकार सज रहे थे कि उस पर उस प्राचीन देवमालाई चरित्र का सन्देह होता था जिसका शरीर घोड का और सिर आदमी का था।

वह जिस अन्दाज से अखाडे म उतरा और जिस शान स घोड को अपन इशारो पर चलाने लगा उसकी दाद म दशका ने बार बार और निरन्तर तालिया बजायी। अखाड क गिद तीसरे चक्कर म जब उसन अपने घोडे को घुटनो के बल झुकने का इशारा किया और स्वय उस महिला की ओर झुका जो सामने की सीट पर बठी थी तो सभी लोगो की नज़र भी उधर उठ गयी। उस महिला ने भी सीट क रेशमी परदे हटा दिये और उत्सुक जनसमूह की प्रशसा से प्रभावित होकर घुडसवार के अभिवादन का जवाब दिया।

अखाड म आय हुए साड ऊची नस्ल के थे। वह काफी उत्तजित हो रहे थे और लडन के लिए तयार खडे थे। ऐसे बिफरे हुए हैवानो से इन्सान को कम खतरा नही था। यही कारण था कि सभी दशक तमाशा देखने के लिए बेताब हो रहे थे।

फुर्ती और चालाकी से कई साडो को हरा दिया गया। अब एक बार फिर

अखाड़े का दरवाजा खुला और एक काला भुजंग सांड पूरे जोश खरोश से बाहर निकला। उसकी शान देखने के काबिल थी। उसी नस्ल के सभी चिह्न उसमें प्रत्यक्ष थे। उसकी टाँगें हिरन की तरह शानदार थीं। उसमें बला की तेजी थी। उसके हृष्ट पुष्ट कंधे लम्बे लम्बे सींग। यह सब चीजें उसके भयानक प्रतिद्वन्द्वी होने का प्रमाण थीं यह सांड जब अखाड़े के बीच पहुँचा तो थोड़ी देर के लिए ठहर गया। फिर उसने अपना सुंदर सिर झुका लिया। रेत पर अगाड़ी से खुर मारे और भयानक डकार ली। सभी दर्शक उस शानदार जानवर को देखकर मंत्रमुग्ध रह गये। अखाड़े में कुछ देर के लिए खामोशी छा गयी। तब सांड ने घुड़सवारों पर हमला कर दिया। इस कशमकश में तीन बढ़िया घोड़े मारे गए।

कुछ देर के लिए अखाड़े पर शांति छा गयी। घुड़सवारों में से कोई भी उस वहशी जानवर की ओर न बढ़ा। वह काफी बिफरा हुआ था। उसने एक बार फिर डकार ली। अपनी दुम इधर-उधर घुमायी और रेत पर अपने खुर मारे, मानो वह अपने आन वाले प्रतिद्वन्द्वी को ललकार रहा हो। काउंट दाग से न रहा गया। उसने घोड़े को चाबुक मारी और उसके भाले की नोक सीधी सांड की चौड़ी चकली गरदन में घुस गयी। मजमे में से तालियों की आवाज गूंजी। शादियाने बजने लगे। सांड ने भी एक भयानक डकार ली। काउंट ने फुर्ती से उसकी गरदन से भाला खींच लिया और अखाड़े के गिर्द घूमने लगा। ज्यों ही वह उस ओट के सामने से गुजरा जहाँ उसने घोड़े का घुटना टेक कर नीचे झुकाया था, एक कमल गोरा हाथ परदे में बाहर निकला। उस हाथ से गुलाब का एक फूल नीचे गिरा। नवयुवक काउंट ने घोड़े की गति कम किए बिना झुककर रेत पर से फूल उठा लिया। नजरें ऊपर उठायी। भंवर की तरह फूल चूमकर उसे वास्कट में उड़स लिया और भाला सांड की ओर तानकर क्षणभर निश्चल खड़ा रहा। फिर वह उस बिफरे हुए सांड के गिर्द चक्कर काटने लगा और चक्कर को तंग करता गया यहाँ तक कि उस वहशी जानवर के निकट आ गया। अब उसका वार बड़ी आसानी से सांड के सिर पर पड़ सकता था। उसने अपनी नजरें फिर उस ओट की ओर उठायी जहाँ उसकी प्रेमिका महिला बैठी थी। एक बार फिर उसने फूल को सीने से लगाया और सांड पर वार कर दिया। भाला एन उसके कंधे के बीच जा घुसा। जानवर ने व्याकुल होकर जवाबी हमला किया जिससे काउंट का घोड़ा पिछली दो टांगों पर खड़ा हो गया। सांड ने अपने मजबूत सींग घोड़े के शरीर में चुभो दिये, जिससे घोड़ा जमीन पर आ गिरा और उसके साथ उसका सवार भी। इससे पहले कि काउंट घोड़े से अलग हो सकता, सांड उसके ऊपर था। यह सब कुछ इतनी तेजी से हुआ कि दर्शकों की प्रशंसा की आखिरी गूंज एकदम भय और चिंता की चीखों में बदल गयी। काउंट के सुर्ख कम्बलोंवाले सहायक, जो सब-के सब दरबारी थे अपने ओट के परदे उस सांड के सामने लहराने लगे कि शायद सांड उनकी ओर आकृष्ट हो और उसकी उत्तेजना कम हो जाए लेकिन यह सब कुछ व्यर्थ सिद्ध हुआ, क्योंकि सांड ने किसी की ओर भी मुड़कर न देखा। उसका तो सारा गुस्सा उस लाश पर उतर रहा था, जो रेत पर पड़ी थी। फिर प्रलयकारी जानवर एक विजेता के गर्वीले अन्दाज में अपनी रौंदी हुई रेत पर बैठ गया। उसके अगले

काउट की निश्चल लाश पर थ।

मारक्यूइस मारयाक, मुरदा नवयुवक का पिता, जो कुछ क्षण पहले अपन पुत्र की हिम्मत और साहस पर गव और उल्लास से परिपूर्ण अपनी सीट पर बठा दशकों की प्रशसा पर मुस्करा रहा था, एक ददनाक चीख के साथ उठा और व्याकुल अवस्था म उसन अपना हाथ बगल की ओर बढाया ताकि अपनी तलवार हाथ म ले ले।

उदास पिता न अपने मुरदा पुत्र पर झुककर उसके ललाट पर चुबन लिया। फिर उठत हुए उसन तलवार थाम ली। बिना आस्तीन का चोगा उसकी बांह पर था। वह साड के मुकाबले म आ गया था, जो एक नय प्रतिद्व द्वी को आता देखकर एक बार फिर बिफर गया था।

चारो ओर गहरी निस्तब्धता थी। सब के सब सम्राट सहित विस्मित विमूढ़ खड थ। उनके सामन रोंगटे खड कर दन वाला नाटक खला जा रहा था।

साड ने हमला कर दिया, लकिन मारक्यूइस न तलवार और चोग की मदद स उसक हमल को असफल कर दिया।

अकस्मात सम्राट की कठोर चीख सुनाई दी। सांड न एक और वार कर दिया था। और अब की बार उसक सींग मारक्यूइस की छाती क एन सामन थे। सब लोग तत्काल घुटनो पर झुक गय और ईश्वर स मारक्यूइस की आत्मा के लिए ऊची आवाज स प्राथना करन लग लकिन एसे म एक चमत्कार हो गया। बूढे मारक्यूइस स इतने विस्मयकारी कारनामे की आशा न थी। हुआ या कि बूढा मारक्यूइस फुर्ती स साड क चौडे सिर पर चढ गया था और उसन अपने अचूक हाथ स जानवर की गरदन म दानो कधो के बीच तलवार घोप दी। उसन अपन विजेता शत्रु पर, जो अब उसके सामने खडा था, आखिरी निराशापूर्ण दृष्टि डाली और फिर ढेर हो गया।

मारक्यूइस पनवल ने एक नजर पुतगाल सम्राट की ओर देखा और सिर झुकाकर अखाडे मे उतर गया। दशक चुपचाप यह दृश्य देखत रहे। मन्त्री ने बूढे मारक्यूइस को अपनी बाहों मे भींच लिया। फिर उसके हाथ को चूमत हुए कुछ देर धीरे धीरे बातें करता रहा। ये बातें यद्यपि दशकों क कानो म न आ सकी लेकिन सब जानते थे कि मन्त्री उसके इकलौते बेटे की मौत पर शोक प्रकट कर रहा है। फिर वह उसस दो कदम हटकर खडा हो गया। बूढे मारक्यूइस ने एक सरसरी नजर मजमे पर डाली और पुतगाल सम्राट की ओर देखत हुए ऊची आवाज म बोला, 'सम्राट साहब और पुतगाल की जनता! मैं जानता हू कि मेरे बेटे की मौत पर मेरे लिए आपकी क्या भावनाए हैं लेकिन मैं अपन इकलौते बेटे की मौत पर दुखी कम और शर्मिदा अधिक हू।'

मारक्यूइस की इस बात पर दशक और सम्राट सभी चौंक से गये। वह फिर कहने लगा, 'मैं अपन बटे की मौत पर लज्जित हू, इसलिए कि उसन अपन प्राण व्यक्तिगत प्रदशन और प्रसन्नता क लिए द दिय। वह एक स्त्री की खुशी प्राप्त करन क लिए मर गया जबकि देश को उसकी जरूरत थी। वह अपने प्राण देश और राष्ट्र की रक्षा और सम्मान के लिए देता तो बलिदानी का दर्जा पाता लकिन उसन अपना खून एक

ऐसे अनावश्यक मनोविनोद के लिए रखाया जो हमारी अभिमानी भावनाओं की संतुष्टि का कारण तो हो सकता है पर जिसने हम राष्ट्रीय सवालों से लापरवाह कर दिया है। यही समय और दौलत जो हम इस मनोविनोद पर बरबाद कर रहे हैं देश और राष्ट्र के निर्माण में भी काम आ सकती है। मैं जानता हूं कि मेरी यह बातें सम्राट साहब को अप्रिय लगेंगी। इसलिए अब मैं अपनी सजा सुनने की प्रतीक्षा में हूं।"

यह कहकर वह चुप हो गया और सिर झुकाकर पुर्तगाल-सम्राट के फैसले की प्रतीक्षा करने लगा।

सम्राट जो इस दौरान बड़ा व्याकुल नज़र आ रहा था अपनी सीट से उठा और उपस्थित दर्शकों पर दृष्टि डालते हुए कांपते स्वर में बोला "सुनो! पुर्तगाल की जनता, यह इंसान और सांड के मुकाबले का आखिरी दंगल था।"

जाकी

गुड्डू गोविन्द

जेठ की तपती दोपहर। मरघट सी शान्ति छायी हुई थी। यहा तक कि सडक भी खामोश थी। इक्का-दुक्का कोई कार साय सी निकल जाती और फिर वही शान्ति। इसी सडक के किनारे अस्पताल के एक वार्ड म घायल पटू जाकी, जो बेहतरीन सवार था बेड पर लेटा हुआ था। अचानक सडक पर गुजरते हुए तागे म जुते घोडे की टापो की आवाज़ सुनकर वह जोर स चीख उठा 'बन्द करो य आवाज़। मुझ दूर ले जाओ। मैं नही सुनना चाहता ये घोडे की टापें।''

उसकी चीख सुनकर नर्स भागी भागी आयी। पटू होश मे आ गया था परन्तु अभी खतरे स बाहर नही था। नर्स न देखा कि पटू भयानक गर्मी म बुरी तरह काप रहा है। उसने पटू को कोई दवा दी। धीरे धीरे वह नार्मल हो गया और सामन दीवार पर देखते हुए सोचने लगता है कि उसके साथ हुई घटना, दुर्घटना मात्र थी या कोई षडयन्त्र। बचपन से ही वह घोडो के बीच पला था और आज तक वह कभी घोडे स नही गिरा।

सोचते सोचते वह अपने बचपन म पहुच गया कैसा असीम प्यार था उसे घोडो से। यदि मुहल्ले म कोई तागा भी आता था वह भागकर उसे देखने पहुच जाता और घण्टो उसे निहारता रहता। वह यह सोचा करता था कि घुडसवारी सिर्फ बडे ही लोगो की सवारी होती है। वह हमेशा सोचा करता था कि काश वह भी घोडे पर सवारी कर पाता। उसके घर की माली हालत अच्छी नही थी। पिताजी का एक दोस्त था, वह अक्सर घुडदौड खेलने जाया करता था। उससे पटू ने सुना था कि रेस के घोडे काफी लम्बे-तगडे होते हैं और काफी आकर्षक भी। उसका मन अक्सर किया करता कि वह रेसकोर्स जाये। फिर मजबूरी सामने मुह बाये खडी होती थी। कहते है कि दुख आते हैं तो चारो तरफ स आते हैं। अचानक पिताजी का देहान्त हो गया, मा को पक्षाघात। पटू पर छोटी सी उम्र म तमाम जिम्मेदारिया आ पडी। उसे नौकरी करनी पडी, पर उसका मन सिर्फ घोडो म अटका रहता। हर जगह से उसे नौकरी से निकाला गया, कारण सिर्फ घोडे थे। एक बार क्राकरी की दुकान पर कीमती क्राकरी का सेट केवल इसलिए तोड दिया कि उस पर दौडते हुए घोडे थे और वह उन्हें अपने पास रखना चाहता था। किताबो की दुकान पर किताबो से उनके चित्र फाड लिया करता। सारे जान पहचानवाले उससे परेशान थे।

एक दिन पिताजी का वह दोस्त जा रेसकोस जाया करता था घर आया। डरते डरते पटू ने अपन दिल की बात उसे कह दी कि क्या वे उसे रेसकोस मे कोई नौकरी दिलवा सकते है। उस वक्त तो उन्होने कुछ नही कहा, पर दो तीन दिन बाद वे आये और बोले "पटू एक नौकरी है उसम तुम्हे घोडो को पानी पिलाना होगा, दाना खिलाना होगा। यदि तुम यह सब कर सको, तो तुम्हारी नौकरी पक्की। सौ रुपये माहवार मिलेगे।" अ धे को क्या चाहिए दो आखें। पटू मारे खुशी के पागल हा उठा। अब वह दिनभर घोडो के बीच रह सकेगा और पैसे भी मिलेगे।

चन्द ही दिना म वह अस्तबल के तमाम घोडो से इस तरह हिल मिल गया जसे वह उन्ह बरसो से जानता हो। उन्ह नहलाना दाना खिलाना, मालिश करना, ऐसे करता था जसे एक मा अपने बच्चे की। अस्तबल का मालिक और घोडो का प्रशिक्षक काफी खुश थे पटू से।

एक दिन पटू ने डरते डरते प्रशिक्षक से पूछा, 'साब मैं घोडा पर सवारी कर सकता हू?"

"अरे पटू यह भी कोई पूछने की बात है? तुम तो इन्ह अपने से भी ज्यादा प्यार करते हो। जाओ, जीन कसकर बठ जाओ। पर ज्यादा तेज मत दौडना। कही ऐसा न हो कि गिर पडो।"

पटू ने आव देखा न ताव, लपककर घोडे पर चढ गया और अस्तबल के चारो तरफ चक्कर लगान लगा। प्रशिक्षक हैरान रह गया कि कितनी अच्छी सवारी करता है लडका। अचानक उसके दिमाग म एक बात कौध गयी कि क्या न इसे प्रशिक्षण दकर सवारी करायी जाय।

'दवाई प्लीज' की आवाज़ ने अचानक पटू का ध्यान भग कर दिया। नजरें उठा कर उसने देखा तो सामने नस दवाई लिए खडी थी। एक ही सास मे कडवी दवाई गले म उतार गया और खो गया अपने विचारा मे।

अब वह पूरा सवार बन गया था। उसे सवारी का लाइसेंस भी मिल गया था। कितना खुश था कि वह अब हजारो आखो के सामन सवारी करेगा।

आखिर वह दिन भी आ पहुचा जिस दिन उसे सवारी करनी थी, माने हुए जाकिया के साथ। कभी-कभी वह काप उठता था पर आत्मविश्वास से वह अपन पर जल्दी हा काबू पा लेता। उसे कोई नोटिस मे नही ले रहा था क्योकि उसकी यह पहली रेस थी। लोगो को उसके बारे म ज्यादा मालूम भी नही था।

धाय! की आवाज़ सुनते ही घोडे निकले। लोग चिल्ला चिल्लाकर अपनी पसद के घोडो को उत्साहित कर रहे थे। अचानक देखत देखत पटू अपने घोडे पर लाजवाब सवारी करते हुए सबसे आगे निकल गया और रेस जीत ली। पहली पसन्द के घोडे उसके आसपास भी नही थे। उसके बाद तो पटू की जीत का सिलसिला शुरू हो गया। जिस घोडे पर उसे सवारी मिलती, लोग उस पर पैसा लगात थे क्योकि उन्ह विश्वास था कि वह अवश्य जीतेगा।

एक दिन बुकी उसके पास आया और दस हजार रुपये उसके सामने फेंकते हुए बोला, "पटू तुम आज की रेस नही जीतेगा।"

'आखिर क्या?' आश्चय स पूछा।

"तुम्हारे घोडे पर लाखो रुपये लगे है और यदि तुम जीत गए तो मेरा दिवाला निकल जाएगा।"

लेकिन मैं तो सिफ जीतने के लिए घोडे दौडाता हू।"

'लेकिन तुम नही जीतोगे। कहो तो तुम्हारे पैसे बढाए भी जा सकते है। बस इससे ज्यादा पैसे मैंने आज तक किसी को दिय नही हैं। यदि तुम जीत गए तो इसका अजाम अच्छा नही होगा।"

देखा जाएगा।" कहकर वह अपना हेलमेट उठाकर चल दिया। आज उसके स्वाभिमान को चोट पहुचायी थी चन्द हजार रुपयो ने। कैसा भ्रष्टाचार फैला हुआ है यहा! लोगो की कमाई ऐसे खाते हैं ये लोग! आज समझ आया कि फेवरिट घोड क्या नही जीतते। उसन बुकी की परवाह न करते हुए रेस जीत ली।

बुकी ने सिर पीट लिया। आज जिन्दगी म पहली बार ऐसा हुआ था कि किसी जॉकी ने उसे ठुकरा दिया हो। गुस्स से वह पागल हो उठा। पटू से उसने अपने अपमान का बदला लेने की सोची। रात को अस्तबल के मालिक के साथ वह पटू के घर पहुचा। पटू बरामदे म चारपाई पर लेटा हुआ कुछ सोच रहा था शायद कल वाली बात। अचानक मालिक को देखकर वह चौंक उठा। आज तक एसा कभी नही हुआ था कि मालिक उसके घर आये हो। हडबडाकर वह उठ खडा हुआ।

मालिक आप!'

"हा, इसम चौकने की क्या बात है?'

'बठिए न" दूसरी चारपाई बिछाते हुए पटू बोला।

' देखो पटू आज जो तुमने किया, अच्छा नही था। तुम्हे वह रेस हार जानी चाहिए थी। आई हुई लक्ष्मी को ठोकर मारी है तुमने।

' लकिन मालिक ।

"हा मैं जानता हू, तुम्हें घोडा की जीत से प्यार है।" बात काटते हुए मालिक बोले, 'लेकिन यह तो हमारा-तुम्हारा धन्धा है। धन्धे म सब चलता है ।

"लेकिन मालिक यदि यह ऐसा धन्धा है तो मैं रेस छोड दूगा आपकी नौकरी भी।"

"छोड दोगे तो तुम क्या करोगे? तुम तो अनपढ हो। सिवाय घोडो पर सवारी करने के तुम्हें आता क्या है? पहली बार बुकी बोला।

यह सुनकर पटू सोच म डूब गया।

' ठीक है पटू तुम सोच लो। इसम हम दोनो का ही फायदा है। आज कितनी महनत से पैसा मिलता है। तुम अब भी जीतोगे लेकिन हमारे कहन पर कोई नही जान पायेगा हमारे राज को।

उधर कुकी परेशान सा रात भर सोचता रहा कि कैसे बदला लिया जाय इस पट्टू स। यदि वह इसी तरह रेस जीतता रहा तो बरबाद हो जायेंगे सारे कुकी। आज मैं, कल दूसरा फिर इस तरह सारे। अचानक उसक दिमाग मे वह लगडा घोडा घूम गया जो पिछले महीने दौडते दौडते गिर पडा था। मारा उसे जा नही सकता था, क्योकि उसका बीमा करवाया जा चुका था।

अगल दिन उसन दो और कुकिया स मिलकर वह योजना बता दी कि वह पट्टू को लगड घाडे पर सवारी दिलवायगा। एक तीर स दो शिकार। घोडो का फिटनस सर्टिफिकेट वह स लेंगे।

रेस का दिन आ पहुचा। लोग पट्टू के घाडे पर पैसा लगा रह थे। पट्टू को किसी तरह का आभास नही था, इस षड्यन्त्र का। धाय की आवाज होते ही पट्टू न लगाम खीची और घाडा भाग निकला, आदत के अनुसार सबसे आगे। लेकिन यह क्या, लगभग आधी रेस क बाद घोडा अचानक लडखडाया और पट्टू गिर पडा। घोडा उसके ऊपर। कई घोडे रौन्दत हुए निकल गए। घाडे न वही दम तोड दिया। लहूलुहान पट्टू को अस्पताल लाया गया। उसके सिर म गम्भीर चोट आयी थी। साचना उसके लिए मना था, एक बडा खतरा था, परन्तु वह फिर भी साच रहा था, निरन्तर—वह दुर्घटना थी या कोई षड्यन्त्र ?

ऑफ-साइड

हॉवर्ड ब्रेसबिन

खेल सपादक कट ह्वीलर न महमान-कक्ष म अपन साथ बैठे, चौडे चेहरे वाले मेजबान स कहा वाह ! क्या बात है ! अपन खिलाडी दखने म तो पशेवर खिलाडी जस लग रहे हैं। अब देखना यह है कि इनका खेल भी पशेवर खिलाडियो जसा होता है या नही ?"

चौडे चेहरे वाले मेजबान न सिर हिलाकर खेल-सपादक को आश्वस्त किया कि निश्चय ही एसा हागा।

मैच शुरू हुआ।

बीच म खेल-सपादक न मेजबान से पूछा, "यह रक्षक खिलाडी कौन था ?"

टग माटन ! फुलबैक।"

तभी एक विपक्षी खिलाडी और मॉटन के बीच भिडत हुई और माटन ने उस पर ऐसा प्रहार किया कि वह जमीन पर पडा ही रह गया। माटन न पीछे मुडकर उसकी ओर एक बार भी नही दखा।

विपक्षी दल ने टाइम' पुकारा। व इस प्रहार पर निणायक का निणय चाहते थे।

निणायक के कहने पर खेलन के लिए राजी होने से पहले विपक्षी दल के खिलाडिया न बहुत शोर मचाया और माटन के दल के खिलाडियो को बहुत गालिया सुनायी, लेकिन माटन और उसके साथियो न प्रत्युत्तर मे कुछ नही कहा।

खेल शुरू होते ही विपक्षी दल के दो खिलाडी न जाने कहा से आकर माटन पर टूट पडे, हालाकि वह बॉल से काफी दूर था लेकिन माटन गिरा नहीं उसन अपन को सभाले रखा।

खेल सपादक ने अपने मेजबान से कहा, लगता है ये लोग अब माटन को घायल किये बिना नही छोडेंगे। क्या आपके दल के खिलाडी इसके जवाब म कुछ नही करेंगे ?"

नही' बडी शान्ति के साथ मेजबान न कहा 'उन्हे जवाबी हमला करने की इजाजत नही है। अगर उन्होने ऐसा किया तो आगे उन्हे खेलने के अवसर नही दिय जायेंगे।'

मॉटन का दल अब विपक्षी दल क गोल पर लगातार आक्रमण कर रहा था।

और चूकि माटन इस आक्रमण म अग्रणी था इसलिए विपक्षी दल के खिलाडी अपना अधिकाश ध्यान उसी पर केन्द्रित कर रहे थे। पेनल्टी के बाद, जहा माटन बिला नागा खडा हो जाता था, वहा विरोधी दल के खिलाडी ऐसा नही करते थे।

विरोधी खिलाडियो की सारी व्यूह रचना माटन के ही विरुद्ध थी। फिर भी लम्बे चौड फुलबक मॉटन ने विरोधी दल की रक्षापक्ति को भेदकर, बॉल को गोल के अन्दर पहुचाने म सफलता प्राप्त की।

माटन के समथको म खुशी की लहर दौड गयी। वे जोर स चिल्लाये मगर, कुछ सैकिड बाद खामोश हाकर बैठ गये।

पहले गोल की सफलता के बाद माटन के दल के खिलाडियो का उत्साह और अधिक बढ गया। दखते ही दखत दो गोल और हो गय। दूसरा गाल मॉटन ने एक लम्बे पास स किया था।

माटन का चेहरा भारी और भरा हुआ था, और एकदम भावशून्य। उसकी घनी भौहो के नीचे छिपी आखो म जरूर एक अभिव्यजना थी, एक अजीब और डरावनी-सी अभिव्यजना।

तीसरे क्वाटर म माटन ने एक असम्भव सा लगने वाला पास लपका और बाल को लेकर साइड लाइन के सहारे आगे बढा। वह इतनी तेजी स बढ रहा था कि विपक्षी खिलाडियो को उस रोकना कठिन हो रहा था। जिन खिलाडियो ने उसे रोकने की कोशिश की वे सब उसकी लातो के प्रहार से इधर उधर गिर बिखरकर रह गये।

खेल-सपादक ने अपन मेजबान स कहा, तारीफ है इस लडके की। तीर की तरह आगे बढता ही चला जाता है। गजब की फुर्ती और हिम्मत है इसम।"

इसीलिए तो इस दल म शामिल किया गया है।"

निर्णायक ने मॉटन को ऑफ साइड' बताया। बहुत से खिलाडी उसके चारो ओर जमा होकर वाद विवाद करने लगे। निर्णायक बराबर अपनी बाहे हिला रहा था।

माटन न अपनी ओर स निर्णायक के निणय को चुनौती देने की कोशिश नही की। वह अपनी जगह पर जाकर चुपचाप खडा हो गया। उसका चेहरा निर्विकार था, लेकिन उसकी मुट्ठिया तनी हुई थी।

खेल शुरू होते ही जसे विपक्षी दल के खिलाडी आगे बढे मॉटन ने अपने एक हॉफबैक को अपनी जगह बदलने को कहा। जब उसने जगह बदल ली तो वह खुद ऐंठता हुआ आगे बढा।

जस ही बाल उसके पास आयी वह विपक्षी रक्षापक्ति की ओर ऐसे बढा जसे वह हो ही नही। जब एक विपक्षी खिलाडी ने पीछे से आकर उसके पास से बॉल छीननी चाही तो उसने बिना उसकी ओर देख उस पर एक एसी लात जमायी कि वह धडाम से नीचे आ गिरा। गिरा तो माटन भी लकिन वह फौरन उठकर खडा हो गया और उछलती बाल की तरफ लपका। लपकते ही विपक्षी दल का एक खिलाडी उसके सामने आ गया और आघात लगते ही ऐसे गिरा, जसे उस पर गोली चली हो।

चलने जसी ही हुई । बाल अ ततं माटन के कब्जे मे आ गयी ।

ताली बजाता हुआ खेल सपादक अपन मेजबान की ओर मुडा, लेकिन उसका मेजबान उसकी तरह माटन के साहसिक प्रदशन से खुश न था । वह चितित था और उसके माथे पर सलवट थी । उसन बुदबदाते हुए कहा, 'मुझे इसी बात का डर था।"

विपक्षी दल के जो जो खिलाडी माटन से जूझे थे, वे सभी ज़मीन पर पट थे । एक ने बमुश्किल उठने की कोशिश की, मगर लडखडाकर ढह गया ।

माटन को इन गिरे पडे खिलाडियो की कोई परवाह नही थी । वह अपने साथियो को इशारो स बता रहा था कि वह आगे के खेल के लिए अपनी-अपनी जगहो पर चले जाय, और हमल के लिए तैयार हो, लेकिन जब निर्णायक न 'टाइम' के लिए सीटी बजायी तो वह झुझलाकर रह गया । यह झुझलाहट उसके चेहरे पर साफ दिखाई दे रही थी । पहली बार वह बेचैन और अशात था ।

खेल-सपादक के मेजबान ने उससे कहा, देखा तुमने, कट ! ऑफ साइड होने से वह गाल करन से रह गया । अब मॉटन फिर एक और गोल के लिए बेकरार है । और जब तक वह गोल नही कर लेगा तब तक जो भी विपक्षी खिलाडी उसके सामन आयेगा, वह धराशायी होता ही दिखाई देगा ।'

खेल सपादक की समझ म कुछ नही आया । उसने कधे उचकाते हुए कहा, "मगर इसम खराबी क्या है ? गलती क्या है ? यह सब तो इस खेल म होता ही है ।"

"तुम एक बात भूल रहे हो कट !

क्या ?"

"यह कि माटन के लिए यह खेल नही है ।"

"खेल नही है तो फिर क्या है ?" आश्चय से खेल सपादक कट ह्वीलर ने अपने मेजबान से पूछा ।

जब मेजबान ने कोई जवाब नही दिया तो खेल सपादक ने खुद ही कहना शुरू किया, "ओह ! मैं समझा माटन उन खिलाडियो मे नही है, जो खेल भावना के साथ खेलते हैं । वह शायद उन पेशेवर खिलाडियो मे से है जो पैसे के लिए ही खेलते हैं, लेकिन खेलें भले ही पैसे के लिए, किसी भी शत पर जीतने की मूलप्रवत्ति उनम मौजूद रहती है । डैंपसी ऐसा ही खिलाडी था और ग्रेज '

' लेकिन " मेजबान बीच म ही रुककर रह गया ।

' बात कुछ नही है लेकिन माटन की मूलप्रवत्ति को जानने समझने के लिए आपको उसके पूव इतिहास से परिचित होना होगा ।'

"क्या है उसका पूव इतिहास ?

मेजबान न कहना आरम्भ किया 'माटन का कसरती बदन देख रहे हैं आप ! यही उसके शानदार खेल का राज है और उसकी परेशानी का भी । पाच साल पहले की बात है । तब यह एक लडकी स प्रेम करता था । उस लडकी स उसकी मगनी भी हो चुकी थी, मगर वह लडकी किसी दूसरे लडके से प्यार करने लगी थी । और तमाशा यह हुआ कि लडका-लडकी दोनो मिलकर माटन के पास गय, उसे यह बताने के लिए कि वह

दानो विवाह करन वाले है। माटन को यह सुनकर लगा कि उसके पावो के नीचे से जमीन खिसक गयी है और वह पूरी तरह लुट गया है। वह अपना आपा खो बठा और उसन प्रेमिका व होने वाले पति की हत्या कर डाली।'

'ओह !' खल सपादक ने कहा 'तो यह आजकल जेल म आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा है ?"

'ठीक अनुमान लगाया आपन " मेजबान ने, जो वाडन था, कहा।

तभी, दशका की तालियो की आवाज सुनकर खेल सपादक न मदान की तरफ देखा, जहा मॉटन ने बदियो के दल की ओर से जेल कमचारियो के दल पर एक और गोल कर दिया था। अब तक उसन चार म से तीन गाल खुद किय थ। अपनी 'हैट ट्रिक' (तिकडी के करिश्मे) पर वह पहली बार हस रहा था, और उसके सफेद, साफ, उजले दात धूप मे चमक रहे थे।

जुआरी

अज्ञात

वह छोटे से कद का एक दुबला पतला आदमी था। उसकी उम्र साठ वर्ष से कम नहीं लगती थी। वह रौलेट की लम्बी मेज पर जल्दी से बैठ गया। प्रकटत वह बेहद भयभीत और घबराया हुआ था। यह माटी कारलो का लम्बा चौड़ा पब्लिक रूम था। यहां रौलेट की नौ मेजें और छह ट्रेंटी रेट क्वारंगी की मेजों के गिर्द कमोबेश एक हजार व्यक्ति थे।

रौलेट का चक्कर खत्म होने पर जुआ खिलाने वाला हारने वालों की रकम बटोरकर एक बक्स में डाल लेता। लोग निरंतर हार रहे थे, लेकिन इस आशा पर फिर बाजी लगा बैठते थे कि शायद इस बार किस्मत उन पर मेहरबान हो जाए।

बूढ़े ने भी अपनी जेब से एक खासी मोटी नोटबुक निकाली, और उसे खोलकर ध्यान से खेल देखने लगा।

रौलेट के हर चक्कर के साथ वह अपनी नोटबुक के सादे पृष्ठ पर कुछ लिखता है। लिखते लिखते उसे बहुत देर हो गयी।

रौलेट का चक्कर दो बार रुक गया था। चक्कर तीसरी बार चला। बूढ़े ने इस समय तक पैकेट अपने हाथ से मेज पर नहीं रखा था। जब तक जुआ खिलाने वाले ने यह चेतावनी नहीं दी कि अब कोई महाशय किसी नम्बर पर रकम लगाने का प्रयत्न न करें, बूढ़े ने इस चेतावनी से एक सैकिंड पहले अपना पैकेट उस तस्वीर सहित नम्बर नौ पर लगा दिया था। यह एक ऐसा नम्बर था, जिस पर लगायी जाने वाली रकम से पैंतीस गुना अधिक रकम चुकायी जाती थी।

हाथी दांत की गेंद उछली और एक क्षण के लिए नम्बर नौ पर रुकी। बूढ़े के चेहरे पर खुशी प्रकट हुई, लेकिन उसी समय गेंद आगे निकल गयी और नम्बर 34 सुख के खाने में जा गिरी। जुआ खिलाने वाले ने हारने वालों की रकम समेटी और जीतने वालों की रकम अदा की। नीग्रो बच्चे की तस्वीर वाला पैकेट उसी प्रकार मेज पर पड़ा रहा। जुआ खिलाने वाला दायीं ओर खड़ा हुआ था। उसने अपनी लम्बी छड़ी से एक ही समय में पैकेट और बूढ़े की ओर इशारा किया 'श्रीमान आप जानते हैं कि इस मेज पर विदेशी नोट रखना नियम के विरुद्ध है। आपने अपना पैकेट अंतिम क्षण में रखा था। इसलिए मुझे आपको सचेत करने का अवसर नहीं मिल सका था।" जुआ खिलाने वाले ने छड़ी से वह पैकेट अपनी ओर खींच लिया।

बूढ़े के चेहरे पर बेहद शर्मिंदगी प्रकट हुई। उसने कापती हुई आवाज म याचना मे कहा 'मैं आप सब महाशया से क्षमा-याचना कर रहा हू।" फ्रासीसी भाषा बोल रहा था, लेकिन उसके स्वर से कोई व्यक्ति यह अनुमान नही लगा सकता था कि उसका सम्बध किस देश से है। 'मैं आप सब महाशयगण से प्राथना करना चाहता हू कि एक बूढ़े को इस पैकेट के साथ खेलने की अनुमति दी जाए।"

अब तक किसी ने ठिगने कद के बूढ़े पर ध्यान नही दिया था, लेकिन अब मेज़ के गिद बैठे हुए व्यक्तियो ने गौर से उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा। इस प्रकार के मामला का निणय करना चीफ का काम था। चीफ बेजारी से आगे बढा। उसे जुआ रियो मे ऐसे वहमो से प्राय वास्ता पडता था, मगर आज तक किसी ने इस प्रकार की अजीब प्रार्थना नही की थी। उसने कुछ क्षणो तक बूढ़े की बात पर विचार किया, जैसे उसके हर पक्ष का निरीक्षण कर रहा हो। उसने स्वीकृति मे सिर हिला दिया।

बूढ़े ने कृतज्ञता की एक गहरी सास लेकर अपना पैकेट वापस ले लिया। साव धानी से सुख रिबन बाधा।

अचानक एक घटी बजी। चीफ एक गहरी सास लेकर कुर्सी से उठा। मेज़ पर खडे हुए दोनो जुआ खिलानेवालो ने अपनी अपनी छडिया रख दी। यह घटी उनकी शिफ्ट खत्म होने की घोषणा थी। चीफ की जगह दूसरे चीफ न ले ली। पहले चीफ ने दूसरे चीफ से धीमे स्वर म कुछ कहा और बूढ़े जुआरी की ओर सकेत किया। नये चीफ और नयी शिफ्ट के जुआ खिलाने वाला ने अपनी अपनी जगह सभाल ली और खेल दुबारा जारी हो गया। बूढ़े का व्यवहार अब भी वही था। वह एक बार दाव लगाता और हार जाता फिर बठकर दस बारह बार रोलेट का चक्कर घूमते हुए देखता और अपनी नोटबुक म कुछ लिखता रहता, और एक बार फिर नौ नम्बर पर अपना पैकेट रखता और हार जाता। नय जुआ खिलानेवाले ने उसका पैकेट वापस करत हुए अजीब नज़रो से उसे देखा। बूढा हर हार पर दो सौ फ्राक चुकाता रहा। उसके सामने रखी हुई गड्डी धीरे धीरे कम होती गयी। वह बार बार नौ नम्बर पर पकेट रखता रहा और हारता रहा। दूसरे खिलाडी कभी कभी अपना खेल भूलकर उसे दखने लगते। नये आनेवाले लोग वह विचित्र पैकेट बार बार मेज स उठत और वापस आते देख रहे थे और कुर्सियो के पीछे खडे हुए लोग दिलचस्पी से बूढ़े का खेल देख रहे थे। बूढा जब भी हारता लोगा के चेहरे पर गहरी सहानुभूति और खेद का चिह्न बन जाता। बूढ़ा निरतर हारने के कारण कुर्सी पर सिकुडता जा रहा था। उसके हर अदाज म उदासी और निराशा थी।

आखिर वह अविश्वास के अदाज मे कुर्सी पर पीछे की ओर खिसका। फिर खडा हो गया। उसने कापते हुए हाथा से पैकेट पतलून की जेब म रखा और वापस जाने के लिए तैयार नजर आने लगा। उसके हर अदाज स अविश्वास और दुविधा प्रकट हो रही थी। वह बहुत देर तक इसी अवस्था म खडा रहा। ऐसा लग रहा था जसे वह निरतर हारने के कारण हृदय विदीण हो गया हो लकिन हारी हुई रकम वापस लेने की एक तीव्र आकाक्षा रखता हो। यह आकाक्षा हर जुआरी के दिल म पदा होती है।

वह आखिरी बार भाग्य परखने के लिए तैयार होकर फिर कुर्सी प

उसके चेहरे पर एक नया संकल्प उभरा। उसने पतलून की जेब से अपना कीमती पैकेट निकाला और एक बार फिर उस नौ नम्बर पर रख दिया लेकिन इस बार भी पहले से भिन्न अंजाम नहीं हुआ। वह फिर हार गया था, लेकिन इस बार वह अपनी नोटबुक से परामर्श लेने के लिए नहीं रुका, बल्कि हर चक्कर पर अपना पैकेट नम्बर नौ पर रखता रहा। रोलेट का चक्कर एक बार फिर घूमा। इस बार जुआ खिलानेवाला जोर से चीखा 'नौ नम्बर मुख!'

जुआ खिलानेवाले ने जल्दी से हारनेवाला की रकम समेटी और जीत की रकम का हिसाब लगाकर बूढ़े का उसके पैकेट के अलावा सात हजार फ्रांक और दिए। इस नम्बर पर एक के बदले में पैंतीस के हिसाब से रकम चुकायी जानी थी। दो सौ फ्रांक का पतीस गुना सात हजार फ्रांक होता है। रकम जैसे ही बूढ़े के सामने रखी गयी, उसने प्रतिरोध के रूप में हाथ उठाया, "एक मिनट श्रीमान!" उसके स्वर में अब भी याचना थी, लेकिन आवाज में दृढ़ता थी, 'आपने गलती से केवल सात हजार फ्रांक चुकाये हैं।"

"तो फिर?" जुआ खिलानेवाले ने नरमी से पूछा, 'क्या आपने दो सौ फ्रांक का दाव नहीं लगाया था?'

बूढ़े के चेहरे पर सहसा कुछ रोब पैदा हो गया, "मैंने जो रकम दाव पर लगायी है, क्या आप उसे गिनने का कष्ट करेंगे?" उसने अपने बंधे हुए पैकेट की ओर इशारा किया।

दूसरी शिफ्ट के जुआ खिलाने वाले ने सुर्ख रिबन की गांठ खोलकर नोट अलग किये। पहले दो डालर के नोट के नीचे चार अन्य दो डालर के नोट रखे थे लेकिन अब एक एक हजार फ्रांक के अन्य ग्यारह नोट बहुत सफाई के साथ एक दूसरे से जुड़े हुए मौजूद थे। नियम के अनुसार इस मेज पर अधिक-से-अधिक बारह हजार फ्रांक लगाये जा सकते थे।

निश्चित कानून के अनुसार जरूरी था कि जीतने वाले नम्बर पर जितनी रकम भी लगाई गयी हो उसका पतीस गुना चुकाया जाये। चीफ और खिलानेवाले किंकर्तव्यविमूढ़ थे। नम्बर नौ पर ग्यारह हजार फ्राक रखे हुए थे। पहला चीफ बूढ़े के अभिनय का शिकार हो गया था। बूढ़े ने बड़े भोलेपन और होशियारी से हू ब हू एक जसे दो पैकेटों के द्वारा अपनी रकम दो सौ फ्रांक के बजाय ग्यारह हजार फ्रांक तक पहुंचा दी थी।

खेलनेवालो का एक बड़ा हुजूम जोश में भरा हुआ था और स्पष्ट रूप में बूढ़े का साथ देता हुआ दिखाई दे रहा था। जुआ खिलानेवाले को अपने सेफ से तीन लाख पचासी हजार फ्रांक निकालकर बूढ़े को चुकाने पड़े। एक साठ वर्षीय कमजोर बूढ़े ने मोंटी कारलो को बहुत कामयाबी से फरेब देकर न जाने कितने हारनेवालों का बदला ले लिया था।

खिलाडी का दिल

अर्नेस्ट लेहमैन

देखिए परेशान रहन वाले खिलाडियो को मैं फौरन पहचान जाता हू। बास्केट-बाल प्रतियोगिताओ की रपट इतने साल से देता आ रहा हू कि खिलाडी को देखते ही मुझे पता चल जाता है कि वह अपनी घबराहट को दूर करने के लिए एस्प्रिन खा रहा है प्रेस बाक्स मे बैठे बैठे बन्द आखो से भी मुझे ऐसे परेशान रहनेवाले खिलाडियो की जानकारी हो जाती है। मेरी बात का यकीन कीजिए। डैनी ब्लैक ऐसा ही एक खिलाडी था। बास्केटबाल के इस श्रेष्ठ खिलाडी को आप घर पर देखें तो मुह म थर्मामीटर लिये दवाइयो की शीशियो से घिरे पलग पर बैठे पायेंगे। शायद स्टैथेस्कोप से उसकी जाच करता कोई डाक्टर भी आपको उसके पास मिल जाये।

उसे पसीना आता तो वहम होने लगता कि सर्दी हो गयी है। सर्दी होती तो वहम होने लगता कि न्यूमोनिया हो गया है। खाता तो वहम हो जाता कि बदहजमी हो गयी है। सोने जाता तो वहम होता कि उसे अनिद्रा रोग हो गया है। और अपने वजन, दिल, पावो, टासिल की चिंता तो उसे चौबीस घटे रहती थी।

कॉलेज के दूसरे साल मे ही जब उसे अमरीकी बास्केटबाल दल म शामिल कर लिया गया था, तब उसे यह चिंता सवार हुई थी कि लोग कहेंगे कि उसका सिर फिर गया।

हैरी मेल्से की जगह कोई और कोच होता तो उसे सभाल न पाता। हैरी सभाल पाया, क्योकि वह डैनी को पुत्रवत् प्यार करता था। जहा तक डैनी के पिता का प्रश्न है, उनकी छोटी सी मिठाई की दुकान थी, जिसकी आमदनी से बडी मुश्किल से परिवार का गुजारा होता था। वह भी तब, जब डैनी बारह घटे दुकान पर रहकर पिता की सहायता करता।

डैनी के सदा चिंतित रहने की शायद यही वजह थी कि वह ऐसे परिवार म जन्मा था, जिसने कभी सुरक्षा जानी ही नही। आस-पडोस म गुडे लोग रहते थे, जिन्ह छोटे बच्चो को सताने म मजा आता था। इन गुडों म वह कॉलेज म प्रवेश पाकर और खिलाडी बनकर भी लडता रहा था। और उनसे उसका पीछा तब भी नहीं छूटा था। जब उसे विश्व म महानतम खिलाडियो मे से एक के रूप मे स्वीकार किया जा चुका था।

और जब इन गुडों से उसे मुक्ति मिली तो उसे जुआरी लोग परेशान करने लगे।

वे जुआरी जो उस पर दाव लगाते थ । ये जुआरी हर श्रेष्ठतम खिलाडी पर दांव लगाते हैं और डैनी भी श्रेष्ठतम खिलाडियो म से एक था। श्रेष्ठतम खिलाडियो म से एक ही नही कुछ समीक्षको की राय म वह अपने आप म एक पूरी टीम ही था।

उस पर दाव लगान वाले जुआरी जानत थ कि हर मच म उसका प्रदशन श्रेष्ठतम रहता है और यह भी कि वह एक निधन परिवार से आया खिलाडी है। उनका खयाल था कि उसे एक मामूली सी राशि देकर भी कुछ कराया जा सकता है।

मुझे पता नही कि जिस मच का मैं जिक्र करने जा रहा हू, उसमें खेलते समय डैनी अस्वस्थ था या नही ? मैंने उसे एक दिन पहल अभ्यास करते देखा था और तब वह पूरी तरह भला चगा दिखाई देता था। अन्य खेल समीक्षको की भाति मैंन भी मैच स एक दिन पहल अपन कालम म लिखा था "ओटावा की टीम काफी तगडी है और अभी तक अविजित रही है। टोरटो की टीम इस शक्तिशाली टीम को तभी हरान म सफल हो सकेगी, जब डनी इस मच म अपना सर्वोत्कृष्ट प्रदशन करे।"

शाम को मैच होनेवाला था। कुछ दर पहले मैं डैनी के कोच हैरी क्लसे स मिलने गया। वह होटल की लाबी में बठा किसी से फोन पर बात कर रहा था। मैंन गौर से देखा, उसका मुह पीला पडा हुआ था। पास बैठकर मैं उसकी बात सुनने लगा। वह डैनी स, जो घर पर 103 डिग्री तापमान के साथ बिस्तर पर पडा हुआ था, बातें कर रहा था। डैनी उस बता रहा था कि शायद उस पालिया या कोई और भयकर रोग हो गया है। वह बुखार म लगातार बडबड किय जा रहा था और हैरी का उसकी हालत के बारे म सुनकर पूरा विश्वास हो गया था कि वह मैच म भाग नही ल सकेगा। उसने एक लम्बी सास लेकर फोन रख दिया। मैं भी एक लम्बी सास लेकर रह गया।

मैच शुरू होने मे कुछ ही घटे शेष थे। डैनी अपनी अधेरी कोठरी मे बुखार म तपता हुआ पडा था।

तभी, उसके भाई मार्विन ने आकर उससे कहा कि कोई उसमे फोन पर बात करन का इच्छुक है। डनी झुझला गया। उसे लगा, हैरी क्लेसे उसस फिर बात करना चाहता है या कोई परिचित है, जिसे अतिरिक्त टिकट चाहिए, इसी झुझलाहट म उसने फोन पर पूछा "कौन है ?"

'मैं रोक्को बोल रहा हू" उधर से किसी ने कहा।

"कौन रोक्को, क्या काम है तुम्हे मुझसे ?' उस खडा होने मे भी तकलीफ हो रही थी।

'कोई खास काम नहीं है। मैं और मेरे साथी बस, यह चाहते है कि आज के बास्केटबाल मच म ओटावा की टीम टोरटो की टीम को हरा दे। तुम्हे डैनी सिफ इतना करना है

'क्या करना है मुझे ?" डनी ने चिल्लाकर पूछा। कमजोरी की वजह से वह चिल्लाकर ही बात कर सकता था अन्यथा आवाज फुसफुसाहट बनकर ही रह जाती थी।

'चिल्लाओ मत बेटे!" रूखा स्वर अब मुलायम हो गया था, "और, गौर से सुनो अगर तुमने हमारी बात मान ली तो तुम्हे एक नयी कार खरीदने लायक रकम

आज रात को ही मिल जाएगी, बोलो, क्या कहते हो ?"

"क्या कहा तुमने ?" डैनी ऐसी जोर से चिल्लाया कि उसका भाई डर गया।

"तुमको सिर्फ इतना करना है कि बीमारी का बहाना करके घर बैठ जाना है अगर तुमने ऐसा किया तो कार खरीदने लायक रकम आज रात को ही तुम्हारे "

"बंद करो यह बकवास!" डैनी फिर चिल्लाया।

"अच्छी तरह सोच लो बेटे! मैं फिर फोन करूंगा।"

"कोई जरूरत नहीं है फोन करने की। जहन्नुम में जा सकते हो तुम मेरी तरफ से।" कहकर डैनी ने जोर से फोन का रिसीवर पटक दिया और लड़खड़ाता हुआ अपने बिस्तर पर आ गया। उसका सिर अब पहले से ज्यादा भन्ना रहा था। डैनी को कमीज के ऊपर स्वेटर और पांवों में जूते पहनते देखकर मार्विन ने कहा, "कहां चले मां नाराज होगी।"

"मां से मेरे जाने के बारे कहा तो गर्दन पकड़कर ऐसी दबाऊंगा कि "

जैसे ही डैनी अपनी कोठरी से बाहर निकला, उसे लगा, उसकी सारी कमजोरी अपने-आप गायब हो गयी है।

मुझे बड़ा अफसोस है और इस चूक के लिए मैं अपने को कभी क्षमा नहीं करूंगा कि मैच का मेरा लिखा विवरण जो अगले दिन के अखबार में छपा, उसमें न डैनी के साथ हुई फोन वार्ता का जिक्र था न उस प्रतिक्रिया का, जो इस वार्ता के बाद डैनी पर हुई थी। मैं चाहता तो अखबार में उस फोन वार्ता और उसकी प्रतिक्रिया का उल्लेख कर सकता था, क्योंकि मार्विन ने मुझे सब कुछ बता दिया था।

यदि आपने मेरा विवरण पढ़ा होगा तो आपको उससे यह पता भी नहीं लगा होगा कि मैच शुरू होने से आधा घंटा पहले, जब हैरी केल्से ने डैनी को सीधे कदमों से अपनी ओर आते देखा था तो वह खुशी के मारे कैसा पागल हो गया था और कैसे उसने डैनी को अपनी बांहों में लेकर, कृतज्ञता से उसके माथे को चूमा था।

और मेरे विवरण को, जो बड़ा सादा, तथ्यात्मक और नीरस था, पढ़कर आपको यह भी पता नहीं लगेगा कि कैसे डैनी ने अपने को फुर्ती से हैरी केल्से की बांहों से अलग कर लिया था और तेजी से अपने कपड़े उतारकर अपनी टीम की पोशाक पहनने लगा था।

उस विवरण में मैं अपने पाठकों को यह भी नहीं बता पाया था कि अपनी टीम की पोशाक पहनते समय कैसे डैनी की आंखें चमक रही थीं और कैसे वह एक हिंस्र पशु की भांति चारों ओर ऐसे देख रहा था, जैसे किसी को खा जाने के लिए तत्पर हो। और कैसे उसे देखकर यह कल्पना करना भी कठिन था कि पंद्रह मिनट पहले यही डैनी 103 डिग्री बुखार में जल रहा था और कमजोरी की वजह से खड़ा भी नहीं हो सकता था।

जैसा कि मैंने कहा, मैच का मेरा विवरण तो बड़ा सादा, तथ्यात्मक और नीरस था।

उस विवरण को पढ़कर तो आपको सिर्फ इतना मालूम पड़ेगा कि मैच शुरू होते ही, डैनी जैसे दीवाना हो गया था। तीन-तीन विरोधी खिलाड़ी उसे घेरे हुए थे

मगर उनमे से कोई भी उसकी प्रगति मे बाधक नही बन पाया। वह उन तीनों को जैसे चीरकर लगातार विपक्षी टीम की बास्केट की ओर बढ जाता था। उस बास्केट मे उसने बॉल को बार बार डाला। उसका जोश देखकर लगता था कि उसका बस चलता तो वह विपक्षी दल के सब खिलाडियो, रैफरी और सारे अधिकारियों को भी बास्केट मे डाल देता तूफान जैसी तेजी थी उसमे और अविश्वसनीय और अकल्पनीय फुर्ती। इसी तेजी और फुर्ती की वजह से उसने 15 20 25 अक नहीं, जिनके अर्जन पर हम खिलाडियो को आसमान पर उठा लेते हैं पूरे 48 अक अर्जित किये और अपनी टोरटो की टीम को एक सघर्षपूर्ण मैच मे 70 के मुकाबले 89 अको से जिताया।

हा, एक और बात जिसका जिक्र मैं अपने विवरण में करने मे भूल गया, वह थी कि मैच की समाप्ति पर सिवाय डनी के सब चिल्ला रहे थे, मैं खुद इतना चिल्लाया था कि कई दिनो तक मेरा गला बैठा रहा था और सबसे ज्यादा चिल्लाये थे ओटावा की टीम के खिलाडी। हारकर भी, जैसे उनकी खुशी का कोई ठिकाना नही था।

आखिरी दौड

विले रॉबर्टसन

बिगुल की आवाज़ डैनी रीड के कानों में आ रही थी और उसे सुनते हुए वह चुपचाप पड़ा था।

बिगुल की आवाज के साथ साथ उसे सुनाई दे रही थी यह पुकार, 'रो गाड समैस माउंटिंग।' इस पुकार द्वारा जाकियों को उस जगह पर जहां से घुड़दौड़ शुरू होती है आकर अपनी जगह लेने को कहा जाता है। घुड़दौड़ के मैदान से उसे यह पुकार बार-बार सुनायी दे रही थी और उसे सुनकर वह अपने शरीर में एक नयी शक्ति का अनुभव कर रहा था। उसे अधिक से अधिक शक्ति की आवश्यकता थी। वह और भी अधिक शक्ति चाहता था।

डाक्टर ने डैनी के होटल के कमरे में प्रवेश करके, डैनी के सिरहाने रखे पुराने टेबल लम्प को हल्के से घुमाकर उसका प्रकाश डैनी के चेहरे पर डाला, छोटा, आकर्षक चेहरा, बीते सालों की याद दिलाती लाइनों से भरा, जो अब तांबे के रंग का हो गया था।

डाक्टर ने पूछा "क्या उम्र होगी तुम्हारी डैनी? बावन तो होनी ही चाहिए।" डैनी उसके इस सवाल का जवाब दे सकता था, लेकिन जवाब देने में शक्ति खर्च होती, और वह अपनी शक्ति बचाने में लगा था। उसे अपने 'हैंडिकैप' के बारे में पता था और अगली घुड़दौड़ के वक्त का भी। वह वक्त निश्चित था और उस बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता था। इसलिए वह चुपचाप लेटा था और लेटा लेटा बिगुल को सुन रहा था।

उठने में डैनी को बड़ा कष्ट हो रहा था, लेकिन डैनी यह कष्ट सहते हुए भी उठा। फिर वह कपड़े बदलने लगा। डेनिम शर्ट के ऊपर एक पुरानी, घिसी हुई सुएड जकेट पहनते हुए और पांवों में उतनी ही पुरानी जीन पहनते हुए वह कमज़ोरी की वजह से कांप रहा था। दीवार का सहारा लेता हुआ वह दरवाज़े तक आया।

कमजोरी इतनी ज्यादा थी कि सीढ़ी पर दो बार गिरते गिरते बचा। कमाल देखो, बिगुल ने उसे गिरने से बचाया। उसे बिगुल की आवाज सुनाई दी थी और इस आवाज को सुनकर वह दूसरी आवाजों को भूल जाता है। इसी आवाज को सुनकर, बचपन में वह घर छोड़कर भागा था। तब से न जाने कितने मैदानों पर न जाने कितने बिगुलों की आवाज सुनी थी उसने। उन दिनों भी जब घुड़दौड़ के हर कार्ड पर उसका

नाम अंकित होता था और मैदान मे बिगुल की आवाज सुनते ही उसके खून म रवानगी आ जाती थी।

और जब घुड़दौड के अधिकारी और दशक उसे भूल चले थे और घुड़दौड के मदान पर उसे कोई भी काम देन को तयार नही थे। तब उसे अच्छी तरह याद है, इस बिगुल को आखिरी बार सुनकर उसकी आखो मे आसू आ गये थे लेकिन बिगुल की आवाज उसे पहले कभी इतनी उत्तेजक नही लगी थी, जितनी आज लगी थी। क्यो, वह जानता था।

रात शात और धुधली थी। धूमिल सी चादनी घुडदौड के मैदान पर छायी थी। एक सिरे पर अस्तबल था, जिसमे घोडे बधे थे घुडदौड मे दौडने वाले घोडे।

सब घोडो को ध्यान से देखते हुए डैनी तीन साल की फरबैलो घोडी क पास आकर रुक गया। जैसे ही उसन फरबैलो की पीठ पर हल्की सी लगाम रखी, घोडी हल्के से हिन हिनायी और जसे ही डैनी उसकी मखमली गदन पर हल्के स हाथ फरन लगा, वह शात हो गयी और स्नहमयी उत्सुकता के साथ डैनी को देखन लगी। वह एक तगडी घोडी थी।

बहुत धीरे धीरे और बडे प्यार के साथ डैनी ने फरबलो को अस्तबल क बाहर निकाला। फिर एक उल्टी बाल्टी पर पाव रखकर घाडी पर सवार हो गया।

सहारे के लिए फरबलो के कधा पर झुककर वह उस घुडदौड के मैदान मे ले आया।

'स्टार्टिंग गेट' तक पहुचत पहुचते उसे क्लब हाउस की चादनी मे चमकती दीवार को पार करना पडा। पहाडियो की तरफ स सद हवा आकर उसे कपा रही थी, लेकिन उसे यह देखकर खुशी थी कि घोडी को सर्दी नही लग रही थी। वह काफी खुश और दौडने के लिए बेकरार थी।

और अब शुरू हुई डेनी की घुडदौड। चूकि इस दौड म वह अकेला ही दौड रहा था और उसका कोई प्रतिस्पर्धी नही था, इसलिए वह ज्यादा तज नही जा रहा था। कोई देखता तो समझता कि उसने अभ्यास शुरू किया है मगर धीरे धीरे अकेले होते हुए भी घुडदौड का बुखार उस पर सवार होने लगा। फरबैलो को वह तूफान की गति से दौडान की कोशिश करने लगा। उस खाली स्टण्ड भरे नजर आने लगे, जिनम बैठे असख्य दशक जोर-जोर से चिल्लाकर उसे पहले नम्बर पर आने को उत्साहित कर रहे थे।

वह अब दशको का प्रिय जॉकी डैना था। वे उसका नाम ले लेकर उसे पुकार रहे थे। उन्होंने उसकी घोडी पर ऊची ऊची रकम लगाई हुई हैं। वह उन्हे कसे निराश कर सकता है। वह अव्वल आकर दिखायेगा, वह जरूर अव्वल आयगा।

जसे ही उसे फिनिशिंग लाइन दिखाई दी, उसके कानो मे बिगुल की आवाज और तेज हो गयी, दशकों के नारे उनकी चीखें अब उस पहले से ज्यादा साफ सुनाई द रही थी।

वह भी उत्तेजनावश चिल्लाकर घाडी को और ज्यादा तेज दौडन के लिए

उत्साहित करने लगा। चिल्लाते चिल्लाते उसकी आंखों में आंसू भी आ गये थे।

घोड़ी ने उसकी पुकार सुन ली थी। वह पूरे वेग से दौड़ रही थी। घोड़ी और घुड़सवार दोनों एकात्म हो गये थे।

जैसे-जैसे 'फिनिशिंग लाइन' निकट आने लगी, घोड़ी की रफ्तार और घुड़सवार के दिल की धड़कनें चरमबिन्दु पर थीं। दर्शकों का स्वर उत्तरोत्तर ऊंचा होता जा रहा था।

इसी उत्तेजना के कारण डैनी अपने होशो हवास गवा बैठा था। उसे पता नहीं कि फिनिशिंग लाइन पार करने के बाद उसका और उसकी घोड़ी का क्या हुआ?

अगले दिन के समाचार पत्रों में डैनी की आखिरी दौड़ का समाचार इन शब्दों में प्रकाशित हुआ।

' घुड़दौड़ के प्रेमी फरबैलो नामक घोड़ी की ख्याति से भली भांति परिचित हैं। हाल ही में युद्धकालीन परिस्थितियों के कारण स्थगित की गयी 'साता बेनिता हैंडिकेप' घुड़दौड़ में उसके प्रथम आने की पूरी आशा थी। चूंकि इस घुड़दौड़ के स्थगन की घोषणा हो चुकी थी, इसलिए उसे पूर्वी तट पर होने वाली एक बड़ी घुड़दौड़ में भाग लेने के लिए पानी के जहाज से कुछ दिन बाद भेजा जाने वाला था।

कल रात इस नामवर घोड़ी को अभ्यास करने का एक अप्रत्याशित और सुनहरा मौका मिला, एक भूतपूर्व जाकी डैनी रीड के कारण। रीड ने कल रात उसे अस्तबल से निकालकर उस पर सवारी की और उसके साथ मैदान का पूरा चक्कर लगाया।

घुड़दौड़ के अंत में डैनी रीड, जिसे घुड़दौड़ के मैदान का चक्कर लगाते अक्सर देखा जाता था, हृदय की गति बंद हो जाने की वजह से मृत पाया गया। घोड़ी सुरक्षित अस्तबल में लौट आयी थी।

रीड के कुछ मित्रों ने उसके दुखद देहावसान का समाचार पाकर हमारे प्रतिनिधि को बताया, ' रीड का जॉकी के पद से रिटायर हुए हालांकि कई साल हो गए थे, तथापि वह हम सबसे प्रायः कहा करता था कि उसे आखिरी दौड़ दौड़नी बाकी है। और, यह आखिरी दौड़ मेरे जीवन की शायद सबसे शानदार दौड़ होगी।" वह अक्सर जोश के साथ कहा करता था, और हम उसकी यह बात सुनकर हंस दिया करते थे।

और खेल अधूरा रह गया

ज्ञानस्वरूप भटनागर

कनकपुर की विजय वाटिका का क्रीडांगन गगनभेदी विजयोल्लास के नारों, चीखों, घंटे सीटियों और तरह तरह की दूसरी आवाजों से गूंज उठा। अंसारी ने जबरदस्त चौका लगा कर हवाइट की गेंद को सीमा तक पहुंचा दिया था।

उस उल्लसित वातावरण में चकित भुवन की दृष्टि अचानक मिसेज कमलिनी कौशल पर पड़ी जिससे उसकी मुलाकात कोई पंद्रह वर्ष पहले हुई थी। कमलिनी उस समय नवाबजादी कमरुन्निसा बेगम थी और अंतरंग लोगों में कमर के नाम से जानी जाती थी। भुवन ने नवाबजादी कमर से मुलाकात होने से पहले उसके पास अक्सर आने जाने वाले अपने दोस्त सत्येन्द्र कौशल से सुना था कि कमर की सारी खूबसूरती उसकी कनपटी के पार तक पहुंचने वाली बड़ी बड़ी आंखों में है।

पहली बार जब भुवन की नवाबजादी कमर से अचानक ही भेंट हुई तब उसने बगैर नकाब उठाए ही भुवन से बात की थी। भुवन से कुछ कहते नहीं बना। साथ में उसकी बड़ी बहन जेबुन्निसा भी थी। वह सकुचाया सा चुपचाप बैठा रहा। दो पर्दानशीन नवाबजादियों के साथ हुई बातों से भुवन एक ऐसी दुनिया में पहुंच गया, जहां उसकी अब तक की सोची समझी बातें सहसा अर्थहीन सी हो गयी थीं।

कमलिनी बार-बार अंसारी को शाबासी दे रही थी और उसके आगे अगल-बगल तथा पीछे के दर्शक किसी अदृश्य शक्ति के जोर से उसके साथ खड़े होकर उसकी दी हुई शाबाशी में कभी कभी बिना समझे बूझे योगदान कर रहे थे।

अंग्रेजों के समय विजय वाटिका में जनसाधारण का आवागमन नियंत्रित था। आजादी के बाद उसका विस्तृत प्रांगण औपचारिक रूप में साधारण नगर निवासियों के लिए भी खुल गया था पर शीघ्र ही वह नगर सेठों की प्राधान्य प्राप्त एक ऐसी प्रबंध समिति के अधिकार में आ गयी थी जो विभिन्न निमंत्रणों के बहाने उसे जन साधारण से दूर रखकर उसका एक उच्च स्तरीय क्लब की भांति रख रखाव करती थी और दूसरे-तीसरे साल क्रिकेट टेस्ट मैच के अवसर पर उसकी रूप सज्जा निखारकर उसके विभिन्न स्थापित अंगों को पांच रुपये से साठ रुपये तक के दामों के अनुसार दर्शकों के पांच रोज के लिए समर्पित कर देती थी। पचास हजार से अधिक तमाशाइयों में जहां हजारों

विशिष्ट मुफ्तखोर भी सादर आमंत्रित किए जाते थे। वहां सैंकड़ों दूसर अविशिष्ट मुफ्तखोर भी प्रबंधकर्ताओं की आंख बचाकर जहां तहां घुस जाते थे। इस वर्ष विजय वाटिका के टैस्ट मैच की खुशी यह थी कि वहां बीयर की बिक्री का भी प्रबंध कर दिया गया था, जो सिर्फ उच्चवर्ग के लोगों और महिलाओं के बीच सीमित रहती थी।

श्याम मनोहर कानोडिया उर्फ श्यामू भइया इस जमघट के अनिर्वाचित प्रमुख थे। जूट के बहुत बड़े व्यापारी श्यामू भइया की उम्र यही कोई बयालीस के आस पास होगी। क्रिकेट के शौकीन थे और देश में होने वाले प्राय सभी टेस्ट मैच देखते थे। जमघट में ही कमलिनी ने भुवन से श्याम भैया को मिलाया और बोली, 'आइए भुवन भाई, एक-एक कॉफी हो जाये। इस मैच में कुछ धरा नहीं है। यह तो ड्रा ही होगा।'

"सिनहा साहब को तो मैं जानता हूं। यह तो प्रदेश के माने हुए पत्रकार हैं।" श्यामू भैया ने कहा।

'यह कब से और कैसे ?" और फिर कुछ सोचते हुए बोली "भुवन भाई, बंबई के बाद आप कहां रहे ?"

"अब इन सवालों का जवाब मैं एक साथ ना दे नहीं सकता। पर हां, अब कनकपुर में कुछ माला में 'नेशनल गजट' के संवाददाता की हैसियत से काम कर रहा हूं।"

भुवन ने देखा कि श्यामू कानोडिया उसकी और कमलिनी की घनिष्ठता को जान कर कुछ अप्रतिभ सा होकर उसके पीछे हो लिया। सब रेस्ट्रां की ओर चल पड़े। भुवन भी एक झेंपी सी मुस्कराहट के साथ कमलिनी के बराबर बराबर चलने लगा।

उत्साह और उल्लास से भरी सड़कों पर सब तरफ विजय वाटिका की ओर जाने वाली भीड़ ही दिखाई पड़ती थी। उस दिन कनकपुर खुश था और खुश थे भूखे पेट रिक्शा खींचने वाले, वह आठ दस हजार दोपाये, जिन्हें पिछले दिन तबीयत से भरपेट खाने को मिला था। अठन्नी का रास्ता रुपये भर का हो गया। फिर उन्हीं सवारियों को शाम को और भी ज्यादा पैसे लेकर उन्होंने उनके घर तक ढोया था। रिक्शा, वालों की जेबें भरी थी। अब उन्हें और ज्यादा मजदूरी का मौका मिलेगा क्योंकि पहले ही दिन भारतीय कप्तान दशमुख के टॉस जीतने के बाद भारतीय टीम ने सिर्फ तीन खिलाड़ी खोकर दो-सौ ग्यारह रन बना लिये थे। सारा नगर भारतीय टीम द्वारा मैच जीतने की आशा से उजागर हो गया था, पर हैमंड की गेंद पर नाइट द्वारा कैच लिए जाने से मनवेकर का शतक बनते-बनते रह गया, उसने सत्तानवे रन बना लिये थे। पचास हजार से अधिक दर्शकों के दिल से बसाख्ता एक आह निकल पड़ी।

खेलों के शौकीन कनकपुर के लघु उद्योगपति रामकृष्ण शर्मा संस्कृत के पंडित होने के अतिरिक्त अंग्रेजों के विशेष भक्त भी थे और हर अंग्रेजी तौर तरीके को बड़े आदर के भाव से देखते थे। शर्मा ने नगर के कलेक्टर की कृपा से कनकपुर की एतिहासिक विजय वाटिका में क्रिकेट खेलने भर के स्थान के चारों तरफ ईंटों की सीढ़ियां बनाकर उसे एक स्टेडियम का रूप दे दिया था और फिर उनकी कोशिशों से सन् उन्नीस सौ बावन में एक

विदेशी टीम के भारत भ्रमण के समय कनकपुर म प्रथम बार एक टेस्ट मच भी खेला गया था। इस आयोजन स रामकृष्ण शर्मा नगर म विशिष्ट यश और विशेषकर कनकपुर के बड भारतीय उद्योगपतियों की नजरो म खटकने लगे थे। तीन मैच कराकर और लबा घाटा उठाकर शर्माजी इस ससार स कूच कर गय तो फिर एक नयी प्रबंध समिति न पाच वष के बाद कनकपुर म पुन टेस्ट मैच का आयोजन कराया। मच बराबर रहा और अगले वष भारतीय टीम जीत गयी तो फिर कनकपुर म टेस्ट मैचों का सिलसिला चल निकला।

क्रिकेट देखन वाला की भीड म जितना उत्साह था। उतना उत्साह भुवन न कनकपुर म आजादी के दिन के बाद कभी नही देखा था। कुछ दिनों म शहर म हर जगह क्रिकेट की ही चर्चा थी। भुवन न भी उस उल्लासपूण वातावरण म घुल मिल जाने का भरसक प्रयास किया था। उसन जल्दी-जल्दी क्रिकेट के खेल को समझन की कोशिश की और भारतीय तथा विदेशी टीमों के सदस्यो के नामो और उनक पिछले वर्षों की स्मरणीय गदबाजी बल्लेबाजी, क्षेत्रीय हस्त लाघव तथा वृत्तबद्धन आदि को समझन का प्रयत्न किया था पर इस सबके बीच वह अपन स यह प्रश्न पूछे बिना नही रह पाता था कि "इस सब म क्या रखा है और लोग क्रिकेट के पीछे इतन दीवान क्यों हैं?"

जब नवाबजादी कमरुन्निसा बगम विजय पाक के टेस्ट मच मे मिसेज शाह का नाम धरे हुए शभू बाबू क रस्तरा म प्रवेश कर रही थी तब भुवन को उसकी देख रेख म बन मुग की याद आ गयी। भुवन को कनकपुर म उतना लज्जतदार मुग खान का अवसर तभी मिलता था, जब कनकपुर म क्रिकेट टस्ट म आयोजन समिति क मत्री जनाब अलबट अली खा क द्वारा दी गयी दावत म शरीक होता था।

कनकपुर म क्रिकेट के आयोजन के लिए जिस अपार धनराशि की मच स पहल जरूरत होती थी, अलबट अपन सहयोगी उद्योगपतियो को स्वागत समिति का सदस्य तथा सरक्षक बनाकर हासिल कर लेता था। अपनी इस काय कुशलता क कारण वह इस आयोजन समिति का मत्री बन गया था। टेस्ट मच के समय विजयवाटिका अपना घाघरा अलबट के इशारे पर ही उठाती, लहराती अथवा समेटती है।

अपने मित्रो म कमल के नाम स मशहूर कमल किशोर कनकपुर क्रिकेट सघ का प्रसीडट तो जरूर था, लेकिन विजयवाटिका के टेस्ट मैचो म अलबट और उसके सह योगियो के एकाधिपत्य के कारण कमल की हैसियत एक सम्मानित दशक मात्र की होती थी। कमल को यह बात बहुत खलती थी। कमलिनी और उसके साथ के झुड क सामन अलबट न कमल की बात का समथन एस किया, जैस दोनो एक दूसरे की बात पर मरते मिटते हो पर हकीकत यह थी कि दोनो की आपस मे बोलचाल भी नहीं थी।

जब कमल किशोर न बीसियो शिक्षा सस्थाओ का सचालक होन क नाते प्रदेश की खलकूद सस्थाओ म अपना स्थान बनान का प्रयास किया तो अलबट अली को बहुत खटका। उसके एक ही झटक न कमल किशोर को प्रदेश के खेल के क्षेत्र स बाहर कर

दिया, पर कमल भी कोई मामूली खिलाडी नही था। उसने भी बाजी बिछा दी और दाव पेंच चलने लगे।

कमल ने अपना चातुर्य दिखाते हुए श्यामू कानोडिया के गले में हाथ डालते हुए कहा "अरे चलिए श्यामू बाबू, आप तो खेल में ऐसे रम जाते हैं कि फिर हाथ ही नही दिखता, हम गरीबो की कौन कहे।"

अलबर्ट कुछ सोच में पड गया कि भुवन को अंदर चलने के लिए कहे या न कहे। तभी कमलिनी ने दोनो का परिचय कराते हुए भुवन से कहा, 'देखिए, आप यहा चाहे जसी अखबार नवीसी कीजिए, पर हमारे अलबर्ट साहब को बचाए रखिएगा। मुझे इनसे ज्यादा नेक आदमी देखने को नही मिला।"

भुवन ने शामियाने में चारो तरफ अपनी नजर डाली तो देखा कि वहा प्रदेश सरकार के सर्वोच्च अधिकारियो का झुड जमा था और उनकी खातिरदारी में बी० जी० उद्योग संस्थान के कई संचालक एवं साथ लगे थे। उनके सामने की मेज पर बीयर की खुली बोतलें भी रखी थी और सबके हाथ में बीयर से भरा एक एक गिलास था। उस समय शामियाने में कमलिनी को छोडकर कोई और महिला नहीं थी। अलबर्ट ने स्वाभाविक शिष्टाचार के नाते अपने पास आकर खडे हो जाने वाले सभी बडे बडे अफसरो का कमलिनी से परिचय कराते हुए कहा, "यह मिसेज शाह हैं जो बबई में क्रिकेट क्लब मे होने वाले मचो के इंतजाम की ऐसी देखभाल करती हैं कि आज तक वहा किसी बात की शिकायत ही नही हुई, पर हम गरीब यहा कनकपुर में क्या कर पाते हैं। अब यही देखिए, इस वर्ष पचास हजार रुपये खर्च करके स्टेडियम के चारो तरफ बैठने के लिए सीढिया बनायी गयी है और क्रिकेट बोर्ड को साठ हजार रुपये की नकद जमानत दी जा चुकी है, पर इस सबके बदले तारीफ के दो लफ्ज तो दूर, उल्टे चारो तरफ से आलोचना हो रही है।" कृष्णकांत ने बातों का रुख खेल की तरफ मोडा तो खिलाडियो पर अपनी राय देते हुए कमलिनी बोली, 'मैं तो मनकेकर के खेल से ऊब गयी थी। असल में जन वासे की चाल और मनकेकर के रनो की रफ्तार में कोई फर्क नहीं। मनकेकर से ज्यादा दिलकश बल्लेबाजी तो चौधरी ने की थी।' कमल बाबू ने कमलिनी का समर्थन किया लेकिन अलबर्ट ने बात को काटते हुए कहा, "कमल बाबू, मैं कहता हू कि दुनिया मे जिंदगी की तरह क्रिकेट का खेल भी जोर और जोश का ही नही, बल्कि समझ का भी है।"

अलबर्ट के मन में वह दाव कसकता रहता था, जो कमल किशोर ने अपने बीसियो शिक्षा संस्थानो को प्रदेशीय क्रिकेट संघ का सदस्य बनाकर चलाया था। जिसके फलस्वरूप कमल किशोर के बहुमत के सामने अलबर्ट अल्पमत में हो गया था।

वी० आई० पी० शामियाने में कुछ लडके और लडकियां घुस आये तो वहा भगदड मच गयी। उनमें अजरा भी थी। नवनियुक्त प्रदेश पुलिस इंस्पेक्टर जनरल नियाज अहमद की लडकी। कमलिनी उसे अर्से से जानती थी और उसने सोचा था कि अपने पहले पति के अपने बेटे असगर से उसकी शादी कर उसे अपनी बहू बनायेगी। असगर अमरीका में पढ रहा था और उसने लिखा था कि पढाई खत्म कर वह पाकिस्तान चला जायेगा, क्योंकि

वह अब कमिस्ट्री का डाक्टर हो जायगा। पढ़े लिखे मुसलमान लडकों को हिंदुस्तान म योग्यतानुसार जगह प्राय नही मिलती है, एसा उसा सुना है।

अजरा भागती हुई वापस आ गयी। उसा हाथ म कई आटोग्राफ बुक्स था, वह सब उसने कमलिनी की गोद म डाल दी और कहा, 'आंटी यह आटोग्राफ बुक्स आप सभालिए मैं तो चली मैच देखा। इन सब पर भारत की टीम के खिलाड़ियों के आटोग्राफ हो जाय तो फिर मैं इन सबके कान पकडवाकर उठा बैठाकर ही इनकी बुक्स वापस करूगी।'

वी० आई० पी० शामियान म आकाशवाणी के क्रिकेट समीक्षक की आवाज आन लगी असारी का खेल खत्म हो गया। असारी का हस्टिंग्ज न स्क्वेयर लेग पर कच कर लिया।'

एक प्रेस दीर्घा वी० आई० पी० शामियान के बाद प्रथम श्रेणी क शामियाने के बायी ओर थी और दूसरी स्कोरबाड के नीचे। एक म स्थानीय पत्र प्रतिनिधि थे। दूसरी म अखिल भारतीय स्तर के तथा विदशी पत्र प्रतिनिधि थ। उसके बाद महिलाओ का कक्ष था। वी० आई० पी० शामियान स निकलकर जसे ही भुवन विशिष्ट पत्रकार-दीर्घा की ओर बढा, वस ही 'नशनल क्रानिकल' के उसक सहयोगी सवाददाता सतीश न उसे रोक लिया। तभी यू इडिया का सवाददाता बलराम आ गया। आटोग्राफ क लिए आकुल युवावग पर भुवन न कटाक्ष किया तो सतीश न कहा, "आज यह आटोग्राफ के लिए पागल हैं और कल ही यह क्रिकेट का एक अवांछित विदशी प्रभाव कहकर उखाड फेंकन के लिए भी तत्पर हो सकत हैं यहा का युवक अवसर के अभाव तथा दिशाहीनता के कारण अधिकतर अचतन और तद्रिल रहता है और जब किसी चीज म दिलचस्पी लता है तो सही दिशा न होने क कारण उसका उत्साह असयमित उद्दड और उच्छ खल लगता है।'

जब सतीश अपनी बात कह रहा था, एक लडके ने अजरा को छेडा, 'हलो स्वीट!' अजरा उस लडक के पास गयी और एक तमाचा जडकर बोली, 'नाट सो स्वीट माई डियर बट आफुली बिटर फार यू।" भुवन ने सोचा था कि अजरा आजकल की ढुलमुल लडकियो की तरह चचल तथा प्रगल्भ है और अधीरता म आसानी से किसी भी भुलाव म आ सकती है, पर जिस तरह उसने उस लडके को तमाचा जडा उससे भुवन को अजरा के निडर आत्मविश्वास साहस तथा उसकी तीक्ष्ण बुद्धि का भी परिचय मिला।

आयोजक सारा काम अंग्रेजी म कर रह है, जानकर भुवन को ताज्जुब हुआ तभी उस ध्यान आया कि हो भी क्यो नही जबकि क्रिकेट एक सामतवादी अंग्रेजी खल है।

विद्यार्थियों और निम्न श्रेणी क साधारण दशकों को विजय वाटिका क उस भाग म बडी बडी ऊची दीवारो और लाह की लबी काटदार जालियो क पीछे स्टेडियम की सीढ़ियो के आस पास ही बठने का स्थान दिया गया था। दोनो कक्ष एक दूसरे के अगल

बगल थे। प्रब धकों ने दर्शकों को भेड़ बकरियों की तरह भर दिया था।

जब सब खिलाड़ी अन्दर चले गये तो पुलिस के जवान इधर उधर हो गये। भीड़ आपस में गुत्थमगुत्था हो गयी और बीच में कुछ लड़कियों के कपड़ों की छीना झपटी शुरू हो गयी। भीड़ में फँसी लड़कियों को लड़कों की आवाजकशी और आपसी खींचातानी से एक आशंकापूर्ण दृश्य उपस्थित हो गया। भीड़ छटने के बाद भुवन ने देखा कि एक लड़का कुचल कर बेहोश हो गया है तथा अजरा की एक सहेली के तन के सारे कपड़े फट गये हैं। वह लाज बचाने के लिए घुटनों के बल बैठी है। अजली भी किसी तरह अपनी इज्जत ढाँप बैठी थी। अजली को तौलिया में लपेट कर अहमद उसे कप में ले गया और डाक्टर बुलाने को कहा।

विजय-वाटिका का वातावरण उत्फुल्ल था। दर्शक, कुमार के पौरुषेय अभिरक्षण का आनन्द ले रहे थे। वह हैमड की गदा हर आक्रामक प्रहार कर रहा था। उसने गेंद पर पीछे घूमकर ताबड़तोड़ दूसरा कट लगाकर तीन रन प्राप्त किये तो प्रांगण में जमा भीड़ ने गगनभेदी नारे लगाकर अपने उत्साह का प्रदर्शन किया। तब सतीश बलराज और भुवन काफी पीकर स्थानीय प्रेस दीर्घा की ओर बढ़े, तब विजय वाटिका के सभी क्षेत्रों में कुमार के कौशलपूर्ण प्रहारों की चर्चा हो रही थी। उसने अपनी टीम के अगामी बल्ल-बाजों के लिए मैकगिल के अनिश्चित दिशा लेने वाले अकस्मात् आघातों को विदीर्ण करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। तभी प्रेस वालों और प्रबंधकों में कहा-सुनी हो गयी। पत्रकार दीर्घा में बैठे तीस चालीस लोगों में शायद पाँच-छह ऐसे थे, जो क्रिकेट को समझते थे और अपने अखबार में खेल पर कुछ लिखते थे।

अजरा ने भुवन के पास आकर कहा कि 'पापा ने आज रात सरकिट हाउस में आपको खाने पर बुलाया है। उन्हें अफसोस है कि दिन की गड़बड़ी में दोपहर को आप ढंग से खाना भी न खा सके। शाह आंटी भी वहीं खाना खायेंगी।'

कमलिनी के आने की बात सुनकर भुवन के मन में कुछ उत्साह आया तो उसने अजय से कहा कि 'मोटर तारघर भेज देना। मैं वहीं मिलूंगा।"

किशन लाल भुवन का सहपाठी रहा था। बीस बरस पहले जब भुवन कनकपुर के बाहर प्रयाग विश्वविद्यालय में पढ़ने गया था तभी हाई स्कूल पास किशन लाल बी० जी० उद्योग समूह के पहरा निगरानी दस्ते में भरती हो गया था और अपनी सेना के संचालकों का विश्वास प्राप्त कर धीरे धीरे उस निगरानी दस्ते का अधीक्षक बन गया था। वह भुवन का बड़ा आदर करता था और अपनी पुरानी दोस्ती के नाते भुवन को एक बार खतरे से आगाह भी कर चुका था। भुवन के साथ आगे बढ़ते हुए किशन लाल ने कहा 'सिनहा साहब, आप क्या इन लोगों के खटराग में पड़ते हैं। यह दयाशंकर वगैरह उस ग्रुप के लोग हैं जो अल्बर्ट साहब को हर तरह से नीचा दिखाना चाहता है। इतनी मेहनत, सूझ बूझ और पैसे से स्टेडियम के अन्दर बने क्रिकेट के मैदान का इस्तेमाल कर यह लोग यहाँ फुटबाल, हाकी और दूसरे खेल, यहाँ तक कि कुश्ती और कबड्डी आदि

के लिए बहुत से छोटे बड़े अखाड़े बनाना चाहते हैं। फिर शहर में क्रिकेट के लिए जगह रह ही नहीं जायगी। अच्छा सिन्हा साहब, मैं तो अब जाता हूं। आप जरा मेरी बात का खयाल रखें।"

बिशन लाल के जाने के बाद भुवन अकेला रह गया। वह निश्चय नहीं कर पाया कि बिशन लाल ने उससे यह बातें मित्रता के नाते कही थीं या उसने एक प्रकार की चेतावनी दी थी। उसे लगा। ऐसी चेतावनी उस समय विजय वाटिका के कोने-कोने में कोई न कोई बिशन लाल या सुखदेव किसी-न किसी भुवनेश्वर सिन्हा को बा० जी० उद्योग संस्थान की ओर से अपने-अपने ढंग से हर जगह दे रहा था। भुवन को लगा कि वह विजय वाटिका के हजारों दर्शकों से भरे क्रीडांगन में अकेला-असहाय खड़ा है। उसे ऐसा लगा कि विभिन्न प्रभावशाली व्यक्तियों के शिकंजे कनकपुर के जनजीवन के विभिन्न अंगों के किसी-न किसी रूप में जकड़े हुए हैं। विजय वाटिका के उस उत्फुल्ल वातावरण में कनकपुर के जीवन की यथार्थता का उसे पहली बार ज्ञान हुआ। देश को आजाद हुए बीस वर्ष से अधिक हो चुके हैं। पर आजादी कहीं गायब हो गयी है। और उसकी जगह छोटे छोटे शक्तिमान-स्वार्थ समूहों ने अपने अपने प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार कर जनसाधारण को एक नयी गुलामी में जकड़ लिया है। अनमना सा भुवन स्थानीय प्रेस दीर्घा पार कर खिलाड़ियों के मंडप की ओर बढ़ गया।

अचानक आकाशवाणी के समीक्षक की आने वाली आवाज उत्तेजना से भर गयी—"रोजर्स और व्हाइट की सुरक्षात्मक गोलदाजी को तिलांजलि देकर मैंकगिल ने चार सौ रन बनते ही नयी गेंद लेकर अपनी रणनीति में परिवर्तन कर आक्रामक रुख अपनाया था और इसका उसे तुरंत लाभ हुआ। व्हाइट की गेंद पर प्रहार करने में चूक जाने से गुरजीत का विकट उड़ गया और उसकी जगह पर नरीमन पहुंच गया

और यह लो विट्ठल का छक्का, इस मैच में उसका छठा छक्का, व्यक्तिगत योग एक सौ उन्नीस। उसने अब तक बारह चौके भी लगाये हैं। अब रोजर्स फिर गेंद फेंकने जा रहा है ।"

इसके साथ ही भुवन को अकूत सदपावाले अनेक लोगों की काली सफेद करतूतों की जानकारी होती गयी और तब उसने सोचा—क्या एक दिन उसे भी यही मार्ग अपनाना होगा। क्योंकि जिस व्यवस्था में वह जी रहा है उसमें आगे बढ़ने के लिए और कोई रास्ता नहीं रह गया है। उसने सोचा यदि इसे अस्वीकार किया तो फिर जीवन के क्रीडांगण से हटकर दर्शक दीर्घा में बैठकर दूसरों की सफलता पर तालियां बजाने या उनकी असफलता पर आहें भरने के अतिरिक्त कुछ और हाथ नहीं आ सकेगा। लेकिन उसके मन में प्रश्न उठता रहा कि क्या कोई और रास्ता नहीं हो सकता ?

अजरा ने बहुत सारे खिलाड़ियों के आटोग्राफ प्राप्त कर लिये थे और फिर सेठ शंकरदत्त की कोठी पर चली गई थी। जहां रात्रि भोज का आयोजन था। करोड़पति सेठ शंकरदत्त की नौलखा कोठी नववधू की तरह सजी हुई थी। अजरा काफी रात गये तक भी नहीं लौटी तो कमलिनी चिंतित हुई, पर अहमद ने कहा कि आती ही होगी।

वहीं भुवन और अहमद के सामने कमलिनी ने अपनी जिंदगी का सारा दर्द उडल दिया। जिससे उसके बारे मे दोनो के विचार एकदम से बदल गये।

फोन पर पता चला कि पार्टी म किसी लडकी के साथ बलात्कार हो गया और किसी सेठ की जमकर कुछ लोगो ने पिटाई की है। हुलिया और कपडे लत्तो से भुवन का निश्चय हो गया कि बलात्कृत लडकी अजरा है। अजरा, जिसे अहमद न अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद सीने स लगाकर किसी अण्डे की तरह सेया है। अजरा की प्राथमिक चिकित्सा हुई और जसे ही उसन भुवन का दखा वह फफक पडी। और उस दखकर अहमद फूट फूटकर रो पडा।

अहमद के सिर पर गिर इस गाज स मुक्ति का रास्ता कमलिनी न बताया और अमरीका म पढ रहे अपन लडके असगर स अजरा की शादी का प्रस्ताव रखा और यह भी कहा कि व दोना पाकिस्तान म खरीदी गयी उसकी सपत्ति लेकर वही बस जायेंगे। अहमद ने कहा कि यह वाकया असगर को बता दिया जाये फिर भी अगर वह अजरा स शादी करना चाहे तो यह पिता और पुत्री दोनो का सौभाग्य होगा। कमलिनी अब भुवन और अहमद के समक्ष किसी दैवी शक्ति सी हो उठी थी।

तारघर पहुचकर भुवन ने जल्दी जल्दी विजय वाटिका मे होने वाले उपद्रव की खबर नशनल आब्जबर को भजी।

कनकपुर, 7 दिसम्बर, एक दिन क अवकाश क बाद भारतीय और विदेशी टीमो के बीच खेल जाने वाले दूसरा टेस्टमैच तीसरे दिन का खेल आरम्भ होने स पहले ही रद्द कर दिया गया। क्योकि पचास हजार के करीब बेकाबू भीड ने विजय वाटिका मे आग लगा दी। टिकट खिडकी की भीड म दो व्यक्ति मर गय और पचास लोग घायल हो गय। स्थिति का नियत्रण मे लान के लिए सना को बुलवान की जरूरत पड गयी। दशको ने उच्च श्रणी के शामियानो मे आग लगा दी। भीड की उत्तेजना का पहला कारण था—टिकटो की ब्लैक, दूसरा कारण था आटोग्राफ लेन वाली लडकियो के साथ दुर्व्यवहार। दूसरे कारण ने आग म घी का काम किया प्रब धको ने मैच के आगे के दो दिन क खेल को रद्द कर दिया, क्योकि प्रागण म उपद्रवियो और पुलिस के सघष म पिच ही नष्ट हो गयी थी।

महादेवी का श्राप

कार्तिक शुक्ला का प्रथम दिवस था। शकर और पावती ने द्यूत क्रीडा का इरादा बनाया। चौपड बिछ गयी। पासे फेंके जाने लगे। मुकाबला कडा था। फिर भी शकर जी हारते रहे यहा तक की वह पृथ्वी पाताल, आकाश तीनो हार गय। पावती मुस्क रायी। शकर जी खिसिया गये। पावती हस दी। शकरजी खिन्नमना होकर घर से बाहर चले गय।

यह पराजय उन्हे मन ही मन बहुत साल रही थी। वह गगा किनारे चले गये और गुमसुम से बठे बैठे गगा की लहरें गिनते रह।

साझ घिर आयी। शकर जी वापस नही गये। तभी कुमार कार्तिकेय भी टहलत हुए वहा आ पहुचे। शकर जी का मुख मलिन देखकर उन्होने उनके निराश होन का कारण पूछा। शकरजी न सारी कहानी कह डाली तब कार्तिकेय बोले "बस, इतनी सी बात, आप मुझे द्यूत विद्या सिखा दे, फिर देखिए म क्या करता हू।'

शकर जी ने उन्हे द्यूत विद्या सिखा दी। वह अगले दिन पावती के पास पहुचे उन्होन महादेवी को प्रणाम किया और द्यूत क्रीडा की इच्छा प्रकट करते हुए कहा 'मैं देखना चाहता हू कि शकर जी आपसे हार कैस गये।"

पावती हसते हसते चौपड खेलन बैठ गयी। मगर यह क्या वह तो हारने लगी पथ्वी, पाताल आकाश तीनो भुवन ! कार्तिकय विजय मुद्रा म उठे और चले गये। गगातट पर पहुचकर उन्होंने अपना जीता हुआ सबकुछ शकर जी के सुपुद कर दिया।

उधर घर म बठी शकर जी की राह तकती पावती परेशान हो उठी। शकर जी से जीतना या हारना उनके लिए मामूली बात थी। उन्ह विश्वास था कि शकर जी कुछ देर बाद घर आ जायेंगे और वह उनकी सभी चीजें वापस सौंपकर उन्हें मना लगी। पर अब तो वह सब कुछ गवा बैठी थी। उन्होने गणेश जी को बुलाया और पूरा घटनाक्रम सुनाकर राय पूछी कि अब क्या किया जाय। गणश जी न वही किया जो कार्तिकेय ने किया था। उन्होने महादेवी से द्यूत विद्या सीखी और जाकर शकर जी से सब चीजें जीत लाये। पावती के हष का पारावार न रहा। उन्होंने गणश जी को आशीर्वाद देकर कहा परन्तु बेटा यह सब शकर जी के बिना अधूरा है। साम दाम दड भेद जसे भी बन पडे उन्हें घर ले आओ नही तो मैं जिंदा नही बचूगी।'

गणेशजी एक बार फिर अपनी मूसक सवारी पर शकरजी की खोज मे चल दिये,

मगर वह गंगातट पर नहीं मिले। दरअसल, दुबारा हार जाने के बाद वह एकदम व्याकुल हो उठे थे इसलिए गंगा तट छोड़कर सीधे विष्णु जी के पास पहुंचे। वहां कार्तिकेय और नारद जी उपस्थित थे। शंकरजी ने अपनी राम कहानी सुनाकर कहा, "महादेवी से अपना सबकुछ मैं स्वयं जीतकर वापस लेना चाहता हूं।"

तब उन सब ने मिलकर तीन पासों वाली एक चौपड़ तैयार की और तय किया गया कि इन तीन पासों में से एक पासा स्वयं विष्णुजी होंगे। योजना बन गयी। सब महादेवी के पास पहुंचने की तैयारी करने लगे।

कुछ देर बाद गणेशजी भी वहां आ पहुंचे। संयोग से ठीक उसी समय विष्णुजी रूप बदलकर पासे में परिवर्तित हो रहे थे। गणेशजी ने उन्हें पासा बनता देख लिया मगर अनजान बने रहे। वह शंकर जी के समीप पहुंचकर संदेश देते हुए बोले 'महादेवी आपको याद कर रही हैं। आप शीघ्र ही उनके पास न पहुंचे तो वह प्राण गंवा देंगी।'

शंकर जी मुस्करा दिये, 'चिंता न करो वत्स, मैं बस पहुंचने ही वाला हूं।' और वह कार्तिकेय तथा नारदजी के साथ कैलाश पर्वत की तरफ कूच कर गये।

काफी दूर निकल आने पर नारदजी को एक सूझ और सूझी। उन्होंने कहा, 'कहीं ऐसा न हो कि चौपड़ चल रही हो और तभी गणेशजी पहुंच जायें। उन्होंने भंडाफोड़ कर दिया तो सब चौपट हो जायेगा।'

'बिल्कुल हो सकता है,' कार्तिकेय ने सहमति दी, 'वह पीछे पीछे ही आ रहे होंगे, उन्हें रोकना चाहिए या कुछ ऐसा करना चाहिए कि उनके वहां पहुंचने में विलम्ब हो जाये।'

मार्ग में ही रावण का निवास स्थान था। नारदजी ने जाकर उसके कान में कुछ कहा और आगे बढ़ गये। रावण बैठा गणेशजी की राह देखने लगा। काफी देर बाद ज्योंही वह आते दिखाई दिये त्योंही वह बिल्ली के स्वर में इस प्रकार गुर्राने लगा मानो वह तुरन्त आक्रमण करने वाली हो। यह गुर्राहट सुनकर गणेशजी का मूसक डर गया और बिदककर भागता हुआ किसी बिल में जा घुसा।

गणेश जी पहले तो हैरान रह गये, लेकिन फिर रावण को क्रुद्ध नजरों से देखते हुए पैदल ही चल पड़े। मंद मंद अपनी चाल चलते हुए जब गणेशजी कैलाश पर्वत पर पहुंचे तो उस समय वहां चौपड़ चल रही थी। पार्वती लगातार हार रही थीं और शंकर जी जीत रहे थे, क्योंकि हो यह रहा था कि जब भी पार्वती जीतने लगतीं पासा पलट जाता और वह जीत जाते।

गणेश जी पहले तो खड़े खड़े यह तमाशा देखते रहे। मगर फिर उनसे रहा नहीं गया, उन्होंने महादेवी को बतला दिया कि उनके साथ क्या छल किया जा रहा है।

'क्या?' पार्वती चौंक उठीं। उन्होंने शंकरजी समेत सबको क्रुद्ध नजरों से देखा, 'आप सबने मिलकर खेल में कपट किया है और एक अबला के साथ छल भी। मेरा श्राप है कि इस अपराध के कारण शंकरजी का मस्तक सदैव अबला के भार से नत रहेगा। नारद जी को स्वप्न में भी स्त्री का संग प्राप्त नहीं होगा। कार्तिकेय न कभी जवान होंगे न बूढ़े। विष्णु जी की पत्नी को रावण हरकर ले जायेगा और रावण की मृत्यु विष्णुजी के हाथों होगी।'

अधूरा प्रेम

लारेंसट्रेट

सिंगल टेनिस म प्रथम पोजीशन प्राप्त करने के बाद मुझ किसी महिला पाटनर की जरूरत थी। जूली न मेरी पाटनर बनने का निश्चय किया, तो मैं उसकी पेशकश को रदद न कर सका क्योंकि वह निस्सदेह अच्छी खिलाडी थी। हम दोना न डबल्ज टेनिस चैंपियनशिप जीत ली, तो हमारी मित्रता और सुदढ हो गयी। वह अच्छे खात-पीत परिवार की लड़की थी। प्रतियोगिता जीतन क बाद वह मुझे अपनी गाडी म घर तक छाडन आयी पर इस सबके बावजूद मेरे और उसके सम्बन्ध अभी तक केवल मित्रो जसे थे।

डोरीन न मरे साथ जूली की मित्रता को महसूस तो किया। पर हमारी टेनिस पाटनरशिप क कारण चुप ही रही। यद्यपि मैं और डोरीन मानसिक रूप म एक साथ जीवन बिताने का निश्चय भी कर चुके थे, तथापि हमने कभी इस विषय पर खुल कर बात नही की थी।

शिक्षा पूरी करन के बाद डोरीन और मुझे दोनो को बक की एक ही ब्राच म नौकरी मिल गयी। इसे भी सयोग ही कहा जा सकता है कि हम दोनो एक ही लेजर पर काम करते थे। सुबह हम इकटठे दफ्तर जाते और इकटठे ही वापस आत। डोरीन न भी टनिस से मेरी दीवानगी की हद तक दिलचस्पी को अच्छी तरह महसूस कर लिया था। वह मुझे अधिक प्रक्टिस करन म हरसभव मदद देती थी। जब मैं ग्राउड म टनिस की प्रतियोगिताओ के लिए प्रैक्टिस कर रहा होता तो डोरीन को बैंक म अपने अलावा मेरे हिस्से का काम भी करना पडता, पर वह आने वाले दिनो के बारे मे अब भी आशावान थी और एक अशात खुशी उसके चेहरे पर देखी जा सकती थी।

उस वप टेनिस की प्रतियोगिता हमारे शहर ही मे आयोजित हो रही थी और जूली भी भाग लेने के लिए आ रही थी।

कुछ महीने पहले मेरी मा का निधन हो चुका था और अब मैं घर म अकेला था। हमारी बस्ती म रहने वाल लाग जरा रूढ़िवादी थे और फिर डोरीन की रुष्टता के भय से भी मैंने जूली को डोरीन क घर ठहराने का निश्चय किया।

डोरीन ने मरी अपेक्षा टेनिस म अब अधिक रुचि लेना शुरू कर दी थी। शायद इसलिए कि उन दिनों मैं जाने-अनजाने मे घटो टनिस की बातें करता रहता था। फिर

जूली की उपस्थिति मे टेनिस ही ऐसा विषय था जिस पर हम बेधड़क बातचीत कर सकते थे। डोरीन ने मुझे जूली से दूर रखने के ख्याल से उसे अपने घर ठहरा तो लिया था, लेकिन उसका व्यवहार जूली से ठीक नही था।

शाम होते ही जूली मुझे प्रैक्टिस के लिए साथ ले जाती और डोरीन को भी जाना पडता। वह मेरी और जूली की कडी निगरानी कर रही थी। उन दिनो मेरे मस्तिष्क पर केवल दो बातें छायी हुई थी—टेनिस और जूली।

मुझे वह शाम आज तक याद है जब मैं और जूली डबल प्रतियोगिता म खेल रहे थे। शाम की परछाइया अधिक लम्बी हो गयी तो रेफरी ने और खेल अगले दिन पर स्थगित कर देने का निश्चय कर लिया। हमारी विरोधी टीम की स्थिति खासी दृढ थी और खेल स्थगित न करने से उन्हे लाभ होता, पर कम प्रकाश के कारण खेल स्थगित किय बिना उपाय न था। हम विरोधी टीम की तुलना म खासे पीछे थे, पर हम अपन शानदार खेल पर दशका से भरपूर प्रशसा मिली थी।

खेल स्थगित हुआ, तो जूली न अपन ममरी कधे उचकाते हुए मुझस कहा, "माईकल ! जीवन मे एक बार श्रेष्ठ खेल का प्रदशन करो और मर जाओ—यही जीवन है !'

सबने उसके खूबसूरत वाक्य पर दाद दी और मुझे या महसूस हुआ जसे वह मुझ पर व्यग्य कर रही हो। उस दिन खेल म मेरा प्रदशन सचमुच अच्छा नही रहा था। उसका कारण यह नही था कि मैं अच्छा खिलाडी नही था बल्कि स्थिति यह थी कि मेरे लिए जूली के शरीर पर से नजरें हटाना सभव न था। कितन ही स्ट्रोक मैंने मिस कर दिये। कितनी ही सर्विसें गलत फेंकी। शायद केवल इस खयाल से कि मेरी हर गलती पर वह एक क्षण के लिए मुझे घूरे, और होठो के कोने दबाकर जरा सा मुस्कराये। और जूली ने मुझे एक बार भी निराश नही किया। मुझे उसकी दोना बातें अच्छी लगती थी। और मैं हार जीत के खयाल से बेपरवाह अपनी आखो की प्यास बुझाने मे मगन था। टेनिस-कोट के बाहर दशका म घिरी डोरीन निश्चय ही मेरी इन हरकतो पर तिलमिलाती रही थी, क्योकि जब मैं जूली क साथ कोट स बाहर आया, तो उसन जूली के हाथ म दबा हुआ मरा हाथ छुडाकर प्रकटत श्रद्धा से थाम लिया। लेकिन दूसरे ही क्षण मेरे हाथ की पुश्त पर इस जोर से नाखून चुभोया कि यदि जूली का खयाल न होता, तो मैं हजारो लोगो की उपस्थिति म चिल्ला उठता।

अगले दिन हम नही खेल सके। इसलिए कि उसी रात जूली इस ससार से कूच कर चुकी थी। उसका सुनहरी मुरदा शरीर एक होटल के स्वीमिंग-पूल म पाया गया। उसके सिर पर गहरे जख्म का निशान था, जसे गोता लगाने क बाद उभरत हुए चोट आयी हो। जूली की मौत का आकस्मिक दुघटना घोषित कर दिया। मुझ पहली बार पता चला कि डोरीन की तरह वह भी तैराकी का शौक रखती थी। मुझ एसा महसूस होता था जसे मैंन अनजाने म कोई अपराध किया है।

अगली सुबह सारी बात खुल कर सामन आ गयी। जूली की मौत न डोरीन के सिवा सबको बुरी तरह रुला दिया। मेर दिल दिमाग जवाब द गय और मैं महीन भर

तक बिस्तर पर पड़ा रहा। निरोग होने के बाद मैं एक दो बार टेनिस खेला पर अ... उसम मेरे लिए कोई आकर्षण बाकी न रहा था।

दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ तो मैं सेना म शामिल हो गया। उन्ही दिनो डोरीन ने बताया कि वह मेरे बच्चे की मां बनने वाली है और मैंने विश्वास कर लिया। इसलिए हमने शादी भी कर ली।

छह महीने के बाद जब मैं घर गया। तो यह देखकर मेरे विस्मय की सीमा न रही कि डोरीन टेनिस की प्रक्टिस कर रही थी। उसने मुझे भी टेनिस खेलने का निमत्रण दिया। यही नही उसने मुझ बताया कि वह टेनिस की प्रैक्टिस के लिए नियमित रूप से क्लब जाती है। मैंने टेनिस खेलने स इनकार किया तो उसने मेरी बाह पकड ली। उसी प्रकार जसे जूली पकडा करती थी। यही नही उसने नित्य क प्रतिकूल मुझ मकी के बजाय माईकल कह कर बुलाया। जूली भी मुझ सदा माईकल ही कहा करती थी। मेरे दिल म जूली की याद का दाग ताजा हो गया और मैं यह सोचता हुआ ऊपर चला गया कि जूली सचमुच कोई वास्तविकता थी या केवल मेरा खयाल।

अरुचि स मैं उसके साथ हो लिया। मैं पविलियन म खेल क लिए तयार हो रहा था और डोरीन एक स्त्री और एक पुरुष के साथ खेल म लीन थी। उन्हे चौथ खिलाडी की जरूरत थी। जो निश्चय ही मैं था। मैंने पविलियन क शीशे म स टेनिस कोट की ओर देखा। मुझे यो अनुभव हुआ जसे दो खिलाडियो क साथ जूली प्रक्टिस कर रही हो। मैं बाहर निकलकर सीधा कोट म पहुचा। तो देखा कि वह जूली नही, डोरीन थी।

डोरीन मेरी पाटनर बन गयी। क्लब म अधिक भीड नही थी। डोरीन के खेलने का अदाज शत प्रतिशत जूली जसा था।

हम जीत गये लेकिन मुझ कोई खुशी नही हुई।

घरपहुचकर मैंने डोरीन स चाय बनाने के लिए कहा, तो वह बिगड गयी और उसने साफ इनकार कर दिया। मैंने उस याद दिलाया कि छह महीन पहले तक तुम अच्छी खासी गहस्थिन महिला थी। फिर यह सहसा क्या हो गया? इस पर वह बिफर गयी और बोली 'तुम्हे गहस्थिन नही पाटनर चाहिए? अब मैं भी अच्छी टेनिस खेल सकती हू। ...ने तुम्हारी खातिर अपना सारा ध्यान टेनिस की ओर देना शुरू कर दिया है।' फिर ...सने बेपरवाही से मेज पर पाव रखकर धूम्रपान शुरू कर दिया और मुझे दो कप चाय ...ा लाने को कहा। गुस्से स मेरा खून खौलने लगा और मैंने साफ इनकार कर दिया। ... पर डोरीन भी तश मे आ गयी। उसके चेहरे का रंग बदल गया और मुह भी अजीब ...या। आखो स शोले बरसन लगे मुझ एसा महसूस हुआ, जसे वह डोरीन के बजाय ...ी और की आखें हो। मैंने हिम्मत करके कह दिया 'गुस्से म तो तुम बिलकुल जूली ...आती हो।

भी तुम उसको नही भूले। मैंने जली बनने का प्रयास किया। तुम्हारे सानिध्य के लिए टेनिस खेलना सीखा। फिर भी तुम्हे प्राप्त नही कर सकी। हरामजादी तैराकी सीखकर तुम्ह सदा के लिए मुझसे छीन लेना चाहती थी पर मैंने उससे तुमको छीन लिया।"

डोरीन पर पागलपन सवार था। वह न जाने क्या क्या कह रही थी, पर मैं यह सोच रहा था कि उन दोना मे से मेरे प्रेम की असली हकदार कौन थी?

मुझे यो लगता है, जैसे मैं उन दोनो मे से किसी एक को भी न पा सका और न वे मुझे प्राप्त करने म सफल हो सकी।

छुरियो का निशाना

हाइनरिख ब्योल

जप ने छुरी को उसके फाल से पकडा हुआ था और यू ही दायें बायें झुला रहा था। वह पतल तेज लम्बे फलवाली छुरी थी। अचानक जप न उसे ऊपर उछाला तो वह सनसनाती हुई किसी सुनहरी मछली की तरह छत से जाकर टकरायी और उसी क्षण नीचे जप के सिर पर आकर गिरी, जिस पर कि जप ने बिजली की तेजी से, लकडी का एक मोटा चौरस टुकडा रख लिया था। छुरी की नोक लकडी मे धस गयी और उसका हैंडल हवा मे लहराने लगा। जप ने लकडी सिर पर स हटायी उसमे स छुरी निकाली और गुस्से मे दरवाजे की ओर फेंकी जहा वह कुछ देर तक धसी हुई कापती रही और *फिर नीचे गिर पडी।*

लानत है!" जप ने धीमे से कहा, 'मेरे इस खेल को देखन वाले लोग चाहते हैं कि मैं छुरी से निशाना लगाऊ तो सामने किसी की जान को खतरा होना चाहिए। पर मेरे खेल म खतरे की बात नही है।'

उसन झटके से छुरी उठायी और उसे इतनी जोर से खिडकी की चौखट की ओर फेंका कि निशाना लगते ही खिडकी के काच खनखना उठे।

जप के इस अचूक निशाने को देखकर मुझे जग के वे उक्ताहट भरे दिन याद आय, जब वह अपना जेबी चाकू खोलकर छत की ओर फेंका करता था।

लोगो को खुश करने के लिए मैं हर काम कर सकता हू' जप कह रहा था। 'मैं अपने कान काट सकता हू, बशर्ते कि कोई उन्हे फिर से मेरे चेहरे के साथ जोड सके। मैं काना के बगैर नही रह सकता, खैर आओ मेरे साथ।'

उसने दरवाजा खोला और मुझे बाह से पकड कर छत पर ले गया, जिस पर जगह जगह काई उगी हुई थी। वहा उसने एक टूटी हुई, बहुत ऊची बालकनी की ओर इशारा किया। "वहा मैं छुरी से अभ्यास किया करता था—एक साल तक सारा सारा दिन *देखो कैसे फेंकता हू।" उसने छुरी फेंकी तो वह किसी पक्षी की तरह सीधी और अडोल* ऊपर उठती गयी और बालकनी के निचले भाग से जाकर टकरायी और तभी बिजली की तेजी से जप के सिर की ओर आयी जिस पर कि उसने स्वास्क लकडी का टुकडा रख लिया था। छुरी लकडी मे कम से कम एक इच गहरी धस गयी।

"वाह ! क्या कहने हैं !" मैंने दाद दी "दशक यह करतब देखकर दग रह जाते होंगे !"

'हा," जप ने छुरी लक्डी म से निकालते हुए कहा, 'यह खेल दिखाने के मुझे हर रात बारह माक (जमन सिक्का) मिलते हैं। पर यह खेल बहुत सादा सा है। इसम खतरा नही है। अगर सामने निशाना लगान वाली जगह पर, कोई अधनगी औरत खडी हो, और मैं उसकी ओर इस तरह छुरी फेंकू कि वह बाल बाल बच जाये, तो दशक सास रोके देखते रह जायें ! पर ऐसी औरत कहा से लाऊ ?"

हम फिर कमरे म गये और स्टोव के पास चुपचाप बैठ गये। मैंन अपनी जेब से रोटी का टुक्डा निकाला और जप से कहा, 'लो।"

जप ने रोटी ले ली और कहा, "मैं काफी बनाता हू। उसके बाद तुम मेरा खेल देखने चलना।" वह स्टोव जलाने लगा।

मैं उबलते हुए पानी को देखता रहा। जप न प्याले म कॉफी डाली और हम बारी बारी से उसमे मे पीने और साथ म रोटी खाने लगे। बाहर अधेरा होने लगा था।

"तुम अपने गुजारे के लिए क्या करते हो ?" जप ने एकाएक मुझसे पूछा।

'कुछ नही। बस, मुश्किल से ही पेट भरता है। यह जो रोटी खा रहे हैं हम इसके लिए मुझे पत्थर तोडने का कठिन काम करना पडता है।'

'हू क्या तुम मेरा कोई और करतब देखना चाहोगे ?"

मैंन हां मे सिर हिलाया।

उसने दीवार के सामने से पर्दा हटाया, तो लाल रग के दरवाजे पर कोयले से खिंची हुई मनुष्य की आकृति दिखाई दी जिसके सिर पर टोप बना हुआ था। फिर, जप ने अपने बिस्तर के नीचे से एक छोटा डिब्बा निकालकर मेज पर रखा और उसे खोलने के पहले मुझे सिगरेट बनाने वाले कागज के चार टुकडे देते हुए कहा 'इनकी सिगरेटें बनाओ।" तब उसने डिब्बा खोला और उसमे से एक कपडा निकाला। जिसम एक दजन छुरिया फसी हुई थी।

मैंने दो सिगरेटें बनाकर एक जप की ओर बढायी।

उसने सिगरेट सुलगाकर उसे अपने निचले होंठ पर लटका लिया और छुरियो वाले कपडे का एक सिरा अपन कधे पर के एक बटन मे फसाया और कपडे को अपनी बाह पर नीचे की ओर फैलाया।

तब वह उन छुरिया को इस तेजी से निकालता हुआ सामने फेंकने लगा कि मेरे पलक झपकते ही वे बारह की बारह छुरिया दरवाजे पर बनी मनुष्य की आकृति म धस गयी—दो टोपी मे दो-दो प्रत्यक कधे मे, और तीन-तीन प्रत्यक बाह म।"

'जवाब नही है !' मेरे मुह से निकला। "लोग देखें, तो उनके सास रुकी जायें।"

'हा ! पर इसके लिए सामने जिंदा आदमी खडा होना चाहिए। अ अच्छा हो, अगर सामने औरत खडी हो।" वह दरवाजे म से छुरिया निकालने

"पर मैं आदमी या औरत कहा से लाऊ? औरतें बहुत डरपोक होती हैं, और मर्दों की जान ज्यादा कीमती होती है। अब चलना चाहिए। आठ बजने वाले हैं, और मुझे साढ़े आठ पर पहुचना है।"

"बिना घड़ी देखे तुम्हे कैसे पता कि कितने बजे हैं?'

'बस, मैं जान जाता हू—अभ्यास से।"

हम बाहर निकले तो लोगो की बातें और हसी की आवाजें सुनकर सुखद सा लगा।"

बारिश लगातार हो रही थी। ठड से बचने के लिए हमने अपने कालर ऊपर उठाये और कापते हुए अपने आप म सिकुड गये। किसी किसी घर म मोमबत्ती का फीका सा प्रकाश दिखाई देता था। चारो ओर खण्डहर और तबाही नजर आ रही थी।

हम आगे बढते गये।

थियेटर के मुख्य द्वार पर कोई भी आदमी नही था। शो शुरू हुए कुछ समय हो चुका था। दरवाजा पर लटके गदे लाल पर्दों के पीछे से हाल म बैठे लोगो की मद्धिम सी आवाजें सुनाई दे रही थी।

जप ने मुझे 'काऊ बॉय' के लिबास मे अपनी एक फोटो दीवार पर टगी हुई दिखायी, तो वह हसा। वह फोटो दो नर्तकियो की फोटुओ के बीच म टगी हुई थी। उसके नीचे लिखा हुआ था—"छुरियो वाला आदमी।"

"आओ" जप ने कहा, तो मैं उसके साथ चल पडा, कुछ आगे जाने पर हम एक सकरी सी, गोल सीढी चढने लगे, जहा पसीने और मेकअप की चीजो की गध फैली हुई थी। जप अचानक रुक गया और उसने मुडकर मेरे कधो पर हाथ रखते हुए धीमी आवाज मे कहा, "बोलो, तुम कर सकोगे हिम्मत?"

मैं काफी देर से इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था। पर तब अचानक यह बात सुनकर मैं डर गया। तभी मुह से निकला, 'हां! वह हिम्मत जो निराशा म पैदा होती है।'

जप चुप रहा। उसी समय थियेटर के अन्दर बेतहाशा हसी की आवाज गूजी। सुनकर मैं कापने लगा।

'मुझे डर लग रहा है। मैंने धीमे से कहा।

"मुझे भी" जप ने कहा। "पर क्या तुम्हे मुझ पर भरोसा नही है?'

"बेशक है पर चलो।' मैंने बैठी हुई आवाज मे कहा।

"पाच मिनट और हैं।" जप ने अपना लिबास पहनते हुए होठो म कहा। आओ एक बार रिहर्सल कर लें?'

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और किसी ने कहा जल्दी से तयार हो जाओ।

जप अपना डिब्बा और मुझे साथ लेकर कमरे म से निकला। कुछ आगे जाने पर वह एक गजे व्यक्ति को देखकर रुका और उसके कान म कुछ कहने लगा।

इस समय मैं अपनी ओर से लापरवाह बना हुआ था। मैं मर भी जाऊ तो क्या

है । अगले दिन मुझे पिचहत्तर पत्थर तोडने थे और इस काम के बदले म पौन रोटी मिलती थी ।

स्टेज खाली होने पर जप दृढ कदमो से आगे बढा । उसे देखकर दशको मे से कुछ एक न ही हलकी सी तालिया बजायी । जप ने कीला पर ताश के पत्ते लटकाये और फिर छरिया फेकता हुआ उनके ठीक बीच म निशाने लगाने लगा । तालिया कुछ जोर से बजी पर उनम जोश नही था ।

फिर, जप ने छुरी और लकडी के टुकडे का खेल दिखाया । दशको म बैठी कुछ लडकियो के चेहरो पर मैंने डर देखा । तभी एक गजा व्यक्ति मुझे बाह से पकड खीचता हुआ स्टेज पर ले गया और उसने सिपाही के से लहजे मे जप से कहा, "मिस्टर बोगोले वस्की, मैं एक चोर पकडकर लाया हू । इसे फासी पर चढाने स पहले मैं चाहता हू कि आप इस पर अपनी छुरिया का निशाना आजमायें ।" उसकी आवाज म बनावट थी । मैंने दशको की ओर देखा, तो लगा जैसे सामने अधेरे म एक हजार चेहरो वाला कोई दैत्य बैठा हो । उसके बाद मैं जसे विरक्त सा हो गया । अब मुझे किसी बात की परवाह नही थी । उस समय अपन गदे कपडो और खस्ता हालत बूटो मे मैं सचमुच चोर लग रहा था ।

' इसे छोड जाओ मेरे पास," जप ने गजे व्यक्ति से कहा, "मैं अभी इसे ठीक किये देता हू ।"

जप न मुझे कालर से पकडकर और एक खभे के पास ले जाकर बाध दिया । मैंने अपन दायी ओर दशको की आवाजो की अजीब सी भिनभिनाहट सुनी । जप ने ठीक ही कहा था कि दशक खून के प्यासे होत है और खून दखना चाहते हैं, जिसके लिए उन्होने पसे खच किये होते है । वह मुझे बाध चुका, तो उसन ताश के पत्तो मे से छुरिया निकाली और मेरी ओर बेहद घणा से दखा । फिर, उसने दशको की ओर मुह मोडकर कहा, "सज्जनो और देवियो, अब मैं इस आदमी को छुरिया का ताज पहनाना चाहता हू । पर उसके पहले मैं आपको दिखाना चाहता हू कि यह छुरिया कुद नही हैं ।" उसन अपनी जेब से रस्सी का एक टुकडा निकाला और प्रत्यक छुरी से उसे हल्का सा छूकर काटते हुए उसके बारह टुकडे किये ।

इस दौरान मैं उसके सिर के ऊपर मे स्टेज के विग्स' मे खडी अधनगी लडकियो के उस पार निहारता रहा जैसे एक नयी जिंदगी का देख रहा था ।

दशको की उत्तेजना की बदौलत हाल म तनाव फैला हुआ था । जप ने मेरे पास आकर मुझे और मजबूती से बाधने का दिखावा करते हुए मद्धिम आवाज मे कहा, 'एकदम अहिल बनकर खडे रहना । जरा भी न हिलना । और बिल्कुल न डरना ।"

देर हो जाने से दशको का तनाव कुछ ढीला पड गया था । उसी समय जप ने जसे हवा को पकडा और अपने हाथो का पक्षियो की तरह हिलाया । दशक उसे एकटक देखने लगे ।

मैंने अनत दूरी मे स अपनी नजर हटायी और जप की ओर देखने लगा, जो अब मेरे बिलकुल सामने खडा था । तब उसने धीरे-से अपना हाथ उठाकर छुरी को

मैंने एकदम अहिल बनकर आखें मूद ली।

वह बहुत शानदार एहसास था—बस, कुछ ही क्षणों के लिए मैं छुरियों की हल्की सी सा सा की आवाज सुन रहा था, जो मुझे मानो छूती हुई मेरे पीछे लकड़ी के तख्ते म धस रही थी। मुझे लग रहा था, मैं जैसे किसी बहुत गहरी खाई पर रख सारे से तख्ते पर चल रहा था—विश्वस्त और सुरक्षित रूप स, लेकिन खतरे के प्रति पूरी तरह सचेत बना हुआ। मुझे डर लग रहा था, लेकिन मैं जानता था कि मैं गिरूगा नहीं। मैंने छुरियो को गिना नहीं, लेकिन आखिरी छुरी की आवाज पर मैं आखें खोलने लगा।

दशको की बेतहाशा तालियो की आवाज सुनकर मैं जैसे होश म आया। मैंने पूरी आखें खोली और जप के पीले चेहरे को देखा। वह दौडकर मेरे पास आया और कापत हुए हाथों से मेरे गिद बधी रस्सिया खोलन लगा। फिर, वह मुझे खीचकर स्टज के बीच म ले गया। उसने दशको के सामने सिर झुकाया तो मैंन भी झुकाया।

हम वापस अपने कमरे मे आये। हम चुप थे। जप न ताश क पत्त कुर्सी पर फेंके और मेरा कोट कील पर से उतारकर मुझे पहनाने लगा। तब उसने अपना काऊ बॉय, वाला लिबास उतारकर कील पर टागा और अपनी जकेट पहनी। फिर, हम अपनी टोपियां सिर पर रखकर दरवाजे की ओर बढे ही थ कि गजा व्यक्ति जल्दी स अदर आया और उसने जप से कहा 'अब तुम्हारी तनखाह चालीस माक तक बढा दी गयी है।" उसन जप को कुछ नोट पकडाये।

लगभग एक घटे के बाद कही जाकर मैंने महसूस किया कि मुझे नियमित रूप से काम मिल गया है—ऐसा काम, जिसम मुझे कुछ भी नही करना, बस स्टेज पर खडे होकर सपना देखना—बारह सकिंड तक, या शायद बीस सैकिंड तक। अब मैं वह आदमी था। जिस पर छुरिया फेंकी जाती थी।

वाइफ स्वैपी

चित्रा मुद्गल

' क्रिकेट पसद या हाकी या टेनिस ?" कमरे की हवा म एक जोरदार ठहाका टग गया। मैं भौचक्की सी मेजर साहब का चेहरा देखती रह गयी। क्या कुछ ऐसा वैसा सवाल कर दिया मैंने ?

आप भी भला बताइए ! इस उम्र म अब क्रिकेट, हाकी ? भई अब तो बची खुची जिंदगी को अलमस्ती से जीना चाहते है उन्मुक्त, जीवत और इसके लिए हम लोग नये नये खेल ईजाद करते रहते हैं। पिछले दिनो हमारे 'क्लब' म जिस खेल की धूम धाम रही साहब ! उसे कहते हैं 'वाइफ स्वैपी' पत्नियो की अदला-बदली

"होता यू है कि हर सटरडे को हमारे क्लब की काकटेल पार्टी' आयोजित होती है। देर रात तक पीना खाना चलता रहता है। अन्त म एक बडे से 'बियर मग' मे सभी सदस्य अपनी अपनी गाडी की चाभी डाल देते हैं। एक व्यक्ति सारी चाभियो का 'मिक्स' करता है। फिर आती है चाभी उठाने की बारी। जो सबसे पहले चाभी डालता है, वही सबसे पहले चाभी उठाता है और साहब ! धडकते दिल से हम सभी चाभी उठाने की बारी का इन्तजार करते हैं, क्योकि जिस भी गाडी की चाभी हमारे हाथ लगेगी, उसके मालिक की पत्नी हमारी उस खुशनुमा शाम की 'लाटरी' होगी, यानी कि उस कार की मालकिन पर उस रात हमारा अड जब सभी सदस्य चाभिया उठा लेते हैं तो मत पूछिए खुशी की चीखो से हाल झूम उठता है। एक एक 'जाम बनता है और 'चियर्स फार वाइफ स्वैपी !!' के नाम पर जाम टकराते है जाम खत्म होते ही चाभी वाली गाडी की मालकिन अपनी गाडी म जाकर बैठ जाती और "

"पत्नियो को कोई झिझक, सकोच ? हमारे भारतीय सस्कार ?"

"नॉट एट आल दे एज्वाय ईक्वली हू भारतीय सस्कार आडे आ जाते हैं, पर तब जब अच्छा लीजिए मैं आपको अपना मजेदार अनुभव सुनाता हू पिछले हफ्ते की बात है, चाभिया मिलायी गयी और मेरे हिस्से मे आयी मिस्टर फला की गाडी की चाभी यानी मिसिस फला ! और पत्नी के हिस्से म मिस्टर फला एक उद्योग पति कवि खैर, हम अलमस्त धुनकी म थे और मिसिस फला को अपने हिस्से मे पाने की खुशी मे अधे। हमने ध्यान ही नही दिया कि हमारी मेमसाब कहा हैं ! भई वह वक्त

तो बाहो म अनायास स्वग समा जाने जसा था   फिर मिसिस फला ! आफ   क्या चीज है साहब !   पार्टी के हर सदस्य के लिए आकषण का विषय । सो हम तो अपनी किस्मत को सलाम ठाक्त गाडी ले उडे   अड आई रियली टॅल यू"   मेजर अहलूवालिया फूटी पड रही मुस्कान को समेटते बटोरते क्षणाश ठिठके, जैसे उन मादक क्षणा म एक बार फिर पहुच गय हो   "वह एक खूबसूरत रात थी अड शी वाज वडरफुल वरी कोआपरेटिव   हा तो साहब ! दूसरा दिन 'सडे' था और स्वाभाविक था कि नीद का कोटा दोपहर तक पूरा होना था, पर   रात भर जगने के बावजूद मेमसाब को नीद कहा ! दस भी नही बजने दिय कि उठा के बैठा दिया । बडे लाड और मनुहार के साथ चाय पेश की गयी   और चाय खतम होते न होत कटाक्षपूण स्वर म— कैसी क्टी रात   कैसा रहा साथ   क्या-क्या किया   ? जल्दी उठाने का मकसद फौरन समझ म आ गया । वडा नाजुक मसला था । मैंने फौरन लापरवाही के भाव से कहा, ' छोडो भी ।" अनायास फूट पडने को तत्पर आतरिक प्रसन्नता को दबोचा और, "रात गयी, बात गयी । अपने हाथा से एक कप बढिया चाय पिलाओ   ये ससुरा राधे तो चाय बनाना ही भूल गया है   "

'ऊ हू   बात मत टालो   पहले बताओ । चाय बाद मे मिलेगी   " वह खूटा गाड के बैठ गयी ।

"क्यो अच्छी भली सुबह का जायका खराब कर रही हो   " मैंने पूरी सतकता से पैतरा बदला, "आइदा से हम एसी पार्टी मे शामिल नही होगे   अपनी 'व्रिज भली   "

'क्यों ? मिसेज फला की गाडी की चाभी हाथ लगी ता तुम तो खुशी से यू उछले थ कि   "

"अरे कहा   वो तो धुनकी म थे   फिर सभी शोर कर रहे थ सो अपन भी शरीक हो गय   पर   कोई औरत थी जो हिस्से में पडी !"

"रहन दो ।" उसने अविश्वास से झटका "मेरी निगाह तो तुम्ही पर अटकी थी   एक बार भी तुमन मेरी तरफ नही देखा   कैसे हौले से फला की कमर म हाथ डाल चल दिये थे   अब !'

'सच अनु !   तुमसे कभी झूठ बोला है जो अब   ? ठीक है। मिसज फला बला की सुदर हैं मगर उनमे तुम जसा रस कहा   आवाज सुनी नही, कसी फटे बास सी है ?

फिर   हसती हैं तो ऊपर नीचे के मसूढे के पूरे पूरे फट पडते हैं   तोबा ! मेरी तो किस्मत खराब थी जो व पल्ले पडी   "

'वो ता है   पर   मुझे तो अचरज होता है   सारे मद उनके हॉल म दाखिल होते ही इद गिद मक्खियो से भिनान लगते हैं   है क्या उनम   ?   सिफ गोरी चमडी से क्या होता है ?'

"ठीक कह रही हो   " मैंन आश्वस्त होकर चन की सास ली पर वह फौरन पलटीं ।

"तो कुछ नही किया ?"

'कुछ नहीं ?"

तो रात भर करत क्या रह ?'

'बस बातें वह अपन कॉलिज क दिना की घटनाए सुनाती रही, मैं अपने। कसे तुमसे मिला मुहब्बत हुई और फिर "

'हाथ-वाथ भी नही पकडा ? किस विस ? इतने दूध के धुले नही हो तुम सरआम तो कमर म हाथ डालकर ले जा रहे थे "

बस उतना ही वो भी तुम कह रही हो तो मैं विश्वास किए ले रहा हू वरना मुझे तो यह भी याद नही मई, इतना हिम्मती मैं नही हू तुम्हारे अलावा किसी और को छ सकू तुम तो इतनी मादक हो इतनी आकपक तुम्हारे सामने हर औरत फीकी लगती है फिर कहा तुम, कहा मिसिज फला फला आई स्वे अनु।"

'झूठ !"

नही सच।'

'अच्छा खाओ मेरी कसम !"

'तुम्हारी कसम !" मैंने उसके सिर पर हाथ रख दिया।

उसके चेहर पर आश्वस्ति उभरी। अब मैंने छेडा 'मरा तो पूछ लिया। अपना नही बताया कि रात उस कवि के साथ कसी गुजरी ?'

"मायगॉड !" वो आदमी है कि पायजामा ? वीनस' म जो सूट' बुक करवाया था वहा स जाकर मैं भी बहुत चालू हू मैंने उनका विद्यार्थी जीवन कुरेद दिया बस, फिर क्या था उनके उस सुनहरे जीवन की द्रोपदी की चीर सी असमाप्त कविताए सुबह चार बजे तक सुननी पडी '

'अरे रहने दो वह घाघ ! तुम्ह छोडने वाला नही साला बडे दिनो से मौका ताज रहा था कि कब मरी गाडी की चाभी हाथ लगे और वह तुम्ह हथिया सके "

'आई स्वे ! कुछ नही किया '

'झूठ ! अपनी गाडी की चाभी हाथ लगत ही ता उसन लपककर तुम्हारा हाथ चूम लिया था ?"

'आई स्वे बस उतना ही "

"किस विस '

"मैं करन देती तब न ! कितन मोटे होठ है उसके एकदम सूअर की थूथन की तरह छि वह कोई कोशिश करत भी तो म धक्का मार क तुम्हारे अलावा किसी अन्य पुरुष का स्पश भी बरदाश्त नही मुझ ठीक है साथ उठते-बैठत हैं, मिलते हैं, मस्ती करत हैं, पर इसका मतलब "

'तो कुछ नही ?"

'कुछ नही।"

"रखो मेरे सिर पर हाथ खाओ कसम कि तुमन कुछ नही '

तुम्हारी कसम ! बस।" उसने बेहिचक मेरे सिर पर हाथ रख दिया

कमरे में फिर एक जोरदार ठहाका टग गया और बडी देर तक टगा रहा

फिर हसत हसत ही बाले, ' सिर पर हाथ तो रखवा लिया, पर मन ही मन चौकन्ना हुआ। कही उसने सिर पर हाथ रख के कसम वैसे ही तो नही खायी, जसे मैंन खायी थी ? हाथ तो रख दिया था उसके सिर पर, पर ईश्वर से क्षमा मागत हुए कि यह जो कसम मैं खा रहा हू वह इसकी सुख और शाति के लिए क्योकि अगर मैंन इससे सच्चाई कबूल दी तो सारी आधुनिकता के बावजूद हमारी जिंदगी निश्चित ही नरक हा उठेगी "

फॉस्ट बालर

शफीकुर्रहमान

फास्ट का मतलब है तेज और बॉलर का मतलब है गेंद फेंकनेवाला। बस समझ लीजिए इन दोनो का मतलब हुआ तेज गेंद फेंकनेवाला। फास्ट बालर वह व्यक्ति है जो विकेटों से बीस पच्चीस कदम दूर से ही एकाएक तेज दौडना शुरू कर देता है और विकेटो के पास आकर उसकी दशा दयनीय और शक्ल-सूरत दर्शनीय हो जाती है वह पाच छह कदम परे से ही एक लम्बी छलाग लगाता है और बेतहाशा गेंद को घुमाकर खिलाडी के मुह पर दे मारता है—और फिर काफी दूर तक अपने ही जोर म भागता चला जाता है। उधर या तो विकेट उडती दिखायी देती है या धप से गेंद खिलाडी को लगती है या फिर ऐसी शानदार बाउडी लगती है कि गेंद पूरे ग्यारह आदमियो के रोके नही रुकती। फास्ट बॉलर को उस वक्त इस्तमाल मे लाया जाता है जब कोई खिलाडी अडियल सिद्ध हो जाए और आउट होन का नाम न ले। दूसरे शब्दो म खिलाडी को डरान की कोशिश की जाती है। लेकिन अगर मैदान मे बारिश हो चुकी हो या थोडी सी भी नमी हो तो फास्ट बालर साहिब का कोई बस नही चलता।

जिन दिनो का मैं यह किस्सा बयान कर रहा हू, उन दिना बदकिस्मती से मेरी गिनती भी उसी वग मे होती थी, जिस फास्ट बॉलर के नाम से पुकारा जाता है।

मैं एक वार्षिक परीक्षा मे बैठा और सयोग से पास भी हो गया। अब मुझे पढाई के लिए दूसरे शहर म भेजा गया। रहने को तो मुझे होस्टल म रहना था, लेकिन मुझे एक स्थानीय सज्जन की निगरानी म रखा गया। हम लोगा के उनसे बहुत पुराने सम्बध थे। बहुत साल पहले उन्होने मुझे छोटा सा देखा था और अब मुझे बडा सा देखकर वे बहुत खुश हुए। उन्हे खा साहिब की उपाधि मिली हुई थी। कोई पचास-पचपन का उम्र थी और खुदा झूठ न बुलवाये, कम-से-कम आठ-दस ऐनकें इस्तेमाल करत थे—और एनक भी ऐसी कि एक क ऊपर दूसरी फिट होती चली जाती थी। पढते समय एक एनक लगी हुई है किसी ने कोई बात की तो उन्होंने झट से दूसरी ऐनक पहली एनक पर लगायी और जवाब दे दिया, कोई बच्चा दूर से चिल्लाया तो उन्होंने नम्बर दो एनक उतार दी और कोई और एनक लगा ली और उसकी तरफ देखकर उस आवश्यकतानुसार धमका या पुचकार दिया। खाना खाते समय कोई और एनक लगती थी और सिनमा देखत समय कोई और।

मुझे उनके यहां हफ्ते में कम से कम तीन बार हाजिरी देनी पड़ती थी और इतवार की सुबह तो परिवार के साथ मोटर में सैर सपाटे को और शाम को सिनेमा साथ जाना होता था। समय अच्छा कट जाता था। खां साहिब और उनकी बेगम मुझे बहुत प्यार करते थे और बच्चे तो जैसे मुझ पर आशिक थे—लेकिन जहां यह सब कुछ था वहां एक प्राणी से मैं बहुत डरता था। यह उनकी बड़ी बेटी तसनीम थी—अगर मुझसे छोटी नहीं तो बराबर की जरूर होगी।

वह लड़कियों के कालेज में पढ़ती थी। अपनी क्लास की योग्य लड़कियों में गिनी जाती थी। उसमें बहुत सी खूबियां थीं। लेकिन सबसे बड़ी बुराई यह थी कि वह मुझे हर समय छेड़ती रहती थी। इतना तंग करती थी कि मैं बिसूरने लगता। इस ढंग से सताती कि उनकी बात सिर्फ मुझे चुभती, किसी दूसरे को पता तक नहीं चलता। कई बार ऐसा हुआ कि मैं किसी मैच का कारनामा सुना रहा हूं। कुछ सच है कुछ झूठ है। खां साहिब बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। मैं छाती फुलाकर कहता हूं, 'अजी मुझे उन्होंने बिल्कुल आखिर में भेजा और अभी पचास रन बाकी थे। हार साफ नजर आ रही थी। मैंने पहले तो गेंदें रोकीं, बालरों को थकाया और फिर शाट लगाने शुरू किये तो बस '

'इतने में आपकी आंख खुल गयी।" वह बोली और खां साहिब ने इतने जोर का कहकहा लगाया कि उनकी सारी ऐनक नाक पर से फिसल गयी। पूरा परिवार बुरी तरह हंसने लगा और मैं भटक कर रह गया। मैं जब भी कोई अक्लमंदी की बात शुरू करता तो वह मेरे बचपन की घटनाएं दोहराने लग जाती—और मेरी वह बात उसी वक्त हंसी में उड़ जाती आखिर तंग आकर मैंने फैसला किया कि उनके घर आना जाना बन्द कर दिया जाये। अभी चार दिन ही ऐसे बीते थे कि पांचवें दिन खां साहिब कार सहित होस्टल में आये और मुझे जबरन अपने साथ ले गये।

एक दिन का जिक्र है मैं मैच खेलकर वापस आया। देर काफी हो चुकी थी और साहिब के यहां हाजिरी भी देनी थी, सो बिना कपड़े बदले चला गया। वह बैठे कुछ पढ़ रहे थे। मुझे देखकर झट से ऐनक बदली और बोले, 'आओ बेटा! मैं तुम्हारे बारे में ही सोच साच रहा था और तसनीम भी तुम्हारा ही इंतजार विंतजार कर रही थी।"

मैंने सलाम किया और पास ही सोफे पर बैठ गया। उन्होंने जल्दी से ऐनक बदली और बोले 'आज तुम कुछ दुबले दुबले से दिखाई देते हो।"

"क्या सचमुच दुबला दिखाई देता हूं?' भला दो दिन में कैसे दुबला हो सकता हूं? मैंने अपना जायजा लेते हुए कहा, 'हां थका हुआ जरूर हूं। सुबह से मैच खेलता रहा हूं। दिन भर भागना पड़ा है।

तो मियां, तुम्हारा मैच जरूर देखेंगे कभी मगर जरा स्टाईल विस्टाइल तो दिखाओ अपना।'

"तो क्या यहीं कमरे में दिखाऊं?" मैंने हंसते हुए पूछा।

इसमें हरज ही क्या है? देखें तो सही तुम गेंद वेंद कैसे फेंकते हो।" और

उन्होंने जल्दी से दूसरी ऐनक बदल ली।

मैं हंसता हुआ उठा और कदम गिनता हुआ दरवाज़े तक गया।

'देखिये जी ! फर्ज़ किया कि यह गेंद है !'' मैंने उनकी दियासलाई की डिब्बी हाथ में लेकर कहा, 'वैसे तो मैं बहुत दूर से भागकर आया करता हूं मगर विकेटों के पास आकर गेंद इस तरह फेंकता हूं।' मैंने डिब्बी को घुमाया और उसे दूसरे दरवाज़े पर दे मारा।

'वाह वाह, कमाल कर दिया !' यह आवाज़ तसनीम की थी, जिसके साथ ही मेरे होश उड़ गये।

''देखा अब्बाजान आपने। इसका नाम है बॉलिंग।'' वह पर्दा उठाकर अन्दर दाखिल हुई। मैं वहीं खड़ा रह गया। या खुदा यह मैंने क्या कर डाला। खुद ही हफ्ते भर छेड़खानी मोल ले ली। उसी दिन, बल्कि उसी घड़ी से मेरा नाम फास्ट बॉलर रख दिया गया। घर में बच्चों से भी कह दिया गया कि वे मुझे भैया की बजाय फास्ट बॉलर कहा करें। घर के तोते को पूरे एक हफ्ते की मेहनत के बाद 'फास्ट बॉलर वैलकम' सिखाया गया। मेरी जितनी किताबें उनके यहां पड़ी थीं, उन सब पर भी फास्ट बॉलर लिख दिया गया।

अगले हफ्ते हमारा किसी दूसरे कॉलेज से मैच था। मैंने बहुत टालने की कोशिश की, लेकिन खां साहिब अपनी बात पर अड़े रहे कि मैच देखने वह भी जायेंगे और तसनीम भी आयेगी।

मैच वाले दिन मैं दुआ मांग रहा था कि हमारे शुरू के खिलाड़ी ज़रा जम जायें और शाम तक खेलते रहें। खां साहिब वगैरा आयेंगे, उनका खेल देखकर चले जायेंगे। न मेरे खेलने की बारी आयेगी, न बॉलिंग की। मगर सब कुछ उलट पलट हो गया। शुरू के खिलाड़ी बहुत जल्द सिधार गये। अब आखिर के अनाड़ी रह गये। मुझे उन्होंने नवें नम्बर पर भेजा। मैंने अच्छी तरह चारों तरफ देखा। खां साहिब की कार का कहीं नाम निशान नहीं था। मैं खुदा का शुक्र बजा लाया और खेलना शुरू किया गेंदें रोकता रहा। रोके चला गया। खेल का रंग ही बदल गया। धीरे धीरे रन भी बनने लगे। हम दोनों ने मिलकर स्कोर साठ से सौ तक पहुंचा दिया। लोग हर हिट पर शोर मचाते थे। हमारे कॉलेज के लड़के खुशी के मारे नाच रहे थे। तभी एकाएक मेरी नज़र खां साहिब की कार पर पड़ी—जो सामने से चली आ रही थी। उन्होंने कार को दूर ही ठहरा लिया और लगे इधर उधर झांकने। ऐनक तो ज़रूर बदली होगी। खिड़की में से पिछली सीट पर कोई नीली-नीली सी चीज़ नज़र आ रही थी—अवश्य ही तसनीम होगी।

मैं एकदम बौखला गया। पहले से जानता था कि उन लोगों के सामने खेल नहीं सकूंगा। कहां तो मैं बढ़ बढ़कर हिटें लगा रहा था और कहां फिर से गेंद रोकना शुरू कर दीं। दो गेंदें ही रोकी थीं कि तीसरी गेंद बड़े झन्नाटे से आयी। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो विकेट गायब थी। या खुदा ! जिस बात का डर था, वही होकर रही। मेरे आउट होने से मेरे साथी की हिम्मत भी टूट गई। दसवें खिलाड़ी ने जाते ही बल्ला घुमाया और खुदकशी कर ली यानी खुद ही बल्ला विकेटों में मार लिया। यानी बॉलर महोदय से कहा कि भैया, तू क्यों नाराज़ होता है हम खुद ही चले जाते हैं। ग्यारहवें हज़रत सस्ते

हो छूट गये ।

अब दूसरी टीम की बारी थी । हमारे कप्तान ने मेरे हाथ मे नयी गेंद दी और कहा "मौलाना ! अब हमारी जीत हार तुम्हारे हाथ मे है। आज पूरा ज़ोर लगा दो।"

मैंने कार की तरफ देखा और मुझे एक झुरझुरी सी आ गयी । सोचा कि अगर यह कार इसी तरह नज़र आती रही तो मैं कुछ भी नहीं कर सकूंगा और सब किया धरा मिट्टी म मिल जायेगा । मैच शुरू हुआ । मेरे कदम डगमगा रहे थे । मैंने बार बार खुदा का नाम लिया । फिर एक गिलास पानी पिया । दिल को तसल्ली दी और विकेटो से कदम गिनकर फासला बनाया—और बालिंग शुरू की । विकेटो के पास आकर एकाएक कदम गड़बड़ा गये और मैंने एक अजीब स्टाइल स गेंद फेंकी जो खिलाडी क तीन फुट ऊपर से निकल गयी । वाइड बाल !" अम्पायर चिल्लाया और लोगो ने कहकहे लगाने शुरू कर दिये ।

'बहुत अच्छे ! शाबास । ऐसे ही गेंद फेंको ।

'अरे वाह मेरे शेर ! क्या गेंद फेंकी है । बड़े बड़ो को मात कर दिया इस वक्त तो "

खैर, दूसरी गेंद कुछ ठीक पडी । लेकिन इस पर खिलाडी ने वह जन्नाटेदार हिट लगायी कि गेंद पेडो के ऊपर से गुजर गयी—एक शानदार छक्का । लोगो ने वह शोर मचाया कि खुदा की पनाह दो ओवरो मे स्कोर तीस हो गया । कार उसी तरह खडी थी । तीसरे ओवर म मैंने पहली गेंद जरा धीरे से फेंकी । खिलाडी गेंद को ठीक से नहीं समझ सका और वह सीधी विकेटो से जा टकरायी । मैदान तालियो स गूंज उठा । उनका कप्तान आउट हो गया था । मैंने विजयी नज़रो स कार की तरफ देखा । लेकिन कार वहा नही थी । वे लोग यह दृश्य देखने से पहले ही चले गये थे । दिल चाहा कि उसी वक्त खुदकुशी कर लू । अब जो झुंझलाकर मैंने बॉलिंग शुरू की तो विकेटो के गिरने का ताता बध गया । दूसरी तीसरी चौथी यहा तक कि पूरी टीम पचास रन मे आउट । हम जीत गये थे । सात विकेट मेरी थी । मगर क्या फायदा । सब बेकार चला गया । इसी अफसोस मे उस दिन मैं उनके यहा नही गया । दूसरे दिन इतवार था । तीसरे पहर डरते डरते पहुंचा तो पूरा परिवार बैठा रेडियो सुन रहा था । खा साहिब देखते ही उठ खड़े हुए, "अरे तुम सुबह क्यो नहीं आये आज ? आज तुम्हारी वजह से हम कहीं सैर को भी नहीं गये ।"

'ओह बड़ा अफसोस है । आप चले जाते । बेकार मेरा इन्तजार किया ।' मेरा सिर बराबर झुका रहा ।

"कैसे चले जाते ?" यह तसनीम बोली थी, "जब तक कोई फास्ट बॉलर साथ न हो, तब तक क्या खाक सैर का मजा आयेगा ।

फास्ट बालर' का जिक्र आते ही खुसर-फुसर शुरू हो गयी । सबके चेहरो पर मुस्कराहट फैल गयी ।

खा साहिब ने जल्दी से ऐनक बदली और बोले, 'बस तसनीम बस । अब तुम अपने कमरे म जाकर कपड़े बदलो । सिनेमा म देर हो रही है।' वह चली गयी तो

मुझसे बोले, "तुम इसकी बातों का जरा भी खयाल न किया करो। दोपहर से तुम्हारा इन्तजार करती रहती है। घडी घडी दरवाज़े तक जाती है। कई बार शोफर से कहती है कि तुम्हे ले आये और फिर जब तुम आ जाते हो तो तुम्हे छेडती है। अजीब लडकी है।"

'हा, अजीब लडकी है।" मैंने दिल मे दोहराया।

हम लोग जरा देर से सिनमा पहुचे। न्यूज़ रील दिखाई जा रही थी। बदकिस्मती से यहा भी किसी क्रिकेट मैच ही का झझट था। इग्लैण्ड के फास्ट बाल फारेंज को गेद फेंकते हुए दिखाया जा रहा था। आवाज आयी, "यह है फारेज जो इस युग के बेहतरीन फास्ट बालर हैं।" मैं चौकन्ना होकर चोर नजरो से इधर उधर देखने लगा कि कही कोई हस तो नही रहा। पिछली सीट से तसनीम ने आगे झुककर मेरे कान के पास कहा, "देखिये मैं नही हस रही। फिर न कहियेगा।"

मैं उठ खडा हुआ। खा साहब ने ऐनक बदली और मेरी तरफ देखकर बोले, 'यह तुम कहा जा रहे हो?'

"अभी आया", कहकर जो वहा से भागा तो होस्टल आकर दम लिया। सारी रात मुझे नीद नही आयी। आखिर इस लडकी का मतलब क्या है? इसे मुझसे नफरत है क्या? मुझे छेडती है। दूसरो के सामने शर्मिन्दा करके खुश होती है। जानती है कि मैं फास्ट बालर के नाम से चिढता हू। फिर भी जान बूझकर बार बार यही दोहराती है। सिर्फ इसलिए कि मैं जलू कुढू और फिर मेरा इन्तजार भी करती है। आखिर क्या पहेली है यह?

पूरे एक हफ्ते तक मै उनके यहा नही गया। खा साहिब भी आये। शोफर भी बार-बार मोटर लेकर आया लेकिन मैं पहले तो मसरूफियत का बहाना करता रहा और फिर शाम को होस्टल से ही गायब रहने लगा।

एक दिन सुबह सवेरे मैं नहा धोकर कमरे मे आया था और कालेज जाने की तैयारी कर रहा था कि किसी ने कमरे का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोला तो देखा, एक छोटा सा लडका खडा था।

क्या है?" मैंने पूछा।

'तीस नम्बर कमरा यही है ना?'

"हा, यही है।"

"और एक छह फुट के गोरे से लडके आप ही हैं ना?"

'क्या मतलब?"

"अजी तीस नम्बर कमरे मे एक लम्बे से, गोरे से, तगडे से "

"क्या बेहूदा बकवास है आखिर क्या नाम है उस लम्बे से लडके का ?

जी नाम तो मुझे भी मालूम नही। पता मैंने बता दिया है। उन्हे बाहर कोई साहब बुला रहे हैं "

यह कहकर वह धीरे से बाहर निकला और फिर एकाएक सरपट भाग खडा हुआ। फिर पीछे मुडकर बोला, 'फास्ट बॉलर ?"

मैं उसके पीछे भागा और भागता हुआ सड़क तक चला गया। हास्टल के दरवाज़े पर खां साहिब की कार खड़ी थी। वह दौड़कर उसमें घुस गया और मैं वहीं-का वहीं ठिठक गया। खिड़की म से एक सफेद सी कलाई और एक कोमल सा हाथ निकला और मुझे इशारा किया। मैं आगे बढ़ा। यह तसनीम थी, 'सुनिये।'

मैंने अपने-आप पर निगाह डाली। माशाअल्लाह क्या हुलिया था। एक हाथ म टाई दूसरे म कालर का बटन। गिरेबां खुला हुआ। बाल बिखरे हुए

"जरा इधर तो आइय।"

मैं खिड़की के पास पहुच गया।

'आप इतन दिन से आये क्यों नहीं?" मैं चुप रहा।

"बताइये ना! देखिय, हम लोग बहुत उदास रहे। अरे, यह खून सा कहा स आ गया आपके चेहरे पर?' उसन अपन नन्हे से रूमाल को मेरे गाल पर फेरते हुए कहा।

'अभी हजामत की थी मैंने।"

हजामत की थी किसकी?"

अपनी और किसकी?" कहते हुए मैं हस पड़ा। वह भी हस पड़ी।

'तो आज आयेंगे न आप?"

'जी नहीं, मैं नहीं आन का।"

जी नहीं, जरूर आयेंगे आप।' उसने बिलकुल मेरी नकल उतारते हुए कहा, 'मैं कॉलेज जा रही हू। चलेंगे आप?"

क्या आपके कॉलेज चलू?'

"जी नहीं, चलिय, आपके कालेज छोड़ती जाऊ आपको।"

'मेरा हुलिया तो मुलाहिजा हो जरा '

कार चल दी। उसन रूमाल हिलाया। मैंने टाई हिला दी।

मैं फिर पहले की तरह उनके यहां आने जाने लगा। लेकिन जल्द ही एक अजीब सी घटना घट गयी।

बात यह थी कि खां साहिब के यहा बहुत की पास आया करते थे। या तो मैं हर इतवार को उनके साथ सिनेमा जाया करता था। लेकिन दूसर दिन उनके यहां से पास भी इकट्ठे कर लाना था। यार दोस्त भी खूब हिल गये थे। हर रोज उनका यही तकाजा रहता था कि पास लाओ। उन दिनो एक बहुत अच्छी फिल्म लगी हुई थी। मुझ पर दबाव डाला गया कि पास लाऊ। मैं खां साहिब क यहां पहुचा तो वह कहीं बाहर गये हुए थे। मैं बारामदे पर बाग म से गुजर रहा था। सामने तसनीम गुलाब के पौधों के पास कुर्सी पर बैठी कुछ पढ़ रही थी। उसने गुलाबी साड़ी पहन रखी थी और ऐसा मालूम होता था जैसे वह खुद भी गुलाब का एक फूल हो। उसने मुझे देख लिया। 'इतनी जल्दी वापस क्यों जा रहे हैं आप?' यह कहकर उसने एक फूल तोड़कर हाथ म घुमाया और फिर उसे ऐसे फेंका जैसे बॉलिंग करते हैं।

एक काम था खां साहिब स, मैंने कहा।

"बहुत अच्छा तो फिर जा सकते है आप।" मैं हैरान रह गया कि यह क्या वक्तमौजी थी। कोई इस तरह भी बात करता है। मैंने साइकिल सभाली। लेकिन फिर खयाल आया कि अगर पास न ले गया तो वहा जो चार पाच फिल्म के शौकीन इतजार कर रहे हैं, व क्या कहगे।

"देखिये, जरा मुझे पास ला दीजिये।"

"आज अब्बाजान भी सिनेमा जाने को कह रहे थे। उन्होने पूछा, पास कहा हैं तो ?"

"लेकिन उनसे भला सिनेमा मे कौन पास मागेगा। देखिये, ला दीजिये।"

"बहुत अच्छा मगर " वह हस पडी। और अन्दर जाकर पास ले आयी। मैं लेकर चल दिया।

मैं साइकिल पर चढा ही था कि खा साहिब की कार कोठी म दाखिल हुई। उन्होने झट से मुझे रोक लिया। 'भई, चाय वाय पीकर जाना।"

मैंन जल्दी से एक प्याली चाय पी और भागने के लिए उठा ही था कि तसनीम बोली, 'अब्बाजान ! न जाने यह आपके सिनमा के पास कौन चुरा ले जाता है हर रोज।

"ले जाता होगा कोई कमबख्त।" खा साहिब बोल, 'और मैं कौन सा रोज सिनमा विनेमा देखता हू।"

'नही अब्बाजान ! आज जरूर चोर का पता लगाइये। मेरी खातिर। वह आज जरूर आपका पास लेकर सिनेमा देखने जायेगा।"

"अच्छा तो जनाब मुझे इजाजत दीजिय।" मैंन उठत हुए कहा।

वहा से मैं सीधा होस्टल आया और दोस्तो को साफ साफ बता दिया कि भैया पास चुराकर लाया हू। अगर पता चल गया तो तुरन्त वहा स निकाल दिय जायेगे। मगर वे न मान। खर सिनेमा पहुचे। उन्हे मैंने अन्दर भेज दिया और खुद बडी शान से बाहर टहलने लगा। सामने से मैनेजर सिगरेट पीता हुआ आ रहा था। उसने हाथ के इशारे से मुझ बुलाया और बोला, "मुआफ कीजिए, क्या मैं पूछ सकता हू कि खा साहिब आपके क्या लगते है ?"

"मेरे वो, यानी मैं उनका मेरा मतलब है वो मेरे एक रिश्तेदार हैं।'

"जी यही तो मैं पूछ रहा हू कि आपका उनसे क्या रिश्ता है ?'

'जी जी वो मेरे चाचा है।"

'अच्छा तो आप जरा ठहरिये। मैं फोन तक हो आऊ—अभी आया।' शायद वह खा साहिब से पूछने गया था कि उनका कोई भतीजा है या नही। लेकिन बदकिस्मती से उनका कोई भतीजा तो क्या भानजा तक नही था।

मैं लपककर अन्दर पहुचा। जल्दी से उन शौकीनो से कहा कि भाडा फूट गया है। तुम्ह कोई कुछ नही कहेगा। मैनजर कम्बख्त मेरे पीछे लगा है। अब मैं भागता हू।

इतने म फिल्म शुरू हो गयी।

गेट से मनजर की आवाज आयी 'खा साहिब ने कहा है कि जो शख्स पास लाया है उस पकड लो। अरे, वही लम्बा सा लडका तो है, जिसस मैं अभी बातें कर रहा था।

अभी-अभी अन्दर गया है। वह। जरा पकड़ो तो सही उसे।"

सिनेमा हाल में हड़बोंग सी मच गयी। गेट पर एक छेवेवाला खड़ा था। मैंने गेट खोलकर उसे तो गेटकीपर के ऊपर दे मारा और खुद बाहर की तरफ सरपट भागा। मेरे पीछे आठ दस आदमी दौड़े चले आ रहे थे। मैंने और भी शूट लगा दी। आधे मील की दौड़ का मज़ा आ गया। मैं भला उन लोगों के कब हाथ आनेवाला था। मैंने पीछे मुड़कर देखा—अब पीछा करनेवाले दो-तीन आदमी रह गये थे—लेकिन आखिर उन जाबाजों ने मुझे आ दबोचा।

"हमें बहुत अफसोस है", मनेजर के सामने मुझे पहुचाने पर मैनेजर ने कहा, "मगर हम मजबूर हैं। आप हमारे साथ जरा खा साहिब की कोठी तक चलिये।"

मैं चुपचाप उनके पीछे हो लिया।

आगे यह बताने की जरूरत नहीं कि खा साहिब ने मनेजर को खूब डाटा। सबने मुझसे मुआफी मागी—सिवाय तसनीम के, जो इस सारी शरारत की जड़ थी।

मैं होस्टल पहुचा और बाहर दीवार से लगकर डेढ घण्टे तक खड़ा रहा। मैं अपने आपको कोस रहा था कि कितना बडा बेवकूफ था मैं, जो अब तक यही समझता रहा कि उसे मुझमे दिलचस्पी है। लेकिन इतने दिनो तक मुझसे खेलती रही। क्या मैं इतना गया गुजरा था कि मेरी भावनाओं के साथ ऐसी खिलवाड़ किया जाता।

अगले हफ्ते मुझे बुखार हो गया। कई दिन अकेला होस्टल में पड़ा रहा। खा साहिब बाकायदा दिन में दो बार देखने आते थे और रोज घर चलने को कहते थे। लेकिन मैं टालता रहा। आखिर पाचवे दिन वह मुझे अपने यहा ले ही गये। वहा जाकर इतना लाभ जरूर हुआ कि कुछ जी बहल गया। मेरे पलग के गिर्द बच्चे बैठे रहते थे। ऐसे ऐसे लोग मिजाजपुरसी के लिए आते थे कि बीमारी की तकलीफ आधी रह जाती थी। हा, कभी कभी तसनीम भी मुझे देखने आती थी—अपनी अम्मी के साथ। अकेली कभी नहीं।

मैं नफरत से उसकी तरफ देखकर मुह फेर लेता और वह भी नाक भौं चढाती। मेरी नब्ज टटोलती और चली जाती। दिन गुजरते जा रहे थे लेकिन बुखार कम्बख्त उतरने में ही नहीं आता था। एक दिन बहुत ज्यादा बारिश हुई। शाम को मौसम बहुत सुहाना हो गया। बच्चे बहुत जल्द सो गये। खा साहिब बेगम साहिबा के साथ किसी पार्टी में गये हुए थे। और मैं अकेला पड़ा बुखार में तप रहा था। मेरा दिल चाह रहा था कि उस वक्त कोई ऐसा हो जो मेरे पास बैठकर बातें करे और मेरा ध्यान किसी दूसरी तरफ बटे।

एकाएक मैंने अपने चेहरे पर कोमल से हाथ का स्पर्श महसूस किया। फिर ऐसे लगा जैसे कोई मेरे सिरहाने बैठ गया हो। एक भीनी भीनी सी खुशबू मेरे नथुनों में घुसी। मैंने जरा सी एक आख खोली—यह तसनीम थी। उसने वही नीला लिबास पहन रखा था जिसे देखकर मैं पागल हो जाया करता था।

उसकी उगलिया मेरे बालों में कधी कर रही थी। मैंने अपना मुह एक तरफ फेर

लिया। शायद वह मुझे सताने आयी थी। मेरा जी चाहता था कि अपनी बेबसी पर खूब रोऊ।

टप से एक बूद मेरे चेहरे पर गिरी। फिर दूसरी—फिर तीसरी। अब मुझे आखें खोलनी पडी।

मेरा हाथ काप रहा था। उसने मेरा हाथ अपने हाथ म ले लिया—और फिर उसे अपनी आखो से लगा लिया। न जाने कब तक वह रोती रही। उसने मेरा हाथ आसुओ से बुरी तरह तर कर दिया। देर तक हम एक दूसरे की तरफ देखते रह। दोनो की आखो मे आसू थे। दोना के मुह से एक शब्द तक न निकला—लेकिन खामोशी ने दिल के राज दास्तान के रूप म सामने रख दिये थे।

बाहर ठण्डी हवा साय-साय कर रही थी और रात के सन्नाटे मे दो दिल धडक रहे थे।

जादू का खेल

मातादीन खरवार

"चल तेलिया मशान, पाता है सतुवा निकालता पिसान, इसका अभी बयान'— ऊचे स्वर म कहते हुए एक बूढ़ा डिब्रूगढ़ स्टेशन क बगल वाले जनपथ पर अपना जादू का खेल दिखान क लिए आने जान वालो को आकर्षित कर रहा था।

अपने सामने उसने एक मली चादर के ऊपर विभिन्न प्रकार की जडी-बूटियां धातुओ के चूण, मरे जानवरो, पक्षियो क शरीर क कुछ भागो क अलावा एक मानव ककाल खोपडी प्रदशन के लिए रखी थी खोपडी पर सिंदूर और फूल पड़े थे।

वह कभी-कभी इसी जगह नियत समय पर अपनी झाली लेकर बैठ जाता जबकि दस बजे की गाडी आन वाली होती और यात्री उतरते। इस बीच वह जडी-बूटियो क द्वारा ताबीजें बना बनाकर खोपडी पर सिद्ध करता, अगरबत्ती का धुआ दिखा जरूरतमद लोगो को देता व बेचता।

इस बार भी ट्रेन क आते ही उसन अपना काय आरम्भ कर दिया और कुछ यात्री जमते ही खोपडी जिस वह तलिया मशान' कहता परिचय देने लगा।

"हा तो भाइयो ! समझ समझ के समझ समझना समझ समझ म भी एक समझ है और समझ समझ के जो न समझे मेरी समझ म वो नासमझ है। मेहर बानो ! ध्यान स सुनिये, आसाम बगाल का जादू तो आपने सुना ही होगा, पहले जमान म इसान को तोता, मैना भेड और बकरा बना देना आम बात थी। डरिए नही, मैं किसी को चिडिया या जानवर नही बनाऊगा, लेकिन जो कुछ बनाऊगा या दिखाऊगा वह आपक सामने होगा ताकि आप जीवन भर याद रख।

भीड जम चली थी। चूकि अधिकतर दशक बाहर से आने वाले यात्री ही थे, उत्सुकतावश जम ही गय।

"हा तो कदरदानो। बूढे न पुन कहना जारी रखा, यह जा आदमी की खोपडी आप देख रहे हैं वह कोई मामूली नही है यह तेलिया मशान है। यह मेरी तीन पुश्तो से चली आ रही है। इस तेलिया मशान को पाने के लिए मेरे बाप के बाप याने मेरे दादा ने आसाम के जगलो की खाक छानी अन्त म फुकारटिंग के जगल म एक जटा धारी बाबा की सेवा करन पर वरदान के रूप मे यह तेलिया मशान खोपडी मिली। मेरे दादा इससे तरह-तरह के करिश्मे [illegible]खाते रहे। मेरे बाप ने भी इससे नाम कमाया। अब

मैं इसका सर्वेसर्वा हू ।"

ए वूढो ! तोमार कोनो छेले आछे ?" अचानक भीड से एक आवाज़ आयी ।

लडका ता नही है मेरे भाई !" वूढे ने जा वगाली समझता था, प्रत्युत्तर दिया, "मगर तुम्हारा मतलव ?"

' मा एक्षुनो तुमी की बोल छिल ? '

अर भाई हिन्दी म वोलो ।"

अभी अभी तुमने क्या कहा था। यह खोपडी तुम्हारे कितने खानदा तक जायगी ?"

"हा, तुम्हारा मतलव समझा । जायेगी, जरूर जायेगी । मेरा कोई बेटा तो नही है पर जो मेरा शिष्य होगा या जिम मैं इस तेलिया मशान का सौंपूगा, वही इसका मालिक होगा, याने मेरा वेटा कहलायेगा ।"

"ठीक है ठीक है, दिखाओ अपना खेल ।"

"खेल तो वच्चे और खिलाडी दिखाते हैं । मैं तो अपना चमत्कार दिखाऊगा ।'

' अच्छा ! अच्छा ! जल्दी करो, जरा मैं भी देखू ।'

'हा, हा ! देखो और खूब जमकर देखो । और भाइयो ! आप तो देखेंगे ही । यह रहा मरा तेलिया मशान और दखिये इसकी करामात । आप देख रहे हैं कि यह इस डिब्बे के ऊपर खामोश है । आप यह भी गौर कर रहे हैं कि इसके जबडे म सिगरेट है खोपडी और सिगरेट ! यह कोई करिश्मा नही। चमत्कार तो तव होगा जब खोपडी सिगरेट पीकर बतायगी । कदरदानो ! आप साफ़ देख रहे हैं कि सिगरेट और माचिस म काफी दूरी है । तीन मीटर की दूरी तो होगी ही, इससे आप यह भी समझ गय होगे कि कोई जोड या सम्बन्ध नही है । यदि शका हो तो आकर दख लें या सावित कर दें । बाद मे कोई ये न कहे कि जादू वाला चार सो बीसी किया ।" और वूढे न डिब्बे और अन्य सामानो को उलट पलटकर तमाशबीना को दिखा दिया ।

' अब मैं मत्र के द्वारा खोपडी मे ऐसी शक्ति लाऊगा कि सिगरेट जलत ही तेलिया मशान काम करने लगेगा । हा, तो महरबानो, एक बार जोर से तालिया बजाइये ।"

तालिया वज उठी ।

वूढे ने तिल्ली को माचिस पर रगडा और झटके से सिगरेट की ओर उछाल दिया । उधर भीड म खडे वगाली न भी अपन पजों का झटका दकर कोई हरकत की ।

दशका को निराशा हुई । तिल्ली जली ता पर सिगरट तक न जाकर बगल में छिटक गयी । न सिगरेट जली न खोपडी ने धुआ फेंका । वूढा भी चकराया । सिगरेट जली नही न तलिया मशान ने फटाफट धुआं फेंका । ता उसके जादू का चमत्कार क्या हुआ ? वह सोच मे पड गया । उसने वगाली का टोका, 'अरे भाई ! ये मामला क्या है ?"

' मामला !" वगाली अनजान बना रहा ।

' हां, हा मामला ! तुम जरूर काई हमपेश वाला लगता है ।"

' सिद्धि म गडबड होगा ।"

'लो भइया इसकी सुनो। सारी उम्र इसी म गुजार दी, अब य कल का छोकड़ा नुक्स निकाल रहा है।"

"तो मैं क्या जानू। तुम आकार करके देखो।"

'वो तो मैं करूगा ही। मगर फिर तुमने गड़बड़ किया तो अच्छा नही होगा। और य अपने हाथ की जलती हुई सिगरेट फेंक दो।"

'मेरी सिगरेट से तुम्हारा क्या मतलब ?"

'बुरी नीयत रखने वाले आग स भी वार काटते हैं।"

बगाली बुदबुदाया, 'जादू तुम्हारा, आग मेरी, दम है तो बताओ।"

"अच्छा बताता हू।" बूढ़े न फिर अपना काम चालू किया। तालिया बजाने का आग्रह कर आवेश म कहने लगा, हरि न बोला, हरि न सुना, हरि गय हरि क पास वह हरि तो हरि म गय, वह हरि भये उदास हा।" बूढ़े ने पहले वाले क्रम से जलती तिल्ली को सिगरेट पर लक्ष्य कर फेंका, किन्तु इस बार भी तिल्ली सिगरट स दूर जा गिरी।

बगाली वसे ही सिगरट फूकता रहा।

बूढ़ा झुझला उठा। उसने बगाली को क्रोधित नजरो से देखा पर नम्रता का भाव लाते हुए उसके समक्ष जाकर बोला, 'य भाई! मैं तरा पैर पड़ता हू, क्या मेरा बना बनाया खेल बिगाड़ता है। मानता हू कि तुम भी कोई जादूगर हो, लेकिन दोस्ती के बजाय दुश्मनी क्या कर रहा है?"

"भला मैं क्यो दुश्मनी करने लगा?"

"मत्र का काटना दुश्मनी नहीं तो क्या दोस्ती है?"

"मैंने कब मत्र काटा?"

"तुम अपना करो, मैं अपना करू।"

"अच्छा, तो तुम लड़ना चाहता है?"

बगाली ने चुप्पी साध ली।

दर्शकों की उत्सुकता बढ गयी।

'देखो भाइयो, यह लड़ना चाह रहा है, मैं भी कहू कि यह क्यो छेड़ रहा है! देखो इसकी शैतानी, नादानी। एक भाई का खेल बिगाड़कर उसके पेट पर लात मार रहा है', और बूढ़े ने बगाली को जलती नजरा से देखा, 'अच्छी बात है आ जाओ मदान म बगाली बाबू। तुम भी क्या याद करेगा कि एक बिहारी से पाले पड़ा था। तेलिया मशान के पल्ले अभी पड़े नही।'

'हारने वाला जीतने वाले का पैर पकड़ेगा।' बगाली ने सुझाया।

'पहले तुम वार करेगा या मैं?'

पहले तुम करो।'

'नही, पहले छेड़ने वाला तुम्ही है। तुमको ही पहले वार करना पड़गा।"

"मजूर है।' बगाली ने जताया, "एक बात याद रहे मैं मात्र दो बार अपना प्रयोग करूगा।'

'चलेगा, मरा भी इतना ही रहेगा।"

बूढे बिहारी ने तत्काल तेलिया मशान रूपी खोपडी व अन्य सामानो को परे किया, और एक भोथरी छुरी से जमीन पर घेरा बनाते हुए दर्शको को आगाह कर दिया कि वे घेरे के बाहर ही रहे।

दोनो योद्धा मैदान मे डट गये। तेलिया मशान के ऊपर डेढ बीते की एक हड्डी को फिराते हुए बिहारी कुछ बुदबुदाया, गुरु का गोहराया, मशान का चुम्बन लिया और तनकर खडा हो गया।

दोनो एक दूसरे के विरुद्ध सतर्क हुए पतरा बदलने लगे।

"जाय मोहकाली।" बगाली ने आकाश की ओर देखते हुए गुहार मारी और झपटकर बिहारी के पाव के करीब की चुटकी भर धूल उठा ली और उसे अपनी छाती के इर्द गिर्द घुमाया, चूमा और बूढे को लक्ष्य कर दे मारी हवा मे मारण शक्ति।

"या तेलिया मशान!" सहसा बिहारी चीखा और धनुषाकार हो अपना पेट पकड लिया। शक्ति का वार अपना काम कर गया था। उसके शरीर मे मरोड उठने लगे और वह अपने को जमीन पर धराशायी होने से बचाने लगा।

बगाली गम्भीर बना रहा।

हुजूम सन्नाटे म था।

विक्षुब्ध बिहारी मरण शक्ति को वश मे करने के लिए प्रयत्नशील रहा। चेहरा आरक्त हो चुका था। अ तत उसने अपन आतरिक जप द्वारा मत्र काटने पर विजय पायी और सयत होते हुए बोला, "अच्छा बच्चू, अब दूसरा वार भी कर लो।"

"जोय भवानी।" बगाली ने अचानक अपना दूसरा वार भी छोड दिया।

बूढे को अभी सभलने का पूरा मौका भी नही मिला था कि इस प्रयोग से तिल मिला उठा और धडाम से जमीन पर गिरा। दर्शक छिटककर दूर हो गये। वातावरण मे स्तब्धता छा गयी।

और अन्त म बिहारी ने जमीन की धूल हस्तगत कर ली। उसे राहत मिली। तनाव कम हुआ। उसने धूल को उठाकर चूमा और हवा म उछालते हुए खडा हो गया तथा बगाली को आगाह किया, 'बच्चू अब भागना नही, तुम्हारा ब्रह्ममत्र भी मेरा कुछ नही बिगाड सका।'

"भागबो कैना ?" बगाली सहमाया।

शर्त के अनुसार अब बिहारी न उत्साह म अपना प्रयोग जारी किया। मानव ककाल खोपडी पर हड्डी फिरायी, उस्ताद को गोहराया, मत्र बुदबुदाया और झटके से बगाली के पाव के करीब की धूल चुटकी म उठाकर दे मारी बगाली के ऊपर।

"ओ मा !" बगाली सहसा चीखते हुए दर्शको के ऊपर गिरा। भीड छिटक-कर पीछे भागी तो बगल के पानवाले की आवाज आयी, "अरे भाई, जरा समालो, दुकान है।'

बगाली अतडियो की ऐंठन से तडपने लगा था। कभी उठता-बैठता, कभी

जाता। किसी प्रकार उसे चैन नहीं मिल रहा था। मुंह से फेन निकल आया। वह पट बल अचेत हो गया।

देखनहारे बेचारे बने रहे।

"कहां रंग में भंग डालने आया था बच्चू," बूढ़ा क्रोध में बड़बड़ाया, "अब देखता हूं कौन है तेरा उस्ताद मेरी 'चंडिका सिद्ध' से तुझे बचाने वाला। कितना समझाया, गंदी बोल मत कर, माफी भी मांगी। फिर भी नहीं माना। अब भोग।"

"तुम जीत गये।" भीड़ में से आवाज आयी।

'नहीं', बिहारी अपनी शान पर गुर्राया, 'मैं इस पाजी को ऐसे ही रखूंगा ताकि आइंदा फिर किसी को न छेड़े।"

"उठा दो बाबा उठा दो।" कुछ अन्य दर्शकों ने अपनी सहानुभूति जताई।

"मैंने कहा न, इसे नहीं उठाऊंगा।"

तमाशबीनों में निराशा के साथ और उत्सुकता बढ़ गयी।

"हेश डांगरिया। ईयाक उठाइक दियक मुन।" भीड़ से एक अन्य असमी आवाज उभरी। सबने देखा, धोती कुर्ता पहने नंगे पांव एक असमी युवक है।

'देखो भाई गाली मत दो।" बिहारी ने टोका।

'अरे बाबा मैं गाली नहीं दे रहा हूं।" असमी ने समझाया, "लगता है तुम असमिया भाषा नहीं समझते मैं कह रहा हूं कि ऐ बाबा इसे उठा दो।"

बूढ़ा बिहारी मौन ही बना रहा।

' मैं कहता हूं इसे उठा दो", असमी ने बिहारी को दृढ़ता से कहा।

'और मैं कहता हूं कि इसे नहीं उठाऊंगा। इसका कोई उस्ताद हो वह आकर उठावे। इसने मेरे धंधा पर लात मारी है।"

'तो मैं इसे उठाऊंगा।'

दर्शकों की जिज्ञासा और बढ़ चली।

' लगता है तुम्हीं इसके उस्ताद हो ?

"कोई भी होऊं मगर अब तुमको मेरे साथ भी लड़ना पड़ेगा।"

"अच्छा तो तुम भी लड़ोगे असमिया बाबू ?' बिहारी ने सब से तनकर व्यंग्य छोड़ा 'साठ बच्चा बियाकर अस्सी का गया पेट "

दहशत भरी भीड़ सहसा मुस्करा उठी। बिहारी ने पैंतरा बदलते हुए वाक्य पूरा किया "पंच में बैठकर किरिया खायी कमीन हुई पुरुष से भेंट।

भीड़ में ठहाका गूंजा।

"हूट केला की कइसो, क्या बक रहा है बूढ़े ?"

' अरे अब तो तुम्हारी भेंट तेलिया मसान से होने ही वाली है। वही बतायगा कि मैं क्या बक रहा हूं।

असमी ने बिहारी पर अपनी आंखें तरेरीं और अपनी कमीज की जेब से कोई चीज निकालकर औंधे पड़े मूर्छित बंगाली की छाती से स्पर्श करने लगा।

बंगाली की चेतना लौटी, होश में आते ही वह उठ बैठा और बोला, 'आमी

कोयाय ? मैं कहा हू ?"

' घबराओ नहीं ', असमी का आश्वासन मिला ।

बंगाली की दृष्टि बिहारी पर पड़ते ही उसने उसका पाव पकड लिया, "बाबा, मेरे को माफ कर दो । बडा शर्मिंदा हू तुमसे गडो गोल करके, मैं तुम्हारा पाव पकडता हू ।"

"अरे मेरा क्या पाव पकडता है, पकड अपने उस्ताद का जिसने तुझे एन मौके पर बचाया ।"

"हा, आपकी कौन ? आपने जो मेरी रक्षा की ?'

' हट केला अकरा मानूस ।" असमी ने एक झिडकी दी 'जरा सा मंत्र सिद्धि क्या कर ली आसमान पर चढ गये । आ गये लडने और मैं कोई भी होऊ । एहसान मानने की जरूरत नहीं । बस तुम जिधर से आया था, उधर ही चले जाओ । चलो फूटो ।"

बंगाली को भीड से भागने के अलावा अब चारा ही क्या था । वह तत्काल वहा से गायब हो गया ।

बिहारी और असमी की नजरें पुन मिली, बिहारी ने फिर एक व्यंग्यवाण छोडा ' बक का लवेन्ड हुआ, बिना बाप का लडका हुआ ।"

दर्शक पुन हस पडे ।

बिहारी आगे बढा । "हुआ भी तो कब हुआ, जब मा न रही तब हुआ ।'

असमी की भौह तन गयी ।

' तुम भी अपनी शर्त रख दो ।" बिहारी ने असमी को टोका ।

"हारने वाला जीतने वाले को अपना गुरु माने ।'

पहले तुम वार करोगा ?"

"नहीं पहले तुम ।" असमी का आदेश मिला ।

बिहारी ने पुन जोश खरोश के साथ अपने तन्त्रों को चूमा, मन्त्रों को बुदबुदाया और गुरु को स्मरण करते हुए पहले वाली क्रियाए की और दे मारी धूल असमी के ऊपर ।

"या कमाख्या आई " असमी जोर से चीखा उसका पूरा अंग अकडने लगा । एसा लगा मानो जादू का वार उसके बायें हाथ पर प्रहार कर रहा है और वह उससे त्राण पाने के लिए जी जान से वार को वश में कर लेना चाहता है ।

अंतत वह अपने प्रयत्न से सफल हो गया । शक्ति को मुट्ठी मे बाधकर हवा में उछाल दिया और बोला "अच्छा बूढे ! अब दूसरा वार भी कर ले !"

बिहारी गम्भीर हो गया । निश्चय ही कोई बाका खिलाडी है, फिर भी वह एक आवेश का लबादा ओढते हुए गरजा, "चडूलगढ का राजा, चुटुकपुर घराये हथऊज म हुआ फैसला नरहरपुर मगये ।'

दर्शक फिर मुस्करा उठे ।

"अब देखता हू बच्चू कैसे बचते हो ?" बिहारी ने ताना मारा और आनन

फानन म पूर्ववत क्रियाए की ।

लेकिन इस बार असमी म कोई विशेष विकार नहीं हुआ, बल्कि मन्त्र रूपी अदृश्य शक्ति को जिस गति स बिहारी न झटका देकर असमी पर फेंका, ठीक उसी गति से असमी न अपन बायें हाथ को उछालकर बडी स्फूर्ति स शक्ति का अपनी मुट्ठी म बन्द कर लिया तथा बिहारी को आगाह किया, "तुम्हारा य दूसरा वार भी मेरा कुछ नही बिगाड सका । देखा, इसे मैंने अपनी मुट्ठी म बन्द कर लिया है । तुम्हारा य जादू अब तुम्हार ऊपर ही छोडता हू य हा !"

अचानक बिहारी भहराकर जमीन पर गिरा। उसे सभलने का जरा सा भी मौका नही मिला ।

'कैसा दगावाली !' अपनी तकिया कलाम गाली देत हुए असमी अपन ललाट का पसीना पोछन लगा ।

भीड किंकर्तव्यविमूढ़ बनी रही ।

बिहारी बूढा पहल ही से थकावट स परेशान था, उस पर अपने ही मन्त्र का अवरोहण उसे उलटाते पलटाते हुए जमीन पकडवाने का प्रयास करवाने लगा ।

हार जीत का फैसला सुस्पष्ट हो चला था । वसे तो दर्शकों की हमदर्दी बूढे की तरफ थी कारण वह किसी को छेडन नही गया था । जब लडने की बात आयी तो जम कर लडा भी । हा सेर के सवा सेर भी होत हैं । इस तक से असमी दर्शकों की नजर म चढ़ बैठा था ।

"अब इस उठा दो ।" दर्शकों म से एक की सहानुभूति जागी ।

'यह हार गया ।' दूसरे ने समर्थन किया ।

"क्यो ?" असमी बोला, "अगर मैं भी इसके साथ बगाली जैसा व्यवहार करू तो कैसा रहे ?

'जो हो गया सो हो गया, अब इसे माफ कर दो ।"

'ठीक है" असमी ने एक बार गौर से दर्शकों की ओर देखा "जब आप लोग इसका भला चाहत हैं तो मैं वस भी मेरे गुरु ने एसी सीख नही दी है कि किसी का बुरा चेतू । पर महरबानी करके मेरी पूरी बात ध्यान से सुन लें ।"

दर्शकों को इसस क्या इनकार हो सकता था ।

'एसे लोग जादू के नाम पर", असमी ने कहना आरम्भ किया, 'जनता को भुलावे छलावे म रखकर अपना मतलब पूरा करते हैं ।'

दर्शकों की नजर जमीन पर तडपते हुए बिहारी पर चली गयी ।

'फिर ऐसे धूर्तों से बचने की तरकीब क्या है ?' असमी रुककर बोला,' तरकीब बहुत आसान है । मेरे पास एक ऐसी चीज है जो ऐसे जादूगर तान्त्रिक, औलिया या ओझाओ से सताए गय हो । कसा भी जादू टोना मन्त्र क्यों न हो इस चीज को पहन लेने से उसका एक बाल भी बाका नही होगा । और वही चीज मैं आप लोगों को दूगा ।"

दर्शकों म उमग की लहर दौड गयी ।

'एक बात और", असमी आगे बढ़ा, 'आप ऐसी चीज की कीमत जानना चाहेंगे ?"

भीड के कान खडे हो गये ।

"तो सुनिये और गौर से सुनिये", दर्शकों को ध्यान से देखते हुए बोला, "एक पैसा भी नहीं, एकदम फ्री मुफ्त मे ।'

लगा भीड अपना सयम खो बैठेगी ।

"बस, कुछ मिनट और आप लोग इन्तज़ार करें तब तक मैं इस बूढे को उठा लू", और असमी अपनी कमीज की जेब से उक्त चीज निकालकर बूढे की छाती से स्पर्श करने लगा ।

बूढे की चेतना लौटी । वह हडबडाकर उठ बैठा और अपनी स्थिति का भान करते हुए असमी के पैर पकडकर गिडगिडाने लगा ।

"और लडेगा ?"

"नही मेरे आका, नही ।"

"अच्छा, मेरे को नही तो इस लडके को मार ?" भीड से एक बारह वर्षीय लडका लाकर, असमी ने बिहारी के सामने खडा कर दिया ।

दर्शको की टकटकी लडके की ओर लगी हुई थी ।

"ले इसे मार ।" असमी का आदेश था ।

"मैंने कहा न, मैं इसे नही मार सकता, मुझे बख्श दो ।"

'बख्श दो के बच्चे । मारने की बात तो दूर, तू इसका एक बाल भी बाका नही कर सकता ।'

बिहारी ने असमी का पैर पकड लिया ।

"खरियत चाहते हो तो जल्द यहा से चलते बनो और फिर कभी इधर अपनी सूरत नही दिखाना ।"

बिहारी ने तत्काल अपना तेलिया मशान का सामान समेटा और भीड से ओझल हो गया ।

"ऐ छोकडा", असमी ने लडके को टोका, "अगर तुमको कोई सौ रुपये देकर इस तावीज को लेना चाहे तो क्या तुम दे देगा ?"

लडका समझदार था । तावीज की महिमा वह जान गया था, बोला, "नही ।"

"शाबाश ! यह तावीज मैं तुमको दे रहा हू । किसी को भी किसी कीमत म नही देना । वसे भी बेचोगे तो इसका असर जाता रहेगा । यह तुम्हारे सब दु ख, परेशानिया म काम आयेगा मुरादें पूरी करेगा । जाओ, भाग जाओ ।"

लडका एसे भागा मानो कल्पवृक्ष प्राप्त कर लिया हो, उसके भाग्य पर दर्शक भी ईर्ष्यालु हो उठे ।

"हा तो बधुओ", असमी अब हुजूम की ओर उन्मुख हुआ । "आप लोगो को चिन्ता करने की जरूरत नहो । यह तावीज आप लोगो को भी मिलेगा । बस जरा-सा इन्तजार करना

होगा । जादू मन्त्र कपोल कल्पना नही । यह सर्वशक्तिमान भगवान की दी हुई शक्ति है जो बड़ी साधना से मिलती है । ऐसे ही साधना व तप म लीन रहने वाले मेरे गुरु हैं जो कामाख्या धाम से थाडी दूर घनघोर जगल म रहते हैं

' इस तावीज के गुणों के बारे मे आप जानना चाहेगे तो वही बात होगी जैसे सूरज के सामने दीपक का गुण गाना। इस तावीज की खास खूबी यह है कि यह पूरे सूरज ग्रहण के समय पर सिद्धि की गयी है और जैसा कि आप लोगों को मालूम होगा ऐसा ग्रहण, बीस बीस कभी कभी इससे भी ज्यादा सालो म केवल एक बार आता है, इसी से इसकी खूबियो का अदाजा आप लगा सकते है

'इसम ऋषि मुनि और अघारियो की इक्कीस सिद्धिया सिद्ध की गयी हैं "

"भूत प्रेत बाधा हरण प्रेमिका को वश म रखना, बेऔलादवालो को औलाद देना दुश्मनो के छक्के छुडाना, कसा भी रोग हो उससे छुटकारा पाना, धन्धे-नौकरी म बरकत होना परीक्षा म पास हाना, केस मे जीतना सट्टे या लाटरी का नम्बर पाना, मडर या बलात्कार कर साफ बच जाना, फिल्मी हीरो हीराइन बनने का चास दिलाना जैसी इसकी खूबिया है।

' और ऐसी मुरादें पूरी करन वाली ताबीज आपको मुफ्त म मिलेगी तो क्या आप नही लेंगे ?"

भीड का रेला असमी की ओर बढने लगता है।

"बोलिए किसे किस चाहिए ?"

' मुझे चाहिए, मुझे चाहिए ?"

' बच्चो को तो अब बिल्कुल नही मिलेगा। केवल बड़े और समझदार लोगो को मिलेगा, जो इसकी कद्र कर सकते हो । मेरे पास केवल पद्रह ताबीजें हैं। एक छोकडे को दे चुका हू सोलह हुए । एक दिन म केवल इतनी ही ताबीजें दी जाती हैं यही मेरे गुरु की हिदायत है । जो पा जाये वही भाग्यशाली होते है।'

उसने सरसरी निगाह दौडाते हुए फटाफट ताबीजें बाट दी।

अब असमी ताबीज दिये हुए लोगो से बोला, ' बधुओ, मैंन पहले ही कह दिया है कि इस ताबीज की कीमत कुछ भी नही है जबकि यह बडे काम की चीज है। जो चीज ऐसी हो उसने पाने वाले भी ऐसे ही होने चाहिए। इसलिए एक बार फिर मैं खासकर यह जानना चाहूगा कि किसको कितनी जरूरत है और किसको नही।'

जब व लोग उसके करीब आये तो उसने उसमे से एक को चार कदम दूर ल जाकर धीरे से पूछा आपको किसलिए चाहिए ताबीज ?'

जी, हे । हें । हें । क्या बताऊ बात ऐसी है कि मैं अफीम की तस्करी म पकडा गया हू ।

' य हुई न बात " असमी पुन जनता क सामने आ गया वाकई आपको इसकी सख्त जरूरत है।'

' हें । हें हें " स्मगलर उपकृत हुआ।

' भाई साहब, आपन बचाव के लिए ताबीज पर श्रद्धा और विश्वास किया।

यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। ये तावीज आपको कचहरी मे हजारो रुपये बर्बाद होने, बदनामी और दड स बचा लगे। ऐसी सवा और उपकार को देखते हुए क्या मेरे गुरु को दान दक्षिणा के नाम पर कुछ नही देंगे ?'

स्मगलर किंचित सकपकाया।

'भाई साहब, आप किस सोच म पड गये। मैं दक्षिणा माग रहा हू। तावीज की कीमत नही, जो हराम है। दान देना आपके श्रद्धा और विश्वास पर है। मैं दान के रूप मे आपसे पाच सौ रुपये मागू तो क्या आप नही देंगे ?"

"जब ऐसी बात है तो कोई हर्ज नही, ले लीजिए।' और तस्कर न तत्काल सौ सौ के पाच नोट गिन दिए।

अरे ! आप तो सचमुच दे रहे हैं कही नाराज तो नही हो गये ?"

"नही, नही, ऐसी कोई बात नही।"

'बेफिक्र रहिए, आप घर चले जाइए और इस तावीज को काले रेशमी धागे म बाधकर बायें हाथ मे पहन लीजिए फिर देखिए कोर्ट म इसकी करामात। 'और जेब म नोटो को रखते हुए आगे दूसरे की ओर बढा "हा, बकाइटी—बडे भाई ! आपको तावीज किसलिए चाहिए ?'

'मेरी औरत पडोसी के साथ भाग गयी है।'

"अच्छा, अच्छा, तो पडोसी की औरत आपके साथ भाग जाए, यही चाहते हैं न ?"

"ऐसा हो सकता है क्या ?"

'तावीज पहनने स क्या नही हो सकता ?"

'य लीजिय आपकी दक्षिणा !"

'बस, तीन सौ ही !'

"अभी तो मेरे पास इतना ही है।'

खैर आपकी मुरादे पूरी हो।'

'और आप ? असमी एक युवक की ओर बढा।

'मैं हीरो बनना चाहता हू, क्या बम्बई जाने पर फिल्मो म चास मिलेगा ?'

'जरूर मिलेगा, लेकिन हीरो बनने के लिए जरूरी है, मुकाबले म कोई हीरोइन भी हो।'

वह तो है, हम दोनो गोहाटी नाटय सस्थान मे काम करते हैं।'

'तब तो जोडी होने के कारण आपका काम और आसान हो जाता है। बस आपका तावीज पहनकर सीधा बम्बई जाने भर की देर है।"

"इस समय तो मेरे पास डेढ सौ ही है।'

'समय पर जो मिल जाए, वही हमारा होता है।' नोटो को पकडते हुए असमी चौथे व्यक्ति की ओर मुडा, जो खादी का कुर्ता, पजामा व गाधी टोपी म था 'फरमाइये ?'

'मैं शिवसागर से विधायक पद के लिए खडा हू। आपकी तावीज की मेहरबानी

चाहिए।"

"इसकी मेहरबानी से विधायक तो क्या, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक बन सकते हैं। लाइए दक्षिणा।"

व्यक्ति पैसा पकड़ता है।

'केवल सौ ही।"

जरा तंगी है, समय आने दो।"

अतत इसी प्रकार असमी ने एक से लेकर पन्द्रहवें तक की समस्याएं जानी, उपचार सुझाये और दक्षिणा के नाम पर नोटों से अपनी जेबें भरी। और फिर बोला ' महरबानो, आपने जिस श्रद्धा और विश्वास के साथ तावीजें ली गुरु के नाम पर दक्षिणा दी, उसके लिए मैं आप सभी का शुक्रगुजार हू, ताबीज आपकी मुरादें पूरी करे। गुरु आपका कल्याण करे, आप लोग घर जाकर इसे काले रेशमी धागे म बाधकर बायें हाथ मे पहन लें, फिर तो आप जहा भी रहेंगे, बिंदास। अच्छा सूरज सिर पर चढ आया है। खाने का समय भी हो गया है। हम एक दूसरे से विदा लें। अच्छा, हिन्दू को राम राम! मुस्लिम को सलाम! सिक्ख भाइयो को सत श्री अकाल!"

ताबीज वितरण समाप्त होते ही जनपथ पहले की तरह सामान्य हो गया। एक युवक जो ताबीज लेने की होड म शामिल था। चिंतित वही खडा रहा।

"क्यों क्या हुआ?' बगल के पानवाले ने उसे टोका, ताबीज तो मिल गयी, अब खडे खडे क्या सोच रहे हो?" युवक सहानुभूति पाकर खुल उठा, "क्या बताऊ, पच्चीस रुपये जो पास मे थ, ताबीज मे चले गये। अब पास म टिकट के लिए पसे नहीं, सोच रहा हू कि तिनसुकिया कैसे जाऊंगा?"

'भाग्यवान हो जो तुम्हारा पच्चीस ही गया। यहा तो लोग सैंकडो गवाकर जाते है। ये बस ताबीज भर ही है। मिट्टी, राख, चूना के अलावा इसम और कुछ नही है।"

परायी आखे

रजीउद्दीन सिद्दीकी

डॉ० भट्टाचाय न कमरे की ओर नजर डालत हुए कहा, 'डाक्टर मेरे खयाल म अब चला जाये।" मैंने स्वीकृति मे सिर हिलाया और डिस्पेंसर शर्मा को विजिटिंग रूम बद करने के लिए कहा। डिस्पेंसर शर्मा बोले, 'लेकिन साहब, एक मरीज बाकी है अभी।"

"अब कौन है?" मैंने विस्मय से घडी की आर देखते हुए कहा।

"एक महाशय काफी देर से बैठे हुए हैं। मैंने उनका नम्बर आने पर उन्हें आपके कमरे म जाने के लिए कहा था, लेकिन उन्होंने कहा कि वह सब मरीजो के चले जान के बाद अपना हाल आपको बतायेंगे। इसलिए वह अब तक प्रतीक्षा करते रहे।"

मैंने शर्मा को इशारा किया कि वह उन्हे अदर ले आय। जरा ही देर बाद दरवाजे म एक शरीफ-सूरत इसान नजर आया।

"नमस्ते।" उसने दोनो हाथ जोडकर कहा।

मैंने जवाब मे हाथ जोड दिये, "बैठिए।" मैंन कुर्सी की ओर इशारा किया।

'धन्यवाद।" वह बैठत हुए बोला। अच्छी तरह से बैठन के बाद वह कुछ क्षण ठहरकर बोला "मेरा नाम ज्ञानचद है। मैं दिल्ली का रहने वाला हू और फुटबाल का अच्छा खिलाडी हू। अगर आपको फुटबाल का शौक हो तो शायद आपने मेरा नाम सुना होगा।' वह मुस्कराया। मैं भी जवाब मे मुस्करा दिया। डॉ० भट्टाचाय भी मुस्करा दिये। हम दोनो मे से एक भी फुटबाल का शौकीन न था।

"मैं अपने देश की टीम के साथ बाहर के देशों म भी खेलने के लिए जाता हू। विदेशो मे भी मेरा खेल काफी लोकप्रिय है।" यह कहते हुए गर्वीले अदाज म उसका सीना तन गया। मैं और भटटाचाय एकाग्रचित्त होकर सुनने लग, "मुझे विदेशो के चाहने वालो की ओर से बहुत से उपहार मिले हैं। प्राय मैडल, कप और कैश आदि मिला करते हैं, लेकिन इस सब के साथ साथ एक लानत भी मिली। देने वाले ने मुझे प्यार और स्नेह से एक ऐसी नियामत प्रदान की, जो शायद ही कोई किसी को दे सके, लेकिन मेरे लिए वह सबसे बडी लानत साबित हुई।"

मरीज ज्ञानचद जरा जोश म आ गया, लेकिन एकदम उसकी नजर कमरे मे प्रवेश करनेवाली नस की ओर उठ गयी। उसने बोलना बद कर दिया। उसका मुह मेरी

ओर था, लेकिन नज़र नस की ओर। नस के चले जाने के बाद उसने वहा से नजर हटायी "क्षमा कीजिएगा", 'वह बात जारी रखते हुए बोला, ' डॉक्टर साहब, आप आखो के विशेषज्ञ है ?"

'जी हा', मैंने जवाब दिया, 'आपको मुझसे कसी मदद चाहिए। बेधड़क बता दीजिए।

मरीज ने जोश मे मेरा हाथ पकड़ लिया। पकड़ कुछ मजबूत हो गयी। 'डॉक्टर! डाक्टर! मेरी य दोनो आखे निकाल दो। इन्हे निकालकर फेंक दो। मैं इन्हें रखना नही चाहता। आप डाक्टर है और आखो के विशेषज्ञ है। आप यह काम बड़ी आसानी से कर सकते हैं। आप जो भी मागेंगे, मैं आपको दूगा।" उसने मेरा हाथ छोड़ दिया।

मैं और डा० भट्टाचाय जो अब तक बहुत गौर से सुन रहे थे, एकदम चौक पड़े। एक अजीब धक्का सा लगा मेरे दिमाग को। अब तक की गम्भीरता जाती रही। मैंने और डा० भट्टाचाय ने एक दूसरे की ओर देखा और आखो ही आखो मे बात एक दूसरे से कह दी—पागल लगता है। और फिर आखो ही आखो म एक दूसरे के विचारो का अनुमोदन भी कर दिया। अब तक मरीज अपनी आखो का इलाज कराने के लिए मेरे पास आया करते थे। कोई आखें खोने के लिए नही आया था।

"सचमुच डाक्टर मैं चाहता हू कि आप मेरी ये आखे निकाल दे, मैं अधा होकर रहना अधिक पसद करूगा।"

मैं मन ही मन म यह सोच रहा था कि यह व्यक्ति गलत जगह पर आ गया है। इसे आखो के विशेषज्ञ की बजाय किसी दिमागी इलाज के अस्पताल म जाना चाहिए था।

मैं पागल नही हू।" वह एकदम जोश के साथ बोला शायद उसने मेरे और डॉ० भटटाचाय के विचारो को भाप लिया था आपने अभी तक मेरी कहानी नही सुनी है। जब आपको मरे पूरे हालात मालूम होगे तो आप हरगिज मुझे पागल नही समझेंगे, बल्कि आपको मुझसे सहानुभूति होगी।'

ऐन उसी समय फिर उसकी नजर कमरे मे प्रवेश करनेवाली नस की ओर उठ गयी क्षमा कीजिएगा।' वह नस के जाते ही उधर से अपनी दृष्टि हटाकर बोला, आप मेरी पूरी बात सुन लीजिए।" यह कहकर उसने एक लम्बी सास ली और फिर बोलने लगा, फुटबाल की दुनिया म मैं काफी प्रसिद्ध हो गया था। यह आज से लगभग चार पाच वष पहले की बात है। अचानक भारत से बाहर एक मच के दौरान मुझे सख्त चोट लग गयी और इस दुघटना के कारण मैं बहुत दिन तक अस्पताल म पड़ा रहा। मेरे चाहने वालों न मेरी खूब मदद की। मुझ किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया। लेकिन इस चोट से उबरकर जब मैंने अस्पताल छोड़ा तो अधा हो गया था। इस दुघटना से अधिक प्रभाव आखो पर पड़ा था। मरी दोनो आखें ज्योतिहीन हो गयी। फुटबाल की दुनिया म यह खबर बिजली की तरह फल गयी। मेरी हमदर्दी म जलत हुए अफसोस के तार मुझ भजे गय और न जान किस किस प्रकार स लोगो न मुझस हमदर्दी प्रकट की।

मुझे जगह जगह एक माना हुआ पुराना खिलाडी होने के कारण रुपयो की थैलिया पश की गयी। मेरे पास रुपये पसे की कमी न रही थी, लेकिन मेरी आखो का प्रकाश छीन लिया गया था। यह अभाव तो कोई भी पूरा न कर सकता था। मैं फिर फुटबाल के मैदान म अपने कमाल नही दिखा सकूगा, यही बात मेरे लिए कुछ कम जानलेवा न थी। इस दुघटना के बाद मैं स्वदेश लौट आया और आकर एक खामोश जीवन बिताने लगा, लेकिन फुटबाल का मेरा शौक फिर भी कम नही हुआ। जहा कही भी दो मशहूर टीम मदान म उतरती, मैं अपने नौकर की मदद से वहा पहुच जाता। लागो के शोरगुल से, तालियो की आवाज से मुझे ऐसी खुशी होती मानो मैं स्वय मैच देख रहा हू। खेल का थोडा बहुत हाल मेरा नौकर सुनाता जाता था। यह था मेरा फुटबाल का शौक। हाल ही म टोकियो म एशियाई खेलो का जो मुकाबला हुआ था सभवत उसके बारे मे तो आपने अखबारो म पढा ही होगा ?" मरीज ने एकदम सवाल किया।

'जी हा जी हा।" मैंने और डा० भटटाचाय न स्वीकृति मे कहा। यद्यपि भूख सता रही थी और अस्पताल बद करने का समय भी बीत चुका था, तथापि उस अनोखे मरीज की दास्तान हम दोना की दिलचस्पी का कारण बनी हुई थी।

मैंने दढ निश्चय कर लिया था कि मैं यह खेलकूद का मुकाबला अवश्य देखूगा, हालाकि मेरे लिए अगर 'देखूगा' के बजाय 'सुनूगा' कहा जाये तो अधिक बेहतर है।" वह बात जारी रखते हुए मुस्कराया, 'मैंने नौकर को साथ लिया और एशियाई खेलो का मुकाबला देखने के लिए जापान जा पहुचा। फुटबाल के शौकीना न वहा भी मेरी खूब आवभगत की। अखबारो मे मरे बारे म खबरे छपी और बहुत स कदरदान मुझे देखने के लिए मरे पास आत रहे। मतलब यह कि हर एक ने मुझ सिर आखा पर बिठाया। खलकूद का मुकाबला शुरू होन पर मैंने फुटबाल का हर मैच देखा या यो कहिए सुना। हर ताली और शोर पर मुझे ऐसा महसूस होता था मानो मैं सब कुछ अपनी आखो स देख रहा हू। उन दिना टोकियो मे खूब चहल पहल थी। जरूरत से ज्यादा भीड थी। हर रोज टोकियो की सडको पर मोटरो की कितनी ही दुघटनाए होती थी।

एक दिन प्रात काल मेरे होटल म एक टेलीफोन आया। मुझे एक डॉ० यूको मारा न अपने अस्पताल म तत्काल बुलाया था। पूछन पर मालूम हुआ कि डॉ० यूको मारा टोकियो के आखो क प्रसिद्ध विशेषज्ञ हैं। अपने नौकर के साथ बताये हुए पते पर पहुचा। एक अनुवादक के द्वारा मेरी और डॉक्टर की बातचीत हुई। डा० यूको मारा ने मुझे बताया कि सरकारी सेंट्रल अस्पताल म एक व्यक्ति अद्रे को मोटर क नीचे आकर जख्मी हो जाने क कारण लाया गया था। वह लगभग तीन घटे अस्पताल म जिंदा रहा और फिर मर गया, लकिन मरन से पहले एक इच्छा प्रकट कर गया कि अगर मरने के बाद उसकी आखें काम आ सकें तो उन्हें निकालकर प्रसिद्ध फुटबाल खिलाडी ज्ञान चद को दे दी जायें, ताकि वह फिर से देखन के काबिल हो जायें और फुटबाल के मदान म उतरें। मरन वाला व्यक्ति फुटबाल का बहुत ही शौकीन था। मरे लिए यह खबर बेहद प्रसन्नतादायक थी। अजीब था मरो वाला भी। अब तक लागा ने मुझे उपाधिया दीं।

पत्तियां भेंट कीं। हमदर्दी प्रकट की, लेकिन किसी ने अपनी आंखों का दान नहीं दिया था। वह भी आज फुटबाल के एक कलरदान ने मुझे पेश किया है। यह जानकर मेरी खुशी की सीमा न रही। मैंने डॉक्टर को बताया कि मैं आपरेशन के लिए तैयार हूं। डॉ० यूको मारा ने कहा कि अगर चौबीस घंटे के अन्दर अन्दर आपरेशन हो गया तो आशा है शतप्रतिशत सफल रहेगा। मैंने स्वयं को डॉक्टर के सुपुर्द कर दिया। आपरेशन हुआ और सफल रहा।

मैंने फिर से आंखें पा लीं। मैं खुशी से पागल सा हो गया। उस सफल आपरेशन के कारण डा० यूको मारा की भी खूब ख्याति हुई।

'इधर लोगों ने मुझ पर बधाई के तारों की वर्षा कर दी। मैं टोकियो अंधा गया था, लेकिन वहां से आंखों वाला होकर वापस आ रहा था। मेरे दिल ने यह सहन न किया कि अपने महान उपकारी के बारे में कुछ जाने बिना ही मैं स्वदेश लौट जाऊं। इसलिए मैंने दुर्घटना में मरने वाले जापानी का नाम पता पुलिस स्टेशन से पूछा और ढूंढता हुआ उसके मोहल्ले में जा पहुंचा। वहां पहुंचकर पता चला कि वह व्यक्ति अकेला ही था। उसका कोई अन्य रिश्तेदार न था। वह एक स्थानीय मिल में काम करता था और फुटबाल का बहुत शौकीन था। एक बात और सुनी, वह यह कि वह बहुत बुरे चरित्र का आदमी था, मोहल्लेवाले उसे अच्छी नजर से न देखते थे। उसकी नजर हर समय सुंदर लड़कियों का पीछा करती रहती थी। कोई भी सुन्दर लड़की नजर आती तो वह उसे घूरने लगता लेकिन मुझे इससे क्या। वह कैसा भी हो, मेरे लिए तो वह दया का फरिश्ता साबित हुआ। कौन किसी को अपनी आंखें देता है। मैं उसकी कब्र पर भी गया और स्वदेश लौटने से पहले अपने महान उपकारी की कब्र पर फूल चढ़ाकर आया, लेकिन आपको यह सुनकर विस्मय होगा कि उस जापानी की दी हुई यह नियामत मेरे जीवन की सबसे बड़ी लानत साबित हुई।' मरीज कुछ रुक गया। उसने पानी मांगा।

मैं और डा० भट्टाचार्य बहुत गौर से यह अनोखी दास्तान सुन रहे थे। पानी पीने के बाद उसने अपनी बात फिर जारी की, 'स्वदेश वापस आने पर हर ओर से मुझे बधाइयां मिलीं। पहले तो मुझे भी खुशी ही खुशी नजर आयी। ऐसा कौन होगा, जो एक बार अंधा होकर फिर से आंखें पाने पर खुश न हो? लेकिन यह तो परायी आंखें थीं और आखिर उन्होंने अपना परायापन दिखाया। मैं उस समय तक अपना जीवन बहुत भद्रतापूर्वक गुजारता आया था। मैंने कभी किसी खूबसूरत या नौजवान औरत की ओर नजर न उठायी थी। खेल ही मेरा एकमात्र मनोविनोद था और औरत की मेरे जीवन में कोई जगह न थी, मगर इन परायी आंखों ने मेरे दिलो दिमाग का साथ न दिया। मरने वाला मर गया, लेकिन उसकी ये आंखें अब भी सुन्दर और नौजवान औरतों का पीछा करती हैं। जहां कहीं कोई सुन्दर चेहरा नजर आया, ये उधर ही लग जाती हैं। पहले पहल तो मुझे इससे केवल खिन्नता होती थी, लेकिन अब तो ये आंखें प्राणों का रोग हो गयी थीं। प्रायः मुझे औरतों की लताड़ सुननी पड़ती है और जलील ख्वार होना पड़ता है। सुन्दर औरतों के पतियों और रिश्तेदारों के तेज तीखे शब्दों को गरदन झुकाकर सुन लेना पड़ता है, क्योंकि मेरी कहलाने वाली ये आंखें मेरे काबू में नहीं। प्रकट में

मैं इनका अवश्य हू लेकिन ये आँखें बागी हैं।" मरीज फिर जाश म आ गया डाक्टर साहब इन आखा न मुझ अजीब प्रकार की उलझना म डाल दिया है और अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि हर कीमत पर इन आंखो को स्वय स अलग कर दू। प्रकट म वरदान लेकिन वास्तव म इस लानत से सदा के लिए मैं छुटकारा पा जाऊ। इसलिए अब मेरी आपस यह प्रार्थना है कि जिस प्रकार भी हो, आप मेरी ये आँखें निकाल दें। मैं आपको मुह मागी फीस दूगा। इतना कहकर मरीज न एक की सास लम्बी और कुर्सी से टेक लगाकर बैठ गया।"

लगता था, ज्ञान चद अपनी लम्बी दास्तान सुनाकर काफी थक गया था। मैं डा० भट्टाचार्य की ओर परामर्श मागती दृष्टि से देख रहा था कि अब इसे क्या जवाब दिया जाय। फिर मैंने ही कुछ सोचकर जवाब दिया ज्ञान चद जी मैंन आपकी दिलचस्प कहानी सुनी। मैं काफी प्रभावित हुआ हू। अब रहा आपके आपरेशन का सवाल तो इसके लिए मुझ दो एक अन्य विशेषज्ञो स सलाह लेनी पड़गी। इसलिए आप अभी तशरीफ ले जा सकते है। दो दिन बाद यानी परसो को चार बजे आप यही आकर मुझसे मिले, मैं आपको पूरा जवाब दूगा।" वह शायद इस जवाब स आश्वस्त हो गया था। उठा और नमस्ते करता हुआ कमरे से निकल गया। मैंन और डा० भट्टाचार्य न एक दूसरे की ओर देखा और सोच म डूब गये।

मेरे और भट्टाचार्य के सामने ज्ञान चद बैठा हुआ था। वह वायदे के अनुसार आ गया था। डॉ० भट्टाचार्य उस समझाने का प्रयत्न कर रहे थे। ज्ञान चद के चेहरे स साफ प्रकट हो रहा था कि वह डा० भट्टाचार्य की बातों स प्रभावित हो रहा है मगर दुविधा मे है।

'देखो ज्ञान चद तुम्हें इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि तुम्हारी आँखें बदल दी जायेंगी। आखिर तुम अधे ही रहन पर क्यो जिद कर रह हो?" डा० भट्टाचार्य न ज्ञान चद को खामोश देखकर फिर कहा।

"मैं मैं जब अधा था तो तो मुझ मानसिक शांति प्राप्त थी, लेकिन लेकिन दुबारा ज्योति पाकर मुझे कुछ नहीं मिला।' ज्ञान चद रुक रुककर बोल रहा था 'आप फिर चाहते हैं कि कि मैं मेरी नेत्र ज्योति कायम रहे, मगर क्यो?"

"इसलिए कि फुटबाल के श्रेष्ठ खिलाड़ी होने के कारण तुम देश और राज्य की पूजी हो और यह पूजी नष्ट नहीं होनी चाहिए। डॉ० भट्टाचार्य आवेशपूर्ण स्वर म बाल। इस बार फिर ज्ञान चद खामोश हो गया।

'मैं तुम्हें बता चुका हू कि मैं आखों के बैंक का मालिक हू।' डा० भट्टाचार्य ने कहा, मैं स्वय प्रयोग करता रहता हू कि एक व्यक्ति की आँखें दूसरे का लग सकती हैं या नहीं और लग जाने पर क्या क्या कर सकती हैं। अब तक मैं ऐसे कई सफल प्रयोग कर चुका हू। मेरे बैंक म रासायनिक विधियो स सुरक्षित की गयी आँखें कई कई महीना तक सही हालत म रह चुकी हैं। अब भी मेरे पास अच्छी आखो का काफी भडार है। मैं तुम्हें फिर परामर्श दूगा कि दुबारा अधे होन की बजाय मेरे बैंक से किसी शरीफ आदमी की आँखें लगवा लो, ताकि भविष्य के लिए इस मुसीबत से छुटकारा पा जाओ। मुझे

विश्वास है कि तुम्हारा आपरेशन सफल होगा।"

डॉ० भट्टाचार्य आखिर अपने प्रयत्न में सफल रहे। ज्ञान चंद ऑपरेशन कराने पर रजामंद हो गया।

उस दिन ज्ञान चंद की आंखों से पट्टी खोली जाने वाली थी। मैं डॉ० भट्टाचार्य के पास खड़ा हुआ था। हम दोनों के पास ही एक खूबसूरत नर्स मौजूद थी।

डॉ० भट्टाचार्य ने ज्ञान चंद की आंखों से पट्टी खोल दी। फिर उसे सम्बोधित किया, 'ज्ञान चंद! क्या तुम्हें नजर आ रहा है?"

ज्ञान चंद ने दो चार बार पलकें झपकायीं। फिर उसके चेहरे पर खुशी की लहर सी दौड़ गयी। वह स्वीकारात्मक अंदाज में जोर-जोर से सिर हिलाते हुए आवेशपूर्ण स्वर में बोला, 'हां हां डॉक्टर! मैं मैं सब कुछ देख सकता हूं मुझे मुझे सब सब कुछ नजर आ रहा है।'

क्या यह नर्स भी?" डा० भट्टाचार्य का स्वर अर्थपूर्ण था।

नर्स ज्ञान चंद की ओर देखकर मुस्कराने लगी। ज्ञान चंद ने उसे एक बार देखा और फिर डॉ० भट्टाचार्य की ओर देखते हुए बेहद उल्लासपूर्ण स्वर में कहा, 'य ये आंखें डाक्टर सचमुच किसी शरीफ आदमी की हैं। आपने आपने ठीक ही कहा था। ठीक ही कहा था।"

उसी दिन शाम को डॉ० भट्टाचार्य मेरे क्लीनिक में बैठे हुए थे और उनके होंठों पर बड़ी अर्थपूर्ण मुस्कराहट थी।

"तुम्हारा अंदाजा शत प्रतिशत सही निकला डॉक्टर।" मैंने डा० भट्टाचार्य से कहा।

"हां।' वह मुस्कराकर बोले, "मुझे विश्वास था कि ऐसा होगा, लेकिन अगर उसे सत्य का पता चल जाता तो हम हरगिज सफल न हो पाते।'

हां, मैं देख रहा था कि तुमने बेहोश करने से पहले कई बार वह मर्तबान दिखाया था जिसमें बकरे की आंखें थीं।" यह कहकर मैं हंस पड़ा।

उस समय डा० भट्टाचार्य ने सचमुच कमाल का अभिनय किया था। यों महसूस हो रहा था जैसे वह सचमुच ज्ञान चंद की आंखों का आपरेशन करने वाले थे।

डा० भट्टाचार्य ने मुझसे कहा था कि ज्ञान चंद की समस्या मनोवैज्ञानिक है और उसे मनोविज्ञान ही के प्रकाश में हल करना होगा। जब डा० भट्टाचार्य ने यह बात कही थी तो मुझे इस बात पर कुछ अधिक यकीन नहीं था, लेकिन उसने सचमुच समस्या हल कर दी थी।

डॉ० भट्टाचार्य ने ज्ञान चंद को यह यकीन दिलाया था कि आपरेशन करके उसकी आंखें बदल दी जायेंगी। यह ज्ञान चंद को ऑपरेशन थियेटर में ले गये थे। ज्ञान चंद को बेहोश भी किया था। उसकी आंखों पर बेहोशी के दौरान पट्टी भी बांधी थी मगर आपरेशन नहीं किया था और ज्ञान चंद बिना किसी आपरेशन के ठीक हो गया था। उसे यकीन हो चुका था कि उसकी आंखें बदली जा चुकी हैं, हालांकि आंख भी वही थी और देखनेवाला भी वही था।

क्रिकेट का वह अविस्मरणीय मैच

कीथ वाटसन

इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट मैचों का अपना अलग महत्व है, अपना अलग रंग है। कभी कभी तो इन मैचों को देखने के लिए इतनी ज्यादा भीड़ जमा हो जाती है जो टेस्ट मैचों में भी देखने को नहीं मिलती। कारण, ये मैच कभी-कभी टेस्ट मैचों से भी ज्यादा रोमांचक हो जाते हैं।

ऐसा ही एक रोमांचक काउंटी मैच 1922 को 14, 15 और 16 जून, को हैंपशायर और वार्विकशायर के बीच खेला गया। दोनों ही टीमें तगड़ी थी इसलिए किसी के लिए इस मैच के परिणाम का पूर्वानुमान करना बड़ा कठिन था। वैसे भी क्रिकेट का खेल अप्रत्याशित परिणामोंवाला खेल है, लेकिन इस अविस्मरणीय क्रिकेट मैच का जो परिणाम सामने आया, उसकी कल्पना तो सपने में भी नहीं की जा सकती थी।

हैंपशायर के कप्तान थे—टेनीसन और वार्विकशायर के कप्तान थे—कलथाप। बर्मिंघम के सुप्रसिद्ध क्रिकेट मैदान, एजबेस्टन के मैदान पर टास जीतकर टेनीसन ने अपने प्रतिद्वंद्वी कलथाप से बल्लेबाजी करने को कहा। उनके इस निश्चय पर सभी को आश्चर्य हुआ, क्योंकि 'पिच' मजबूत होने के अलावा, काफी तेज भी था, जिस पर मामूली से मामूली बल्लेबाज के लिए भी रन बनाना आसान था। कलथाप तो इतना चकित था कि उसने टेनीसन का निश्चय सुनकर उससे पूछा भी, "क्या मैंने ठीक सुना है? क्या आपने वाकई हमसे बल्लेबाजी करने को कहा है?"

"जी हां, अपने सलामी बल्लेबाजों से खेलने के लिए आने को कहिए।"

'लेकिन '

"अब इसमें लेकिन वेकिन की गुंजाइश कहां है? 'टास' जीतकर जो फैसला मुझे करना था, मैंने कर दिया।"

"अच्छी बात है, अगर आपका दिमाग ही खराब हो गया है तो मैं क्या कर सकता हूं?" कलथाप पवेलियन की तरफ चल दिए।

शुरू के तीन घंटे के खेल में वार्विकशायर ने 4 विकेट खोकर 166 रन बनाये। जिसमें कलथाप का योग 70 रनों का था। लेकिन, फिर उसके खिलाड़ी अपनी नादानी और लापरवाही से जल्दी जल्दी आउट होने लगे और पूरी की पूरी टीम 223 रनों पर

आउट हो गयी। कलथाप को इससे बहुत निराशा हुई क्योंकि वह कम से कम 450 रनों की आशा कर रहा था।

अब हैंपशायर की पारी शुरू हुई। मगर पारी कब शुरू हुई और कब खत्म हुई, कुछ पता ही न लगा। बल्लेबाजों के पूरी तरह अनुकूल 'पिच' पर हैंपशायर के बल्लेबाज आधा घंटे की बल्लेबाजी में कुल 15 रन बटोर सके और आउट हो गए। 'तू चल, मैं आया,' वाला नाटक हो रहा था। हैंपशायर के लिए सबसे ज्यादा शर्मनाक बात यह थी कि इन 15 रनों में से भी 4 रन तो 'अतिरिक्त' रन थे। सबसे ज्यादा रन 6—मीड नाम के बल्लेबाज ने बनाये थे।

कलथाप ने सहानुभूति व्यक्त करते हुए, टेनीसन से कहा, "मुझे बड़ा अफसोस है भाई साहब, आपके इस प्रदर्शन पर। मगर खुशी भी है कि अब मैं शुक्रवार 16 जून की सुबह को होने वाली घुड़दौड़ में जा सकूंगा।"

टेनीसन ने कहा, "भाईजान! आपके इस आशावाद पर मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि 16 जून की सुबह को आप हार से बचने की कोशिश में लगे होंगे।"

"आप कैसी बात कर रहे हैं।"

'मेरी बात पर आपको यकीन न होता हो तो शर्त लगा लीजिए, मेरी टीम ने मैच जीता तो आप मुझे पचास पौंड देंगे नहीं तो मैं आपको सौ पौंड दूंगा।

'यह शर्त मैं आसानी से जीत सकता हूं, लेकिन लगाऊंगा नहीं, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि आप सौ पौंड गवायें खैर, अभी तो 'फॉलोऑन' के लिए तैयार हो जाइए।"

'फॉलोआन' में पारी की हार से बचने के लिए हैंपशायर को 208 रनों की जरूरत थी। इस बार उसके बल्लेबाज कुछ जमकर खेले। फिर भी जब पहले दिन का खेल खत्म हुआ तो कुल 98 रनों पर वह अपने 3 खिलाड़ी आउट होते देख चुका था। हैंपशायर के कप्तान टेनीसन को छोड़कर सबको यह पूरी आशा थी कि मैच अगले दिन लंच तक खत्म हो जायेगा और हैंपशायर को एक पारी से हारने की शर्त ओढ़नी पड़ेगी। इसलिए जब दूसरे दिन का खेल शुरू हुआ तो मैदान में खिलाड़ी ज्यादा थे। दर्शक कम।

खेल शुरू होते ही जब हैंपशायर का सबसे अच्छा बल्लेबाज मीड जल्दी आउट हो गया तो हैंपशायर के खिलाड़ियों को भी लगने लगा कि अब अंत निश्चित और निकट है।

उधर, हैंपशायर के कप्तान टेनीसन ने आते ही गेंद की धुनाई शुरू कर दी थी। लेकिन दुर्भाग्य से वे ज्यादा देर तक नहीं टिक सके और जल्दी ही वापस पवेलियन लौट गये।

अब सिर्फ एक ही बल्लेबाज बचा था। बाकी खिलाड़ी सब गेंदबाज थे और जब सातवां खिलाड़ी आउट हुआ तब भी हैंपशायर को एक पारी की हार से बचने के लिए 18 रनों की जरूरत थी और सिर्फ ब्राउन और 3 गेंदबाज बल्लेबाजी के लिए शेष थे।

तभी, एक चमत्कार हुआ ऐसा चमत्कार जिसकी आशा या कल्पना सपने में भी संभव न थी।

आठवें विकेट की भागीदारी में ब्राउन और शर्ले ने 85 रन बनाये। इससे जहां पारी की हार का खतरा टला वहां हैंपशायर के दोष बल्लेबाजों के मन में एक नयी आशा का संचार भी हुआ। हैंपशायर की टीम अब वार्विकशायर से 66 रन आगे थी और उसके अंतिम दो खिलाड़ी आउट होने शेष थे।

नवें विकेट की भागीदारी में ब्राउन और लिवसी ने दो घंटे, बीस मिनट में 177 रन और जोड़े। उन्होंने लगभग हर गेंद पर रन बनाया और वार्विकशायर के गेंदबाजों को अपने आगे घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। उनकी गेंदों की ऐसी पिटाई पहले कभी नहीं हुई थी।

अंत में ब्राउन 172 रन बनाकर आउट हुआ मगर उसके लिए सिर्फ सब खिलाड़ियों और इन गिने दर्शकों ने ही तालियां बजायीं।

उधर ब्राउन के आउट होने पर लिवसी का जोश दुगुना हो गया। उसने दसवें विकेट की भागीदारी में 72 रन बनाते हुए अपने 110 रन पूरे किये। हैंपशायर की दूसरी पारी में, ब्राउन के बाद यह दूसरा शतक था। दूसरी पारी में हैंपशायर ने 512 रन बने और वह वार्विकशायर से 304 रन आगे था। वार्विकशायर को मैच जीतने के लिए एक इनिंग में 305 रन बनाने की जरूरत थी।

पहली पारी में सिर्फ 15 रन पर आउट हो जाने वाली कोई भी टीम आज तक दूसरी पारी में 500 से अधिक रन नहीं बना सकी है।

तीसरे और मैच के अंतिम दिन मैदान दर्शकों से खचाखच भरा था। हजारों दर्शक टिकट न मिलने की वजह से मैदान के बाहर खड़े थे। सब टेनीसन की उस बात को ध्यान में रखे हुए थे जो उसने कलथॉर्प से कही थी कि 16 जून की सुबह को आप हार से बचने की कोशिश में लगे होंगे। सबको मैच के रोमांचक और नाटकीय अंत की आशा थी।

खेल शुरू होते ही वार्विकशायर के खिलाड़ी एक एक करके तेजी से आउट होने लगे और सचमुच उन्हें हार से बचने के लिए जीतोड़ कोशिश करनी पड़ रही थी। लेकिन यह जीतोड़ कोशिश बेकार गयी और वार्विकशायर की सारी टीम अपनी दूसरी पारी में सिर्फ 158 रन बनाकर आउट हो गया।

इस प्रकार वह उस टीम से, जिसे उसने सिर्फ 15 रनों पर आउट किया था, 146 रनों से हार गयी।

बाजी

रावर्ट आथर

एक जुआरी था। साम। वह बचपन ही से जुए का आदी था। जो कुछ उसके हाथ लगता जुए की भेंट हो जाता। जुए को उसने पेशा ही बना लिया था। उसकी सारी कमाई जुए की जीत का नतीजा होती थी। जुआरी होने के बावजूद साम सदा ऐसी बाजियां खेलता था। जिनमें जीत की नब्बे प्रतिशत संभावनाएं हों। वह जीत के महत्त्व का बेहद कायल था।

शानन नामक एक सुंदर लड़की साम की प्रेमिका थी। उसे जुए से बेहद घृणा थी। वह चाहती थी कि साम जुआ खेलना छोड़ दे। शुरू में उसका खयाल था कि साम शायद उसका कहना मान जायगा। साम ने यह वायदा भी किया था। लेकिन वायदा निभा नहीं सका। बिना खेले उसे चैन नहीं आता था। जुए की स्थिति उसके लिए वही थी जो एक प्राणी के लिए भोजन की होती है। जिस प्रकार कोई प्राणी भोजन के बिना जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार साम को जुआ खेले बिना चैन नहीं मिल पाता था। परिणाम यह हुआ कि उसकी प्रेमिका ने एक शाम साम की दी हुई अंगूठी वापस कर दी।

एक शाम वह ताड़ के पेड़ों के पास एक झुरमुट के पास से गुजर रहा था, अचानक उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे पास के एक वृक्ष के तने से कोई परछाई अलग होकर उसके सामने साकार हो गयी हो। साम ने ठिठककर गौर से देखा। एक आदमी उसके सामने खड़ा था। उसकी वेषभूषा अच्छी खासी थी। सिर पर एक काली टोपी थी और होंठों पर एक आकर्षक मुस्कराहट। साम ने दिमाग पर जोर देकर उसे पहचानने का प्रयत्न किया। परछाई का इस प्रकार साकार हो जाना ही एक विस्मयकारी बात थी।

"मिस्टर साम!" वह बोला, "मैं शर्त लगाता हूं कि तुम मुझे पहचान नहीं पाये हो?"

साम उसे घूरता रहा। फिर अपनी बुद्धि पर भरोसा करते हुए उसने दृढ़ स्वर में कहा, "मेरी जेब में इस समय सौ डालर हैं तुम उन्हें दांव पर लगा हुआ ही समझो। मैं बता सकता हूं कि तुम कौन हो।"

"स्वीकार है!" सम्बोधक ने विश्वास से कहा।

"मेरा खयाल है, तुम शैतान हो।" साम बिना हिचक के बोला।

साम की बुद्धि ने गलती नही की थी। वह व्यक्ति वास्तव मे शैतान था। कुछ समय से शैतान साम के चर्चे सुन रहा था और चूंकि वह स्वय भी एक जुआरी था। आज वह साम की शक्तियो को परखने आ गया था। उसके चेहरे पर साम के उत्तर से क्रोध की लहर पदा हुई। साम पहली ही बाजी जीत गया था। कुछ विराम के बाद शैतान ने कहा, 'हो सकता है कि मैं शैतान ही होऊ। उस अवस्था मे तुम्हारे सौ डालर मेरे जिम्मे रहे लेकिन मेरे पास कुछ रुपये और भी है।" उसने अपनी जेब से एक मोटा बटुआ निकाला, "यह सारे रुपये तुम्हारे हो सकते हैं, अगर तुम मेरा शैतान होना साबित कर दो।"

शैतान ने यह शर्त पहले भी कई लोगो के सामने रखी थी और लगभग सब हार गये थे। लेकिन साम तो दूसरी ही तरह का व्यक्ति था, 'मैं इस बैंत से तुम पर वार करूंगा। अगर तुम एक साधारण आदमी हुए तो मार खा लोगे और अगर तुम सचमुच शैतान हो तो मार नही खाओगे। मुझे पता है कि शैतान कभी एक नश्वर मनुष्य के हाथो मार खाना पसद नही करेगा।"

साम ने उस पर बैंत की एक जोरदार चोट लगायी। परिणाम वही हुआ। बैंत सीधा पेड से टकराया। शैतान क्रोध से कई फुट उछल गया था। उसके शरीर से सलफर की गध फूटने लगी थी। उसने चीखकर बहुत कटु स्वर मे कहा बस, बस तुम जीत गये मिस्टर। लेकिन अभी एक शर्त और बाकी है।" साम ने सुना था कि शैतान जब भी किसी मनुष्य के पास जाता है उस मनुष्य को शैतान से कम-से-कम तीन शर्तें जीतनी पडती हैं। तभी उसका छुटकारा सम्भव होता है। शैतान ने कहा 'इस बार मैं एक बडी बाजी खेलूगा। साम एकाग्रचित हो गया था। शैतान बोला, मैं शर्त लगाता हू कि तुम इस बार नही जीत सकते लेकिन याद रखो। तुम्हे जीतने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि अगर तुम हार गये तो तुम्हारे प्राण मेरे कब्जे मे होंगे।' साम के सामने बचाव का कोई रास्ता नही था। बाजी उसे वहरहाल खेलनी ही थी।

"स्वीकार है।" उसने कहा, लेकिन इस बार शर्त मैं लगाऊगा। पहली और दूसरी शर्त तुमने लगाई थी।"

शैतान दुविधा मे पड गया, लेकिन साम की बात उसे माननी पडी, ठीक है।"

"मैं शर्त लगाता हू।" साम ने मुस्कराकर शैतान को देखा, 'तुम यह नही चाहते कि मैं इस बार भी सफल रहू।"

शैतान ने उद्विग्न होकर एक ऊंची छलाग लगायी और हवा मे लटक गया। उसके मुख से शोले निकलने लगे। साम ने उसके दिल की बात कह दी और शैतान यह शर्त भी हार गया था। लटके लटके हुए वह गरजा, 'आज की रात बहुत खराब अदाज मे शुरू हुई है, मिस्टर साम कान खोलकर सुन लो। आज के बाद तुम किसी से कोई शर्त नही जीत सकोगे। यह मेरा दावा है। मेरी शैतानी शक्तियां तुम्हारी जीत के लिए सदा दीवार बनी रहेगी।" यह कहकर साम की नजरो से वह ओझल हो गया।

अगले दिन वह रेसकोर्स पहुचा। शर्त लगाने के लिए उसे बहुत अधिक सोचना पडा। न

जान क्या बात थी। उसका अंतःकरण उसे उत्साहित नहीं कर रहा था। घोड़ा के चुनाव म उसे खासी कठिनाई पेश आयी।

रेस शुरू हो गयी। वह तन्मयता से रेस देखने लगा। कुछ ही क्षण बाद उसका चुना हुआ घोड़ा अन्य घोडा से दस गज आगे निकल गया। साम न निश्चिंतता की सांस ली। लेकिन फिर सहसा एक अजीब बात हुई। उसका घोडा जीतन के निशान से दस गज पहले लडखडाया उसकी गति सुस्त हो गयी और एक दूसरा घोडा उसमे बाजी ल गया। साम न अपना टिकट नोचकर हवा म बिखेर दिया।

लेकिन अभी वह निराश नहीं हुआ था। अभी छह रेसें बाकी थी और उसकी जेब म खासे रुपये मौजूद थ। दूसरी रेस म भी उसका घोडा आगे था, पर न जान कैसे एकदम उसकी लगाम टूट गयी। वह हार गया।

तीसरी चौथी और पाचवी रेसा के परिणाम भी अच्छे नहीं रहे।

छठी रेस शुरू होने स पूव साम सोचता रहा। उसकी जेब बेहद हल्की हो गयी थी। बाकी रुपय का उपयोग वह बहुत सावधानी से करना चाहता था। उसन कोई टिकट नही लिया। टिकट लेन क बजाय उसन अपन एक मित्र को ढूढा। उस मित्र स साम की नोक झोक रहती थी। रेस शुरू हुई तो साम उसी के पास खडा हो गया। घोडे झुड के रूप म पोल की ओर बढ रह थ। लगभग छह घोडे बाकी घोडा स तनिक आगे थ। साम न अपन मित्र स कहा, 'सुनो मैं एक डालर के बदले दस डालर दाव पर लगाता हू। सात नम्बर घोडा नही जीत सकता।'

साम के मित्र न अति विस्मय स उसकी ओर देखा। सात नम्बर घोडा खास पीछे था। उसके जीतन की तो सिरे से कोई सम्भावना ही नहीं थी। साम ने अपने मित्र को दुविधा म देखकर कहा 'अरे सोचत क्या हो, बोलो ? अब मैं दस क बजाय बीस डालर लगाता हू।

उसके मित्र को भला क्या आपत्ति हो सकती थी। उसने कहा स्वीकार है!" अभी उसके मुख स यह शब्द निकले ही थे कि सात नम्बर घोडे को मानो पख लग गये। वह विनिंग पोस्ट पर पहुचाने वाला अगला घोडा था।

साम न निश्चित होकर सिर हिलाया।

यह बात साबित हो गयी थी कि शैतान अब साम को किसी भी शर्त म सफल देखना नही चाहता। यद्यपि साम के सामन सफलता का कोई रास्ता नही था फिर भी अभी तक उसने जुआ छोडने की बात नहीं सोची थी। इसी कोशिश म रहा कि किसी तरह जीत सके लेकिन हारता ही रहा।

साम अपनी चिंताओ म बुरी तरह ग्रस्त था। उसकी जेबें खाली हो रही थी। साधन खत्म हो रहे थे। उसका बैंक एकाउंट शून्य पर था। शानन न भी उसस मिलना बिलकुल बद कर दिया था।

वह एक चाय घर मे गया। संयोगवश वहा उसे शानन का एक सम्बन्धी मिल गया। उसका नाम टाम था। टाम ने उसे बताया कि शानन ने जबसे उससे सम्बन्ध विच्छेद

कर लिया है, बेहद उदास रहने लगी है। यह बात साम के लिए बहुत आशाजनक थी। उसने सोचा सम्भव है, अगर मैं दुबारा प्रयत्न करूं तो शानन मुझे स्वीकार कर ही ले। अपना यह विचार उसने टाम पर प्रकट कर दिया। टाम ने गरदन हिलाकर कहा "मुश्किल है। तुम जब तक जुआ खेलना बंद नहीं करोगे। वह नहीं मानेगी।"

"अगर उसे यह मालूम हो जाये कि अब मैं किसी शर्त में सफल नहीं होता हूं, क्या वह फिर भी नहीं मानेगी?"

"यहां सफलता और असफलता का क्या प्रश्न? जुआ तो जुआ है।' टाम ने गरदन हिलाकर उत्तर दिया, "पर छोड़ो ये बातें। बाहर वर्षा हो रही है। तुम्हारा क्या खयाल है वह वर्षा कब तक रहेगी?

"दिन भर रहेगी", साम ने अरुचि से कहा "और रात को भी इससे छुटकारा नहीं होगा। सुबह तक जारी रहेगी। मैं जो कुछ कह रहा हूं सही कर रहा हूं, लेकिन टाम। अगर मैं चाहूं तो वर्षा केवल पांच मिनट में रोक सकता हूं।'

टाम को हंसी आ गयी।' क्या सचमुच? जरा मैं भी तो देखूं।"

'फिर ऐसा करो कि मेरे साथ एक बाजी लगा लो। एक डालर की बाजी। तुम यह शर्त लगाना कि वर्षा पांच मिनट में रुक जायगी। मैं कहूंगा कि नहीं यह वर्षा अभी रुकने वाली नहीं है। 'टाम पलकें झपकाने लगा। साम बोला, मेरे मित्र। मुझे ध्यान है कि मैं शर्त हार जाऊंगा और मेरे लिए जरूरी होगा कि तुम्हें एक डालर चुकाऊं इस लिए मुझे खाना खिलाने का खर्च तुम बर्दाश्त करना।'

टाम ने केवल विस्मय दूर करने के लिए शर्त लगा ली। शर्त का परिणाम वही हुआ, जो साम ने कह दिया था। केवल पांच मिनट में बादल अचानक छंट गये और सूर्य तमतमाने लगा।

टाम ने अति विस्मय से साम की ओर देखा, अरे साम! यह तो बहुत अजीब बात है।" उसके मुंह पर हवाइयां उड़ रही थीं 'यह तो कमाल है साम! अगर केवल तुम्हारी इच्छा के अनुसार हर बार ऐसा हो सकता तो यकीन करो तुम हजारों डालर कमा सकते हो?'

साम चौंका 'क्या कहा? क्या ऐसा हो सकता है?'

'साम!" टाम ने भावुक स्वर में कहा 'इस रविवार को लायसंस की सेंट पट्रिक परेड होने वाली है। मान लो, लायलंस वाले तुमसे यह कहते हैं कि तुम अच्छे मौसम की जमानत दो। जमानत पूरी होने पर तुम्हें बीस डालर चुका दिये जायेंगे, लेकिन अगर जमानत पूरी न हुई अर्थात मौसम अच्छा न रहा तो तुम दो सौ डालर चुकाओगे तुम्हारे भाग्य से मौसम अच्छा रहा तो तुम्हारे बीस डालर कहीं नहीं गये।

बहुत अच्छी तजवीज है तुम्हारी।" साम ने प्रभावित होकर कहा क्या इस प्रकार का बीमा सचमुच हो सकता है?"

'बीमा न कहो मित्र! हजारों का व्यवसाय कहो।'

'यह तो बहुत अच्छी बात है।' साम खड़ा हो गया टाम! तुम आज मेरे भागीदार हो।' उसने जेब से बीस डालर निकाले, लो, इस रकम से मेरे लिए किसी

दफ्तर की व्यवस्था कर दो। दफ्तर के दरवाजे पर साम बीमा कम्पनी का बोर्ड लगवा देना।" कुछ विराम स उसन कहा, "लो। यह एक डालर लो। मैं शत लगाता हू कि मैं अभी शानन क पास जाऊगा। वह मुझे दुत्कार देगी।"

साम और शानन की शादी हो चुकी है। बीमा कम्पनी खूब चल रही है। वह अब लखपति हो गया है। टाम उसका भागीदार उसका एकमात्र भेदी है। साम उसके साथ मिलकर शैतान का निरतर पराजय दे रहा है।

उन दोनो के बीच स्वस्थ, सुखदायक जीवन और सम्पन्नता आदि के बारे मे निरतर शर्तें लगती हैं और स्पष्ट है कि साम हार जाता है, क्योकि शैतान अपना दावा बहरहाल ऊपर ही रखना चाहता है।

कोई वष भर पहले साम और टाम के बीच एक शत लगी थी। साम कहता था "इस वष मरे यहा लडकी होगी। न हुई तो मैं तुम्हे दस हजार डालर दूगा।'

टाम ने कहा 'मैं कहता हू, तुम्हारे यहा लडका होगा।"

साम शत हार चुका है। उसके यहा लडका हुआ है। अब उनके बीच लडकी के सिलसिले म एक शत लगी हुई है।

लालो से लाखो

—स्टीव डगलस

कुल चौदह मिनट रह गये थ, रियो द जेनेरा के स्टेडियम म 19 नवम्बर, 1969 का वास्को द गामा और सतोस टीमा के बीच हो रहे मैच को खत्म होने म 75,000 स भी अधिक दशक बचैन थे क्या पले इस मैच म अपनी जिदगी का 1000 वा गोल कर पायगा ?

सबसे ज्यादा बेचन था, खुद पेले, फुटबाल का 'न भूतो, न भविष्यति' अन्यतम खिलाडी। वह काफी घबराया हुआ लगता था।

अभी तक किसी भी टीम ने कोई गोल नही किया था। सारा ब्राजील रेडियो पर इस मच का आखो देखा हाल सुन रहा था। ब्राजील के लोग फुटबाल के दीवान हैं और उनका सबसे प्रिय खिलाडी था—पेले, जो क्रीडा जगत म ब्राजील और फुटबाल दोना का पर्यायवाची बन गया है।

मैच के अतिम दस मिनटा मे अचानक किसी विपक्षी खिलाडी न पेले क खिलाफ 'फाउल' किया। साधारणतया, 'फाउल' की पेनल्टी सतोस टीम का रिल्दो नाम का खिलाडी लेता था, लेकिन इस अवसर पर उसके 'पनल्टी' लेन का सवाल ही नही उठता था।

पेले ने गेंद को ठीक जगह पर रखा धीरे धीरे पीछे गया, मुडा, और गेंद का 'हिट' करने के इरादे से आग बढा। उसन दो बार गेंद को 'हिट' करने का बहाना किया और फिर तीसरी बार गेंद को काफी नीचे स 'नट' म पहुचा दिया।

विपक्षी टीम के गोल कीपर अद्राद ने यह देखन की भी तकलीफ नही की कि गेंद कहा जा रही है। ना ही उसने गेंद को रोकन की कोशिश की। वह एसा करके सारे ब्राजील का कोप अपने सर नही लेना चाहता था।

गाल होते ही भगदड मच गयी। लोग मैदान म उतर आये। वे अन्य खिलाडिया पत्रकारा और टलीविजन प्रतिनिधियो क साथ, पल के पास पहुचना चाहत थे। सारे स्टडियम म छूटती आतिशबाजिया की वजह स लोगों के कान बहरे होत जा रह थ।

खेल बीच म ही रुक गया।

पल को मायक्रोफोन के सामन खडा कर दिया गया। एक अत्यत निधन परिवार मे जन्म पले न बडी सादगी क साथ कहा, "यह गाल करने वक्त मेर दिमाग म दुनिया

भर के निधन बच्चे थे ऐसे बच्चे जिनके बारे मे कभी कोई कुछ नही सोचता । उन अधे और बहरे बच्चा के बारे म जिनक पास कुछ नही है और जिनकी मदद मैं बडे दिन के अवसर पर करना चाहता हू ।'

पेले की हैसियत आज दस लाख डालर से अधिक की है। लेकिन वह अपनी आमदनी का अधिकाश भाग निधन और जरूरतमद बच्चो पर खच करता है। कारण, वह आज तक अपने निपट गरीबी वाले उस बचपन को भूला नही है जब उसे पेट पालने के लिए मूगफलियो को चुरा चुराकर बचना पडता था।

दशको क अपनी सीटो पर वापस पहुच जान के बाद खेल फिर शुरू हुआ पर पेले न उसम भाग नही लिया।

बाद म उसे 4 पौड वजन वाली सोन की फुटबाल भेट म दी गयी। ब्राजील क डाक विभाग न उस विशेप टिकट की बीस लाख प्रतिया जारी की, जिसम पेले को 1000वा गोल करत दिखाया गया था।

फुटबाल का शौक पेले को बचपन स ही था, लकिन उसकी प्रतिभा को पहचानन का श्रेत ब्राजील क भूतपूव प्रख्यात खिलाडी वाल्देयार द ब्रिता का है, जिन्होन 10 11 साल के पेल को धूल भरी सडको पर फुटबाल खेलते देखकर ही जान लिया था कि वह आग चलकर, फुटबाल का चोटी का खिलाडी बनगा। ब्रितो की सिफारिश पर ही, पल न सिफ पद्रह साल की उम्र म सतास टीम की आर से खेलना शुरू किया था।

पले की वजह से ही ब्राजील को 1958 और 1962 की विश्व कप प्रतियोगिताओ म विजेता पद मिला था। 1966 म ब्राजील विश्व कप प्रतियोगिता म सिफ इसलिए हारा कि अन्य टीमो के खिलाडी पले का घेरकर उस घायल करते रहते थ। विरोधी टीमा की इन बेजा हरकता और ब्राजील के हार जान स पेल का इतना दु ख हुआ कि वह मदान म ही रोन लगा था।

1958 की विश्व कप प्रतियोगिता के बाद, जब ब्राजील म यह अफवाह फली कि स्पेन का एक क्लब पले का ज्यादा फीस का लालच देकर स्पेन ले जाना चाहता है तो लाखो लागो न सतोस क्लब का चारो तरफ से घेर लिया ताकि पेले का अपहरण न हो सके। एक अन्य अवसर पर, स्वय ब्राजील के प्रेसीडेंट को हस्तक्षेप करके पेल का अपहरण रुकवाना पडा था।

सच कहा था एक क्रीडा समीक्षक ने, 'फुटबाल मे जो सर्वोत्तम है वह ब्राजील के पास है और ब्राजील की फुटबाल मे जा सर्वोत्तम है वह पेले के पास है ।

मुक्केबाजी और मैं

जॉन ओ'हारा

काफी दबाव है मुझ पर कि मैं मुक्कबाजी के बारे म कुछ कहू। इस दबाव को अपने ऊपर से हटाने के लिए लीजिए मैं कुछ कह ही देता हू मुक्केबाजी के बारे म।

कुछ कहने से पूर्व यह बताना जरूरी है कि मैं मुक्केबाजी के बारे म कुछ कहने योग्य हू भी या नही? योग्यता तो मुझम अवश्य है। पर शायद आप उसे संदिग्ध मान। तो भी उसके बारे म सुन लेने म हर्ज ही क्या है?

मेरे पिता का शोफर एक नीग्रो था—आर्थर वुडवर्ड अच्छा शोफर होने के अलावा वह एक अच्छा मुक्केबाज भी था। पाच से दस साल तक की उम्र मे मैंने मुक्कबाजी के आरम्भिक पाठ उसी से सीखे पर मुसीबत यह थी कि इन पाठो को मैं अपने साथियो से मुक्केबाजी करते समय बिल्कुल भूल जाता था।

जब मैंने पत्रकारिता के क्षेत्र म प्रवेश किया तो पहले मुझसे मुक्कबाजी की प्रतियोगिताओ की रिपोटिंग करने को ही कहा गया। रिपोटिंग तो खैर मैंने की। मगर जहा तक उसके स्तर का प्रश्न है। आम राय यह थी कि मुक्कबाजी की रिपोटिंग का स्तर इसस नीचे, शायद नही जा सकता।

आगे चलकर मुझे जो लुई। हेनरी आमस्ट्राग जैसे नामी मुक्कबाजो के प्रदशन देखने को मिले लेकिन जिस मुक्कबाजी चैपियनशिप की याद मुझे आज तक है उसम यह तो याद नही कि लुई का मुकाबला किस मुक्कबाज के साथ हुआ था और उसका नतीजा क्या रहा था। मगर इतना अच्छी तरह याद है कि मैंने वह मुकाबला खूबसूरत अभिनेत्री बकहैड के साथ देखा था।

एक और मुकाबले की भी याद है मुझे। इसम लुई का मुकाबला मलिग के साथ हुआ था। कौन जीतगा। इसको लेकर मेरी एक फिल्म डायरेक्टर स 1000 डालर की और एक फिल्म-समीक्षक से 500 डालर की शर्त हुई थी। दोनो ही शर्ते मैंने जीती, मगर अफसोस, इन दोनो महानुभावो से जीती हुई रकम आज तक वसूल नही कर पाया

मुक्कबाजो म स एक ही था। जिसका नाम मैं मित्र के रूप म ले सकता हू मगर खुदा शांति दे उसकी आत्मा को जसे ही वह धोखेबाजी के आरोप म हुई सजा काटकर जेल स निकला, खुदा का प्यारा हो गया। हायम के प्लिक नाम था बेचारे का।

आखिरी मुक्कबाज, जिसके साथ मैंने हकबक बातें की थी। रॉकी मासियानो था,

जिसके साथ मेरा परिचय अभिनेता हम्फी बोगार्ट ने करवाया था। भला मानुस था मासियाना। लेकिन 1956 म बोगार्ट के मरने के बाद न मैंने उमसे मिलन की कोशिश की न उसने मुझसे।

दरअसल, हकीकत यह है कि मुक्केबाजी म मेरी कोई दिलचस्पी नही है। यदि मेरे घर के पास भी विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता हो, तो भी मैं दस डॉलर टिकट के खर्च करके उसे देखने नही जाऊंगा। शायद टेलीविजन पर उसे देख लू, मगर वह भी तब, जब उस समय टेलीविजन पर मेरा कोई मनपसद कार्यक्रम न हो रहा हो।

आप शायद पूछे कि मेरी दिलचस्पी न होने की क्या वजह हो सकती है ? तो इसका जवाब यह है कि मुझे पूरा यकीन हो गया है कि मुक्केबाजी की अधिकाश प्रतियोगिताए कूट योजनाओ पर आधारित होती हैं और उनमे सच्चे मुकाबले की आशा करना बेकार है।

और यह खयाल सिर्फ मेरा ही नही आज की पूरी पीढ़ी का है। कोई भी मुक्केबाजी प्रतियोगिताओ को गम्भीरता से नही लेता।

कुछ समय पहले यह जबरदस्त माग उठी थी कि मुक्केबाजी प्रतियोगिताओ म होने वाली धोखाधड़ी की जाच की जाये। कल लिस्टन मुकाबले के 36 घटे बाद ही अमरीका के विभिन्न स्थानो से लोगो ने इस माग को उठाया था।

मेरा खयाल है कि सरकार को इन प्रतियोगिताओ को बिलकुल समाप्त नही करना चाहिए बल्कि उन पर कड़ी देखभाल रखकर उन्हे धोखाधड़िया से मुक्त रखना चाहिए। जिस प्रकार प्योर फूड्स एड ड्रग्स कानून के अतगत सरकार पर जनता को शुद्ध खाद्यपदार्थ और दवाओ को मुहैया कराने की जिम्मेवारी है, उसी प्रकार उस पर यह जिम्मेवारी भी है कि अन्य खेल प्रतियोगिताओ की भाति मुक्केबाजी की प्रतियोगिताए भी प्रामाणिक और खरी हो।

यदि मुक्केबाज मुक्केबाजी की प्रतियोगिताए चाहते है तो उनकी और मुक्केबाजी के शौकीनो की खातिर ऐसी प्रतियोगिताए होती रहनी चाहिए। यदि ये प्रतियोगिताए पूर्व निश्चित होती हैं या उनके आयोजन म कही कोई गड़बड़ी होनी है तो उनकी व्यवस्था करने वाले, उनमे भाग लेने वाले, और उन्हे देखने वाले अपने आप उनसे ऊब जायेगे और उन्हे कोई नही देखेगा, न रिंग के टिकट खरीदकर और न मुफ्त टेलीविजन पर। एक न एक दिन ऐसा दिन आयेगा जरूर।

लेकिन मुसीबत यह है कि ऐसा कम्बख्त दिन शायद जल्दी नही आयगा। यह जानते हुए भी कि उन्हे असली और सच्चा मुकाबला देखने को नही मिलेगा और सिर्फ पूर्व निश्चित परिणाम ही देखने को मिलेंगे लाखो की सख्या मे लोग इन मुकाबलो को देखने जाते हैं, ऊची ऊची कीमतें देकर टेलीविजन स्टेशन उनके प्रदर्शन के अधिकार प्राप्त करते हैं और इन मुकाबलो के व्यवस्थापक लाखो डालर का मुनाफा कमाते है। तो जब तक इन नकली और झूठे मुकाबलो से डॉलर मिलते रहेंगे, वे चलते रहेंगे।

और यदि मुक्केबाजी के मुकाबले प्रामाणिक हो जायें तो वे देखनेवालों को या तो बड़े नीरस लगेंगे या बहुत अधिक भयानक। कारण मुक्केबाज या तो रक्षा पर जोर

देगे या आक्रमण पर।

आदिकाल से मानव मानव से जूझता चला आया है। और जब दो मानव एक दूसरे से जूझते हैं तो दोनों अपने प्रतिद्वंद्वी को जान से मारने का प्रयास करते हैं। मुक्केबाजी की क्रीडा का जन्म मानव की इसी संघर्ष भावना से हुआ है। नकली मुक्केबाजी में एक लाभ यह है कि दोनों मुक्केबाज एक दूसरे को खत्म करने का अभिनय ही करके रह जाते हैं, वास्तव में अपने प्रतिद्वंद्वी को खत्म नहीं करते।

सबसे बडा पहलवान

नियाज कुरैशी

यह कहानी उन दिनो की है जब हिंदुस्तान पर अंग्रेजो की हुकूमत थी।

दिल्ली म कुश्ती के कुछ शौकीनो न एक अखिल भारतीय कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन किया। चैंपियन पहलवान को 25,000 रुपये के इनाम का ऐलान किया गया। यह रकम आज के लाख रुपयो के बराबर होती है।

हिंदुस्तान मे उन दिनो दजनो अच्छे पहलवान थे जो कई कुश्ती प्रतियोगिताओ मे कामयाबी हासिल करके शोहरत कमा चुके थे। फिर भी, सबका यही खयाल था कि 25,000 रुपये का यह इनाम कालू खा को ही मिलेगा, क्योकि उन दिनो व पूरी फाम' मे थे। पिछले एक साल के दौरान, व मुल्क के बडे से बडे पहलवानो को चित करके दिखा चुके थे।

कालू खा के 'गाडफादर' थे, पजाब की एक रियासत के महाराजा, जिनके सरक्षण म रहकर वह रोज कुश्ती का अभ्यास करता था। उसका गठा हुआ फौलादी जिस्म देखते ही बनता था। उसकी छाती 54 इच और भुजाए 30 इच की थी। उसकी खुराक भी उसक जिस्म की तरह पहाड जसी थी। वह रोज 25 सेर दूध, आधा सेर घी, आधा सेर मक्खन, 2 सेर बादाम और 5 सर फल लेता था। रियाज के तौर पर चार चार हजार दड बैठकें निकालता था। 10 सेर की कुदाल से अखाडा खोदता था।

प्रतियोगिता के बारे म सुनकर महाराजा ने कालू खा को अपने एक ए० डी० सी० के साथ दिल्ली के लिए रवाना किया। ए० डी० सी० को खास हिदायत थी कि रास्ते मे और दिल्ली मे कालू खा को किसी किस्म की तक्लीफ न हो।

कालू खा ए० डी० सी० के साथ कार म दिल्ली के लिए रवाना हुए। पजाब और दिल्ली की सीमा के निकट एक छोटी सी रियासत थी। कार जब रियासत मे दाखिल हुई, तो कालू खा ने कार रुकवा ली क्योकि उसे इस रियासत की एक दूकान की लस्सी बहुत पसद थी। दूकान के बाहर कार के रुकते ही कालू खा कार से बाहर आकर और लस्सी के आधा दजन बडे गिलासो का आडर देकर दूकान के बाहर रखे एक मुढ्डे पर बैठ गया।

बातो बातो मे उसने दूकानदार स रियासत के राजा का नाम पूछा। नाम मालूम पडने पर वह उस राजा की हसी उडाने लगा और अपनी रियासत के महाराजा की

तारीफ करने लगा।

दूकानदार को अपने राजा की हसी सुनकर बुरा तो लगा, लेकिन उसकी हिम्मत न हुई कि मुल्क के सबसे बडे पहलवान कालू खा को चुनौती दे।

लेकिन उसके पास बैठे एक आदमी से नही रहा गया। उसने बडी खामोश और सजीदगी क साथ कालू खा को याद दिलाया कि इस वक्त वह न अपनी रियासत म है, न अग्रजो के किसी इलाके म। और वह कितना भी बडा और नामी पहलवान क्यो न हो, उसे इस रियासत की धरती पर खडे होकर उसके राजा का मजाक उडाने कोई अधिकार नही है।

कालू खा उस आदमी की यह बात सुनकर जोर से हसा फिर उसने उस आदमी और रियासत के राजा को एक भद्दी गाली दी।

गाली को सुनते ही, उस आदमी न कालू खा का हाथ पकडकर, उसम हथकडी डाल दी। फिर उसने दूकान क बाहर बठे दो सिपाहियो स कालू खा को जल म ले चलने का हुक्म दिया। कालू खा ने इस आदमी क हाथ से अपना हाथ छुडाने की बहुत कोशिश की लेकिन वह उस आदमी ने, जो उम्र म कालू खा म दुगुना और जिस्म म आधा था उसका हाथ अपनी जकड से मुक्त नही होने दिया, वह कालू खा का खीचता हुआ थान की तरफ ले जान लगा।

ए० सी० डी० ने उस आदमी से पूछा, जानते हो जिसके हाथो म हथकडी डालन की जुरत तुमने की है वह कौन है?

यह कोई भी हो, लेकिन रियासत का दरोगा होन क नात मुझ इस गुनाहगार को पकडन का पूरा हक है।"

जानते हो इसका नतीजा क्या होगा?'

'क्या आप मुझ धमकी दने की कोशिश कर रहे हैं?'

ए० डी० सी० को पता चल गया कि इस आदमी को डराने धमकाने से कोई फायदा न होगा। उसने खुशामत करते हुए कहा माफ कीजिए, दारोगा साहब, कालू खा से वाकई बडी भारी गलती हो गई है। लकिन महरबानी करके अब इस छोड दीजिए। इस दिल्ली जाकर एक कुश्ती प्रयोगिता म भाग लेना है।'

'इसे छोडने का काम मेरा नही, अदालत का है।

'यह आप क्या गजब कर रहे हैं दारोगा साहब। एक मामूली से जुम के लिए आप हिंदुस्तान के सबस बडे पहलवान को पच्चीस हजार का इनाम जीतन से नही रोक सकत।'

दारोगा ने आचाय से ए० डी० सी० की तरफ दखा। फिर जमीन पर थूकत हुए कहा "यह जुम आपकी नजर म मामूली हो सकता है लकिन मेरी नजर म यह एक भारी जुम ह।'

"आपकी रियासत के अग्रेज एजेंट को जब इस वाकिए का पता चलेगा तो जरूर आपसे नाराज होंगे, मैं यकीन के साथ कह सकता हू।

'मैं इतना आग की नही सोचता। सोचन की जरूरत भी नही है। इसलिए नहीं कि मैं कोई गलत काम नही कर रहा हू। गुनहगार को गिरफ्तार करना मरा फर्ज है।

ए० डी० सी ने फौरन अपने महाराजा को फोन किया। महाराजा ने फौरन अंग्रेज एजेंट को। एजेंट ने उस रियासत के राजा को। राजा ने फौरन दारोगा को बुला भेजा।

राजा के यह पूछने पर कि मामला क्या है, दारोगा ने सिर झुका कर अर्ज किया, "गुस्ताखी की माफी चाहता हूं अन्नदाता! मुझे नहीं मालूम कि ये दोनों आदमी—यह पहलवान और उसका हिमायती—कौन हैं। मैं तो सिर्फ यह जानता हूं कि मुजरिम पहलवान ने बिना किसी वजह के आपका मजाक उड़ाकर और आपको गाली देकर एक संगीन जुर्म किया, और वह भी मेरी आंखों के सामने। इसी वजह से मुझे मुजरिम को गिरफ्तार करना पड़ा। मैंने हकीकत आपके सामने बयान कर दी, अब आप जैसा हुक्म दें, मैं करने को तैयार हूं।"

राजा दारोगा का बयान सुनकर मुस्कराये। फिर शांत स्वर में बोले "लेकिन *आपको यह सोचना चाहिए था, दारोगा साहब कि आप कालू खां को पकड़कर,* उसे पच्चीस हजार रुपये जीतने के मौके से महरूम कर रहे थे। कुश्ती प्रतियोगिता में कालू खां का पहले नम्बर पर आना तय सा ही है।"

अब दारोगा साहब भी मुस्कराये और बोले, "हुजूर, जब कालू खां मेरे जैसे बूढ़े और पिद्दी आदमी से अपना हाथ न छुड़ा पाये तो अखाड़े में क्या कमाल दिखा पाते। कोई भी इन्हें पछाड़ देता।"

मेरी कमाई की रकम

वड शुलवर्ग

हेवीवेट मुक्केबाजी की प्राय हर प्रतियोगिता पूव निर्धारित होती है, और इस कारण नकली
और झूठी होती है। कुछ दिन बाद स्टीन और टोरो के बीच होने वाला मुकाबला भी
पूव निर्धारित और झूठा मुकाबला ही था, लेकिन इस मुकाबले म टाग के खिलाफ स्टीन
पर दाव लगाने वाले निक न जो वास्तव म टोरो का ही प्रोमोटर' था और कायदे से
उस टोरो पर ही दाव लगाना चाहिए था, यह प्रचार करवाकर कि पहल एक मुकावल म
टोरो की वजह से लिन नामक मुक्कवाज को जान स हाथ धोना पडा था। इस मुकावले क
प्रति लोगा का आकपण बहुत बढा दिया था। हालत यह थी कि इस मुकाबल की घोषणा
होते ही उसक सारे टिकट दा दिन के अन्दर ही बिक गये थ।

स्टीन और टोरो दाना ही हिंसक और हर कीमत पर जीतन को तत्पर हैवीवट मुक्क
बाज थ और विश्व म अपनी श्रणी के चोटी के मुक्कवाज थ। इसलिए उनक मुकाबल का
धुआधार प्रचार इस सदी का सबसे रोमाचक मुकाबला कहकर किया गया था। दत्य
सरीखे टोरो क मुह स यह भी कहलवाया गया था कि स्टीन क रूप म मुझे पहली बार
ऐसा प्रतिद्वद्वी मिला है जिसे हराने म मुझे एडी-चोटी का पूरा जोर लगा दना हागा।'

मैं एक पत्रकार तो था ही, निक का अपना खास आदमी भी था। दाना ही हैसि
यता से मैं भी इस मुकावले के धुआधार प्रचार म लगा था।

उस दिन सुबह जब घटी बजी तो मैं बिस्तर पर पडा-पडा यह अनुमान लगा
रहा था कि निक इस मुकावले के द्वारा, स्टीन पर दाव लगाकर और अपन पूव निश्चय
के अनुसार टोरो को हरवाकर कितन हजार डालर कमा लेगा और इस कमाइ म खुद
मेरा हिस्सा कितना होगा ?

फर्नांडो फोन पर कह रहा था मई फौरन चले आओ। टारो न अभी-अभी
अपना अनुबध-पत्र पढ़कर पूरा किया है जिसकी एक शत क मुताबिक उस इम मुकावल
म स्टीन स निश्चय ही हारना है। वह बहुत नाराज है। कहता है मैं किसी म नही लडूगा
और वापस अपन घर चला जाऊगा।

अभी आया। कहकर मैंन फौरन कपडे पहने और एक टक्सी लकर टारो क
पास पहुचा।

मैंन और फर्नांडो न उस हर तरह स समझान की कोशिश की लेकिन वह फिर

हिलाकर बार बार यही कह रहा था, "नही, मैं घर जाऊगा।'

मैंने उससे कहा कि दिल-बहलाव के लिए वह जा चाहे, उसका इतजाम किया जा सकता है—शराब का, रडियो का फिल्म देखने का, मगर टोरो के अन्दर घर जाने के अलावा जस कोई और इच्छा थी ही नही। वह हम सबसे दूर जाकर, अपने घर म शाति से रहना चाहता था।

अगर फसला मेरे हाथो म होता तो मैं उसे अवश्य जाने देता, लेकिन फैसला मेरे हाथा म नहीं था। मैं तो सिफ इतना जानता था कि स्वय अपने हित के लिए उसका घर जाने का फसला उचित नही था। वह यह नही जानता था कि निक की मर्जी के खिलाफ जान का नतीजा कितना भयकर हो सकता है।

टोरो न मेरी कोई बात नही मानी और साने चला गया। मैं वापस अपन होटल आ गया।

तीन बजे के करीब फर्नांडो ने फोन करके बताया कि टोरो गायब है। जाते समय वह अपना सूटकेस और पाकेट रेडियो भी ल गया जो इस बात का सबूत था कि उसका लौटने का इरादा नही है।

डाक पर निक के एक साथी केनी को टोरो दिखायी दे गया। वह दरवाजे के पास खडा, उसके खुलने का इतजार कर रहा था। हमे देखते ही वह भागने लगा, मगर हमने तेजी स दौडकर उसे पकड लिया। टोरो हम सब के चगुल से बचने की कोशिश करत हुए बार बार स्पेनी भाषा मे कह रहा था, मैं जा रहा हू। उसन हम सबसे मुक्त होने की बहुत कोशिश की, लेकिन सफल न हो पाया और हम सबने उसे पकडकर अपनी कार म धकेल दिया और उसे उसके हाटल की ओर ले चले।

अगले दिन सुबह निक ने नोटो की एक गडडी मरे हाथा मे थमात हुए कहा, दख इस पागल को होश मे लाना है। शराब, लडकी, जुए के लिए रकम जो वह चाहे, उस दो लेकिन उसके मन से घर जाने का खयाल निकल जाना चाहिए।" तो मैंने फर्नांडो और पैप के साथ मिलकर शैपन के एक पूरे केस और छह नौजवान रडियो का इतजाम किया। टोरो की शारीरिक सामथ्य को देखते हुए, एक केस और दो-तीन लडकिया रिजव म भी रखी गयी थी। यह इतजाम करके मैं जब वापस अपन होटल म आने लगा तो पैप टोरो से शत लगा रहा था कि यदि वह एक ही घूट मे शपेन की एक बोतल गटक गया तो वह उसे सौ डालर देगा।

अगले दिन शाम का जब मैं टोरो से मिलने गया तो दखा कि वह अपने बिस्तर पर सोया पडा है और उसकी रक्षा के लिए उसके कमरे मे रखा गया फर्नांडो भी पास के पलग पर पडा जोर जोर से खर्राटे ले रहा है। सोता हुआ टोरो मुझे अपन पलग कमरे और स्वय जीवन का अतिक्रमण करता सा लगा। मैंने आहिस्ता से उसे जगाने की कोशिश की तो वह स्पनी भाषा के उन्ही शब्दा को बुदबुदाने लगा जो मैंने उसके मुह से डाक म सुने थे मैं जा रहा हू। मेरा सिर चकराने लगा। मितली सी भी अनुभव होने लगी। लगा क हो जायगी। जब मैं कुछ स्वस्थ हुआ ता टोरो के मनजर काच जाज से मिलने गया। उस निक न मुकाबल क पूव निर्धारण के बारे म नही बताया था उसे यही निर्देश दिये

गये थे कि वह टोरो को स्टीन को हराने का प्रशिक्षण दे और मुकाबले के लिए उसे पूरी तरह तैयार करे मगर बेचारा जाज बड़ा परेशान और उदासीन था।

जाज बेचारा भले ही न जानता रहा हो कि टोरो के साथ क्या किया जाये लेकिन उसका प्रामोटर निक जानता था कि उसके साथ क्या किया जाना चाहिए। इसलिए उसका विश्वस्त सहायक फर्नांडो टोरो को चिकनाई से भरपूर भोजन खिला रहा था, जिससे उसकी तोंद बढ़ती जा रही थी और टोरो को, जो पहले हर मुकाबले से पहले पूरा मन लगाकर तैयारी करता था इस बात की कतई परवाह न थी कि उसके साथ और उसके इर्द गिर्द क्या हो रहा है। वह मौके पर होते हुए भी जसे नहीं होता था। लगता था, उसका मन उसके शरीर से उड़कर कहीं और चला गया है।

मुकाबले के एक दिन पहले, न्यूयार्क के हर होटल का हर कमरा बुक हो चुका था। सारे अमरीका से दर्शक आये थे। स्टीन के शहर से तो पूरी एक स्पेशल ट्रेन आयी थी। उसके पुराने मित्रों परिचितों और प्रशंसकों से भरी हुई। टोरो के देश अर्जेंटीना से भी करोड़पतियों राजनीतिज्ञों सैलानियों और मुक्केबाजी के सच्चे शौकीनों का एक दल आया था। अर्जेंटीना के राजदूत ने अपने देश से आये इन विशिष्ट अतिथियों के स्वागत के लिए विशेष प्रबन्ध किया था।

होटलों क्लबों रेस्तराओं आफिसों में चर्चा का एक ही विषय था—स्टीन और टोरो का होने वाला मुकाबला। दोनों मुक्केबाजों की ओर से दाव लगाए जा रहे थे, बोलियां लग रही थीं। स्टीन के समर्थक 9 के बदले 5 पर दाव लगा रहे थे। शाम के छह बजे तक दस लाख डालर के दाव लग चुके थे। जिन्हें मुकाबले के पूर्व निर्धारण की जानकारी नहीं थी वे टोरो पर दाव लगा रहे थे क्योंकि फार्म के आधार पर जीतने की आशा उसी की थी। ऐसे लोगों में अर्जेंटीना से आये लोगों की संख्या सबसे अधिक थी लेकिन जिन्हें यह पता था कि इस दिखावटी मुकाबले में जीत अंत में स्टीन की ही होगी, वे चुपचाप स्टीन पर ही दाव लगा रहे थे। सबसे ज्यादा पैसा निक और उसके साथियों ने जिनमें मैं भी शामिल था, लगाया था।

मुकाबले के लिए दर्शकों की दिलचस्पी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रिंग के चारों ओर की इमारतों के मालिकों ने भी अपने-अपने अपार्टमेंटों से मुकाबले को देखने वालों से दर्शकों की हैसियत के अनुसार एक से लेकर पांच डालर तक प्रति दर्शक वसूल किये थे। रेडियो-स्टेशनों को सारे अमरीका में मुकाबले का आंखों देखा वर्णन प्रसारित करने के अधिकार देकर मुकाबले के आयोजक ने हजारों डालर कमाये थे। रेडियो स्टेशनों का अनुमान था कि कम से कम आधा अमरीका रेडियो से इस रोमांचक मुकाबले का आंखों देखा वर्णन सुनेगा।

रिंगसाइड में दर्शकों के बैठने के लिए तीन सौ कतारों में सीटों की व्यवस्था की गयी थी। सर्वश्रेष्ठ कतार में फिल्मी कलाकार, गवर्नर मेयर, पुलिस के प्रमुख अधिकारी उद्योगपति व्यापारी, सट्टेबाज और कालाबाजारिये आदि मौजूद थे।

टोरो किसी से मिलने या किसी की बात सुनने के मूड म नही दिखायी देता था। वह बडी अरुचि के साथ चुपचाप मुक्केबाज की पोशाक पहन रहा था।

निक ने ठीक टोरो के सामने आकर उसकी गदन हिलाते हुए कठोर और धमकी भरे स्वर म कहा "सुन बे, सूअर की औलाद। जो कुछ मैं कह रहा हू, उसे ध्यान से सुन। मेरी बीवी न मुझे सब कुछ बता दिया है कि तूने उसके साथ कसी गदी हरकत करने की कोशिश की थी। उसने मुझे बताया है कि कसे तून एक दिन मेरे घर जाकर, अकेले मे साथ उसके बलात्कार करने की चेष्टा की थी। चाहू तो अभी तेरा टेंटुआ दबाकर तेरा खात्मा कर सकता हू। लेकिन फिर सोचता हू कि मैं क्यो अपन हाथ गदे करू? आज क मुकाबले मे यह काम स्टीन करन वाला है ही। मुझे वाकई बडा ताज्जुब होगा, अगर उसन आज तेरा भुर्ता बनाकर नही रखा। मुझे तो लगता है कि इस मुकाबले मे तेरा जिंदा बचना नामुमकिन ही है।" कहकर निक ने एक चाटा टोरो के गाल पर जड दिया। टोरो बेवकूफो की तरह उसे घूरता रह गया। निक और उसके साथियो के चले जाने के बाद भी कई मिनट तक वह शून्य म चुपचाप घूरता रहा।

टोरो के रिंग मे जाने का समय आ गया था। 'गुडलक टोरो', मैंने उसकी ओर हाथ बढाया। मुझसे हाथ मिलने वाला टोरो का हाथ भी एकदम ढीला और बेजान सा था और बुरी तरह काप रहा था।

रिंग मे टोरो से पहले स्टीन ने प्रवेश किया। उसकी पोशाक नीली थी और सिर पर उसने सफेद रग का टावल लपेट रखा था। वह रिंग के चक्कर लगाता हुआ नाच रहा था और रिंगसाइड म बठे उसके समथक उसे देखकर जोर जोर से सीटिया बजा रहे थे। उसन रोप' के पास ही आगे पक्ति मे बठे हुए गायक अभिनेता बिंग क्रासबी, भूत पूव हैवीवेट चैम्पियन डेपसे जैसे लोगो से हाथ मिलाया। तीसरी पक्ति म बठी एक सुन्दरी न उसकी ओर एक चुम्बन उछाला, जिसका जवाब उसने उसकी ओर आख मार कर दिया।

जब टोरो रिंग मे आया तो उसके लिए तालिया तो बजीं। लेकिन बहुत कम। लिन जिसकी मृत्यु टोरो स मुकाबला करते समय हुई थी, के कुछ प्रेमियों ने उसकी तरफ गालिया भी उछाली क्योकि उन्ह विश्वास था कि टोरो की बेरहमी और लापरवाही से ही उनके प्रिय मुक्केबाज की मत्यु हुई थी।

तनाव बढना शुरू हो गया था। मैं अपने अदर भी उसे अनुभव कर रहा था। जसे ही दानो मुक्केबाजो के हैंडिलरो ने उनके कधो से उनके वस्त्र उतारे, दोनो के आकार, कद और बल का अन्तर दशको पर स्पष्ट हो गया। टोरो की ऊचाइ 6 फुट, 8 इच और भार 280 पौंड था। स्टीन की ऊचाई 6 फुट 1 इच और वजन 196 पौंड था।

तीसरी पक्ति मे बैठी सुन्दरी स्टीन का नाम लेकर चिल्लायी, छोडना नही है अपने दुश्मन को। बस, सीधे खत्म ही कर देना है।' उसका स्वर बडा ककश और मर्दाना था।

घटी के बजते ही स्टीन अपने कोने से फुर्ती स बाहर आकर अपने कोने से धीमे से निकलते हुए टोरो की तरफ बढा। टोरो ने अपनी सुरक्षा के लिए अपना बाया

हाथ आगे कर लिया, उसके कोच ने बहुत पहले उसे यही सिखाया था, और अब यह उसकी आदत बन गयी थी। स्टीन सतर्कता पूर्वक आगे बढ रहा था, कारण टारो की ऊंचाई, उसके डीलडौल और भार से वह आतंकित था। उसने कई बार ऐसा दिखाया जैसे वह दायें हाथ के प्रहार से टोरो के मुंह पर जानदार प्रहार करेगा। उधर, टोरो अपने बायें हाथ से अपने से कम ऊंचाई और दमखम वाले प्रतिद्वंद्वी को अपने से दूर रखने के लिए प्रयत्नशील था। वह आक्रमण से अधिक बचाव पर जोर दे रहा था। फिर भी, पहला आक्रमण उसी ने किया, बायें हाथ से स्टीन की पसलियों पर धक्का मारकर। स्टीन ने मुस्कराते हुए इस साधारण प्रहार को सह लिया। और तभी फुर्ती से उसने एक सशक्त प्रहार करके टोरो के सिर को काफी पीछे कर दिया और इससे पहले कि टारो इस प्रहार से उबर पाये उसने उस पर एक प्रहार और किया। टारो बिलबिला उठा और उसने दोनों हाथों से अलग अलग प्रहार किये, मगर वे दोनों ही व्यर्थ सिद्ध हुए। मौका देखकर स्टीन ने टारो को अपने 'क्लिच' में ले लिया।

दर्शकों को लगा कि 'क्लिच' में कुछ नहीं हो रहा है, लेकिन जब रैफरी ने दोनों को अलग किया तो टोरो की एक आंख लाल हो गयी थी। जाहिर था कि स्टीन ने टोरो की आंख पर अपने अंगूठे का इस्तेमाल किया था। यह अनुचित था। लेकिन अलग होने पर स्टीन ने दस्तानों को ऊपर उठाकर यह जताया कि उसका प्रहार उचित और नियमानुकूल था। इस मुकाबले ने नर भाड़ युद्ध का रूप ले लिया था। दर्शक बड़े उत्तेजित और हर्षित थे कि कम बलशाली स्टीन ने अपने अधिक शक्तिशाली टारो को इतनी जल्दी और इतनी आसानी से अपने कब्जे में कर लिया।

टोरो की आंख के बारे में दर्शकों की इच्छा का पालन करते हुए स्टीन ने मौका देखकर उसकी सूजी आंख पर एक मुक्का और जड़ दिया। इस प्रहार से टारो का मुंह खुला का खुला रह गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करे? उधर, स्टीन उस पर लगातार मुक्कों की बरसात किये जा रहा था।

घण्टी की वजह से टारो के कष्ट को साठ सेकंड तक थोड़ा विश्राम मिला। टारो की हालत उस वक्त इतनी खराब और दयनीय थी कि वह रैफरी की मदद से अपने स्टूल पर पहुंच पाया।

डॉक्टर और जाज दोनों ने पानी और सूंघनेवाले नमक की सहायता से टारो को थोड़ा होश में लाने की कोशिश की, ताकि वह कुछ अधिक आत्मविश्वास के साथ अगले दौर में स्टीन का सामना कर सके लेकिन इस दौर में स्टीन पर जैसे भूत सवार हो गया था। वह एक खूनी हत्यारा नजर आ रहा था। उसे दर्शकों की ओर से लगातार प्रोत्साहन मिल रहा था। वे लगातार चिल्ला रहे थे, 'मारो खत्म कर दो, ले लो, जाने मत दो, खत्म कर दो।'

टारो की आंख की सूजन इस समय तक बढ़कर अण्डे के आकार की हो गयी थी। स्टीन ने उस पर एक और सशक्त प्रहार करके फोड़ दिया। उसके फूटते ही, उसमें से खून का फव्वारा बहने लगा। टोरो सब कुछ भूलकर खून के प्रवाह को रोकने की कोशिश

करने लगा। उसकी व्यस्तता देखकर स्टीन ने उसके जबडे पर लगातार वार करके उसे चीरकर रख दिया।

'शाबाश। बस खत्म कर डालो इसे यार" तीसरी पक्ति की सुन्दरी ने जोर से चिल्लाकर कहा।

निक मेरे ठीक सामने सबसे आगे की पक्ति म बैठा था। वह सिगार के कश लेता हुआ बडे निर्विकार ढग से मुकाबले को देख रहा था। उसकी बीवी रूबी, गहरा मेकअप किये उसके पास बैठी थी, और टोरो की परेशानी का भरपूर आनन्द ले रही थी।

तभी दर्शक जैसे पागल हो गये। स्टीन ने टोरो को एक कोने म घेर लिया था और उस पर अविराम घूसो और मुक्को की वर्षा किये जा रहा था। टोरो ज़मीन पर लुढक गया था और बिना कोई बचाव किये स्टीन के प्रहारो को सह रहा था। स्टीन के समर्थक उसकी यह दुर्दशा देखकर उस पर हस रहे थे। रैफरी ने स्टीन को 'न्यूट्रल कार्नर' म जाने को कहा। वह लडखडाता हुआ वहा पहुचा और टोरो के उठने की प्रतीक्षा करने लगा।

एक मिनट बाद, स्टीन ने तजी से आगे बढकर, एक ही प्रहार से टोरो को फिर धराशायी कर दिया। उसकी आखो से फिर खून बहने लगा। स्टीन अभी भी निर्दयता पूर्वक उसके घावो पर मुक्के चलाकर उसके कष्ट को और बढा रहा था और टोरो म उसके न रुकनेवाले प्रहारो को सहने की शक्ति न जाने कहा से आ गयी थी?

दर्शक अभी भी सन्तुष्ट नहीं थे। व जोर जोर से चिल्लाकर स्टीन को प्रेरित कर रह थे कि वह टोरो को बिल्कुल खत्म ही कर डाले। और टोरो को भी न जाने क्या हो गया था कि वह अभी भी हार मानने के लिए तैयार नही था और उठकर फिर लडने को तैयार था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि डाक्टर या रैफरी उसे लडने से रोकते क्यो नही? डाक्टर की बात तो समझ म आती थी कि उसे निक का इशारा मिला होगा कि टोरो पर जितनी मार पडनी हो पडे मगर रैफरी? फिर मुझे याद आया कि वे लोग भी हैवीवेट के मुकाबलो म घायल मुक्केबाज को लडने से नहीं रोकते क्योकि वे जानते हैं कि हैवीवेट मुक्केबाजो की सहन शक्ति अत्यधिक होती है और तभी मुझे याद आया कि विस ने किसी के साथ शर्त बदी थी कि टोरो आठवें दौर तक टिका रहेगा। दाव 8 हजार, 5 हजार का था और विस और रैफरी मैटो स्माल की आपस म खूब छनती है और दाव लगाने के धधे मे वे भागीदार हैं यह भी मुझे किसी न बताया था।

अगले तीन मिनटो तक, भीड के नारो से प्रेरणा पाकर, स्टीन टोरो की धुनाई करता रहा। कभी रैफरी ने उस पर कृपा की और गिनती गिनकर स्टीन का हाथ उठा दिया। स्टीन की खुशी और मस्ती और दर्शको का हर्षोल्लास देखने लायक था। उधर, डाक्टर, जार्ज और विस टोरो को धकियाते हुए उसके कॉर्नर मे ले जा रहे थ।

अगले दिन सुबह मैं टोरो से मिलने के लिए रूजवेल्ट अस्पताल गया। उसके जबडो को जोडा जा चुका था। घावो पर पट्टिया बधी हुई थी और वह स्ट्रा की मदद से कुछ पी रहा था।

मुझे देखते ही, उसने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन जबड़ों के जुड़ होने के कारण उसकी आवाज़ साफ नहीं सुनायी दे रही थी। बड़ी मुश्किल से मैं समझ पाया कि वह कह रहा था, 'मेरी रकम—मेरा पसा मैं अब घर जाऊंगा।'

"मैं तुम्हें तुम्हारा पैसा लाकर देता हू।" मैंने कहा और चल दिया।

आफिस म मुझे निक तो नहीं मिला, लेकिन उसका एक गुडा साथी मिला, जिसे 'किलर' के नाम से जाना जाता था। मैंने उससे पूछा किलर दोस्त, टोरो को उसके पसे कहा और किससे मिल सकत हैं?"

"निक के एकाउटट लियो से जाकर मिलो।" किलर न बताया।

लियो एक बड़े रजिस्टर पर झुका मुकाबले की आमदनी का हिसाब लगा रहा था। मैंने पूछा, "कुल आमदनी कितनी हुई लियो?"

"13,56,892 डॉलर और पचास सेंट।"

'टोरो को उसकी रकम चाहिए।' उसे लाने क लिए मुझे भजा है।

"मुझ उसका हिसाब देखना पडेगा।" कहकर उसने एक फाइल उठायी।

फाइल का बारीकी स अध्ययन करके वह बोला, 'बहुत थोडी रकम निकलती है उसके नाम।"

बहुत थोडी रकम! यह क्या मजाक है?"

"भई हिसाब तो हिसाब है। तुम खुद ही देख देख लो।"

मैंने हिसाब देखना शुरू किया। एक कालम म लम्बी चौडी रकम लिखी थी।

प्रशिक्षण व्यय 10,450 डालर।

रहन खाने का खर्चा 14 075 डालर।

प्रचार और मनोरजन-व्यय 17,225 डालर।

यातायात, फोन और तार व्यक्तिगत आमोद प्रमाद और विविध खाता म भी झूठी और बढ़ायी चढायी लम्बी-लम्बी रकम चढ़ी थी। राज्य कर, आयकर प्रमोटर के कमीशन का रकम भी अतिरजित लगती थी।

खैर, इस लम्बे चौड़े हिसाब के बाद, टोरो के नाम 49 डालर और 7 सट की रकम निकलती थी। पचास डालर से भी कम।

अस्पताल पहुचा तो नस न बताया, "मरीज़ के पास ज्यादा देर मत रुकना। उसके शरीर के बायें भाग म आघात से अस्थायी रूप स लकवा मार गया है।"

मुझ देखकर उसने पूछा, मेरी रकम, मरा पैसा?

मेरी समझ म नहीं आया कि मैं उसस क्या कहू और कैसे कहू?

लेकिन जब वह बार-बार पूछता रहा तो मैंन कहा, 'अपनी रकम को भूल जाओ टोरो, तुम्हे कुछ नहीं मिलगा।"

'नहीं, ऐसा कसे हो सकता है? ऐसा नहीं हो सकता।' उसका गला रुध आया था।

"मगर ऐसा हो चुका है और तुम उस बारे म कुछ नहीं कर सकते टोरो! मुझे बडा अफसोस है, मगर हकीकत यही है टोरो, मैं सच कह रहा हू।'

'फिर मैं घर कैसे जाऊंगा ?' उसने रोते रोते कहा।

मुझे अपनी सत्रह हजार डालर की कमाई की याद आयी, जो मुझे निक और टोरा दोनो की मेहरबानी से हुई थी। मैंने कहा, 'मैं तुम्हें अपने पास से पांच हजार डालर दे सकता हूं।"

"मगर यह सारी रकम मेरी कमाई की रकम है। मेरी मेहनत की मेरी तकलीफ की कमाई से मिली है तुम सबको ये मोटी मोटी रकम चले जाओ यहां से मैं तुमम से किसी का भी मुंह नहीं देखना चाहता।'

उसने सबके साथ मुझे भी शामिल कर लिया है, यह सुनकर मुझे धक्का पहुंचा, लेकिन उसकी मन स्थिति को देखकर मैंने उससे कहा, "ऐसा मत कहो टोरो ! मैं तुम्हारा दोस्त हूं। तुम्हारी मदद करना चाहता हूं।"

"जाओ जाओ चले जाओ, मेरी आंखों के सामने से।'

"सुनो टोरो !'

"निकल जाओ यहां से। मैं तुमम से किसी की भी सूरत नहीं देखना चाहता। जाओ जाओ" वह चिल्लाने लगा।

बारहवा खिलाडी

रमाकात

मेरे दोस्त और बुजुग नन्दू बाबू खेलो के पारखी होने के साथ आकडो के भी जादूगर हैं। उनके साथ एक घण्टा बिता लग तो आप भी इनके कायल ही नही हो जायेंगे, इसके बारे म काफी कुछ जान भी जायेंगे। उन्हे कीरो और द सट जर्मेन की सख्याओ वाली किताबें पूरी तरह याद हैं। साथ मे खुद उनके अजीबोगरीब अनुभवो की दास्तानें। आप उनसे कितने भी असहमत हो, उनकी बोलने की ताकत के आगे हथियार डाल देंगे।

'ओ रे किरपा बडा खिलाडी बनता है' एक दिन उन्होंने कहा, "लेकिन तू साला है जनम का मनहूस। अपना नाम बदल डाल।" उनकी मुद्रा गुरुमन्त्र देने वाले कृपालु सन्यासी सी गम्भीर थी।

'क्या, नाम तो मा बाप या कुडली बनाने वाले का दिया है।"

"तभी तो कहा जनम का मनहूस। अच्छा बता अग्रेजी मे अपने नाम के हिज्जे।"

'के० आर० आई० पी० ए० एन० ए० आर० ए० वाई० ए० एन०—कृपा नारायन।"

"कुल कितने अक्षर हुए?"

बारह।"

'तभी तो कहा ये मनहूस है।"

"मनहूस तो तेरह की सख्या होती है।"

"तू कुछ नही जानता। मालूम है कीरो ने बारह और तेरह के सूक्ष्म भेदो के बारे म क्या कहा है? तेरह की मनहूस सख्या ताकत की सख्या बन सकती है लेकिन बारह अशुभ ही अशुभ है। बरतानिया जब तक बारह अक्षरो वाला ग्रेट ब्रिटेन था तब तक 'ग्रेट' नही था, लेकिन सरकारी नाम बदलकर तेरह अक्षरो वाला यूनाइटेड किंगडम करते ही कितनी बडी पॉवर बन गया। इसीलिए कहता हू, तू अपने नाम मे एक अक्षर जोड ले या घटा ले। जोडना मुश्किल होगा लेकिन घटाया आसानी से जा सकता है। नाम के आखिरी तीन अक्षर वाई० ए० एन बदलकर सिर्फ आइ० एन० कर ले। नाम वही रहेगा और अक्षर कुल ग्यारह। हिन्दी मे भी तेरे नाम म कुल ग्यारह मात्राए हैं। बस, यही करने की देर है। फिर देख खेल की दुनिया म तेरा नाम कैसा चमक जाता है।

'कैसे दादा ?"

वे कोई गूढ़ रहस्य खोलते की मुद्रा मुस्कराये, "जानता है खेलों के राजा, रानी और शहजादा—यानी फुटबाल, हाकी और क्रिकेट में कुल ग्यारह खिलाड़ी ही क्यों खेलते हैं ? नही जानता न ! ये खिलाड़ी साल के एक एक महीने पर रखे गये है।'

महीने तो बारह होते है ?"

'बिना कुछ जाने बहस न किया कर। पहले साल मे सिर्फ ग्यारह महीने होते थे। बारहवां तो जूलियस सीजर ने जोड़ा—जुलाई। और खेलों का कोई न कोई रूप तब भी, यानी प्राचीन काल मे भी मौजूद था जब ओलम्पिक की शुरुआत हुई। उस वक्त सिर्फ ग्यारह महीने होते थे। तभी से टीम मे सिर्फ ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। ग्यारह महीने और ग्यारह खिलाड़ी। बारहवां महीना जुड़ने के बाद टीम मे भी एक एक्स्ट्रा जोड़ा जाने लगा, टवेल्थ मैन लेकिन मलमास की तरह वह सिर्फ कभी कभी खेल पाता है। इसी से कहता हूं तू अपना नाम ग्यारह अक्षरोंवाला कर ले तो फौरन टीम मे शामिल हो जायेगा। नही तो वही बना रहेगा जो है यानी बारहवां खिलाड़ी !"

यह बारहवां खिलाड़ी होने का ही कमाल है कि मैं आज बिना खेले ही चोटी के खिलाड़ियों मे गिना जाता हूं।

इसके लिए मैं शुक्रगुजार खेल के जन्मदाताओं का नहीं, अपने स्कूल के सिंघाड़ा मास्टर का हूं। यह नाम उन्हें किनारों पर सिंघाड़े के कांटों की तरह मरोड़ी उनकी घनी तितलनुमा मूंछों के कारण दिया गया था जो उनके असली नाम—बाबू कटेश्वर नाथ से भी ज्यादा मशहूर हो गया था।

उन दिनों थ्री एम का जमाना था।

थ्री एम यानी मर्चेंट, माकड और मुश्ताक अली।

हमारे सिंघाड़ा मास्टर तब अधेड़ हो चले थे। लेकिन हर शनीचर की सुबह के स्कूल के बाद किसी न किसी स्कूल या शहर की दूसरी टीम से क्रिकेट का जो मैच रखा जाता उसमें अभी तक खेलते थे। वे भक्त तो अपने समय के हीरो सी० के० नायडू के थे लेकिन अब मर्चेंट और मुश्ताक की बल्लेबाजी के भी कायल थे और उनकी स्टाइल से खेलने की भी कोशिश करते। उनका कोई शाट लगने पर लड़के उनकी नाराजी का सारा डर भूलकर "वक अप सिं घा ड़ा !' चिल्लाते तो वे भी नाराज होने के बजाय मूंछों में मुस्कराते हुए उनकी शाबाशी स्वीकार कर लेते पर अब उनसे दौड़ा न जाता। बाउड्री लगने पर तो खैर दौड़ने की जरूरत न होती, लेकिन हल्के शॉट या कट पर रन बनाने के लिए दौड़ना पड़ता। कोई बल्लेबाज अगर दौड़ न सके तो एक रनर रख सकता है जो उसी टीम का कोई खिलाड़ी होना चाहिए। लेकिन समस्या फील्डिंग करने की भी थी। जो रन बनाने के लिए नहीं दौड़ सकता वह फील्डिंग भला क्या करेगा। इसके लिए बारहवां खिलाड़ी उतारा जा सकता है। वह बोलिंग और विकेट कीपिंग के अलावा फील्डिंग भी सभी जगहों पर नहीं कर सकता। स्लिप, गली, स्क्वायर लेग, मिड आन, और मिड आफ जो जगहें बल्लेबाज के नजदीक होती हैं वहां उसे नहीं खड़ा किया जा सकता। उसकी गिनी चुनी जगहें हैं सिर्फ बाउंड्री लाइन लांग ऑफ या लांग ऑन, मिड

विकेट आदि । यानी जहा जौहर न्खिाने का मौका कम होता है लेकिन दौडना ज्यादा पडता है । अब जिसम सिफ खेल की सजा भुगतनी हो उसके लिए कौन अपने आपको पेश करेगा । इसीलिए शायद बारहवें खिलाडी का ईजाद हुआ था । इसके लिए हमारे सिंघाडा मास्टर खेल दखने आये किसी भी लडके को खडा कर देते । बेचारा खेल देखने स भी गया अगर विपक्षी टीम तगडी हुई तो मुफ्त म पिदा । लडके इस सम्मान से दूर भागते थे ।

एक शनिवार का सिंघाडा मास्टर की नजर मेरे ऊपर कैसे पड गयी, मैं नही जानता । शायद एक कारण यह था कि मैदान म उतरते वक्त मैं ही सबसे जोर शार से अपनी टीम का बक अप कर रहा था । या शायद यह भी हो सकता है कि उस दिन मैं स्कूल ड्रेस क बजाय अपने बडे भाई की वह सफद कमीज पैंट और ब्लेजर पहनकर गया था जो अब उन्हे तग आने लगी थी । मै बिल्कुल क्रिकेटर लग रहा था ।

विपक्षी टीम, मिर्जापुर क्रिकेट क्लब को लोग मजाक मे एम० सी० सी० जस मशहूर नाम से पुकारा करते । उसम बी० एल० जे० कॉलिज क डी० डब्ल्यू० फामर, कलक्टर के पशकार मोहिले साहब, पुलिस टीम के शाकिर अली जैसे जिले के मशहूर क्रिकेट खिलाडी खेला करत । लेकिन 'क्रिकेट बाई चास' की कहावत चरिताथ करते हुए जैसे वेस्ट इडीज या आस्ट्रेलिया तक की टीम कभी कभी उखड चुकी हैं, उसी तरह कुछ उस दिन उसके साथ भी हो गया । यहा तक कि टास भी हमन जीता और पहले बल्ले बाजी के लिए उतरे । खेल एक एक पाली ही होता था । हमार सिंघाडा मास्टर ने दो चौकों की मदद स छत्तीस शानदार रन बनाए जिनम अट्ठाइस दौडकर मन पूरे किय थे और थक जाने के कारण बिना आउट हुए रिटायर हो गय । हमारे सार खिलाडियो ने मिलकर एक सौ चालीस रन बनाय ।

फील्डिंग के वक्त मेरे खेलने की भी बारी आ गयी । घबराहट के मारे दिल बुरी तरह धडक रहा था । मेरे साथ दया यह की गयी कि बच्चा समझकर कप्तान ने मुझ बाउड्री लाइन पर खडा कर दिया जहा चोट लगने का खतरा सबसे कम था । लेकिन साहब मुझे लगा कि सारे शाट उसी ओर आ रहे है । बल्लेबाजो का ऐसा करना उचित भी था, क्योकि उन्हे पता था कि हमारी फील्डिंग उसी जगह सबसे कमजोर थी ।

एक दो गेंदें सयाग से मरे पैर स लगकर रुक गयी और फिर लडको के बक-अप करने से मुझे भी कुछ जोश आ गया तो कुछ जोरदार शाट मैंने अपन जूत या हाथ से काफी कोशिश करके रोक दिय । और एक बार तो कमाल हो गया । विपक्षी टीम के सबसे खतरनाक खिलाडी शाकिर अली के बल्ले से लगकर एक बार गेंद लड्डू की तरह मेरे हाथ म आ रही और वे कैच आउट हो गय ।

तालियो की जोरदार गडगडाहट हुई सीटियाँ बजी और कुछ लोगो ने मुझे बाहों म भरकर उठा लिया । शतक मार शाकिर क सिफ पाच रन बन थ । हमार गदबाजो शाहनवाज और दीना न डी० डब्ल्यू० फामर का बीस रन बनते-बनते आउट कर दिया था । मोहिल साहब और एक दूसरे जोरदार खिलाडी मिस्टर रमन जो कभी पचास रन बनान के पहले आउट नही होत थ स्टम्प और लेग बिफोर विकेट हो गय । उनक कप्तान

जौहर साहब आखिर तक डटे रहे लेकिन सत्रह रन से ज्यादा नही बना पाये। सारी टीम बयासी रनो पर लुढ़क गयी और हम अट्ठावन रनो से शानदार जीत की खुशी मनाते घर लौटे।

बस उसी दिन मेरे भाग्य का फैसला हो गया। मैं अपनी टीम का स्थायी सदस्य हो गया लेकिन उसी जगह जहा खेला—बारहवा खिलाडी। आखिर हमारी टीम म किसे हटाकर मुझे जगह दी जाती। लेकिन टीम मे मेरा रहना जरूरी था। जब तक स्कूल मे रहा इसी जगह पर खेलना पडा, अगर इसे खेलना कहा जा सके। न सिघाडा मास्टर का खेल रुका और न मेरी जगह ही बदली।

दो साल बाद कालेज पहुच गया तो सोचा, चलो मुसीबत दूर हुई। पर वही हमारे स्कूल का साथी शाहनवाज भी पहुचा जो पहले ही क्रिकेट खिलाडी के रूप म मशहूर था। वही क्रिकेट का कप्तान चुना गया, और बारहवें खिलाडी का सौभाग्य फिर मेरे गले पड गया।

पर यह कहना बिलकुल गलत है कि बारहवे खिलाडी का कोई शोहरत नही मिलती। कालेज के ही मत्थे अपनी टीम के साथ कई शहरो का दौरा किया कितने ही मैचो और टूर्नामेटो मे हिस्सा लिया और एक बार जब हमारी टीम ने अन्तर कॉलिज टूर्नामेट जीत लिया तो सारे खिलाडियो के साथ फोटो भी खिची जो कॉलिज की पत्रिका मे छपी और यह सब बिना खेले!

फिर एक बार तो गजब ही हो गया।

मुझे जिला टीम से बुलावा मिला था हालाकि उसी बारहवें खिलाडी की जगह पर जिसे अमूमन मदान मे नहीं उतरना पडता।

मेरी स्थिति खुशी और दुख के बीच झूला झूलने जैसी हो गयी। खुशी जिला टीम मे जगह मिलने की और दुख बारहवा खिलाडी ही बना रहने का। मन म आया यह निमन्त्रण ठुकरा दू। पर आखिर तो खिलाडी ठहरा। मेरे निजी क्षोभ पर खिलाडी भावना ही विजयी हुई। इनकार करने से हमेशा के लिए खेल के दरवाजे बन्द हो जाते, स्वीकार करने से शायद आगे कभी मौका मिल जाता। सच्चा खिलाडी कभी उम्मीद नही छोडता, और अब तक खिलाडी तो मैं बन ही चुका था।

मुझे बाद मे पता चला—इसमे भी मेरे पूज्य गुरु सिघाडा मास्टर का ही हाथ था। जिला टीम की चयन समिति को उन्होन मेरे नाम की सिफारिश करते हुए कहा था किरपा इज द बेस्ट टवेल्थ मैन—" किरपा सबसे अच्छा बारहवा खिलाडी है। ऐसा बारहवा खिलाडी जो कभी ग्यारहवें पर आने के लिए नही झगडता या जो इतना धैय का धनी है कि उसे आगे बढने की कोई जल्दी नहीं है।

सचमुच इसके बाद से मेरे लिए खेल के दरवाजे खुलते गये हैं और चाहे बारहवें खिलाडी के रूप म ही सही आज मैं जो कुछ हू अपने इसी गुण की बदौलत जिसे मेरे गुरु ने बहुत पहले ही पहचान लिया था।

सबसे पहले तो यही कि मैंने कभी ग्यारहवा दसवा या आठवा नौवा खिलाडी बनने की कोशिश नही की। और जब भी कभी फील्डिंग का मौका मिला पूरे जी-जान से

मैदान सभालने म जुटा रहा । अच्छे बल्लेवाज अच्छे क्षेत्र रक्षक भी हो यह जरूरी नही । और खेलो म कभी कभी चोट तो लग ही जाती है । अक्सर हमारे किसी ऐसे बल्लेबाज को कप्तान फील्डिंग के समय बैठा देते और मुझे उतरना पडता ।

फाइनल प्रदेश की राजधानी के सबसे मशहूर क्रिकेट मैदान मे खेला जा रहा था । हर टीम म प्रदेश स्तर के खिलाडी थे और खेल के नतीजो के आधार पर अगले रणजी ट्राफी के लिए नये खिलाडी भी चुने जाने थे । हालाकि चुनाव हमेशा इसी आधार पर नही होता । हमारे स्टार बल्लेबाज रमन दूसरी इनिंग म पचहत्तर रन बनाने के बाद आउट हुए तो शाट मारने के अदाज म कधे के बल गिर पडे और फील्डिंग के वक्त मैदान म उतरने के लायक नही रहे । उस दिन कुछ कमाल मैंने भी दिखाया । लाग ऑफ पर एक गद मेरे हाथ म आकर भी छूट गयी, लेकिन कमीज के खुले कालर म फसकर अटक गई जिसे मैंने फुर्ती स उछाल कर फिर कैंच कर लिया । किसी अखबारनवीस न इसकी फोटो खीची जो अगले दिन एक अखबार मे भी छप गयी ।

अपनी उस विचित्र मुद्रा की मैंने कल्पना भी नही की थी । गेंद को उछालकर लपकते हुए मैं पीठ के बल लगभग दोहरा हो गया था । मैच हम फिर भी हार गये । लेकिन प्रदेश की टीम के लिए नये खिलाडियो के चयन के समय किसी को मेरी कैंच लेने वाली फोटो याद रही । "उसका कोई बैटिंग रिकार्ड नही है" । किसी ने एतराज किया । "बैटिंग रिकार्ड नही है ? वह टवल्थ मन था" । 'आलराइट, लेट हिम बी द टवेल्थ मन देन" । कोई अपनी पसद को आसानी से नही छोडता और बारहवें खिलाडी के लिए एतराज भी किसे होता ! तो इस तरह जहा रमन या शाहनवाज नही चुने जा सके वहा मैं चुन लिया गया, चाहे बारहवें खिलाडी के रूप म ही सही ।

किसी दिन टेस्ट टीम चुनने वालो की निगाह इस नाचीज किरपा पर जरूर पडेगी इसका मुझे पूरा विश्वास है क्योकि जिस जगह का म खिलाडी हू वहा मेरे स्टम्प जल्दी उखडने वाले नही है । स्टम्प तो उनके उखडते है जिन्हे सचमुच खेल दिखाना पडता है । जिसने कभी एक गद का भी सामना न किया हो उसके स्टम्प कोई क्या उखाडेगा ।

इसके बाद की मेरी योजनाए सुनिश्चित है । एक बार टेस्ट खिलाडी बनने भर की देर है और अगर न भी बन सका तो कोई हर्ज नही । प्रथम श्रेणी का खिलाडी तो हू ही । चार पाच साल बाद तीसवा जन्मदिन आते ही प्रथम श्रेणी के खेल से अवकाश लेने की घोषणा कर दूगा । खिलाडी साथी भावना के धनी होते हैं । व मेरे सहायतार्थ जरूर कोई बडा मच आयोजित करेंगे जिसमे क्रिकेट के कितने ही सितारे भाग लेंगे । और अपना विदा मच खेलकर मैं एक खासी रकम की थैली के साथ रिटायर हो जाऊगा । हो सकता है कोई प्रतिष्ठान एक अच्छी नौकरी भी दे दे । किसी खिलाडी का इससे अच्छा भविष्य क्या होगा !

मेरे हमदर्द बेचारे नट्टू बाबू यह सब नही जानते । इसीलिए वे मुझे नाम के अक्षरो म हेर फेर कर मेरे खेल जीवन म प्रगति की कामना कर गये है । पर जैसा मैंने बताया, मैं उनकी सलाह नहीं मान सकता । सिर्फ इसलिए नही कि मुझे सख्याओ के जादू मे विश्वास नही है बल्कि इसलिए कि मैं खेल मे प्रगति का खतरा नही उठा सकता । क्योकि तब मैं जानता हू, मेरे स्टम्प बहुत जल्दी उखड जायेंगे ।

हाकी से क्रिकेट तक

शौकत थानवी

स्कूल के दिनो मे हम हाकी खेला करते थे और कुछ अच्छा ही खेलते थे। हम स्कूल की उस टीम मे ले लिया गया था जो टूर्नामेंट खेलनेवाली थी। चुनाचे हम टूर्नामेंट के मैचो मे खेले और सौभाग्यवश हमारी टीम फाइनल मे पहुच गयी। पहुच क्या गई बल्कि जीत ही जाती, अगर हमारी नजर ऐन उस वक्त जबकि हम आसानी से गोल बचा सकते थे दर्शको मे खडे अपने अब्बा हुजूर पर न पड जाती जो आये तो थे मैच देखने, मगर आखें बन्द किये बडबडा रहे थे। कुछ अजीब करुणामय सा चेहरा बना हुआ था उनका। हमने देखकर मन-ही मन कहा कि ये आज कहा आ टपके और उधर शोर हुआ गोल हो जाने का। इस शोर से हम भी चौंके और अब्बा ने भी आखें खोल दी। फिर कुछ ऐसी खौफनाक नजरो से उन्होने देखा कि हाकी से तबीयत उचाट करके रख दी। अब हमारी टीम गोल उतारने के लिए जोर लगाती है मगर लगता है कि उस तरफ की टीम के किसी खिलाडी के अब्बा हुजूर दर्शको मे थे ही नही। नतीजा यह हुआ कि खेल खत्म हो गया और हमारी टीम हार गयी। अब जिसे देखिए वही हम इस हार का जिम्मेदार ठहरा रहा है।

अब किसी को हम क्या बताते कि हम पर क्या कयामत गुजर रही थी। उस समय लानतें बरसती रही हम पर और हम सिर झुकाये सब कुछ सुना किये इसलिए कि कुसूर अपना ही था। दूसरे इस लानत मलामत की परवाह किसे थी? दिल तो उस वक्त की सोच सोचकर धडक रहा था जब घर पहुचकर अब्बा हुजूर के सामने पेशी होगी। बामुश्किल उस मजमे से जान बचाकर थके हारे घर पहुचे तो ड्योढी मे कदम रखते ही गरजदार आवाज सुनाई दी, 'मगर मैं पूछता हू कि मुझे आज तक क्या न मालूम हुआ कि साहब जादे को खुदकुशी करने का यह शौक भी है? तुम तो यह कहकर छुट्टी पा गयी कि यही होता है खेलकूद का जमाना है।

अम्मी जान ने फरमाया तो क्या गलत कहा मैने? किसके बच्चे नही खेलते?'

अब्बा हुजूर ने मेज पर घूसा मारते हुए कहा,' फिर वही खेल। यह मौत का खेल है—मौत का। गोलियो की बौछार होती है हर तरफ और खुदा ही खेलने वालो को बचाता है। असगर अली का नौजवान लडका। हाय क्या तदुरुस्ती थी उसकी। इस खेल की भेंट चढ गया। कलेजे पर वह पत्थर का गेंद लगा कि सास भी न ली और जान दे दी। अगर कुछ हो जाये उसके दुश्मनो का तो तुम्हारा क्या जायेगा? मैं तो हाय हाय

करके रह जाऊगा दोनो हाथ मलकर।"

अम्मी जान ने कहा, "अल्लाह न करे! ऐसी बातें जबान से भी न निकालो। आयगा तो समझा दूगी कि यह जान जोखिम वाला खेल न खेला करे।"

अब्बा हुजूर ने निर्णयात्मक अन्दाज म कहा 'मैं तय कर रहा था कि इसे अलीगढ भेज दूगा, मगर अब तो जब तक मुझे पूरी तरह यकीन न हो जाये कि साहबजादे का इन खतरनाक शगलो से कोई वास्ता नही है, तब तक असम्भव है।"

हमने मन ही मन म कहा, "यह तो गजब हो गया। यहा इसी उम्मीद पर जी रहे हैं कि अब अलीगढ जायेंगे, होस्टल म रहेगे, कालिज मे पढेंगे। और स्टूडेंट लाइफ का असली लुत्फ तो अब आयेगा, पर इस हाकी से खुदा समझे, इस नामुराद ने पानी फेरकर रख दिया। अब डयोढी मे खडा रहना असम्भव हो गया। हिम्मत करके कदम उठाया और इस तरह अब्बा हुजूर के सामने आ गये मानो कोई बात ही नही है। वे तो इतजार मे बैठे ही थे। देखत ही सम्बोधित हुए, 'मियां जरा बात तो सुनो! यह हाकी कब म शुरू की है?"

अर्ज किया, 'जी हाकी, हाकी से तो दिल खट्टा हो गया आज। अब कभी जो मैं यह खतरनाक खेल खेलू। अम्मी जान भला मुझे क्या मालूम था कि यह खेल ऐसा खतर-नाक होता है। मैंने तो आज से कान पकड लिये बल्कि आज तो यहा तक हुआ कि एक बार गेंद अपन आप मेरे करीब आ गयी कि तुम मेरे पास नही आते तो मैं तुम्हारे पास आ रही हू, मगर मैंने उसको डर के मारे छुआ तक नही कि न जाने क्या वारदात हो?"

अब्बा हुजूर को सोलह आने यकीन हो गया कि साहबजादे जाती तौर पर वैसे ही कायर है जैसा व चाहते हैं। और पहले की तरह अलीगढ जाने का प्रोग्राम बनता रहा। जहा तक हाकी से तोबा करने का किस्सा है वह भी झूठ न था। एक तो रियायती हैसियत स इस स्कूल की पहली टीम म लिये गये थे। दूसरे फाइनल मैच म विरोधी दिशा से आने वाली गेंद के साथ जो अखलाक बरत चुके थे, उसके बाद यह सवाल ही पैदा न होता था कि फिर भी हमे टीम मे रहने दिया जायेगा। इसलिए यह तोबा करने वाली बात कुछ सच ही साबित हुई और हाकी से वाकई छुटकारा मिल गया।

अलीगढ म दाखिला लेने के बाद इस किस्म के जान जोखिम के खेलो के अलावा और भी असख्य मनोरजक शगल मिले। दिल कुछ ऐसा लगा कि हिसाब जो लगाया तो सिर्फ चार साल की बहार थी।

जो किताब होशियार छात्र एक साल म पढकर खत्म कर डालते हैं, उन्हे हम मन लगाकर दो साल मे खत्म कर रहे थे कि सिर पर यह पहाड टूटा – अब्बा हुजूर की उम्र दगा दे गयी और हम कॉलेज छोडना पडा। मगर इतने दिनो तक कालिज मे रहने का नतीजा यह हुआ कि अपने शहर मे एक किस्म की धाक सी बैठ गयी। दोस्तो-रिश्तेदारो को जब कालिज के किस्से सुनाने बैठ जाते तो बडा असर होता सब पर। इन्ही किस्सो मे से एक किस्सा क्रिकेट के बारे मे भी था कि कालिज छोडने स हमें तो सिर्फ यह नुकसान पहुचा है कि तालीम अधूरी रह गयी। मगर खुद कालिज को यह नुकसान पहुचा है कि अब मुद्दत तक उसे क्रिकेट का कप्तान न मिलेगा। सयोगवश यह किस्सा

स्थानीय क्रिकेट टीम के कप्तान साहब का मुना रहे थे, जिनको यह खबर न थी कि क्रिकेट टीम के साथ स्वयं अपने खर्च से इधर उधर जाने का इत्तफाक तो हम हुआ था मगर आज तक क्रिकेट का बल्ला छूने की नौबत न आयी थी।

अत टीम के कप्तान साहब ने कहा, "क्या बात है साहब अलीगढ़ की टीम की, तो गोया आप कप्तान थे उसके "

अर्ज किया ' जिंदगी मुसीबत म थी साहब। आज टीम बम्बई जा रही है तो कल दिल्ली और परसों कलकत्ते। दो बार तो विलायत जाने के लिए भी इसरार हुआ। बड़ी मुश्किल स जान छुड़ाई। अपनी बात यह थी कि एक बम्बइ म एक मार्के का मैच हुआ। इत्तिफाक स सबसे पहले मैं ही खेलने गया। अब जनाब हुआ यह कि मेरे अलावा दस के दस खिलाड़ी आउट हो गए और मैं सात सौ रन बनाकर नाट-आउट वापस आया "

कप्तान साहब ने गोया आउट होते हुए कहा, "जी! क्या कहा, सात सौ रन नाट आउट!"

एक हफ्ते के बाद व कुछ क्रिकेट के खिलाड़ियों का एक प्रतिनिधि मंडल लेकर तशरीफ लाये। सबसे इस सेवक का परिचय कराया गया, मानो महज हमारे भरोसे पर टीम टूर्नामेंट म दाखिल कर दी है और तय यह किया है कि कप्तान आप ही रहें। लाख इंकार किया, बहुत कुछ समझाया कि क्रिकेट छोड़े हुए मुद्दत हो चुकी है, मगर तोबा कीजिए, यकीन कौन करता था।

दुर्भाग्य से पहला ही मैच उन अंग्रेजों से हुआ, जो सच पूछिए तो इस खेल क बाप है और उनके गेंदबाद ऐसे जालिम कि गेंद क्या फेंकते थे गोया तोपगोला फेंक रहे हों। टास हम जीत चुके थ और हमारी टीम खेल रही थी। खेल क्या रही थी चांद मारी कर रही थी। चार खिलाड़ी आउट हो चुके थे और रन कुल आठ बने थ। यहा यह हाल कि एक तो दिल का मज था ही है, दूसरे न भी होता तो जाहिर है कि इज्जत-आबरू के अलावा यह तो कुछ मौत और जिंदगी का सवाल बनता जा रहा था। अगर इन जालिमों की गेंद जरा भी इधर उधर हो गयी तो अब्बा हुजूर की आत्मा स जब मुलाकात होगी तो वे क्या कहेंगे कि क्यों बेटा, यही वायदा था तुम्हारा। मगर सवाल तो यह था कि अब कर ही क्या सकते थे? छठे खिलाड़ी के आउट होते ही अब हम जाना था। शहादत का कलमा पढ़कर लेग-गार्ड बंधवाये, जिस तरह दूसरों ने बैट संभाला था हमने भी बैट संभाला और अब जो अपने साथी खिलाड़ी के साथ चले तो मजमे ने 'कैप्टन इन' का नारा लगाया और तालियों से वातावरण गूंज उठा। इन तालियों से दिल और भी डूबने लगा। बिल्कुल यह लग रहा था जैसे किसी खूनी को फांसी के तख्त की ओर ले जा रहे हों। दिल म तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे। हमारी किस्मत म क्रिकेट की मौत लिखी थी। राह म फना हो गए तो इतने दर्शक जनाजे की नमाज के लिए मिल जायेंगे।

अब जो गेंद फेंकने वाले शैतान को देखा तो जी चाहा कि चकराकर गिर पड़े लगता था जैसे एक बड़ा सा चुकन्दर सामने पड़ा हो। वह उस समय ज्वालामुखी

नजर आ रहा था। मन ने कहा, 'इसकी गेंद से हमारी मौत हो गयी तो जन्नत तक रन बनाते चले जायेंगे। हिम्मत करके बैट पर झुके। उधर वह गेंद लेकर बढ़ा ही था कि हम फिर खड़े हो गए और मौत कुछ देर के लिए मुल्तवी हो गयी, पर बकरे की मां आखिर कब तक खैर मनायेगी। खेलने के लिए तैयार ही होना पड़ा और बल्ले पर झुककर आंखें बंद कर ली। दूसरे ही क्षण महसूस हुआ जैसे हाथों में बिजली सी दौड़ गयी। मजमे ने वाह वाह का शोर मचा दिया। मालूम हुआ कि गेंद आयी और बल्ले को छूकर तेजी से निकल गयी। लोगो को गलतफहमी पैदा हुई कि यह हिट हमारी उस्तादी का नतीजा है चार रन ख्वामख्वाह बन गए। काश! एक ही रन बना होता और हम उस खौफनाक गेंदबाज से बच गए होते। नतीजा यह हुआ कि फिर खेलने के लिए तैयार होना पड़ा और जी कड़ा करके अबकी बार तय कर लिया कि ऐसी भी क्या बुजदिली मरना ही है तो नाम करके मरेंगे। अबकी हिट लगायेंगे। चुनाचे खड़े हो गए। मजमे ने शोर मचाया। साथियो ने परेशान होना शुरू कर दिया। स्वयं विरोधी खेलने वाला को विस्मय हुआ। हम अपने इरादे से बाज न आये। अब जो गेंद आयी और हमने हिट लगाया तो सारा मजमा फील्ड में टोपियां उछालता हुआ चला आया। कहां-कहां से फिजा गूंज उठी। होश में आने के बाद पता चला कि कैच करने वाले ने बजाय गेंद के बल्ले को कैच किया था और गेंद स्वयं लेग गार्ड में सुरक्षित थी। विरोधी टीम इसे अपना अपमान समझ रही थी कि यह खेल नहीं हो रहा था, बल्कि उसका मजाक उड़ाया जा रहा था। बामुश्किल उन लोगो को समझाया गया कि प्रैक्टिस छूटी हुई है, वरना ये अलीगढ़ की टीम के कप्तान रहे हैं, जो सात सौ रन बनाया करते थे। अंपायर ने पक्षपात से काम लेकर हमको आउट करार दिया और हम उसी हालत में उसी वक्त घर पहुंचा दिए गए।

विंबलडन में वल्ले और दल्ले

जे पी डॉनलेवी

जून में मोटी घासवाली एक ग्रीष्मकालीन घाटी। ऊपर का सूरज अपनी धूप नीचे बिखेरता है और नीचे के लोग रोयेंदार सफेद गेंद को आगे पीछे दागते हैं। घास के उस छोटे से अखाड़े में लोग चिल्लाते हैं—डब्ल्यूस, लव फर्स्ट सर्विस फाल्ट और शांत रहिए। और मैं उसी असहनीय उदासी में डूब जाता हूं जो कोई भी खेल मेरे दिल में पैदा कर देता है।

दि ऑल इंग्लैंड क्लब के मैदानों में ये लॉनटेनिस चैम्पियनशिप के मजेदार दिन हैं। सुनहरी जनाना टांगोंवाला विंबलडन पखवाड़ा। कोर्ट में और कोर्ट के बाहर भी वही टांगें। और मैं अपनी सफेद टांगों से धीरे धीरे चलता हुआ ताजा ताजा रंगे हुए चमचमाते दरवाजे वाले घरों के बीच से गुजरता हूं, इन घरों में भूरे बालोंवाली औरतें शांत दोपहर बाद के समय में बच्चों की गूंजती आवाजों के बीच छतों पर बैठी चाय पी रही हैं। एक भद्रजन सड़क के किनारे उकड़ू बैठे निवृत्त हो रहे हैं।

पूरा स्टेडियम गहरी हरी और काली कुर्सियों से भरा है और उन पर बैठे हैं दौलतमंद और उत्सुक दिल। मेरे जैसा एक उदास दिल भी वहां आने ही वाला है। पांच शिलिंग देने के लिए एक लंबी सीमेंट की सुरंग में से गुजरना। प्रवेशद्वार के बाद वह स्थान जहां पसीना पहाड़ की शक्ल में जमा हो रहा है। अचानक सभी का ध्यान गलियारे की ओर चला जाता है। जहां से किसी जनाना जिस्म से बहुत तेज, उत्तेजित गंध निकल कर फैल रही है। इसमें कस्तूरी की पागल कर देने वाली गंध है। तीस गिन्नी प्रति औंस की दर से कई सुगंध मेरे पास से गुजरती हैं। फूलदार पोशाकें और हास्यवर्णी चकत्तेदार चेहरे। मोतियों की दमदमाती मालाएं। तौलियां वाले टॉप ढेर सारी खुशियां नंगे जिस्म और अजनबियत।

दो बज गए हैं। मैं स्कूली लड़कियों के बीच पिचक रहा हूं। लड़कियां एक-दूसरे के कंधों पर रखकर कार्यक्रम का ब्योरा पढ़ रही हैं। सभी स्कूल की यूनिफार्म में हैं। वे बिना मेरी उम्र का ख्याल किए मुझे धकिया रही हैं। इतनी कम उम्र में टेनिस के प्रति उनकी यह दिलचस्पी मेरी समझ से बाहर है, सम्भवतः उनके मां बाप उन्हें आदमियों से दूर रखते होंगे। निर्णायक बाहर निकल आए हैं। उनके कपड़े लाल और कुछ के पीले हैं। उन्होंने आकर चारों ओर देखा। घास का मैदान। प्रतियोगी सफेद कपड़े पहने हैं।

रफरी अपनी नापने वाली छडी लेकर जाली के पास आ जाता है। फोटोग्राफर अपने कैमर तयार कर रह ह। गेंद उठान वाले लडके बगनी और। री कमीजें पहन अपने हाथो का पीठ पीछे बाधे पजा के बल खडे हैं। उन्ह खिलाडी के गदन हिलान, पलक झपकने के अथ और उनकी इच्छाओ को जानन का प्रशिक्षण मिला होता है।

और तभी अचानक तालिया बज उठती हैं। शाही छतरी के नीचे से निकलकर खिलाडी बाहर आ गए हैं। अपने रम तलेवाले जते पहने चुस्ती से और बिना आवाज किए दायें बायें आगे पीछे उछल रहे हैं। कोई झुक रहा है, तो कोई कूद रहा है। इस खेल की तज गति क कारण सुस्ती कोई नही दिखा सकता। कई तरह के और कई आकारो के खिलाडी आत हैं। कई तरह की उनकी सनकें हाती है और कई तरह के आचरण व लोग करते है।

आइए अब जरा टेनिस खेल लें। खेल शुरू करने की कोई जल्दी नही है अभी तो वे अपन चेहरे पर बिना किसी तरह के भाव लाए उछलकर सनसनाते हुए शॉट लगा रहे है। यह काम तब तक चलता रहता है जब तक अपायर अपनी ऊची कुर्सी पर बैठकर स्कोर शीट खोलकर माइक पर फुसफुसाते हुए कह नही देता, "क्या आप तैयार हैं ?' गेंद पकडने वाले लडके रेफ्रिजेरेटर का ढकना खोलते है गेंद बाहर निकल आती है। ठडी और भरपूर उछालवाली। य उन खिलाडिया के खेलने के लिए तयार होती हैं जो दुनिया क हर कोने से यहा एक निश्चित तामझाम तक ठडा किये इन रोयेंदार गालो को धनन के लिए आए हैं। बडा सम्मोहक विचार है। पूरे दो हफ्ते मैं इस बात का इतजार करता रहा कि कोई तो इन गेंदो के गम होने की शिकायत करेगा।

शात रहन की पुकार होती है। स्कोरबोड की रोशनिया जल जाती है। सारी निगाहें उस पवित्र हरित आचल पर केद्रित हो जाती हैं। गेंदें पकडन वाले लडके जाली के पास पजा के बल बैठ जात है ताकि उठकर भागने और गेदे लपकने मे देर न लगे। सर्विस करने वाला खिलाडी सीमा रेखा पर सावधानी से पाव रखे निशाना लकर तयार हा गया है। मुझे लगता है जैसे वह अपन विरोधी से कह रहा हो, "दोस्त अगर तुम गद को भी देख लो तो बल्ला अडाने की कोशिश न करना क्योकि यह तुम्हारे बगल से हाती सीधी निकल जायगी।" उसका विरोधी सदेश पाकर थोडा झुकता है, अपनी मजबूत पेशियो को थाडा कसता है उछलता है, सिर पीछे घुमाकर अपने बल्ले के दोनो तरफ देखता है और फिर बल्ला पीछे कर लेता है, जसे कह रहा हो, "दोस्त मेरे रिटन लाब से जब गेद किसी चौध की तरह तुम्हारे बल्ले से टकरायगी तो तुम उसे कोट से बाहर जान से रोक नही पाओगे।' यह कहना तो व्यथ ही हागा कि उस अनकहे वार्तालाप को दशको की भीड नहीं पकड पाती।

पर यहा एक खिलाडी भावना भी है। अति मत्री भाव का प्रदशन भी है। जीतने वाला हारन वाले के पास जाल तक आकर हाथ मिलाता है। दोना एक दूसरे के कधो पर हाथ रखे कोट से बाहर आत ह। खेल जब पूरी गर्मी म हा उस समय भी विरोधी के ड्राप शॉट की खूबसूरती की कद्र की जाती है। ऐसी स्थिति म दशको की भीड शोर करती है और तालिया बजाती है। तब यह शाट लगाने वाला आभारपूवक कुछ गुन

गुनाता हुआ चेहरे की सारी भंगिमाओं को पोछ डालता है। ऐसा करके वह दर्शकों को जताता है कि अभी तुमने देखा ही क्या है। वह चीज तो तुमने देखी ही नहीं है जिसके कारण भरपूर जवान औरतें मुझ पर मरती हैं।

एक दिन के बाद दूसरे दिन खिलाड़ी प्रतियोगिता से बाहर होते रहते हैं। अधिक-से अधिक लोगों का जमाव सेंट्रल कोर्ट की ओर बढ़ता रहता है। बाहरी कोर्टों में अब प्रसिद्ध नामों के न खेलने के कारण वहां दर्शकों की संख्या भी घट जाती है।

इन अंतिम दिनों की शाम भयानक उदासी का समय होती है। सूर्य पहले स्टैण्डों के पार और फिर दूर पेड़ों की फुनगियों के पार जाकर अस्त हो जाता है। मेरे ख्याल से इसका कारण यह विचार है कि विंबलडन मेरे बिना भी चलता रहेगा। मैं बाड़ के सहारे खड़ा खिलाड़ियों को गुजरते हुए देखता हूं। एक दरार के कान से मुझे एक शोर सा सुनाई देता है। यह पानी की टंकी के बगलवाले बाहरी कोर्ट से आ रहा है। मैं एक सुनसान गलियारे से गुजरता हुआ उस ओर बढ़ता हूं। इस उदासी के बीच संतरी की तरह खड़ी पानी की उस टंकी के पास पहुंचने के बाद मैं एक डबल्स मैच में पहुंच जाता हूं। एक ताजगी मेरे भीतर प्रवेश करने लगती है। छोटे छोटे पैरों वाले दो रूसी दो लम्बे परों वाले अमरीकियों के साथ खेल रहे थे। गठीले रूसी शरीर कोर्ट में इधर से उधर कुलांचे भर रहे हैं। यह कुछ अजीब सा लगता है पर बुरा नहीं। तभी मुझे मग्नोलिया सेंट से सुगंधित आवाजें सुनाई देती हैं। वे तो पूर्व से आये इन खिलाड़ियों के परखचे ही उड़ाये दे रही हैं। अब मुझसे यह टेनिस सहन नहीं हो रहा है। मैं उन हरे कोर्टों के बीच से गुजरता हुआ निकल जाता हूं। मैं प्रतियोगियों के बैठने के स्थान के पास से गुजरता हूं जहां रंगीन छतरियों के नीचे बैठे वे शेरी पी रहे हैं। मैं देख रहा हूं कि खिलाड़ी अपना सामान बांध रहे हैं। मैं उनके पास जाकर उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या उनकी इच्छा रोने की नहीं हो रही है? बुक्का फाड़कर रोने की? ताकि रास्ते पर पड़े तुड़े मुड़े टिकट उनके आंसुओं से भीग जायें। मैं थोड़ा तिरछा चलता हुआ उनके बराबर में आ जाता हूं। वहां उनकी आंखों में व्यावसायिक चमक देखकर मैं चकित हूं। अभी उन्हें बारसिलोना जाना था और रास्ते का खर्चा उन्हें दे दिया गया था।

तालियों की आवाजें आ रही हैं। मैं जानता हूं कि भीतरी कोर्ट के मध्य में चांदी के कप और प्याले उन लोगों को दिए जा रहे होंगे, जिन्होंने मैच प्वाइंट पर, उस ठण्डी गेंद को अपने बल्ले की सहायता से सटीक ढंग से बेस लाइन पर अपने विरोधी की पहुंच से बाहर मारा होगा। चाय के स्थान में एक सफाई कर्मचारी कागज के प्याले समेट रहा था। प्रतियोगियों के कक्ष में दुनिया के दूसरे देशों में होने वाली प्रतियोगिताओं में जाने की तैयारियां हो रही हैं और स्कूली लड़कियां उनके आटोग्राफ ले रही हैं। बाहर मैदान में नीले और हरे रंग के कैनवास के आवरणों से घास की सतह को ढका जा चुका है। खाली कोर्टों के बीच में पानी की टंकी अकेले संतरी की तरह खड़ी है। पिटी हुई घास और भूरी पड़ गई है। और मैं आखिरी बार पुरुषों के शौचालय में जाता हूं। एक दिन पहले तक यह रेलवे स्टेशन की तरह लग रहा था।

डॉन क्विग्जोट का विजय अभियान

सरवातीज

स्पेन के किसी गाव मे एक पुरानी चाल ढाल के सज्जन रहते थे जिनके प्रिय साथी थे उनका दुबला पतला घोडा और शिकारी कुत्ता। वे और काम तो करते नही थे, इस लिए सामती वीरो की गाथाए पढने मे ही अपना समय बिताते थे। इन गाथाओ मे उन्हे रस मिलता गया और वे अपनी सारी जमीन जायदाद बेचकर इस तरह की गाथाओं वाली पुस्तकें ले आये।

धीरे धीरे उनमे भी वीर योद्धा बनने की इच्छा जागी। इसके लिए पहला काम उन्होने यह किया कि अपने परदादा के जमाने के हथियारो और कवच को साफ करके चमकाया और उनकी टूट फूट की मरम्मत भी की। दूसरा काम था अपने घोडे के नाम-करण का। काफी सोच विचार के बाद उसका नाम रोजिनाटे रखा गया। स्पेनी मे इस शब्द का अर्थ होता है—'जो कभी साधारण था' याने अब वह असाधारण हो गया अब मैं आपको इन सज्जन का नाम बता दू। ये हैं डान क्विग्जाट। यहा पर हम डान के असख्य वीरतापूर्ण कार्यों मे से कुछ का ही जिक्र कर पायेंगे।

अपने विजय अभियान पर निकले डान क्विग्जोट एक सराय मे पहुचे। सरायवाला अव्वल दर्जे का धूर्त, समझ गया कि मेहमान का मस्तिष्क विकृत है। उसे टालने की गरज से बोला, "यहा मैं अपनी तथा दूसरो की जमीदारी का उपभोग करता हू। यहा जो वीर योद्धा आते हैं, उनका आदर सत्कार करता हू। लेकिन दुख की बात यह है कि मेरी सराय मे कोई ऐसा पवित्र स्थान नही है जहा आप अपना यह कवच रख सके। निवेदन है कि आज रात आप इसे प्रागण मे रखकर इसकी रखवाली स्वय करें। कल हम किसी स्थान की व्यवस्था कर पायेंगे।"

बातचीत का सिलसिला खत्म हुआ और हमारा वीर योद्धा सराय के सामने वाले मैदान मे आ पहुचा और कुए से पानी निकालने के स्थान पर अपना सामान रखकर उसकी रखवाली पर डट गया।

इधर सरायवाले ने और टिकने वालो से अपने नये मेहमान की मूर्खता का हाल भी बता दिया। वे लोग उसकी मूर्खता पर हसने लगे। लोगो ने देखा कि कभी तो वह गभीर मुद्रा मे इधर उधर चलता है और कभी अपने भाले के बल पर टिककर कवच को देखता है। रात हो गयी थी। आकाश मे चद्रमा उदित हो गया था। वह वीर अपने

कामों में व्यस्त था कि उसी सराय में ठहरा हुआ एक हरकारा वहां अपना खच्चर धोने के लिए पहुंचा। वीर योद्धा की सामान कुएं से हटाए बिना वह पानी नहीं ले सकता था। जैसे ही डॉन क्विग्जोट ने उसे अपनी ओर बढ़ते हुए देखा तो चिल्लाकर बोला, "अरे तू तो कोई भी उद्दंड वीर है, तू मेरे जैसे श्रेष्ठ वीर योद्धा के कवच को हाथ लगाने का साहस कैसे कर रहा है ? सावधान ! अपने अपवित्र हाथों से छूने की गलती न करना, वरना तेरे दुस्साहस का परिणाम तेरी मृत्यु होगी !"

हरकारे ने बिना उसकी ओर ध्यान दिए कवच के बण्डल को उठाया और दूर फेंक दिया। डॉन क्विग्जोट भला यह हरकत कैसे गवारा करता ! उसने अपनी काल्पनिक प्रेयसी डलसीनिया का स्मरण किया— "देवि तुम्हारे दास का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ है। उसकी मदद करना। अपने पुरुषार्थ के प्रथम प्रदर्शन में मैं तुम्हारी कृपा और रक्षा से वंचित न होऊं।" इस तरह के उद्‌गारों को प्रकट करते हुए डॉन क्विग्जोट ने उसके सिर पर पूरी ताकत से प्रहार कर दिया और वह हरकारा उसके पैरों के पास गिरकर छटपटाने लगा। वीर योद्धा ने इसकी कोई चिंता न करते हुए कवच को उठाकर फिर पुरानी जगह रख दिया और टहलते हुए पहरा देने लगा।

इस घटना के थोड़ी ही देर बाद किस्मत का मारा एक दूसरा हरकारा अपना खच्चर को धोने के लिए वहां आया। उसे पहले घटी घटना की कोई जानकारी नहीं थी। पहला हरकारा अभी तक जमीन पर बेहोश पड़ा था। दूसरे ने भी जब कवच को हाथ लगाने की धृष्टता की तो इस बार वीर योद्धा ने उसे ललकारने में शक्ति व्यय नहीं की। केवल भाले से उसके मस्तिष्क पर ऐसे प्रहार किए कि वह भी चीख मारकर जमीन पर बिछ गया।

उसकी चीख सुनकर सराय के सभी लोग दौड़ते हुए आये। इतने लोगों को अपनी ओर आते देखकर डॉन क्विग्जोट ने अपनी ढाल को सामने किया। दूसरे हाथ से तलवार खींच ली और अपनी काल्पनिक प्रेमिका को याद किया, "ए सौन्दर्य की देवी मेरे दुर्बल हृदय को साहस और शक्ति प्रदान करने वाली डलसीनिया, यही समय है कि तू साहसिक काम करनेवाले अपने दास को अपनी महत्ता की किरणों से प्रेरित करे, जबकि वह इस तरह अचानक साहसिक काम में संलग्न है।" इसके साथ ही उसके भीतर एक असीम शक्ति संचार कर गयी। उधर हरकारों ने अपने साथियों की यह दशा देखी तो वे क्रोध से पागल हो उठे। पास जाने का साहस तो उन्हें न हुआ पर दूर से ही वे उस पर पत्थरों की वर्षा करने लगे। डॉन क्विग्जोट अपनी ढाल से पत्थरों को रोकने की कोशिश करता हुआ डटा रहा। यह कवच को वहीं छोड़कर भागता तो उसके वीरत्व का अपमान होता, उसने चीखकर कहा, "बरसा दो ढेले ! बुरे से बुरा काम कर डालो ! अगर तुममें साहस है तो मेरे पास आओ और अपनी धृष्टता का इनाम ले लो !"

उसके इन शब्दों से आक्रमण करने वालों में ऐसी दहशत समा गयी कि उन्होंने पत्थर फेंकने बन्द कर दिये। उसने उन पर इतनी कृपा अवश्य की कि उन्हें घायल साथियों को ले जाने की अनुमति दे दी। इसके बाद वह पुनः अपनी रखवाली पर डट गया।

चक्कियों को देखकर वह सकोपाका को बताने लगा, मित्र सैंको, सामने देखो, वहा कम से कम तीन भयानक दैत्य हैं। मैं उनका मुकाबला करना चाहता हू। उनका काम तमाम करके उनके लूट के माल से हम लोग धनी बन जायेंगे। क्योंकि ये जायज पारितोषिक है। इन दुष्ट जीवों का सहार करना पुण्य का काम होगा।

"कौन दैत्य ?"

'जिन्हें तुम सामने लम्बी बाहे फैलाये देख रहे हो। उन घणित जातियों में से कुछ की बाहें इतनी लम्बी होती है कि छह मील तक पहुच जाते हैं।'

"महामान्य, जरा सावधानी से देखें, व दैत्य नही पवन चक्किया हैं और जिन्हें आप उनकी लम्बी बाहे समझ रहे हैं, वे दरअसल उनके पख हैं। वहा से उनमे गति पैदा होती है और व चक्किया चलती है।'

"यह तो सकेत है। तुम्हे साहसिक यात्राओं का कोई अनुभव नही है। वे दैत्य ही है। यदि तुम डर गये हो तो अलग जाकर प्रार्थना कर लो। मैंने निश्चय कर लिया है कि उनके साथ द्वद्व युद्ध करूगा।'

इतना कहकर उसने अपने घोडे रोजिनाटे को एड लगायी।

उनके निकट पहुचकर डॉन क्विग्जोट ने चिल्लाकर कहा 'खडे रहो कायरो ! नीच जीवो ! एक वीर योद्धा को देखकर मैदान छोडकर भागने की कोशिश न करना। मैं अकेला ही तुम्हारा मुकाबला करूगा !

सयोग से तभी हवा तेज हुई और चक्किया के पख चलने लगे। यह देखते ही डान क्विग्जोट चिल्ला उठा "नीच शतानो ! यद्यपि तुम लोग ब्रेयरियस से भी अधिक अपने हाथों को हिला रहे हो, तब भी तुम्हे अपनी उद्दडता की सजा मिलेगी। फिर उसने बडी श्रद्धा के साथ अपनी प्रेमिका डलसीनिया को याद किया और प्रार्थना की कि इस खतरनाक अभियान मे वह उसकी सहायता करे।

इसके बाद उसने ढाल से अपने को ढककर अपना भाला सभाला और रोजिनाटे का तेज करके पूरे वेग के साथ सबसे पहली पवन चक्की पर झपटते हुए उसके पख पर भाला चला दिया।

हवा के वेग से पख के घूमने के कारण भाला तो टुकडे टुकडे हो गया और वेग के कारण ऐसा जबर्दस्त धक्का लगा कि घोडा और सवार दोनो जमीन पर दूर जा गिरे। सकोपाका अपने स्वामी की सहायता के लिए खच्चर पर तेजी से दौडा। उसने देखा कि उसके मालिक जमीन पर जा पडे हैं। उनमे उठने की सामर्थ्य नही है।

'मुझ पर रहम कीजिये। मैंने पहले ही आपको सावधान कर दिया था कि ये दैत्य नही पवन चक्किया हैं "

मित्र सको, शात रहो, मुझे पक्का विश्वास है कि जो शैतान जादूगर फ्रस्टन मेरे अध्ययन कक्ष और पुस्तको को उठा ले गया है उसी ने इन दैत्यो को पवन चक्किया मे बदल दिया है ताकि मैं विजय के गौरव से वचित रहू। लेकिन मैं स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मेरी तलवार की तेज धार के सामने उसकी सारी धूर्तता और चालबाजी अत मे बेकार जायगी।'

'भगवान करे ऐसा ही हो" कहते हुए सको ने अपने मालिक को उठाकर खडा किया और किसी तरह रोजिनाटे पर सवार करा दिया। चोट लगने के कारण रोजिनाटे भी लगडाता हुआ चल रहा था।

शतरंज की चाल

कुर्त वानगट जूनियर

कर्नल केली के सामने पंद्रह व्यक्ति मौजूद थे जिनके चेहरे अज्ञात भय से पीले हो रहे थे और उनकी आँखें आशा निराशा की अवस्था से झिलमिला रही थीं। उन व्यक्तियों में कर्नल की पत्नी मारग्रेट भी थी और उसका आठ-वर्षीय बेटा जेरी भी। कर्नल के चेहरे से अति व्याकुलता और व्यग्रता प्रकट हो रही थी। वह और उसके साथी कम्युनिस्ट गोरिल्ला चीफ पी यंग के कब्जे में थे। पी यंग जो कर्नल और उसके सभी साथियों की हत्या करने के लिए तत्पर था। कर्नल केली उस समय पी यंग से ही मिलकर आ रहा था। कर्नल केली अमेरिका का एक जिम्मेदार अफसर होने के कारण अमैत्य देशों के लिए बड़ा महत्व रखता था। पी यंग में अपनी बात मनवाने में असफल रहा था। कर्नल केली ने उसे समझाना चाहा था कि कुछ विवश और असहाय व्यक्तियों को घेरकर उनकी हत्या कर देना अमानवीय क्रिया है लेकिन पी यंग की दृष्टि में मानवीय मूल्यों की कल्पना बिलकुल भिन्न थी। उसने कर्नल के सामने जिंदा बचने का जो एकमात्र प्रस्ताव रखा था उसे बहरहाल कर्नल को स्वीकार करना था।

कर्नल को चुप देखकर आखिर उसकी पत्नी मारग्रेट ने उससे पूछ लिया, 'डार्लिंग! क्या बात है? तुम चुप क्यों हो?" यह कहते हुए वह अपनी जगह से उठ खड़ी हुई।

कर्नल केली बोझिल-बोझिल से कदम उठाता हुआ मारग्रेट की ओर बढ़ा और बोला "मैं इसलिए चुप हूँ कि मैं कोई अच्छी खबर लेकर नहीं लौटा।"

"हमारा अनुमान भी यही था" पास ही खड़े हुए यानचालक ने कहा।

"वह हमारी हत्या कर देना चाहता है।" कर्नल केली ने ऊँची आवाज में कहा और कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा गया।

"नहीं, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए!" बूढ़े वैज्ञानिक पाल की आवाज गूँजी, "यह मानवता के विरुद्ध है।"

"आप ठीक कहते हैं, पर मानवता मनुष्यों में होती है।" कर्नल केली के स्वर में धीमी सी चुभन थी, जो वृद्ध वैज्ञानिक ने अनुभव की और चुप हो गया।

"पर आप बतायें तो सही कि उसका प्रस्ताव क्या है?" गुप्तचर जार्ज ने आग्रह किया।

"वह मेरे साथ शतरज खलना चाहता है।" कनल ने बताया।

"शतरज ?" वद्ध वज्ञानिक पॉल ने विस्मय से कहा।

'जी हा, शतरज।' कनल केली ने उत्तर दिया, 'ऐमी शतरज जो शायद कभी और कही नही खेली गयी होगी।" यह कहकर कनल न स्पष्टीकरण किया, "हम सबको कुछ देर बाद एक ऐसे कमरे म ले जाया जायेगा जिसके फश पर शतरज के बडे खाने बने होगे।' सभी व्यक्ति कनल की बात ध्यान स सुन रहे थे, "उन खानो म शतरज के मोहरो के बजाय हम सबको खडा कर दिया जायेगा, और हम सबको मनुष्यो क बजाय शतरज के मोहरे मान लिया जायेगा। हमारी पहचान के लिए हमार सिरा पर विशिष्ट टोपिया रख दी जायेंगी, ताकि हमे मोहरो के रूप म पहचाना जा सके कि हममे स कौन किस मोहर की जगह है। इमी प्रकार उसके मोहरा की जगह विराधी दिशा के खाना म खडे होगे। एक ओर बादशाह के रूप म वह खेलेगा और दूसरी ओर मैं। वह कहता है कि यदि मैंन उस मात दे दी तो वह मुझ और मरे साथियो को रिहा कर देगा और सुरक्षा पूवक अमरिका पहुचन की व्यवस्था कर देगा, अयथा " कनल केली ने अपना वाक्य अधूरा छोड दिया और हसरत भरी दष्टि से अपने आठ वर्षीय बेटे जैरी को देखा, जो इस अतराल म उसके पास आ खडा हुआ था।

"मामला सचमुच खतरनाक है।" गुप्तचर जाज ने कहा "हमारा जीवन और मौत शतरज की एक बाजी पर निभर है।"

"इससे भी अधिक खतरनाक, जितनी आप कल्पना कर रहे हैं।" कनल केली मद्धिम स्वर मे बोला।

'क्या इसके अलावा भी उसन कोई शत लगायी है ?" जाज ने चिंतित स्वर म प्रश्न किया 'क्या वह कोई और खेल भी खेलगा ?"

'नही ! निणय केवल शतरज की बाजी मे ही हो जायेगा।" कनल ने उत्तर दिया, "खेल की जो एकतरफा शर्तें रखी गयी हैं, वे बहुत भयकर है। खेल के अतराल म यदि उसने मेरा कोई मोहरा पीट लिया तो उस मोहर की जगह इसमे से जो भी खडा होगा, उसे गोली मार दी जायगी। और यदि उसका कोई मोहरा मैंन मार लिया तो ऐसा नही होगा। मह खेल उस समय तक जारी रहगा, जब तक हम दोना म स कोई एक हार न " अभी कनल केली का वाक्य समाप्त नहीं हुआ था कि सहसा दरवाजा खुला और कुछ राइफलधारियो ने भीतर प्रवेश किया।

'खेल शुरु होने से पहले दो बातें और सुन लो कनल !' पी यग ऊची आवाज म बोला, "कोई चाल वापस नही होगी और हर नयी चाल के लिए दस मिनट होगे। केवल दस मिनट !' पी यग ने अपन दायें हाथ म थामी हुई स्टॉप वाच हिलायी 'पहली चाल तुम चलाग ! क्योकि तुम सफेद बादशाह हो।" यह कहकर उसन स्टॉप-वाच का बटन दबा दिया।

'दो खाने आगे बढ जाओ।' कनल केली न अपन बेटे जरी के सामने खडे हुए सहायक यानचालक को आदेश दिया।

पी यग ने, जो मुस्कराते हुए अपने बादशाह के प्यादे को आगे बढ़ने का आदेश दिया। अब सहायक यानचालक उसकी परिधि में था। कनल ने सहायक यानचालक की ओर देखा। सहायक यानचालक ने आश्वस्त अदाज म कनल का निरीक्षण किया। उसी क्षण कनल ने हडसन विशेषज्ञ हडसन को एक खाना आगे बढ़ने के लिए कहा। सहायक यानचालक की प्राण रक्षा के लिए वह कुछ नहीं कर सकता था, क्योंकि उसे पता चल चुका था कि सहायक यानचालक शतरज म मेल से अवगत है, यह और दुस्साहस की बात थी कि वह मौत के मुह म जाकर मुस्करा रहा था और कनल को उसकी यह अदा पसन्द आयी थी।

कानून विशेषज्ञ हडसन एक खाना आगे जाकर खडा हो गया लेकिन सहायक यानचालक अब भी परिधि म था। यह प्यादो की लडाई थी जिसका कुछ विशेष लाभ नहीं था।

'बहुत खूब" पी यग स्थिति म आनन्दित होकर बोला 'इस प्यादे को उठा लो," उसने सहायक यानचालक की ओर इशारा किया।

दो राइफलधारी आगे बढ़ और उन्होने सहायक यानचालक को जकड लिया।

'कनल! यह क्या हो रहा है?' कानून विशेषज्ञ हडसन घबराकर बोला। इससे पहले कि कनल उसे कोई उत्तर देता, सहायक यानचालक को राइफलधारी घसीट कर बिसात से बाहर ले गये। मौत का खेल शुरू हो चुका था।

मैं यह मौत का खेल नहीं खेल सकता। ईश्वर के लिए इस भयकर खेल को खत्म कर दो! कनल कली ने नजर उठाकर गोरिल्ला लीडर पी यग की ओर देखते हुए कहा।

यदि तुम सब मरना ही चाहते हो, तो मुझे खेल खत्म करने पर कोई आपत्ति नहीं।" पी यग ने शीत स्वर म उत्तर दिया।

कर्नल! अगली चाल चलो।" कुछ दूरी पर खडे हुए यानचालक ने कनल से कहा।

कनल कली ने स्वय को सभाला और कानून विशेषज्ञ हडसन से कहा कि वह आगे बढ़कर पी यग के प्यादे को उसके खाने से बाहर निकाल दे। फिर उसने हडसन को सात्वना दी अब आप खतरे से बाहर है। निश्चित होकर आगे बढ़ जाय।

'नहीं तुम झूठ बोल रहे हो।" हडसन भयभीत स्वर म बोला।

ए! पी यग ने हडसन को घुडका, 'यदि तुम इसी समय मरना चाहते हो तो कनल की बात मानने म इनकार कर सकते हो!"

खेल शुरू हुए एक घटा बीत चुका था। कनल कली ने अब तक सुरक्षात्मक खेल को प्राथमिकता दी थी लेकिन अब स्थिति भिन्न थी। उसे बडी हद तक पी यग के खेल का अदाज हो चुका था और यह अनुमान लगाने की उसे बडी कीमत चुकानी पडी। अब तक उसके चार साथी कम हो चुके थे। कानून विशेषज्ञ हडसन, यानचालक, सहायक यानचालक और गुप्तचर जाज को गोली मारी जा चुकी थी। अब कनल शीघ्रातिशीघ्र

पी यग के बादशाह को घेरना चाहता था, ताकि यातनाजनक खेल समाप्त हो। कनल की दृष्टि अपन आदमियो पर जमी हुई थी और उसका मस्तिष्क चाल सोचन म मग्न था।

"कनल ! चाल चलो !" पी यग की आवाज न उसके विचारो की शृखला छिन भिन कर दी।

"सभवत अभी दस मिनट नही हुए हैं।" उसने पी यग की ओर देखे बिना कहा।

'पाच मिनट बीत चुके हैं, पी यग चहका, 'यह न भूलो कि शतरज म कभी कभी समय स भी पराजय हो जाती है। यदि तुम निश्चित समय म चाल नही चल सके तो तुम्हें पराजित स्वीकार कर लिया जायेगा।"

'मैं शतरज के सिद्धातो से अवगत हू।" कनल न उत्तर दिया और उसी समय वह समझ गया कि पी यग जल्दबाजी क्यो कर रहा है। यदि कनल जल्दबाजी म चाल चल जाता तो अमरिका का एक श्रेष्ठ दिमाग खतरे म पड जाता। वद्ध कनानिक चाल पी यग के एक मोहरे की परिधि मे था। कनल केली के ललाट पर पसीने की बूदें नजर आन लगी। उसे वद्ध वनानिक का जीवन बचाना था। अब तक के खेल म उसन यथा सभव यह प्रयत्न किया था कि उन ग्यारह महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो को सकट के घेरे म नही आने दिया, लकिन इसके बावजूद उन ग्यारह महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो म स दो क जीवन क दीपक बुझ चुक थ।

"अब केवल दो मिनट रह गये है कनल !" पी यग की आवाज फिर सुनाई दी। 'यह मैं तुम्हें इसलिए बता रहा हू कनल कि तुम्हारे पास स्टॉप वाच नही है।'

कनल न उसकी बात का कोई उत्तर नही दिया। उसका मस्तिष्क चाल सोचन म मग्न था। और फिर जस उसक मस्तिष्क म प्रकाश-सा हो गया। वह वद्ध वैनानिक का जीवन बचा सकता था और उसी के साथ दूसरी चाल म बाजी भी जीत सकता था। यदि वह अपन वजीर स पी यग के बादशाह को शह दे, ऐस म अनिवाय रूप म भी पी यग अपन घद्य से उसके वजीर को पीटेगा, क्योकि पी यग के लिए शह बचान का इसके सिवा कोई रास्ता नही है। पी यग का घद्य खान म आ जायेगा, जहा कनल उस मात दगा। कनल केली का मस्तिष्क सोचन म मग्न था। इस प्रकार पी यग के बादशाह का आग पीछे हटन के लिए कोई घर नही रहेगा। फिर दूसरी चाल म घोडे की शह के बाद पी यग का मात हो जायगी।

"कनल, अब एक मिनट बाकी है। चाल चलो !" पी यग चीखा 'तुम क्षण प्रतिक्षण मौत क निकटतर होते जा रहे हो।

पर कनल केली तो जैसे वहा था ही नही। उसका चेहरा पसीन म सराबोर था। वह कभी मानचित्र की ओर देखता और कभी अपन बड़े अगो की ओर। उस समय जो दो चालें चलनी थी उन चालो का सम्बन्ध इन्ही दोनो म था। [illegible] पर अगो की स्थिति वजीर की थी और मानचित्र को स्थिति घोडे की। कनल का एक भी चाल वजीर की चलनी थी। कुछ क्षण ! गिनती क कवल कुछ क्षण ! और कनल का [illegible] कुछ क्षणो म

एक महत्वपूण निणय करना था। वह क्या कर? उसका मस्तिष्क सोचने मे मग्न था। क्या वह अपने देश एव राष्ट्र से गद्दारी करे और उस वद्ध वैज्ञानिक को मौत के मुख म चला जाने दे जो अमरिकी राष्ट्र के लिए पूजी की स्थिति रखता है? और यदि वह नही तो क्या वह जैरी को इसस अधिक वह न सोच सका। उसन दोनो हाथो स अपना सिर थाम लिया।

कनल केली! अब तुम्हारे जीवन और मौत के बीच केवल पद्रह सैकेंड का विराम रह गया है।

कनल केली को पी यग की आवाज कही दूर स आती सुनाई दी। पी यग अब ऊची आवाज म क्षणो का हिसाब कर रहा था, नौ सैकड सात सैकेंड पाच सकेंड तीन दो "

जैरी! तुम तुम आगे बढो! उस खाली खाने म चले जाओ! जाओ!" कनल केली जस सपना की अवस्था म बोला।

उसका आठ वर्षीय बेटा जरी दौडकर उस खाने मे खडा हो गया, जिस की ओर कनल ने सकेत किया था।

"शह! पी यग शह!' कनल केली लगभग चीख पडा।

पी यग न इस प्रकार बिसात पर नजर गाड दी जसे उसे अपनी दष्टि पर यकीन करने म कठिनाई पश आ रही हो। कमरे म कुछ क्षण मौत जैसा सन्नाटा छा गया।

शह! पी यग श ।" कनल फिर जुनून की अवस्था म चीखा।

'ठीक है कनल! तुम जीत गय।" पी यग की भारी आवाज सुनाइ दी फिर कुछ क्षण क विराम क बाद उसकी आवाज सुनाई दी लेकिन अब वह कनल स नही, राइफल धारियो से सम्बोधित था, "कनल केली के बेटे को बिसात म उठा लो। और बाहर ले जाकर गोली मार दो। कनल केली न अपने बेटे का बलिदान देकर मुझे मात दे दी है। मैं मानता हू कि अगली चाल म मुझे पराजय हो जायगी।'

राइफलधारियो न आगे बढकर जैरी को पकड लिया। मारग्रेट एक सपन की अवस्था म अपनी जगह पत्थर बनी खडी रही।

"डैडी! डैडी!!" जरी चीखा।

सजल नेत्र कनल न एक नजर अपने हृदय के टुकडे की ओर देखा और मुह फेर लिया।

□